

सारांश

// वितान //

सिल्वर वेडिंग

- मनोहर श्याम जोशी

‘सिल्वर वेडिंग’ मनोहर श्याम जोशी की एक प्रमुख कहानी है। लेखक ने इस कहानी में सेक्शन ऑफिसर वी० डी० (यशोधर) पंत के चरित्र-चित्रण के माध्यम से आधुनिक पारिवारिक परिस्थितियों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। यशोधर पंत अपने ऑफिस में आखिरी फाइल को लाल फीता बाँधकर अपनी घड़ी के अनुसार जिसमें पाँच बजकर तीस मिनट हो रहे हैं, आज की छुट्टी करते हैं। उनके नीचे काम करने वाले कर्मचारी उनकी वजह से पाँच बजने के बाद भी दफ्तर में बैठने के लिए मजबूर हैं। उनकी यह आदत है कि वे अपने कर्मचारियों की थकान दूर करने के लिए कोई मनोरंजक बात जरूरी करते हैं। यह आदत उन्हें अपने आदर्श कृष्णानंद (किशनदा) पांडे से परंपरा में मिली है।

यशोधर पंत बहुत ही गंभौर, काम के प्रति ईमानदार और मिलनसार व्यक्ति हैं। कई बार छोटे कर्मचारियों द्वारा की गई ग़लत बात को भी वे हँसी में उड़ा देते हैं। दफ्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट होते हैं तो वे दफ्तर के अन्य कर्मचारियों की सुस्ती पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि ‘आप लोगों को देखादेखी सेक्शन की घड़ी भी सुस्त हो गई है। इसी बात को लेकर वे बहस भी करते हैं और हँसते भी हैं। यह उनको ससुराल से शादी में मिली थी। बातों-बातों में यह पता चलता

है कि यशोधर पंत की शादी 6 फरवरी, 1947 को हुई थी। सभी कर्मचारी यशोधर को शादी की बधाई देते हैं। एक कर्मचारी चहककर कहता है “मेनी हैप्पी रिटर्नज़ ऑफ़ द डे सर! आज तो आपका ‘सिल्वर वेडिंग’ है। शादी के पच्चीस साल पूरे हो गए हैं।” सेक्शन के सभी कर्मचारियों की जिद पर यशोधर बाबू उन्हें दस-दस के तीन नोट निकालकर देते हैं परंतु इस चाय-पार्टी में स्वयं शामिल नहीं होते। उनका मानना है कि उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प करने में वक्त बर्बाद करना किशनदा की परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर पंत मूलतः अल्मोड़ा के रहने वाले हैं। उन्होंने वहीं के रेम्जे स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। मैट्रिक के पश्चात वे पहाड़ से उतरकर दिल्ली आ गए थे। दिल्ली में उन्होंने किशनदा के घर पर शरण ली थी। किशनदा कुँवारे थे और पहाड़ से आए हुए कितने ही लड़के ठीक ठिकाना होने से पहले उनके यहाँ रह जाते थे। वहाँ वे सभी मिलकर पकाते और खाते थे। जिस समय यशोधर दिल्ली आये थे उस समय उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। जब तक नौकरी के लिए सही उम्र हो यशोधर किशनदा के यहाँ रसोइया बनकर रहे। बाद में किशनदा ने अपने ही नीचे यशोधर को नौकरी दिलवाई और दफ्तरी कार्य में उनका मार्गदर्शन किया।



आजकल यशोधर दफ्तर पैदल आने-जाने लगे हैं। उनके बच्चे नहीं चाहते थे कि उनके पिता साइकिल पर दफ्तर जाएँ क्योंकि उनके बच्चे अब आधुनिक युवा हो गए हैं। बच्चे चाहते हैं कि पिता जी स्कूटर ले लें। लेकिन पिता जी को स्कूटर निहायत बेहुदा सवारी मालूम होती है और कार वे अभी लेने की स्थिति में नहीं थे। दफ्तर से आते समय यशोधर बाबू प्रतिदिन बिरला मंदिर जाने लगे। वहीं उद्यान में बैठकर कोई प्रवचन सुनते तथा स्वयं भी प्रभु का ध्यान लगाने लगे। बच्चों और पत्नी को यह बात बहुत अखरती थी। सिद्धांत के धनी किशनदा की भाँति यशोधर बाबू भी इस आलोचना को अनसुना कर देते हैं। बिरला मंदिर से पहाड़गंज आते समय वे घर के लिए साग-सब्जी खरीद लाते हैं। किसी से अगर मिलना भी है तो वे इस समय मिलते हैं। घर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते। घर लौटते।

समय उनकी निगाह उस स्थान पर पड़ती है जहाँ कभी किशनदा का तीन बेडरूम वाला क्वार्टर हुआ करता था और जिस पर इन दिनों एक छह मंजिला इमारत बनाई जा रही है। यशोधर बाबू को बहुत बुरा लगता है। यशोधर बाबू के घर देर से लौटने का बड़ा कारण यह है कि पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी और बच्चों से छोटी-छोटी बातों को लेकर अक्सर मतभेद होने लगा है और इसी वजह से वे अब घर जल्दी लौटना पसंद नहीं करते। जब बच्चे छोटे थे, तब वे उनकी पढ़ाई-लिखाई में मदद किया करते थे।

अब बड़ा लड़का भूषण एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी करने लगा है। उसे वहाँ डेढ़ हजार प्रति मासिक वेतन मिलता है जबकि यशोधर बाबू रिटायरमेंट पर पहुँचकर ही इतना वेतन पा सके हैं। दूसरा बेटा दूसरी बार आई०ए०एस० की परीक्षा की तैयारी कर रहा है। यशोधर बाबू के लिए यह समझ सकना मुश्किल हो रहा है कि जब पिछले वर्ष उसका नाम 'एलाइड

सर्विसिज' की सूची में आया था, तब उसने 'ज्वाइन' करने से क्यों इंकार कर दिया था ? उनका तीसरा बेटा स्कालरशिप लेकर अमेरिका स चला गया है। उनकी एकमात्र बेटा को कोई भी वर पसंद नहीं आ रहा है तथा वह सभी

प्रस्तावित वर अस्वीकार कर चुकी है। यशोधर बाबू अपने बच्चों की तरक्की से खुश तो हैं परंतु कभी-कभी उन्हें ऐसा भी अनुभव होता है कि यह खुशहाली भी किस काम की जो अपनों में भी परायापन पैदा कर देती है।

जब उनके बच्चे गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा करते हैं तो उन्हें बहुत बुरा लगता है। उनकी पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी तरह भी आधुनिक नहीं है फिर भी मातृसुलभ मजबूरी में उन्हें अपने बच्चों की नज़र में आधुनिक बनना पड़ा। पत्नी को यह मलाल है कि संस्कारों को निबाहने के कारण उन्हें परिवार के कार्यों के बोझ तले दबना पड़ा है। उसकी दृष्टि में ये सब पारिवारिक संस्कार अब ढोंग और ढकोसले हो गए हैं। यशोधर बाबू पत्नी की इसी आधुनिकता का कई बार मज़ाक भी उड़ा देते हैं, परंतु असल बात तो यह है कि तमाशा तो स्वयं उनका ही बन रहा है। कई बार यशोधर बाबू को लगता है कि वे भी किशनदा की तरह घर-गृहस्थी का यह सब बवाल छोड़कर जीवन को समाज के लिए समर्पित कर देते तो ज्यादा अच्छा रहता।

उनको यह भी ध्यान है कि किशनदा का बुढ़ापा ज्यादा सुखी नहीं रहा। कुछ साल वे राजेंद्र नगर में किराए पर रहे और फिर अपने गाँव लौट गए जहाँ साल भर बाद उनकी मौत हो गई। जब यशोधर बाबू ने उनकी मृत्यु का कारण पूछा तो किसी ने यही जवाब दिया, "जो हुआ होगा।" यान पता नहीं क्या हुआ? यशोधर बाबू यह भी स्वीकार करते हैं कि उनके बीवी-बच्चे उनसे अधिक समझदार और सुलझे हुए हैं।

बच्चों को पिता जी की इस गलती का अफसोस है कि अब्बा ने डी० डी० ए० फ्लैट के लिए पैसा न भर कर बहुत बड़ी भूल की है परंतु यशोधर बाबू को किशनदा की यह उक्ति अधिक ठीक लगती है कि 'मूर्ख लोग घर बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं।' जब तक सरकारी नौकरी तब तक सरकारी क्वार्टर। रिटायर होने पर गाँव का पुश्तैनी घर। परंतु यशोधर बाबू का पुश्तैनी घर टूट-फूट कर खंडहर बन चुका होगा, यह भी वे खूब जानते हैं।

बिरला मंदिर में प्रवचन सुनते समय जब जनार्दन शब्द उनके कानों में पड़ा तो उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की

याद आ गई। आजकल उनकी तबीयत ठीक नहीं है और वे उन्हें मिलने के लिए अहमदाबाद जाना चाहते हैं। जीजा जी का हाल-चाल जानना वे अपना कर्तव्य समझते हैं। बच्चों से भी वे ऐसी अपेक्षा रखते हैं कि वे भी पारिवारिकता के प्रति रुचि लें, परंतु पत्नी और बच्चों को यह बात मूर्खतापूर्ण लगती है। हद तो तब हो गई जब कमाऊ बेटे ने यहाँ कहा कि 'आपको बुआ के यहाँ भेजने के लिए पैसे में तो नहीं दूंगा।' जब भी यशोधर बाबू कोई काम करते थे तो किशनदा से सलाह जरूर लिया करते थे और वे अपेक्षा अपने बच्चों से भी रखते हैं, परंतु बच्चे कहते हैं "अब्बा, आप तो हद करते हैं, जो बात आप जानते ही नहीं आपसे क्यों पूछें?"

यशोधर बाबू को यह अनुभव होने लगा था कि बच्चे अब उनके अनुकूल नहीं सोचते। इसलिए बच्चों का यह प्रवचन सुनकर के सब्जी मंडी चले जाते हैं। वे सोचते जा रहे थे कि उन्हें भी अच्छा लगता अगर उनके बेटे बड़े होने पर अपनी ओर से यह प्रस्ताव रखते कि दूध लाना, राशन लाना, सी० जी० एच० एस० डिस्पेंसरी से दवा लाना, सदर बाजार जाकर दालें लाना, डिपो से कोयला लाना आदि ये सब काम आप छोड़ दें, अब हम कर दिया करेंगे। एक-दो बार उन्होंने बच्चों से कहा भी तो घर में कुहराम मच गया। बस तब से यशोधर बाबू ने यह सब कहना ही बंद कर दिया। जब से बेटा विज्ञापन कंपनी में लगा है, तब से बच्चे कहने लगे हैं, "बब्बा, हमारी समझ में यह नहीं आता कि इन सब कामों के लिए आप एक नौकर क्यों नहीं रख लेते।" कमाऊ बेटा तो नमक छिड़कते यह भी कहता है, "नौकर की तनखाह मैं दे दूंगा।"

यशोधर बाबू को अपने बेटे की यह बात चुभती है कि उसने अपनी नौकरी के रुपये कभी अपने पिता के हाथ पर नहीं रखे बल्कि एकाउंट ट्रांसफर द्वारा सीधा बैंक में चले जाते हैं। वे सोचते हैं कि अगर उसे ऐसा ही करना था तो क्या वह अपने पिता के साथ ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था। हद तो तब हो गई जब बेटे ने पिता के क्वार्टर को अपना बना लिया है।

वह अपना वेतन अपने ढंग से अपने घर पर खर्च करता है। कभी कारपेट, कभी पर्दे, कभी सोफासेट, कभी इनलप

वाला डबल बेड और कभी सिंगार मेज़ घर में लाए जा रहे हैं। यह भी बेटे ने कभी नहीं कहा, "लीजिए पिता जी यह टी०वी० आपके लिए।" बल्कि यह कहता है कि 'मेरा टी०वी० है समझे, इसे कोई छुआ न करे। घर में एक नौकर रखने की बात भी चल रही है। नौकर होगा तो इनका ही होगा और पत्नी सुनती है मगर नहीं सुनती। यही सब सोचते हुए वे खुदी हुई सड़कों और टूटे हुए क्वार्टरों के मलबे से पटे हुए रास्तों को पार करके उस क्वार्टर में पहुंचते हैं। बाहर बदरंग तख्ती में उसका नाम लिखा है - वाई०डी० पंत।

घर पहुँचते ही यशोधर बाबू को एक बार तो लगा कि वह किसी गलत जगह पर पहुंच गए हैं। घर के बाहर एक कार और कुछ स्कूटर, मोटर-साइकिलें खड़ी हैं। कुछ लोग विदा ले रहे हैं। बाहर बरामदे में कागज़ की झालरें और गुब्बारे लटक रहे थे। रंग-बिरंगी रोशनियाँ जल रही थी। फिर उन्हें अपना बेटा भूषण पहचान में आया जो अपने बाँस को विदा कर रहा था। उसकी पत्नी और बेटा भी कुछ मेमसाबों को विदा कर रही है। बेटा ने जीन और बिना बाजू का टॉप पहन रखा है। यशोधर बाबू ने उसे ऐसे कपड़ों से कई बार मना किया है, लेकिन वह इतनी जिद्दी है कि ऐसी ही वेश-भूषा को पहनती है और माँ भी उसी का ही साथ देती है।

जब कार वाले विदा हो गए तो यशोधर बाबू घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने झिड़की-सी सुनाई- "बब्बा आप भी हद करते हैं, सिल्वर वैडिंग के दिन साढ़े आठ बजे घर पहुँचे। अभी तक मेरे बाँस आपकी राह देख रहे थे।" शर्मिली हँसी के साथ यशोधर बाबू बोले, "हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।" "जब से तुम्हारा बेटा कमाने लगा है।" किसी रिश्तेदार ने कहा। यशोधर बाबू इस बात से भी खफा हैं कि घर में भूषण रिश्तेदारों के लिए व्हिस्की लाया है। जब भूषण अपने मित्रों को यशोधर बाबू का परिचय करवाता है तो वे सभी उसे 'मैनी हैप्पी रिटर्नज ऑफ द डे' कहते हैं तो जवाब में यशोधर बाबू 'बैंक्यू' बोलते हैं। अब बच्चों ने विलायती परंपरा "केक काटने के लिए कहा। यशोधर बाबू को केक काटना बचकानी बात मालूम हुई। उन्होंने संध्या से पहले केक काटने से मना कर दिया और अपने कमरे में चले गए। शाम को पंद्रह मिनट वे



संध्या करने में लगाते थे, परंतु आज पच्चीस मिनट लगा दिए। संध्या में बैठे-बैठे वे किशनदा के संस्कारों के बारे में सोचने लगा। पीछे आकर पत्नी झिड़कते हुए बोली, “क्या आज पूजा में ही बैठे रहोगे ?” यशोधर बाबू लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। यह लाल गमछा पहनकर बैठक में आना बच्चों को असहज लग रहा था। खैर, बात उपहारों के पैकेट खोलने की चली तो भूषण सबसे बड़ा पैकेट खोलते हुए बोला, “इसे ले लीजिए। यह मैं आपके लिए लाया हूँ। ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। आप सवेरे जब दूध लेने जाते हैं अब्बा, फटा फुलोवर पहन कर जाते हैं, जो बहुत बुरा लगता है।

आप इसे पहनकर ही जाया कीजिए।” थोड़ा न-नुकर करने के बाद यशोधर बाबू ने पहनते हुए कहा, “अच्छा तो यह ठहरा ड्रेसिंग गाउन।” उनकी आँखों में चमक सी आ गई। परंतु उन्हें यह बात चुभ गई कि उनका यह बेटा जो यह कह रहा है कि आप सवेरे दूध लाते समय इसे पहन लिया करें, वह यह नहीं कहता कि दूध मैं ला दिया करूँगा। इस ड्रेसिंग गाउन में यशोधर बाबू के अंगों में किशनदा उतर आए थे जिनकी मौत ‘जो हुआ होगा’ से हो गई थी।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? चर्चा कीजिए।

उत्तर- यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अतः उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं और बेटी के अंगु एकपाई पहात हैं। वे बेयों के किसी मामले में दल नहीं देता। इस प्रकार वे स्वायं को शीघ्र ही बदल लेती हैं।

प्रश्न 2. पाठ में ‘जो हुआ होगा’ वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर- ‘जो हुआ होगा’ वाक्यांश का प्रयोग किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में होता है। यशोधर ने किशनदा के जाति

भाई से उनकी मृत्यु का कारण पूछा तो उसने जवाब दिया- जो हुआ होगा अर्थात् क्या हुआ, पता नहीं। इस वाक्य की अनेक छवियाँ बनती हैं –

- पहला अर्थ खुद कहानीकार ने बताया कि पता नहीं, क्या हुआ।
- दूसरा अर्थ यह है कि किशनदा अकेले रहे। जीवन के अंतिम क्षणों में भी किसी ने उन्हें नहीं स्वीकारा। इस कारण उनके मन में जीने की इच्छा समाप्त हो गई।
- तीसरा अर्थ समाज की मानसिकता है। किशनदा जैसे व्यक्ति का समाज के लिए कोई महत्त्व नहीं है। वे सामाजिक नियमों के विरोध में रहे। फलतः समाज ने भी उन्हें दरकिनार कर दिया।

प्रश्न 3. ‘समहाउ इंप्रापर’ वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं? इस काव्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर- यशोधर बाबू ‘समहाउ इंप्रापर’ वाक्यांश का प्रयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं। उन्हें जब कुछ अनुचित लगता में उन्हें कई कमियाँ नजर आती हैं। वे नए के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते। यह वाक्यांश उनके असंतुलन एवं अज व्यक्तिवक अर्थ प्रश्न करता है। पाठ में अकस्थान पर”समाहाट इपाि र वाक्याश का प्रयोग हुआ है।

- दफ्तर में सिल्वर वैडिंग पर
- स्कूटर की सवारी पर
- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- अपनों से परायेपन का व्यवहार मिलने पर
- डी०डी०ए० फ्लैट का पैसा न भरने पर
- पुत्र द्वारा वेतन पिता को न दिए जाने पर
- खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
- पत्नी के आधुनिक बनने पर
- शादी के संबंध में बेटी के निर्णय पर
- घर में सिल्वर वैडिंग पार्टी पर
- केक काटने की विदेशी परंपरा पर आदि

कहानी के अंत में यशोधर के व्यक्तित्व की सारी विशेषता सामने उभरकर आती है। वे जमाने के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए हैं। यह पीढ़ियों के अंतराल को दर्शाता है।

प्रश्न 4. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है और कैसे?

उत्तर- मेरे जीवन को दिशा देने में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान मेरे गुरुओं का रहा है। उन्होंने हमेशा मुझे यही शिक्षा दी कि सत्य बोलो। सत्य बोलने वाला व्यक्ति हर तरह की परेशानी से मुक्त हो जाता है जबकि झूठ बोलने वाला अपने ही जाल में फँस जाता है। उसे एक झूठ छुपाने के लिए सैकड़ों झूठ बोलने पड़ते हैं। अपने गुरुओं की इस बात को मैंने हमेशा याद रखा। वास्तव में उनकी इसी शिक्षा ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

प्रश्न 5. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर- इस कहानी में दर्शाए गए परिवार के स्वरूप व संरचना आज भी लगभग हर परिवार में पाई जाती है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त हो रही है। पुरानी पीढ़ी की बातों या सलाह को नयी पीढ़ी सिरे से नकार रही है। नए युवा कुछ नया

करना चाहते हैं, परंतु बुजुर्ग परंपराओं के निर्वाह में विश्वास रखते हैं। यशोधर बाबू की तरह आज का मध्यवर्गीय पिता विवश है। वह किसी विषय पर अपना निर्णय नहीं दे सकता। माताएँ बच्चों के समर्थन में खड़ी नजर आती हैं। आज बच्चे अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने में अधिक खुश रहते हैं। वे आधुनिक जीवन शैली को ही सब कुछ मानते हैं। लड़कियाँ फैशन के अनुसार वस्त्र पहनती हैं। यशोधर की लड़की उसी का प्रतिनिधि है। अतः यह कहानी आज लगभग हर परिवार की है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगी और क्यों?

- i. हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य
- ii. पीढ़ी अंतराल
- iii. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव।

उत्तर- मेरी समझ में पीढ़ी अंतराल ही 'सिल्वर वैडिंग' शीर्षक कहानी की मूल संवेदना है। यशोधर बाबू और उसके पुत्रों में एक पीढ़ी का अंतराल है। इसी कारण यशोधर बाबू अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। यह सिद्धांत और व्यवहार की लड़ाई है। यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं तो उनके पुत्र व्यवहारवादी। आज सिद्धांत नहीं व्यावहारिकता चलती है। यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं जो नयी पीढ़ी के साथ कहीं भी तालमेल नहीं रखते। पीढ़ी का अंतराल और उनके विचारों का अंतराल यशोधर बाबू और उनके परिवार के सदस्यों में वैचारिक अलगाव पैदा कर देता है।

प्रश्न 7. अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते। अच्छा न लगने के क्या कारण होंगे?

उत्तर- हमारे घर व विद्यालय के आस-पास निम्नलिखित बदलाव हो रहे हैं जिन्हें बुजुर्ग पसंद नहीं करते

- युवाओं द्वारा मोबाइल का प्रयोग करना।



- युवाओं द्वारा पैदल न चलकर तीव्र गति से चलाते हुए मोटर-साइकिल या स्कूटर का प्रयोग।
- लड़कियों द्वारा जीन्स व शर्ट पहनना।
- लड़के-लड़कियों की दोस्ती व पार्क में घूमना।
- खड़े होकर भोजन करना।
- तेज आवाज में संगीत सुनना।

बुजुर्ग पीढ़ी इन सभी परिवर्तनों का विरोध करती है। उन्हें लगता है कि ये हमारी संस्कृति के खिलाफ हैं। कुछ सुविधाओं को वे स्वास्थ्य की दृष्टि से खराब मानते हैं तो कुछ उनकी परंपरा को खत्म कर रहे हैं। महिलाओं व लड़कियों को अपनी सभ्यता व संस्कृति के अनुसार आचरण करना चाहिए।

प्रश्न 8. यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए

- i. यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं।

- ii. यशोधर बाबू में एक तरह का वंद्ध है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।
- iii. यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है।

उत्तर- यशोधर बाबू के बारे में हमारी यही धारणा बनती है कि यशोधर बाबू में एक तरह का वंद्ध है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता है पर पुराना छोड़ता नहीं, इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है। यद्यपि वे सिद्धांतवादी हैं तथापि व्यावहारिक पक्ष भी उन्हें अच्छी तरह मालूम है। लेकिन सिद्धांत और व्यवहार के इस द्वंद्व में यशोधर बाबू कुछ भी निर्णय लेने में असमर्थ हैं। उन्हें कई बार तो पत्नी और बच्चों का व्यवहार अच्छा लगता है तो कभी अपने सिद्धांत। इस द्वंद्व के साथ जीने के लिए मजबूर हैं। उनका दफ्तरी जीवन जहाँ सिद्धांतवादी है वहीं पारिवारिक जीवन व्यवहारवादी। दोनों में सामंजस्य बिठा पाना उनके लिए लगभग असंभव है। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।



STEP UP
ACADEMY

जूझ

- डॉ. आनन्द यादव

जूझ' मराठी के सुविख्यात कथाकार डॉ. आनंद यादव का बहुचर्चित एवं उल्लेखनीय आत्मकथात्मक उपन्यास है। इस पाठ में उपन्यास के कुछ अंश मात्र ही उद्धृत किए गए हैं। यह उपन्यास साहित्य अकादमी पुरस्कार (1990) से सम्मानित किया जा चुका है। 'जूझ' एक किशोर द्वारा भोगे हुए गवई (ग्रामीण) जीवन के खुरदरे यथार्थ और आंचलिक परिवेश की जीवंत गाथा है। अपने बचपन को याद करते हुए लेखक कहता है कि मेरा मन पाठशाला जाने के लिए बेचैन रहता था। परंतु मेरे पिता मुझे पाठशाला नहीं भेजना चाहते थे। वे स्वयं कोई काम न करके खेत का सारा काम मुझसे करवाते थे। इसलिए उन्हें मेरा पाठशाला जाना बिलकुल भी पसंद नहीं था।

एक दिन जब लेखक साथ कंडे थापने में अपनी माँ की सहायता कर रहा था तो वह अपनी माँ से पाठशाला जाने की इच्छा व्यक्त करता है। परंतु माँ भी आनंदा (लेखक) के पिता से बहुत डरती थी इसलिए वह अपने बेटे का खुला समर्थन नहीं कर सकी। लेखक स्वयं अपनी माँ से कहता है कि खेत के लगभग वे सभी काम खत्म हो गए जो मैं कर सकता था इसलिए तू मेरे पढ़ने की बात दत्ता जी राव सरकार से क्यों नहीं करती। चूंकि लेखक के पिता दत्ता जी राव के सामने नतमस्तक हो जाते थे और उनकी कोई भी बात मानने के लिए। बाध्य थे इसलिए लेखक को लगता है कि दत्ता जी राव ही मेरे पाठशाला का रास्ता खोल सकते हैं।

रात के समय माँ-बेटा दोनों दत्ता जी राव के घर अपनी फ़रियाद लेकर जाते हैं। माँ दत्ता जी राव को सब कुछ बता देती है कि वह (पिता) सारा दिन बाजार में रखमाबाई के पास गुजार देता है, और खेतों में काम आनंदा को करना पड़ता है। यह बात सुनकर दत्ता जी राव चिढ़ गए और उन्होंने लेखक के पिता को समझाने का आश्वासन देकर दोनों को घर भेज दिया।

दत्ता जी राव के बाड़े का बुलावा दादा (पिता जी) के लिए सम्मान की बात थी इसलिए बड़ी खुशी से दादा दत्ता जी राव के बाड़े में जाते हैं। आधे घंटे बाद बुलाने के बहाने लेखक भी वहीं चला जाता है। दत्ता जी राव लेखक को भी वहीं बैठा लेते हैं। बातचीत में दत्ता -जी राव लेखक से पूछते हैं, "कौन सी कक्षा में पढ़ता है रे तू?" लेखक कहता है, "जी पाँचवीं में पढ़ता था किंतु अब नहीं जाता हूँ। वार्तालाप में लेखक दत्ता जी राव को यह बता देता है कि मुझे पाठशाला दादा नहीं जाने देते। दत्ता जी ने दादा पर खूब गुस्सा किया। "तू लुगाई (पत्नी) और बच्चों को काम में जोत कर किस तरह खुद गाँवभर में खुले साँड की तरह घूमता है।"

अंत में दत्ता जी आनंदा (लेखक) को सुबह पाठशाला जाने को कहते हैं। दादा मेरे (आनंद) के पाठशाला जाने पर मान तो गए परंतु पाठशाला ग्यारह बजे होती। है इसलिए दिन निकलते ही खेत पर हाजिर होने के बाद खेत से सीधे पाठशाला जाना, सवेरे पाठशाला जाने के लिए बस्ता खेत में ही ले आना, छुट्टी होते ही सीधा खेत में आना और जब खेत में काम अधिक हो तो पाठशाला से गैर-हाजिर भी हो जाना आदि आदेश भी देते हैं। आनंदा दादा की सारी बातें मंजूर कर लेता है। उसका मन आनंद से उमड़ रहा था। परंतु दादा का मन आनंदा को पाठशाला भेजने के लिए अभी भी तैयार नहीं था। वे फिर कहते हैं, "हाँ। अगर किसी दिन खेत में नहीं आया तो गाँव में जहाँ मिलेगा। वहीं कुचलता हूँ कि नहीं-तुझे। तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है, बलिस्टर नहीं होनेवाला है तू? आनंदा गरदन नीची करके खाना खाने ।

लगा था। अगले दिन आनंदा का पाठशाला में जाना फिर शुरू हो गया। वह गरमी-सरदी, हवा-पानी, भूख-प्यास



आदि की बिलकुल भी परवाह नहीं करता था। खेतों के काम की चक्की में पिसते रहने से अब उसे छुटकारा मिल गया था। खेतों के काम की चक्की की अपेक्षा पाठशाला में मास्टर की छड़ी की मार आनंदा को अधिक अच्छी लगती थी। वह इस मार को भी मजे में सहन कर रहा था। गरमी की कड़क दोपहरी का समय पाठशाला की छाया में व्यतीत हो गया। आनंदा (लेखक) की पांचवीं कक्षा में उसके पहचान के दो ही लड़के थे। उसकी पहचान के सभी लड़के अगली कक्षा में चले गए थे। अपनी उम्र से कम उम्र के बच्चों के साथ कक्षा में बैठना आनंदा को बुरा लग रहा था। पुरानी पुस्तकों को वह लट्टे के बने बस्ते में ले गया था। लेकिन वे अब पुरानी हो चुकी थीं।

आनंदा (लेखक) की कक्षा में एक शरारती लड़का 'चहवाण' भी था। वह सदा आनंदा की खिल्ली उड़ाया करता था। वह उसके मैले गमछे को कक्षा में इधर-उधर फेंकने लगता है इतने में मास्टर जी आ गए और गमछा टेबल पर ही रह गया। आनंदा की धड़कन बढ़ गई और उसका दिल धक-धक करने लगा। पूछता से मास्टर को जब यह पता चला कि यह शरारत चहवाण ने की है तो वे उसे खूब लताड़ते हैं। लेखक के बारे में पूछने के बाद उन्होंने वामन पंडित की एक कविता पढ़ाई छुट्टी के बाद भी कई शरारती लड़कों ने उसकी धोती कई बार खींची थी। आनंदा का मन उदास हो गया क्योंकि कक्षा में कोई भी अपना नहीं था परंतु आनंदा ने पाठशाला जाना बंद नहीं किया।

पाठशाला में मंत्री नामक मास्टर जी गणित पढ़ाया करते थे। वे प्रायः छड़ी का प्रयोग नहीं करते थे बल्कि कमर में घुसा लगाते थे। शरारती बच्चे उनके सामने उधम नहीं मचा सकते थे। वसंत पाटिल नाम का एक लड़का शरीर से दुबला-पतला, किंतु बहुत होशियार था। उसके सवाल अकसर ठीक हुआ करते थे। कक्षा में उसका खूब सम्मान था। यह वसंत पाटिल आनंदा से उम्र में छोटा था। क्योंकि आनंदा ने पाठशाला छोड़कर ग़लती की थी परंतु फिर भी मास्टर जी को कक्षा की मॉनीटरी आनंदा को ही सौंपनी पड़ी। आनंदा अब पहले से ज्यादा पढ़ाई करने लगा था। हमेशा कुछ न कुछ पढ़ता रहता था।

अब गणित के सवाल उसकी समझ में आने लगे थे। वह वसंत पाटिल के साथ दूसरी तरफ़ से बच्चों के सवाल जाँचने लगा। फलस्वरूप आनंदा और वसंत पाटिल की दोस्ती जमने लगी थी। मास्टर जी अब लेखक को 'आनंदा' कहकर पुकारने लगे थे। आनंदा की मास्टरों के साथ आत्मीयता बढ़ गई और पाठशाला में उसका विश्वास भी बढ़ गया। पी पाठशाला में न० वा० सौंदलगेकर मराठी के मास्टर थे। जब वे मराठी में कोई कविता पढ़ाते तो स्वयं भी उसमें खूब रम जाते थे।

उनके पास सुरीला गला, छंद की बढ़िया चाल और रसिकता सब कुछ था। उन्हें मराठी की कविताओं के साथ अंग्रेजी की कविताएँ भी कंठस्थ थीं। वे कविता को सुनाते-सुनाते अभिनय भी किया करते थे। वे स्वयं भी कविता लिखा करते थे। जब मास्टर जी अपनी लिखी कोई कविता सुनाते थे तो आनंदा उन्हें तल्लीनता के साथ सुना करता था। वह अपनी आँखों और प्राणों की सारी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर जी के हाव-भाव, चाल, गति और रस का आनंद लेता था।

जब आनंदा खेत में काम करता था तो भी मास्टर जी के हाव-भाव, यति-गति और आरोह-अवरोह के अनुसार ही गाया करता था। वह कविता गाने के साथ-साथ अभिनय भी करने लगा था। पानी से क्यारियाँ कब भर जाती थीं उसे पता ही नहीं चलता था। पहले आनंदा को अकेलापन कचोटता था परंतु अब वह कविता गाकर अपने अकेलेपन को खत्म कर सकता था। अब वह अपने आप से ही खेलने लगा था बल्कि अब उसे अकेलापन अच्छा लगने लगा था क्योंकि अकेलेपन में वह कविताएँ गाकर नाचता भी था और अभिनय भी करता था।

अब वह कुछ अपनी भी कविताएँ बनाने लगा। एक बार तो मास्टर जी के कहने पर उसने बड़ी कक्षा के बच्चों के सामने कविता सुनाई थी। इस तरह आनंदा के अब कुछ नए पंख निकल आए थे। वह अपने मराठी-मास्टर के घर से काव्य-संग्रह लाकर पढ़ता था। अब आनंदा को भी लगने लगा था कि वह खेतों और गाँव के दृश्यों को देखकर कविता लिख सकता है। वह भैंस चराते धराते फ़सलों और जंगली फूलों पर

तुकबंदी कर कविता लिखने लगा था। जब किसी रविवार को कोई कविता बन जाती तो सोमवार को मास्टर जी को दिखाता था। मास्टर जी आनंदा को शाबाशी दिया करते थे। मास्टर जी यह भी बताते थे कि भाषा, छंद, लय, अलंकार और शुद्ध लेखन

कविता को सुंदर बना देते हैं। मास्टर जी की ये सभी बातें उसे मास्टर जी के और नजदीक ले आई। अब वह शब्दों के नशे में डूबने लगा था।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर- शीर्षक किसी भी रचना के मुख्य भाव को व्यक्त करता है। इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' पूरे अध्याय में व्याप्त है।

'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष। इसमें कथा नायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गाँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को विश्वसनीय ढंग से व्यक्त करता है। इसके अतिरिक्त, आनंद की माँ भी अपने स्तर पर संघर्ष करती है। लेखक के संघर्ष में उसकी माँ, देसाई सरकार, मराठी व गणित के अध्यापक ने सहयोग दिया। अतः यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी के कथानायक में संघर्ष की प्रवृत्ति है। उसका पिता उसको पाठशाला जाने से मना कर देता है। इसके बावजूद, कथा नायक माँ को पक्ष में करके देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह दादा व देसाई सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर कठिन शर्त मानता है। पाठशाला में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। इस प्रकार यह शीर्षक कथा-नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

प्रश्न 2. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ? (सैंपल पेपर-2007)

उत्तर- लेखक को मराठी का अध्यापक बड़े आनंद के साथ पढ़ाता था। वह भाव छंद और लय के साथ कविताओं

का पाठ करता था। बस तभी लेखक के मन में भी यह विचार आया कि क्यों न वह भी कविताएँ लिखना शुरू करें। खेतों में काम करते-करते और भैंसे चराते-चराते उसे बहुत-सा समय मिल जाता था। इस कारण लेखक ने कविताएँ लिखनी आरंभ कर दी और अपनी सारी कविताओं को वह मराठी के अध्यापक को दिखाता था ताकि उसकी कमियों को दूर किया जा सके।

प्रश्न 3. श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई?

उत्तर- श्री सौंदलगेकर मराठी के अध्यापक थे। लेखक बताता है कि पढ़ाते समय वे स्वयं में रम जाते थे। उनका कविता पढ़ाने का अंदाज बहुत अच्छा था। सुरीला गला, छंद की बढ़िया लय-ताल और उसके साथ ही रसिकता थी उनके पास। पुरानी-नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थीं। पहले वे एकाध कविता गाकर सुनाते थे-फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते। उसी भाव की किसी अन्य की कविता भी सुनाकर दिखाते। वे स्वयं भी कविता लिखते थे। याद आई तो वे अपनी भी एकाध कविता यह सब सुनते हुए, अनुभव करते हुए लेखक को अपना भान ही नहीं रहता था। लेखक अपनी आँखें और प्राणों की सारी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति आदि पर ध्यान देता था। उससे प्रभावित होकर लेखक भी तुकबंदी करने का प्रयास करता था। अध्यापक लेखक की तुकबंदी का संशोधन करते तथा उसे कविता के लय, छंद, अलंकार आदि के बारे में बताते। इन सब कारणों से लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगी।

अतीत में दबे पाँव

- ओम थानवी

“अतीत में दबे पाँव” साहित्यकार ओम थानवी’ द्वारा विरचित एक यात्रा-वृतांत है। वे पाकिस्तान स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के दो महानगरों। मोहनजोदड़ो (मुअनजोदड़ो) और हड़प्पा के अवशेषों को देखकर अतीत के सभ्यता और संस्कृति की कल्पना करते हैं। अभी तक जितने भी पुरातात्विक प्रमाण मिले उनको देखकर साहित्यकार अपनी कल्पना को साकार करने की चेष्टा करते हैं।

लेखक का मानना है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के दो सबसे पुराने और योजनाबद्ध तरीके से बसे शहर माने जाते हैं। वे मोहनजोदड़ो को ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर मानते हैं। लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का केंद्र है और शायद अपने जमाने की राजधानी जैसा। आज भी इस आदिम शहर की सड़कों और गलियों में सैर की जा सकती है। यह शहर अब भी वहीं है, जहाँ कभी था। आज भी वहाँ के टूटे घरों की रसोइयों में गंध महसूस की जा सकती है।

आज भी शहर के किसी सुनसान रास्ते पर खड़े होकर बैलगाड़ी की रुन-झुन की आवाजें सुनी जा सकती हैं। खंडहर बने घरों की टूटी सीढ़ियाँ अब चाहे कहीं न ले जाती हों, चाहे वे आकाश की ओर अधूरी रह गई हों, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर यह अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर चढ़ गए हैं। वहाँ चढ़कर आप इतिहास को नहीं बल्कि उससे कहीं आगे देख रहे हैं।

मोहनजोदड़ो में सबसे ऊँचा चबूतरा बौद्ध स्तूप है। अब यह केवल मात्र एक टीला बनकर रह गया है। इस चबूतरे पर बौद्ध भिक्षुओं के कमर भी हैं। लेखक इसे नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप मानते हैं। इसे देखकर रोमांचित होना स्वाभाविक है। यह स्तूपवाला चबूतरा शहर के एक खास हिस्से

में स्थित है। इस हिस्से को पुरातत्व के विद्वान ‘गढ़’ कहते हैं। ये ‘गढ़’ कभी-न-कभी राजसत्ता या धर्मसत्ता के केंद्र रहे होंगे ऐसा भी माना जा सकता है। इन शहरों की खुदाई से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाकी बड़ी इमारतें, सभा-भवन, ज्ञानशाला सभी अतीत की चीजें कही जा सकती हैं परंतु यह ‘गढ़’ उस द्वितीय वास्तुकला कौशल के बाकी बचे नमूने हैं।

मोहनजोदड़ो शहर की संरचना नगर नियोजन का अनूठा प्रमाण है, उदाहरण है। यहाँ की सड़कें अधिकतर सीधी हैं या फिर आड़ी हैं। आज के वास्तुकार इसे ‘ग्रिड प्लान’ कहते हैं। आज के नगरों के सेक्टर कुछ इसी नियोजन से मेल खाते हैं। आधुनिक परिवेश के इन सेक्टरवादी नागरिकों में रहन-सहन को लेकर नीरसता आ गई है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप में खोया हुआ है, दुनियादारी के अपनत्व में उसे विश्वास नहीं रहा है।

मोहनजोदड़ो शहर में जो स्तूप मिला है उसके चबूतरे के गढ़ के पीछे ‘उच्च’ वर्ग की बस्ती है। इस बस्ती के पीछे पाँच किलोमीटर दूर सिंधु नदी बहती है। अगर इन उच्च वर्गीय बस्ती से दक्षिण की तरफ नजर दौड़ाएँ तो दूर तक खंडहर, टूटे-फूटे घर दिखाई पड़ते हैं। ये टूटे-फूटे घर शायद कारीगरों के रहे होंगे। चूकिनिम्न वर्ग के घर इतनी मजबूत सामग्री के नहीं बने होंगे शायद इसीलिए उनके अवशेष भी। उनकी गवाही नहीं देते अर्थात इस पूरे शहर में गरीब बस्ती कहाँ है उसके अवशेष भी नहीं मिलते। टीले की दाईं तरफ एक लॉबी दिखती है। इसके आगे एक महाकुंड है। इस गली को इस धरोहर के प्रबंधकों ने ‘देव मार्ग’ कहा है।

यह महाकुंड चालीस फुट लंबा और पच्चीस फुट चौड़ा है। यह उस सभ्यता में सामूहिक स्नान के किसी अनुष्ठान का प्रतीक माना जा सकता है। इसकी गहराई रगत फुट है तथा



उत्तर और दक्षिण में सीढ़ियाँ उतरती हैं। इस महाकुंड के तीन तरफ़ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं उत्तर में एक पंक्ति में आठ स्नानघर हैं। यह वास्तुकला का एक नमूना ही कहा जाएगा क्योंकि इन सभी स्नानघरों के मुँह एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड के तल में पक्की ईंटों का जमाव है ताकि कुंड का पानी रिस न सके और अशुद्ध पानी कुंड में न आ सके। कुंड में पानी भरने के लिए पास ही एक कुआँ है। कुंड से पानी बाहर निकालने के लिए नालियाँ बनी हुई हैं। ये नालियाँ पक्की ईंटों से बनी हैं तथा ईंटों से ढकी हुई भी हैं। पुरातात्विक वैज्ञानिकों का मानना है कि पानी निकासी का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त इससे पहले इतिहास में दूसरा नहीं है।

महाकुंड के उत्तर-पूर्व में एक बहुत लंबी इमारत के खंडहर बिखरे पड़े हैं। इस इमारत के बीचोंबीच एक खुला आँगन है। इसके तीन तरफ बरामदे हैं। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसके साथ कभी छोटे-छोटे कमरे भी होंगे। ये कमरे और बरामदे धार्मिक अनुष्ठानों में ज्ञानशालाओं का काम देते थे। इस दृष्टि से देखें तो इस इमारत को एक 'धार्मिक महाविद्यालय' कहा जा सकता है। गढ़ से थोड़ा आगे। कुछ छोटे टीलों पर बस्तियाँ हैं। इन बस्तियों को 'नीचा नगर' कहकर पुकारा जाता है।

— पूर्व में बसी बस्ती 'अमीरों की बस्ती' है। आधुनिक युग में अमीरों की बस्ती पश्चिम में मानी जाती है। यानि कि बड़े-बड़े घर, चौड़ी सड़कें, ज्यादा कुएँ। मोहनजोदड़ो में यह उलटा था। शहर के बीचोंबीच एक तैंतीस फुट चौड़ी लंबी सड़क है। मोहनजोदड़ो में बैलगाड़ी होने के प्रमाण मिले हैं शायद इस सड़क पर दो बैलगाड़ियाँ एक साथ आसानी से आ-जा सकती हैं। यह सड़क बाजार तक जाती है। इस सड़क के दोनों ओर घर बसे हुए हैं। परंतु इन घरों की पीठ सड़कों से सटी हुई हैं। कोई भी घर सड़क पर नहीं खुलता। लेखक के अनुसार,

“दिलचस्प संयोग है कि चंडीगढ़ में ठीक यही शैली पचास साल पहने लू काबूजिए ने इस्तेमाल की।” चंडीगढ़ का कोई घर सड़क की।

तरफ़ नहीं खुलता। मुख्य सड़क पहले सेक्टर में जाती है फिर आप किसी के घर जा सकते हैं। शायद चंडीगढ़ के

वास्तुकार का—जिए ने यह सीख मोहनजोदड़ो से ही ली हों? ऐसा भी अनुमान लगाया जा सकता है। शहर के बीचोंबीच लंबी सड़कें और दोनों तरफ़ समांतर ढकी हुई नालियाँ हैं। बस्ती में ये नालियाँ इसी रूप में हैं। प्रत्येक घर में एक स्नानघर भी है। घर के अंदर से मैले पानी की नालियाँ बाहर हौदी तक आती हैं और फिर बड़ी नालियों में आकर मिल जाती हैं।

कहीं-कहीं वे खुली हो सकती हैं परंतु अधिकतर वे ऊपर से ढकी हुई हैं। इस प्रकार सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मोहनजोदड़ो के नागरिक स्वास्थ्य के प्रति कितने सचेत थे। शहर के कुएँ भी दूर से ही अपनी ओर प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान खींचते हैं। ये कुएँ पक्की-पक्की ईंटों के बने हुए हैं। पुरातत्व विद्वानों के अनुसार केवल मोहनजोदड़ो में ही सात सौ के लगभग कुएँ हैं। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि सिंधु घाटी की सभ्यता संसार में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। लेखक यह भी प्रश्न उठाते हैं कि नदी, कुएँ, : कुंड स्नानघर और बेजोड़ पानी निकासी को क्या हम सिंधु घाटी की सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं।

मोहनजोदड़ो की बड़ी बस्ती में घरों की दीवारें ऊँची और मोटी हैं। मोटी दीवार से यह अर्थ लगाया जा सकता है कि यह दो मंजिला घर होगा। इन घरों की एक खास बात यह है कि सामने की दीवार में केवल प्रवेश द्वार है कोई खिड़की नहीं है। ऊपर की मंजिल में खिड़कियाँ हैं। कुछ बहुत बड़े घर भी हैं शायद इनमें कुछ लघु उद्योगों के कारखाने होंगे। ये सभी छोटे-बड़े घर एक लाइन में हैं। अधिकतर घर लगभग तीस गुणा तीस फुट के हैं। सभी घरों की वास्तुकला लगभग एक जैसी है। एक बहुत बड़ा घर है जिसमें दो आँगन और बीस कमरे हैं। इस घर को 'मुखिया' का घर कहा जा सकता है। घरों की खुदाई से एक दाढ़ीवाले याजक-नरेश' और एक प्रसिद्ध 'नर्तकी' की मूर्तियाँ भी मिली हैं।

'नर्तकी' की मूर्ति अब दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है। यहीं पर एक बड़ा घर भी है जिसे 'उपासना केंद्र' भी समझा जा सकता है। इसमें आमने-सामने की दो चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपर की मंजिल की ओर जाती हैं। ऊपर की मंजिल अब बिलकुल ध्वस्त हो चुकी है। नगर के पश्चिम में एक

‘रंगरेज का कारखाना’ भी मिला है जिसे अब सैलानी बड़े चाव से देखते हैं। घरों के बाहर कुछ कुएँ सामूहिक प्रयोग के लिए हैं। शायद ये कुएँ कर्मचारियों और कारीगरों के लिए घर रहे होंगे।

बड़े घरों में कुछ छोटे कमरे हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि शहर की आबादी काफ़ी रही होगी। एक विचार यह भी हो सकता है कि ऊपर की मंजिल में मालिक और नीचे के घरों में नौकर-चाकर रहते होंगे। कुछ घरों में सीढ़ियाँ नहीं हैं शायद इन घरों में लकड़ी की सीढ़ी रही है जो बाद में नष्ट हो गई होगी। छोटे घरों की बस्ती में संकरी सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों के पायदान भी ऊँचे हैं। शायद ऐसा जगह की कमी के कारण होता होगा।

लेखक ने अपनी यात्रा के समय जब यह ध्यान दिया कि खिड़कियों और दरवाजों पर छज्जों के निशान नहीं हैं। गरम इलाकों में ऐसा होना आम बात होती है। शायद उस समय इस इलाके में इतनी कड़ी धूप न पड़ती हो। यह तथ्य भी पूरी तरह से स्थापित हो चुका है कि उस समय अच्छी खेती होती थी। यहाँ लोग खेतों की सिंचाई कुओं से करते थे। नहर के प्रमाण यहाँ नहीं मिलते शायद लोग वर्षा के पानी पर अधिक निर्भर रहते होंगे। बाद में वर्षा कम होने लगी हो और लोगों ने कुओं से अधिक पानी निकाला होगा। इस प्रकार भू-जल का स्तर काफ़ी नीचे चला गया हो। यह भी हो सकता है कि पानी के अभाव में सिंधु घाटी के वासी यहाँ से उजड़कर कहीं चले गए

हों और सिंधु घाटी की समृद्ध सभ्यता इस प्रकार नष्ट हो गई हो। लेखक के इस अनुमान से इनकार नहीं किया जा सकता।

मोहनजोदड़ो के घरों और गलियों को देखकर तो अपने राजस्थान का भी खयाल हो आया। राजस्थान और सिंध-गुजरात की दृश्यावली। एक-सी है। मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए जैसलमेर के मुहाने पर बसे पीले पत्थरों के खूबसूरत गाँव की याद लेखक के जहन में ताजा हो आई। इस खूबसूरत गाँव में हरदम गरमी का माहौल व्याप्त है। गाँव में घर तो हैं परंतु घरों में लोग नहीं हैं। कहा जाता है कि कोई डेढ़ सौ साल पहले राजा के साथ तकरार को लेकर इस गाँव के स्वाभिमानी नागरिक रातोंरात अपना घर-बार छोड़कर चले गए थे। बाद में इन घरों के दरवाजे, खिड़कियाँ लोग उठाकर ले गए थे। अब ये घर खंडहर में परिवर्तित हो गए हैं।

परंतु ये घर ढहे नहीं। इन घरों की खिड़कियों, दरवाजों और दीवारों को देखकर ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। लोग चले गए लेकिन वक्त वहीं रह गया। खंडहरों ने उसे वहाँ रोक लिया हो। जैसे सुबह गए लोग शाम को शायद वापस लौट आएँ। मोहनजोदड़ो में मिली ठोस पहियोंवाली बैलगाड़ी को देखकर लेखक को अपने गाँव की बैलगाड़ी की याद आ गई जिसमें पहले दुल्हन। बैठकर ससुराल आया करती थी। बाद में इन गाड़ियों में आरेवाले पहिए और अब हवाई जहाज से उतरे हुए पहियों का प्रयोग होने लगा।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था, कैसे?

उत्तर- सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजो-दड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी

जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवतः वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

प्रश्न 2. ‘सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध

प्रश्न 6. इस पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन है, जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है। किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल, जिसको आपने नज़दीक से देखा हो, का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- मैंने हर्षवर्धन के किले को नजदीक से देखा है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है। यह बहुत बड़ा किला है। जिसे हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी बना रखा था। अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद वह थानेसर का राजा बना। इस किले के चारों ओर प्रत्येक कोने पर ऊँचे-ऊँचे स्तंभ हैं। इसके परकोटों पर खूबसूरत मीनाकारी की गई है। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के रहने के लिए महल के साथ ही कमरे बनवाए हुए थे। किले का मुख्य गुंबद बहुत ऊँचा था। इसके साथ ही एक मीना बाज़ार था जहाँ पर हर प्रकार का साजो-सामान बिकता था। यह किला आज भी शांतभाव से खड़ा अपना इतिहास बताता प्रतीत होता है। किले का प्रवेश द्वार बहुत मजबूत है जहाँ तक कई सीढ़ियाँ पार करके पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न 7. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर- सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णतः सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्नलिखित कारण हैं -

i. यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है।

- ii. यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।
- iii. मुअनजो-दड़ो में स्नानागार हैं। एक पंक्ति में आठ स्नानागार हैं जिनमें किसी के भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड में पानी के रिसाव को रोकने के लिए चूने और चिराड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।
- iv. जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईंटों से बने हैं। ये ईंटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।
- v. मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।
- vi. मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं।

प्रश्न 8. सिंधु घाटी सभ्यता का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिला है। सिर्फ अवशेषों के आधार पर ही धारणा बनाई है। इस लेख में मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। क्या आपके मन में इससे कोई भिन्न धारणा या भाव भी पैदा होता है? इन संभावनाओं पर कक्षा में समूह-चर्चा करें।

उत्तर- यदि मोहनजोदड़ो अर्थात् सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में धारणा बिना साक्ष्यों के बनाई गई है तो यह गलत नहीं है। क्योंकि जो कुछ हमें खुदाई से मिला है वह किसी साक्ष्य से कम नहीं। खुदाई के दौरान मिले बर्तनों, सिक्कों, नगरों, सड़कों, गलियों को साक्ष्य ही कहा जा सकता है। साक्ष्य लिखित हों यह जरूरी नहीं है। जो कुछ हमें सामने दिखाई दे रहा है वह भी तो प्रमाण है। फिर हम इस तथ्य को कैसे भुला दें कि ये दोनों नगर विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता के प्रमाण हैं। इन्हीं के कारण अन्य सभी संस्कृतियाँ विकसित हुईं। मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। वह हर दृष्टि से प्रामाणिक है। उसके बारे में अन्य कोई धारणा मेरे मन में नहीं बनती।





डायरी के पन्ने

- ओम थानवी

ऐन फ्रैंक की डायरी 'ऐन फ्रैंक द्वारा रचित 'डायरी' विधा को एक सशक्त कृति है। यह डायरी द्वितीय विश्व युद्ध के समय यहदियों पर ढाए गए जुल्मों और मानसिक यातनाओं का जीवंत दस्तावेज है। यहूदी समुदाय ऐसा समुदाय था जिसे द्वितीय विश्व युद्ध में सबसे ज्यादा कष्ट उठाने पड़े। उन्हें गुप्त तहखानों में लंबे-लंबे अरसे तक गुजर-बसर करना पड़ा। वहाँ उन्हें भूख, गरीबी, बीमारी, शारीरिक एवं मानसिक पीड़ाओं को सहते हुए पशुओं जैसा जीवन जीना पड़ा। जर्मनी के नाजियों के शिकंजे में फंसकर उन्हें अनेक अमानवीय यातनाओं से दो-चार होना पड़ा।

ऐन फ्रैंक की डायरी दो यहूदी परिवारों के अज्ञातवास की व्यथा-कथा है। एक था फ्रैंक परिवार, जिसमें माता-पिता और उनकी दो बेटियाँ मार्गोट और ऐन थीं। मार्गोट की उम्र सोलह साल और ऐन की आयु तेरह साल की थी। उनके साथ दूसरा परिवार था वान दान दंपती और उनका सोलह वर्षीय बेट पीटर। उनके साथ आठवाँ व्यक्ति था मिस्टर डसेल। इस आठ सदस्यीय परिवार की फ्रैंक साहब के कार्यालय में काम करने वाले ईसाई कर्मचारियों ने मानवीय स्तर पर मदद की थी।

ऐन ने इसी अज्ञातवास को कलमबद्ध किया। इस डायरी में भय, आतंक, बीमारी, भूख, प्यास, मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, घृणा, हवाई हमले का डर, पकड़े जाने का भय, बढ़ती उम्र की तकलीफें, सपने, कल्पनाएँ, बाहरी दुनिया से डरने की पीड़ा, मानसिक एवं शारीरिक आवश्यकताएं हंसी-मजाक, युद्ध की पीड़ा और अकेलेपन का दर्द सब कुछ लिपिबद्ध है। यह पीडाजन्य स्थितियों को दर्ज करती डायरी 2 जून, 1942 से शुरू होकर 1 अगस्त, 1944 के बीच लिखी गई है।

4 अगस्त, 1944 को किसी व्यक्ति की सूचना पर इन आठ लोगों को पकड़ लिया जाता है। सौभाग्य से यह डायरी

पुलिस के हथे नहीं चढ़ी, वरना तो यह डायरी कहीं गुम होकर रह जाती। 1945 में ऐन की असमय मृत्यु के पश्चात उनके पिता ओरो फ्रैंक ने इसे 1947 में प्रकाशित करवाया। ऐन ने यह डायरी चिट्ठियों के माध्यम से लिखी थीं। ये चिट्ठियाँ ऐन ने उपहार के रूप में मिली गडिया 'किकी' को संबोधित करके लिखी थीं।

8 जुलाई, सन 1942 दिन बुधवार को अपनी प्यारी किकी को संबोधित करके लिखी चिट्ठी में ऐन बताती है कि वह रविवार की दोपहर थी। मैं बाल्कनी में धूप से अलसाई-सी बैठी थी इसलिए मुझे दरवाजे की घंटी की आवाज सुनाई दी। वहाँ मेरी बड़ी बहन मार्गोट भी थी। वह गुस्से में दिख रही थी, क्योंकि युद्ध के दिनों में पापा को ए० एस० एस० से बुलाने का नोटिस मिला था। माँ उस समय पापा के बिजनेस पार्टनर मिस्टर वान दान को देखने गई हुई थी। यह सुनकर मैं हैरान रह गई थी। यह सब कोई जानता है कि ए० एस० एस० के बुलाने का अर्थ है कि यातना और बंद कोठरियों, परंतु हम सभी इस बात के लिए राजी नहीं थे कि पापा बंद कोठरी में यातनाएँ सहें।

इसलिए हम सभी ने यह निर्णय लिया कि सभी पापा के कार्यालय और उससे सटे गोदाम में अज्ञातवासी के रूप में रहेंगे। इसलिए हम सबने अपने दैनिक जीवन की जरूरतों के लिए आवश्यक सामान थैलों में भरा और पापा के कार्यालय के कमरों में रहने लगे। वहाँ चारों ओर अव्यवस्था तथा फाइलें और अलमारियों का साम्राज्य था। थोड़ा बहुत ठीक करके हम सब वहाँ हंसी-मजाक, रूठना-मनाना, जोक सुनना-सुनाना और बहसों आदि में समय व्यतीत करने लगे। दिन का उजाला हमारे लिए दूर की बात थी। रात के अंधेरे में दिन कटते थे। वहाँ एक-एक सप्ताह के लिए बिजली गुल हो जाती थी। चार बजते ही अंधेरा छा जाता था।

यह समय हम ऊल-जलूल की हरकतें करते गुजारते थे। हम पहेलियाँ बुझाते थे, अंधेरे में व्यायाम करते, अंग्रेजी और फ्रेंच में बातचीत करते तथा किताबों की समीक्षा किया करते थे। अब मैंने समय गुजारने का नया तरीका ढूँढ़ निकाला था। मैंने दूरबीन लगाकर पड़ोसियों के रोशनी वाले कमरों में झाँकना शुरू किया। दिन में पर्दे नहीं हटा सकते थे परंतु रात के अंधेरे में पर्दे हटा दिए जाते थे। हमारे पड़ोसी बड़े दिलचस्प लोग थे। जब मैंने अपने पड़ोसियों को दूरबीन से देखा तो पाया कि कोई खाना खा रहा था, कोई फ़िल्म बना रहा था, तो सामने वाले घर में एक दंत चिकित्सक एक सहमी हुई बुढ़िया के दाँतों से जूझ रहा था।

मिस्टर डसेल बच्चों के साथ खूब आनंदपूर्ण रहते थे और उन्हें खूब प्यार करते थे। वे एक अनुशासन-प्रिय व्यक्ति थे और अनुशासन। पर लंबे-लंबे भाषण दिया करते थे। ये भाषण उबाऊ और नींद लाने वाले होते थे। मैं उनके भाषणों को केवल सुनने का अभिनय किया करती थी। वे मेरी इन सभी बातों को मम्मी को बताया करते और मम्मी मुझे खूब डाँटा करती थी फिर मुझे मिसेज वान अपने पास बुलाया करती थी। यह बात ऐन ने किकी को शनिवार 26 नवंबर, 1942 की चिट्ठी में लिखी थी।

शुक्रवार 19 मार्च, 1943 की चिट्ठी में 'किकी' को ऐन लिखती है कि हमें यह सुनकर निराशा हुई कि टर्की अभी युद्ध में शामिल नहीं हुआ है। यह भी खबर थी कि एक केंद्रीय मंत्री का बयान आया कि जल्द ही टर्की यह तटस्थता खत्म कर देगा और अखबार बेचने वाला चिल्ला रहा था कि 'टर्की इंग्लैंड के पक्ष में और भी अनेक उत्साहवर्धक अफवाहें सुनने को मिल रही थीं। हजार गिल्डर के नोट अवैध मुद्रा घोषित कर दिए गए थे। काला धंधा करने वालों के लिए यह एक बड़ा झटका था। ये लोग अब भूमिगत हो गए थे। पाँच सौ गिल्डर के नोट भी अब बेकार हो गए थे। मार्गोट मिस्टर डसेल की डच अध्यापिका बन गई थी। वह उनके पत्र ठीक किया करती थी। पापा।

के मना करने के बाद मार्गोट ने यह कार्य बंद कर दिया था परंतु मुझे फिर लगने लगा कि वह मिस्टर डसेल को चिट्ठियाँ लिखना फिर शुरू कर रही थी। मिस्टर हिटलर की

घायल सैनिकों से बातचीत हमने रेडियो के माध्यम से सुनी थी। यह एक करुणाजनक अनुभव था। - ऐन 'किकी' को लिखी एक चिट्ठी में जिक्र करती है कि मुझे पिछले सप्ताहों से परिवार के वृक्षों और वंशावली तालिकाओं में खासी रुचि हो गई थी। यह काम करने में इस नतीजे पर पहुंची कि एक बार तुम खोजना शुरू कर दो तो तुम्हें अतीत में गहरे और गहरे उतरना पड़ेगा। मेरे पास फ़िल्मी कलाकारों की तस्वीरों का एक अच्छा खासा संग्रह हो गया था।

मिस्टर कुगलर हर सोमवार मेरे लिए एक 'सिनेमा म एंड थियेटर' पत्रिका की प्रति अवश्य लाते थे। मैं फ़िल्म के मुख्य नायकों और नायिकाओं के नाम और समीक्षा फरटि से करती थी। जब मैं नई केश-सज्जा बनाकर बाहर निकलती तो मुझे यह अंदेशा पहले ही रहता था कि लोग मुझे टोककर कहेंगे कि मैं फलॉ फ़िल्म की स्टार की नकल कर रही है। जब मैं यह कहती कि यह मेरा अपना आविष्कार है तो लोग मेरा मजाक करते थे। जहाँ तक मेरे हेयर स्टाइल का। सवाल है यह आधे घंटे से अधिक टिक नहीं पाता था। मैं इससे बोर हो जाती और सबकी टिप्पणियाँ सुनते-सुनते मेरे कान पकने लगते। मैं सीधे गुसलखाने में जाती और मेरे बाल फिर से उलझकर धुंधराले हो जाते थे।

ऐन फ्रेंक बुधवार 28 जनवरी, 1944 को एक चिट्ठी के माध्यम से अपनी प्यारी गुड़िया 'किकी' को बताती है कि जान और मिस्टर क्लीमेन भी अज्ञातवास में छुपे अथवा भूमिगत हो गए थे। लोगों के बारे में कहना और सुनना अच्छा लगता था। हम सभी उनकी बातों को। ध्यान से सुना करते थे। वह कहा करते थे कि 'हमें उन सबकी तकलीफों से हमदर्दी है जो गिरफ्तार हो गए हैं और उन लोगों की खुशी में ! हमारी खुशी है जो कैद से आजाद हो गए हैं।

भूमिगत होना या अज्ञातवास चले जाना अब आम बात हो गई है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो छुपे लोगों को वित्तीय सहायता पहुँचाते हैं। यह बात हैरान कर देने वाली है कि ये लोग अपनी जान जोखिम में डाल करीदूसरों की मदद। करते हैं। इसमें सबसे बढ़िया उन लोगों का है जो आज तक हमारी मदद कर रहे हैं और हमें उम्मीद है कि हमें सुरक्षित किनारे तक



ले जाएँगे। वे प्रतिदिन ऊपर हमारे पास आकर कारोबार और राजनीति की बातें करते थे। वे हमारे जन्मदिनों पर फूल और उपहार लेकर आते। वे हमें हमेशा खुश रखने के लिए कोशिश करते रहते थे। वे सदैव अपनी बेहतरीन भावनाओं और प्यार से हमारे दिल को जीत लेते थे।

4. ऐन 'किकी' को संबोधन करते हुए कहती है कि कैबिनेट मंत्री बाल्के स्टीन ने लंदन से डच प्रसारण में कहा है कि युद्ध के बाद। युद्ध का वर्णन करने वाली डायरियों और पत्रों का संग्रह किया जाएगा। यह सुनते ही हर कोई मेरी डायरी को पाने के लिए उत्सुक था। ऐन सोचती है कि दस साल बाद जब लोगों को पता चलेगा कि हम किस प्रकार अज्ञातवास में जी रहे थे, शायद लोग चकित रह जाएँगे। हवाई हमले के समय औरतें बुरी तरह से डर जाती थीं। जब ब्रिटिश लड़ाकू जहाज 550 टन गोला बारूद बरसाते थे तो हमारे घर घास की पत्तियों की तरह काँप जाते थे। हमारे घरों में अनेक अजीब तरह की महामारियाँ फैल रही थीं।

चोरी-चकारी की घटनाएं लगातार बढ़ रही थीं। डच लोगों में अंगूठी पहनने का रिवाज खत्म हो गया था। आठ-दस वर्ष के छोटे बच्चे घरों की खिड़कियाँ तोड़कर घरों में घुस जाते। थे। उनको जो चीज़ हाथ लगती थी, उसे चुरा ले जाते थे। अगर आप अपने घर से पाँच मिनट के लिए बाहर चले गए तो आपका घर पूरी तरह से साफ़ हो चुका होता था। गली नुक्कड़ों पर बिजली से चलने वाली घड़ियाँ चोरी हो जाती थीं तथा सार्वजनिक टेलीफोनों और उनके पुर्जे अचानक गायब हो जाते थे। डच लोग भूखे रहते थे। पुरुषों को जर्मनी भेजा जा रहा था। घर में बच्चे बीमार थे और भूख से बेहाल थे। सब लोग फटे-पुराने कपड़े पहनते थे तथा फटे जूतों को पहनकर काम चला रहे थे। बिल्कुल जीवन दूभर हो गया था।

मंगलवार 11 अप्रैल, सन् 1944 के दिन लिखी डायरी में ऐन लिखती है कि शनिवार के कोई दो बजे तेज गोलाबारी शुरू हो गई थी। मशीनगनों आग बरसा रही थीं। रविवार के दिन पीटर और मैं दूसरी मंजिल पर सटे बैठे थे। हम छह बजे ऊपर गए और सवा सात बजे तक एक-दूसरे से सटकर बैठे रहे क्योंकि कुशन बहुत छोटा था। रेडियो पर बहुत ही खूबसूरत

भोजाई संगीत बज रहा था। मुझे रात को बजने वाला राग बहुत भाता है। यह संगीत मेरी आत्मा की गहराइयों में उतरता चला जा रहा था।

चूंकि हम मिस्टर डसेल का कुशन ऊपर ले गए थे और इसी बात को लेकर मि० डसेल नाराज हो रहे थे इसलिए हम जल्दी से भागकर नीचे उतर आए थे। हमने मिस्टर डसेल के कुशन में कुछ ब्रुश डाल दिए। हम यह अंदाजा लगा रहे थे कि मिस्टर डसेल इस पर बैठेंगे तो खूब हँसेंगे परंतु मिस्टर डसेल अपने कमरे। में जाकर बैठ गए और फिर हमने कुशन में डाले ब्रुशों को बाहर निकाला। इस छोटे से प्रहसन पर हँसते-हँसते हमारा बुरा हाल हो रहा था।

लेकिन जल्द ही यह हँसी-मज़ाक डर में तबदील हो गई जब यह अंदाजा लगाया गया कि पुलिस के आने की आशंका है। सभी मर्द लोग इस बात को लेकर नीचे चले गए थे और औरतें डर से सहमी हुई थीं। फिर बत्तियाँ बुझा दी गई थीं। देवी रात जब सभी मर्द एक बार। फिर नीचे गोदाम में गए तो संधमार अपने काम में लगे हुए थे। मर्दों को देखकर वे भाग गए थे। उनका यह प्रयास निष्फल कर दिया गया था। यह घटना अपने आप में एक बड़ी मुसीबत थी।

13 जून, दिन मंगलवार, 1944 की चिट्ठी में ऐन 'किकी' को बताती है कि अब वह पंद्रह वर्ष की हो गई है। इस जन्मदिन पर सभी ने मुझे उपहार दिए थे। अब दुश्मन देशों के एक-दूसरे पर हमले तेज़ हो गए थे। बेहद खराब मौसम, लगातार वर्षा, तेज़ हवाएँ और समुद्र अपने पूरे उफान पर था। चर्चिल तथा अन्य अधिकारी उन गाँवों का दौरा कर रहे थे जिन पर ब्रिटिश सैनिकों ने कब्जा कर लिया तथा बाद के में मुक्त कर दिया था। चर्चिल एक जन्मजात बहादुर थे। वे टॉरपीड नाव में थे। इन्हीं टारपीड नावों के माध्यम से तटों पर गोलाबारी की जाती थीं। अगर ब्रिटिश ने जर्मनी के साथ संधि कर ली होती तो हालैंड और उसके पड़ोसी देशों के हालात खराब हो जाते। हालैंड जर्मनी 1 बन चुका होता और इस प्रकार उसका अंत भी हो सकता था।

ऐन अपनी निजी बात को सार्वजनिक करते हुए 'किकी' को कहती है कि "यह सच है कि पीटर मुझे प्यार

करता है, गर्लफ्रेंड की। तरह नहीं बल्कि एक दोस्त की तरह। उसका स्नेह दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है लेकिन कोई रहस्यमयी ताकत हम दोनों को पीछे की तरफ खींचती है। मैं नहीं जानती कि वो कौन-सी शक्ति है।” ऐन पीटर के प्रेम में दीवानी है। वह स्वयं कहती है ‘अगर मैं उसके कमरे में एक-दो दिन के लिए न जा पाऊँ तो मेरी बुरी हालत हो जाती है, मैं उसके लिए तड़पने लगती हूँ।’

पीटर एक सच्चा, अच्छा और ईमानदार लड़का है लेकिन वह मुझे कई तरह से निराश करता है। वह शांतिप्रिय, सहज, सरल, सहनशील एवं आत्मीय व्यक्ति था। उसका एक मिशन था कि वह उन सभी इल्जामों को गलत साबित कर सके जो उसके ऊपर लगे हुए थे। उसके मन में मेरे प्रति जो बात थी वह कहना चाहता था परंतु पता नहीं क्यों वह इसे अभिव्यक्त नहीं करना चाहता था। हम दोनों अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य की बातें किया करते थे, परंतु वह चीज (प्रेम) जो हम दोनों के मन में थी उसकी बात कभी नहीं किया करते थे।

हम अपने प्रकृति प्रेम के बारे में ऐन कहती हैं कि वह प्रकृति को निहारना चाहती है और यही सोचकर उन स्मृतियों में खो जाती है। – जब नीला आकाश, पक्षियों की चहचहाने की आवाजें, चाँदनी रात और खिली कलियाँ उस पर जादू-सा कर देती थीं। अब ये सभी चीजें बीते जमाने की हो गई हैं। वह आगे कहती है-“आसमान, बादलों, चाँद और तारों की तरफ देखना मुझे शांति और आशा की भावना से। सरोबार कर देता है।”

उसके दिमाग में कुछ इस प्रकार के प्रश्न उठते हैं जो उसे

लगातार परेशान करते थे जैसे पुरुषों का औरतों पर शुरू से शासन करना। सौभाग्य से शिक्षा, काम और प्रगति ने औरतों की आँखें खोल दी हैं। अब कई देशों में उन्हें बराबरी का दर्जा दिया जाता है। आधुनिक महिलाएँ अब स्वतंत्र होना चाहती हैं। वह चाहती है कि महिलाओं का पूरा सम्मान होना चाहिए। वह पुरुष की मानसिकता के बारे में कहती है कि “सैनिकों और युद्धों के वीरों का सम्मान किया जाता है, उन्हें अलंकृत किया जाता है, उन्हें अमर बना डालने। तक का शौर्य प्रदान किया जाता है, शहीदों को पूजा भी जाता है, लेकिन कितने लोग ऐसे हैं जो औरतों को भी सैनिक का दर्जा देते हैं ?”

लेखक श्री पोल दे क्रुइफ की ‘मौत के खिलाफ मनुष्य एक पुस्तक में जिक्र करते हुए वह कहती है कि आमतौर पर युद्ध में लड़ने वाले वीर सैनिक जितनी तकलीफ, पीड़ा, दर्द, बीमारी और यंत्रणा उठाते हैं उससे कहीं अधिक दर्द वे औरतें उठाती हैं जो बच्चे को जन्म देती हैं। जब बच्चा जनने के बाद औरत के शरीर का आकर्षण कम हो जाता है तो उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। लोग शायद ये भूल जाते हैं कि औरत ही मानव जाति की निरंतरता बनाए रखती है।

वह लगातार संघर्ष करती है शायद इतना संघर्ष सारे सिपाही मिलकर भी नहीं करते। वह अंत में कहती है कि मैं कदापि यह नहीं चाहती कि औरतें बच्चे जनना बंद कर दें, परंतु मैं उन लोगों के खिलाफ हूँ जो समाज में औरतों के सौंदर्यमयी योगदान को महान नहीं मानते। वह आशा के साथ अपने कथन को समाप्त करती है कि अगली सदी। मैं औरतें ज्यादा सम्मान और सराहना की हकदार बनेंगी।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. “यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलनेवाली एक आवाज़ है। एक ऐसी आवाज़, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।” इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक

की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।

उत्तर- यह बात बिलकुल सही है कि यह डायरी नाजियों द्वारा यहूदियों पर किए गए अत्याचारों का खुला दस्तावेज है। इससे हमें द्रवित्वीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों



की स्थिति, भय, भूख, आतंक, बीमारी, लाचारी आदि सभी स्थितियों को बहुत करीब से देखने व अनुभव करने को मिलता है। यह एकमात्र ऐसी डायरी है जो उस साधारण-सी लड़की ऐन ने किसी ऐतिहासिक उद्देश्य से नहीं, अपितु अपने एकांत अज्ञातवास में समय बिताने के उद्देश्य से लिखी थी। वह कोई महान संत या कवि नहीं थी, फिर भी उसकी आवाज से हमें यहूदियों का दुख जानने का अवसर प्राप्त होता है। दूसरे विश्व-युद्ध में हिटलर ने यहूदियों को अनगिनत यातनाएँ दीं तथा उन्हें भूमिगत जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया था।

डर इतना था कि ये लोग सूटकेस लेकर भी सड़क पर नहीं निकल सकते थे। इन्हें दिन का सूर्य व रात का चंद्रमा देखना भी वर्जित था। इन्हें राशन की कमी रहती थी तथा बिजली का कोटा भी था। ये फटे-पुराने कपड़े और घिसे-पिटे जूतों से काम चलाते थे। ऐन फ्रैंक की डायरी में भय, आतंक, भूख, प्यास, मानवीय संवेदना हवाई हमले का डर, पकड़े जाने का डर, किशोर मन के सपने, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, अकेलेपन की पीड़ा आदि का वर्णन है। इस डायरी में कल्पना का अंश नाममात्र का हो सकता है। इस तरह साधारण लड़की द्वारा रचित हुए भी यहा साठ लखयही लोग की आवाज बना जाता है। अता इत्या हत्यु की यहा टिप्पिण विकुल सही है।

प्रश्न 2. “काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला...।” क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?

उत्तर- हमें लगता है कि अकेलापन ही ऐन फ्रैंक के डायरी लेखन का कारण बना। यद्यपि वह अपने परिवार और वॉन दंपत्ति के साथ अज्ञातवास में दो वर्षों तक रही लेकिन इस दौरान किसी ने उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया। पीटर यद्यपि उससे प्यार करता है लेकिन केवल दोस्त की तरह। जबकि हर किसी की शारीरिक जरूरतें होती हैं लेकिन पीटर उसकी इस जरूरत को नहीं समझ सका। माता-पिता और बहन ने भी कभी उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं। समझी शायद इसी कारण वह डायरी लिखने लगी।

प्रश्न 3. “प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें-इसकी स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व-व्यवस्था ने न सिर्फ स्त्री को व्यक्तित्व-विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनाधिक्य की समस्या भी पैदा की है।” ऐन की डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में व्यक्त विचारों के संदर्भ में इस कथन का औचित्य हूँदें।

उत्तर- ऐन का मानना है कि पुरुषों ने औरतों पर शुरू में शारीरिक बल, आर्थिक आजादी आदि के आधार पर शासन किया। वे अपनी मर्जी से हर कार्य करते रहे हैं। औरतें अब तक अपनी बेवकूफी के कारण यह अन्याय सहती रही हैं। अब यह स्थिति बदल गई है। शिक्षा, काम और प्रगति ने औरतों को जागरूक किया है। कुछ देशों ने उन्हें बराबरी का हक दिया है। समाज में संवेदनशील पुरुषों व औरतों ने इस अन्याय को गलत माना है। आज औरतें पूर्ण आजादी चाहती हैं।

ऐन चाहती है कि औरतों को पुरुषों की तरह सम्मान दिया जाए, क्योंकि औरत ही मानव-जाति की निरंतरता को बनाए रखने के लिए पीड़ा सहती है। ऐन चाहती है कि औरतों को बच्चे जनने चाहिए क्योंकि प्रकृति ऐसा चाहती है। वह उन मूल्यों व व्यक्तियों की निंदा करती है जो समाज में औरतों को सम्मान नहीं देते। वह स्त्री जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है। उसके भीतर भविष्य को लेकर आशा व सपने हैं। उसे उम्मीद है कि आगामी सदी में औरतों द्वारा बच्चे पैदा करने वाली स्थिति बदलेगी और उन्हें ज्यादा सम्मान व हक मिलेगा।

प्रश्न 4. “ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फ़र्क मिट गया है।” इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।

उत्तर- ऐन ने जब डायरी लिखी वह बहुत ही कठिन दौर था। उस कठिन दौर में यहूदियों का जीवन बहुत कष्टकारी था। उस भयानक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ इस डायरी के द्वारा प्रस्तुत किया है। इसी डायरी में अपने अकेलेपन का चित्रण भी ऐन ने किया है। ऐन ने लिखा कि मुझे कभी

कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मेरी भावनाओं को समझ सके। यह बात सिद्ध करती है कि ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का प्रामाणिक अंकन भी है।

प्रश्न 5. ऐन ने अपनी डायरी 'किट्टी' (एक निर्जीव गुड़िया) को संबोधित चिट्ठी की शकल में लिखने की जरूरत क्यों महसूस की होगी?

उत्तर- ऐन की डायरी से पता चलता है कि वह एक संवेदनशील व अंतर्मुखी लड़की थी। अज्ञातवास में आठ

सदस्य रह रहे थे जिनमें वह सबसे छोटी थी। वह तेरह वर्ष की थी। अतः भावनाओं के वेग का सर्वाधिक होना स्वाभाविक है। हालाँकि यहाँ पर उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है। वह कहती भी है-“काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति अब तक नहीं मिला है, इसलिए तलाश जारी रहेगी।” ऐन खुद को औरों से बेहतर समझती है। पीटर से भी वह खुलकर बात नहीं करती। वह अपनी प्रिय व एकांत की सहयोगिनी गुड़िया से बात करती है तथा चिट्ठी के रूप में अपनी भावनाएँ व्यक्त करती है।





// आरोह – काव्य भाग //

आत्म-परिचय, एक गीत

- हरिवंश राय बच्चन

आत्म-परिचय, एक गीत कविता का सारांश

“आत्मपरिचय कविता हरिवंश राय बच्चन के काव्य-संग्रह ‘बुद्ध और नाचघर से ली गई है। इस कविता में कवि ने मानव के। आत्म-परिचय का चित्रण किया है। आत्मबोध अर्थात् अपने को जानना संसार को जानने से ज्यादा कठिन है। व्यक्ति का समाज से घनिष्ठ : – संबंध है, इसलिए संसार से निरपेक्ष रहना असंभव है। इस कविता में कवि ने अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपनी दुविधा और । वंद्यपूर्ण संबंधों का रहस्य ही प्रकट किया है। कवि कहता है कि वह इस सांसारिक जीवन का संपूर्ण भार अपने कंधों पर लिए फिर रहा है। सारे भार को उठाने के पश्चात भी वह जीवन में प्यार लिए घूम रहा है। वह कहता है कि मेरी हृदय रूपी वीणा को किसी ने प्रेम से छूकर झंकृत कर दिया और मैं उसी झंकृत – वीणा के साँसों को लिए दुनिया में घूम रहा हूँ। – प्रेम रूपी मदिरा को पी लिया है, इसलिए वह तो इसी में मग्न रहता है। उसे इस संसार का बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। यह संसार केवल उनकी पूछ करता है जो उसका गान करते हैं। यह स्वार्थ के नशे में डूबकर औरों को अनदेखा कर देता है। मैं तो अपनी मस्ती में डूब : मन के गीत गाता रहता हूँ। उसे इस संसार से कोई लेना-देना नहीं है। यह एकदम अपूर्ण है अतः उसे यह अच्छा नहीं लगता। वह तो अपने हृदय में भाव का उपहार लिए फिर रहा है।

उसका अपना एक स्वप्निल-संसार है। उसी संसार को लिए वह विचरण कर रहा है। वह अपने हृदय में अग्नि जलाकर स्वयं उसमें जलता रहता है। वह अपने जीवन को समभाव होकर जीता है। वह सुख-दुख दोनों अवस्थाओं में मग्न रहता है। संसार एक सागर के समान है। ये दुनिया वाले इस संसार रूपी सागर को पार करने हेतु नाव बना सकते हैं। उसको इस नाव की कोई आवश्यकता नहीं है। वह तो सांसारिक खुशियों में डूब कर यूँ ही बहना चाहता है।

कवि कहता है कि एक तो उसके पास जवानी का जोश है तथा दूसरा उस जोश में छिपा दुख है। इसी कारण वह बाह्य रूप से तो हँसता हुआ दिखता है लेकिन आंतरिक रूप से निरंतर रोता रहता है। वह अपने हृदय में किसी की यादें समाए फिर रहा है। कवि प्रश्न करता है। कि आंतरिक सत्य कोई नहीं जान पाया। अनेक लोग प्रयास करते-करते खत्म हो गए लेकिन सत्य की थाह तक कोई नहीं पहुंच पाया। नादान वहीं होते हैं, जहाँ अक्लमंद निवास करते हैं। फिर भी यह संसार मूर्ख नहीं है जो इसके बावजूद भी सीखना चाहता है।

कवि और संसारिका कोई संबंध नहीं है। उसकी राह कोई और थी तथा संसार की कोई और। वह न जाने प्रतिदिन कितने जग बना-बना 5 कर मिटा देता है। यह संसार जिस पृथ्वी पर रहकर अपना वैभव जोड़ना चाहता है, वह प्रति पग इस पृथ्वी के वैभव को ठुकरा देता है। 14 उसके रुदन में भी

एक राग छिपा है तथा उसकी शीतल वाणी में क्रोध रूपी आग समाहित है। वह ऐसे विराट खंडहर का अंश अपने साथ लिए फिरता है, जिस पर बड़े-बड़े राजाओं के महल भी न्योछावर हो जाते हैं। यह संसार तो अजीब है जो उसके रोने को भी गीत समझता है। दुखों की अपार वेदना के कारण जब वह फूट-फूट कर रोया तो इसे संसार ने उसके छंद समझे। वह तो इस जहाँ का एक दीवाना है लेकिन यह संसार उसे एक कवि के रूप में क्यों अपनाता है? वह तो दीवानों का वेश धारण कर अपनी मस्ती में मस्त होकर घूम रहा है। वह तो मस्ती का एक ऐसा संदेश लेकर घूम रहा है, जिसको सुनकर ये संसार झम उठेगा, झुक जाएगा तथा लहराने लगेगा।

एक गीत कविता का सारांश

‘एक गीत’ कविता हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित उनके काव्य-संग्रह निशा निमंत्रण में संकलित है। बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि हैं तथा आधुनिक हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार माने जाते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने समय के व्यतीत होने के एहसास के साथ-साथ लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्राणी द्वारा कुछ कर गुजरने के जज्बे का चित्रण किया है। इस कविता में कवि की रहस्यवादी चेतना मुखरित हुई है। समय चिर-परिवर्तनशील है जो निरंतर गतिशील है।

यह क्षणमात्र भी नहीं रुकता और न ही किसी की परवाह करता है। यहाँ प्रत्येक प्राणी अपनी मंजिल को पाने की चाह लेकर जीवन रूपी मार्ग पर निकलता है।

वह यह सोचकर अति शीघ्रता से चलता है कि कहीं उसे मार्ग में चलते-चलते रात न हो जाए। उसकी मंजिल भी उससे दूर नहीं, फिर वह चिंता में मग्न रहता है। पक्षियों के बच्चे भी अपने घोंसलों में अपने माँ-बाप को न पाकर परेशानी से भर उठते हैं। घोंसलों में अपने बच्चों को अकेला छोड़कर गए पक्षी भी इसी चिंता में रहते हैं कि उनके बच्चे भी उनकी आने की आशा में अपने-अपने घोंसलों से झाँक रहे होंगे। जब-जब ये ऐसा सोचते हैं तब यह भाव उनके पंखों में न जाने कितनी चंचलता एवं स्फूर्ति भर देता है। मार्ग पर चलते-चलते प्राणी यह चिंतन करता है कि इस समय उससे मिलने के लिए कौन इतना व्याकुल हो रहा होगा?

फिर वह किसके लिए इतना चंचल हो रहा है या वह किसके लिए इतनी शीघ्रता करे। जब भी राही के मन में ऐसा प्रश्न उठता है तो यह प्रश्न उसके पैरों को सुस्त कर देता है तथा उसके हृदय में व्याकुलता भर देता है। इस प्रकार दिन अत्यंत शीघ्रता से व्यतीत हो रहा है।

STEP UP ACADEMY अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1 कविता एक ओर जगजीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ – विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

उत्तर- कवि ने जीवन का आशय जगत से लिया है अर्थात् वह जगतरूपी जीवन का भार लिए घूमता है। कहने का भाव है कि कवि ने अपने जीवन को जगत का भार माना है। इस भार को वह स्वयं वहन करता है। वह अपने जीवन के प्रति लापरवाह नहीं है। लेकिन वह संसार का ध्यान नहीं

करता। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं है कि संसार या उसमें रहने वाले लोग क्या करते हैं। इसलिए उसने अपनी कविता में कहा है कि मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ। अर्थात् मुझे इस संसार से कोई या किसी प्रकार का मतलब नहीं है।

प्रश्न 2 जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं’ – कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- दाना का आशय है जानकार लोग अर्थात् सबकुछ जानने वाले और समझने वाले लोग। कवि कहता है कि संसार में दोनों तरह के लोग होते हैं – ज्ञानी और अज्ञानी,



अर्थात् समझदार और नासमझ दोनों ही तरह के लोग इस संसार में रहते हैं। जो लोग प्रत्येक काम को समझबूझ कर करते हैं वे 'दाना' होते हैं, जबकि बिना सोचे-विचारे काम करने वाले लोग नादान होते हैं। अतः कवि ने दोनों में अंतर बताने के लिए ही ऐसा कहा है।

प्रश्न 3 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता' - पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने 'और' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है। इस शब्द की अपनी ही विशेषता है जिसे विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। मैं और में इसमें और शब्द का अर्थ है कि मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। मैं तो कोई अन्य ही अर्थात् विशेष व्यक्ति हूँ। और जग' में और शब्द से आशय है कि यह जगत भी कुछ अलग ही है। यह जगत भी मेरे अस्तित्व की तरह कुछ और है। तीसरे 'और' का अर्थ है के साथ। कवि कहता है कि जब मैं और मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। यह जगत भी बिल्कुल अलग है तो मेरा इस जगत के साथ संबंध कैसे बन सकता है। अर्थात् मैं और

यह संसार परस्पर नहीं मिल सकते क्योंकि दोनों का अलग ही महत्त्व है।

प्रश्न 4 शीतल वाणी में आग-के होने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- शीतल वाणी में आग कहकर कवि ने विरोधाभास की स्थिति पैदा की है। कवि कहता है कि यद्यपि मेरे द्वारा कही हुई बातें शीतल और सरल हैं। जो कुछ मैं कहता हूँ वह ठंडे दिमाग से कहता हूँ, लेकिन मेरे इस कहने में बहुत गहरे अर्थ छिपे हुए हैं। मेरे द्वारा कहे गए हर शब्द में संघर्ष हैं। मैंने जीवन भर जो संघर्ष किए उन्हें जब मैं कविता का रूप देता हूँ तो वह शीतल वाणी बन जाती है। मेरा जीवन मेरे दुखों के कारण मन ही मन रोता है लेकिन कविता के द्वारा जो कुछ कहता हूँ उसमें सहजता रूपी शीतलता होती है।

प्रश्न 5 बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर- बच्चे से यहाँ आशय चिड़ियों के बच्चों से है। जब उनके माँ-बाप भोजन की खोज में उन्हें छोड़कर दूर चले

जाते हैं तो वे दिनभर माँ-बाप के लौटने की प्रतीक्षा करते हैं। शाम ढलते ही वे सोचते हैं कि हमारे माता-पिता हमारे लिए दाना, तिनका, लेकर आते ही होंगे। वे हमारे लिए भोजन लाएँगे। हमें ढेर सारा चुग्गा देंगे ताकि हमारा पेट भर सके। बच्चे आशावादी हैं। वे सुबह से लेकर शाम तक यही आशा करते हैं कि कब हमारे माता-पिता आएँ और वे कब हमें चुग्गा दें। वे विशेष आशा करते हैं कि हमें ढेर सारा खाने को मिलेगा साथ ही हमें बहुत प्यार-दुलार भी मिलेगा।

प्रश्न 6 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' -की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर- 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' - वाक्य की कई बार आवृत्ति कवि ने की है। इससे आशय है कि जीवन बहुत छोटा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद अस्त हो जाता है ठीक वैसे ही मानव जीवन है। यह जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। हर वस्तु नश्वर है। कविता की विशेषता इसी बात में है। कि इस वाक्य के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। चाहे राहगीर को अपनी मंजिल पर पहुँचना हो या चिड़ियों को अपने बच्चों के पास। सभी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते हैं। उन्हें डर है कि यदि दिन ढल गया तो अपनी मंजिल तक पहुँचना असंभव हो जाएगी।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1 संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है?

उत्तर- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस नाते उसे समाज के हर संबंध का निर्वाह करना पड़ता है। जीवन में हर तरह के उतार

चढ़ाव आते हैं। सुख और दुख तो मानव जीवन का अभिन्न अंग है। सुख है तो दुख आएगा और यदि दुख है तो सुख अवश्य है। सुख और दुख इन्हीं दो आधारों पर मानव का जीवन चलता है। संसार में कष्ट सहना प्रत्येक मानव की नियति है। चाहे व्यक्ति अमीर हो या गरीब सभी को सुख-दुख झेलने पड़ते हैं। जीवनरूपी गाड़ी इन्हीं दो पहियों पर चलती है। जिस प्रकार रात के बाद सवेरा होता है ठीक उसी प्रकार

दुख के बाद सुख आता है। व्यक्ति इन दुखों में भी खुशी और मस्ती का जीवन जी सकता है। वह दुख में ज्यादा दुखी न हो उसे ऐसे समझना चाहिए कि यह तो नियति है। यही मानव जीवन है। बिना दुखों के सुखों की सच्ची अनुभूति नहीं की जा सकती। अर्थात् दुख ही सुख की कसौटी है। यदि व्यक्ति ऐसा सोच ले तो वह दुख की स्थिति में भी खुश रहेगा तो उसका जीवन मस्ती से भरपूर होगा। सुख में अधिक सुखी न होना और दुख में अधिक दुखी न होना ही मानव जीवन को व्यवस्थित कर देता है। जो व्यक्ति इन दोनों में सामंजस्य बनाकर चलता है वह दुख में भी खुश और मस्त रहता है।

आपसदारी

प्रश्न 1 जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथ्य' कविता दी जा रही है। क्या पाठ में दी गई 'आत्म-परिचय' कविता से इस कविता को आपको कोई संबंध दिखाई देता है? चर्चा करें।

आत्मकथ्य

<p>धुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी, मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी। इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास यह विडंबना ! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं। भूलें अपनी या प्रवंचना औरों को दिखलाऊँ मैं। उज्वल गाथा</p>	<p>तब भी कहते हो कह डालें दुर्बलता अपनी बीती। तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागरे रीति । किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम खाली करने वाले । अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले। अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में। उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की। सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कथा की ?</p>
--	---

<p>कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की। अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की। मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया। आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया। जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।</p>	<p>छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ? क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता में मौन रहूँ? सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा? अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।</p> <p style="text-align: right;">- जयशंकर प्रसाद</p>
---	--

उत्तर- जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उनके द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' तथा हालावाद के प्रवर्तक हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित कविता 'आत्म-परिचय' दोनों एक जैसी हैं। दोनों का कथ्य एक है। जयशंकर प्रसाद जी ने अपने जीवन की व्यथा-कथा इस कविता के माध्यम से प्रस्तुत की है। ठीक उसी तरह, जिस तरह कि हरिवंशराय जी ने। प्रसाद जी कहते हैं कि मुझे कभी सुख नहीं मिला। सुख तो मेरे लिए किसी सुनहरे स्वप्न की तरह ही रहा - "मिला कहाँ वह सुख जिसका स्वप्न मैं देखकर जाग गया। आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।" ठीक इसी प्रकार के भाव बच्चन जी ने व्यक्त किए हैं। वे कहते हैं कि मेरे जीवन में इतने दुख आए कि मैं दिन-प्रतिदिन रोता रहा और लोगों ने मेरे रोदन को राग समझा। मुझे भी कभी सुख नहीं मिले - "मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ" इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन दोनों कविताओं में अंतर्संबंध है। दोनों ही कवियों ने अपनी वेदना को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। दोनों कवियों की इन कविताओं की मूल संवेदना भोगा हुआ दुख है।





पतंग

- अलोक धन्वा

श्री आलोक धन्वा दवारा रचित 'पतंग' कविता उनके काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' में संकलित है। इस कविता में कवि ने बाल-सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर एवं मनोहारी चित्रण किया है। कवि ने बाल क्रियाकलापों तथा प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक सुंदर बिंबों का समायोजन किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है, जिसमें वे खो जाना चाहते हैं। आकाश में उड़ती हुई पतंग ऊँचाइयों की वे हदें हैं, जिन्हें बाल-मन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

कविता एक ऐसी नई दुनिया की सैर कराती है, जहाँ शरद ऋतु का चमकीला सौंदर्य है; तितलियों की रंगीन दुनिया है; दिशाओं के नगाड़े – बजते हैं, छत्तों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर इसी भय पर विजय का ध्वज लहराते बच्चे हैं। ये बच्चे गिर-गिरकर

संभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना इनके पास आ जाता है। वे हर बार नई पतंग को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए भादो के बाद शरद की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कवि के अनुसार सबसे तेज बौछारों के समय का अंधेरा व्यतीत हो गया है और खरगोश की आँख के समान लालिमा – से युक्त सौंदर्यमयी प्रकाशयुक्त सवेरा हो गया है। शरद अनेक झड़ियों को पार करते हुए तथा नई चमकदार साइकिल तेज गति से चलाते हुए जोरों से घंटी बजाते आ गया है। वह अपने सौंदर्य से युक्त चमकीले इशारों से पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूह को बुलाता है।

वह आकाश को इतना सुंदर तथा मुलायम बना देता है कि पतंग ऊपर उठ सके। पतंग जिसे दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन वस्तु माना जाता है, वह इस असीम आकाश में उड़ सके। इस हसीन दुनिया का सबसे पहला कागज़ और बाँस की पतली कमानी आकाश में उड़ सके और इनके उड़ने : के साथ ही चारों ओर का वातावरण बच्चों की सीटियों, किलकारियों और तितलियों की मधुर ध्वनि से गूँज उठे।

कोमल बच्चे अपने जन्म से ही कपास के समान कोमलता लेकर आते हैं। ये पृथ्वी भी उनके बेचैन पाँवों के साथ घूमने लगती है। जब । ये बच्चे मकानों की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तो छतों को नरम बना देते हैं। जब ये बच्चे झूला-झूलते हुए आते हैं तो दिशाओं के । नगाड़े बजने लगते हैं। प्रायः बच्चे छतों पर तेज गति से बेसुध होकर दौड़ते हैं तो उस समय उनके रोमांचित शरीर का संगीत ही उन्हें गिरने से बचाता है। उस समय मात्र धागे के सहारे उड़ते पतंगों की ऊँचाइयाँ उन्हें सहारा देकर थाम लेती हैं।

असीम आकाश में पतंगों की ऊँचाइयों के साथ-साथ ये कोमल बच्चे भी अपने रंध्रों के सहारे उड़ रहे हैं। कवि का मानना है कि अगर बच्चे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बच जाते हैं तो उसके बाद वे पहले से ज्यादा निडर होकर स्वर्णिम सूर्य के सामने आते हैं। तब उनके इस साहस, धैर्य । और निडरता को देखकर यह पृथ्वी भी उनके पैरों के पास अधिक तेजी से घूमती है।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1 सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद

प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जब तेज बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गरमी भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिवर्तन आते हैं -

- सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।
- शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। गरमी समाप्त हो जाती है।
- प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है।
- आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।
- फूलों पर तिलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।
- सभी लोग खुले मौसम में आनंदित हो रहे हैं।

प्रश्न 2 सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

उत्तर- कवि ने पतंग के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है। पतंग का निर्माण रंगीन कागज़ से होता है। इंद्रधनुष के समान यह अनेक रंगों की होती है। इसका कागज़ इतना पतला होता है कि बूंद लगते ही फट जाता है। यह बाँस की पतली कमानी से बनती है। कवि इनके माध्यम से बाल सुलभ चेष्टाओं का अंकन करता है। पतंग भी बालमन की तरह कल्पनाशील, कोमल व हलकी होती है।

प्रश्न 3 बिंब स्पष्ट करें -

सबसे तेज बौछारें गर्यो भादो गया

सवेरा हुआ।

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए।

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

घंटी बजाते हुए जोर-जोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए

कि पतंग ऊपर उठ सके।

उत्तर- कवि ने इस कविता में दृश्य बिंब का सार्थक व स्वाभाविक प्रयोग किया है। उन्होंने बच्चों के भावानुरूप बिंब का प्रयोग किया है। पाठक भी कवि की संवेदनाओं को शीघ्र ग्रहण कर लेता है। इस अंश के निम्नलिखित बिंब हैं -

- तेज बौछारें - गतिशील दृश्य बिंब
- सवेरा हुआ - स्थिर दृश्य बिंब
- खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा - स्थिर दृश्य बिंब
- पुलों को पार करते हुए - गतिशील दृश्य बिंब
- अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए - गतिशील दृश्य बिंब
- घंटी बजाते हुए जोर - जोर से - श्रव्य बिंब
- चमकीले इशारों से बुलाते हुए - गतिशील दृश्य बिंब
- आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए - स्पर्श दृश्य बिंब
- पतंग ऊपर हठ सके - गतिशील दृश्य बिंब

प्रश्न 4 जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास - कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?

उत्तर- कपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

प्रश्न 5 पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं - बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?

उत्तर- जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।



प्रश्न 6 निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

- छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए।
- अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो और भी निडर होकर
सुनहले सूरज के सामने आते हैं।
 - दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?
 - जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है ?
 - खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर-

- दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का तात्पर्य है कि जब बच्चे ऊँची पतंगें उड़ाते हैं तो वे दिशाओं तक जाती लगती है। तब ऐसा प्रतीत होता है मानो बच्चों की किलकारियों से दिशाएँ मृदंग बजा रही हैं।
- जब पतंग सामने हो तो छत कठोर नहीं लगती क्योंकि पैरों में अनजानी थिरकन भर जाती है। छत पर दौड़ते हुए। ऐसा लगता है मानो हम किसी मुलायम घास पर दौड़ रहे हों।
- यदि जीवन में खतरनाक परिस्थितियों का सामना कर लिया हो तो दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में कोई कठिनाई नहीं होती। मुझे बहुत सहजता महसूस होती है। खतरनाक परिस्थितियों के आगे दुनिया की चुनौतियाँ स्वयं ही छोटी पड़ जाती है।

कविता के आसपास

प्रश्न 1 आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर आपके मन में कैसे खयाल आते हैं? लिखिए।

उत्तर- आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मन

खुशी से भर जाता है। मन करता है कि जीवन में भी इतने ही रंग होने चाहिए ताकि जीवन को सहजता से जिया जा सके। सारी इच्छाएँ पूरी हों। जिस प्रकार पतंग अधिक से अधिक ऊँची उड़ती है, वैसे ही मैं भी जीवन में ऊँचा मुकाम हासिल करना चाहता हूँ।

प्रश्न 2 'रोमांचित शरीर का संगीत' का जीवन के लय से क्या संबंध है?

उत्तर- यदि शरीर रोमांचित है अर्थात् उसमें खुशियाँ भरी हैं तो आनंद रूपी संगीत बजता रहता है। यही आनंद जीवन को नई दिशा देता है। जीवन रूपी लय अपने आप ही सफलता प्राप्त कर लेती है।

प्रश्न 3 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं? चर्चा करें।

उत्तर- बच्चे जब छतों के किनारों से गिरने वाले होते हैं तो पतंग की डोर उन्हें गिरने से बचा लेती है। बच्चों को डोर से भी उतना प्यार होता है जितना की पतंग से। वे पतंग को उड़ते हुए देखते हैं। साथ ही यह भी देखते हैं कि चक्के में डोर कितनी है। इन पतंगों की ऊँचाइयों से बच्चे संभल जाते हैं।

आपकी कविता

प्रश्न 1 हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में तुलसी, जायसी, मतिराम, विजदेव, मैथिलीशरण गुप्त आदि कवियों ने भी शरद ऋतु का सुंदर वर्णन किया है। आप उन्हें तलाश कर कक्षा में सुनाएँ और चर्चा करें कि पतंग कविता में शरद ऋतु वर्णन उनसे किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 2 आपके जीवन में शरद ऋतु क्या मायने रखती है?

उत्तर- जीवन में प्रत्येक ऋतु का अपना महत्त्व है। समय के अनुसार सभी ऋतुएँ आती हैं और जाती हैं। इनमें से शरद ऋतु का अपना अलग ही महत्त्व है। इस ऋतु में प्रकृति नई-नई लगने लगती है। हर कोई इस प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेना चाहता है।



कविता के बहाने, बात सीधी थी

- श्री कुँवर नारायण

श्री कुँवर नारायण की इस कविता की रचनात्मकता और उसमें छिपी अपार ऊर्जा को प्रतिपादित करने में सक्षम है। कविता के लिए शब्दों : । का संबंध सारे जड़-चेतन से है। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ी हुई है। इसकी व्यापकता अपार है। इसकी कोई सीमा नहीं है। । यह किसी प्रकार के बंधन में बँधती नहीं। इसके लिए न तो भाषा का कोई बंधन है और न ही समय का। 'कविता के बहाने' नामक कविता | आकार में छोटी है पर भाव में बहुत बड़ी है। आज का समय मशीनीकरण और यांत्रिकता का है जिसमें सर्वत्र भाग-दौड़ है। मनुष्य का मन :

इस बात से आशंकित रहता है कि क्या कविता रहेगी या मिट जाएगी। क्या कविता अस्तित्वहीन हो जाएगी ? कवि ने इसे एक यात्रा माना। - है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक है। चिड़िया की उड़ान सीमित है, पर कविता की उड़ान तो असीमित है। भला चिड़िया की उड़ान ।

कविता जैसी कैसे हो सकती है। कविता के पंख तो सब जगह उसे ले जा सकते हैं पर चिड़िया के पंखों में ऐसा बल कहाँ है! कविता :

का खिलना फल के खिलने का बहाना तो हो सकता है पर फल का खिलना कविता जैसा नहीं हो सकता। फ - कुछ ही देर बाद मुरझा जाता है लेकिन कविता तो भावों की महक लेकर बिना मुरझाए सदैव प्रभाव डालती रहती है।

कविता तो बच्चों के - खेल के समान है जिसकी कोई सीमा ही नहीं है। जैसे बच्चों के सपनों की कोई सीमा नहीं, वे भविष्य की ओर उड़ान भरते हैं वैसे ही कविता भी शब्दों का ऐसा अनूठा खेल है जिस पर किसी का कोई बंधन नहीं है। कविता का क्षेत्र सीमा-रहित है। वह किसी भी सीमा से - पार निकली हुई राह में आने वाले सभी बंधनों को तोड़ कर आगे बढ़ जाती है।

बात सीधी थी पर कविता का सारांश

'बात सीधी थी पर' कविता में कुँवर नारायण ने यह स्पष्ट किया है कि जब भी कवि कोई रचना करने लगता है तो उसे अपनी बात को सहज भाव से कह देना चाहिए, न कि तर्क-जाल में उलझाकर अपनी बात को उलझा देना चाहिए। आडंबरपूर्ण शब्दावली से युक्त रचना कभी भी प्रभावशील तथा प्रशंसनीय नहीं होती। इसके लिए कवि ने पेंच का उदाहरण दिया है।

पेंच को यदि सहजता से पेचकस से कसा जाए वह कस जाती है। यदि उसके साथ जबरदस्ती की जाए तो उसकी चूड़ियाँ घिस कर मर जाती हैं और उसे ठोंककर वहीं दबाना पड़ता है। इसी प्रकार से अपनी अभिव्यक्ति में यदि कवि सहज भाषा का प्रयोग नहीं करता तो उसकी रचना प्रभावोत्पादक नहीं बन पाती। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1 इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने क्या है?'

उत्तर- इसका अर्थ है-भेदभाव, अंतर व अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक जैसा समझना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय धर्म, जाति, संप्रदाय, छोटा-बड़ा, अमीर-



गरीब आदि का भेद नहीं करते, उसी प्रकार कविता को भी किसी एक वाद या सिद्धांत या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति नहीं करनी चाहिए। कविता शब्दों का खेल है। कविता का कार्य समाज में एकता लाना है।

प्रश्न 2 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

उत्तर- कवि ने बताया कि चिड़िया एक जगह से दूसरी जगह उड़ती है। इसी प्रकार कविता भी हर जगह पहुँचती है। उसमें कल्पना की उड़ान होती है। कवि फूल खिलने की बात करता है। दूसरे शब्दों में, कविता का आधार प्राकृतिक वस्तुएँ हैं। वह लोगों को अपनी रचनाओं से मुग्ध करती है।

प्रश्न 3 कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- कविता और बच्चों के क्रीड़ा-क्षेत्र का स्थान व्यापक होता है। बच्चे खेलते-कूदते समय काल, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि का ध्यान नहीं रखते। वे हर जगह, हर समय व हर तरीके से खेल सकते हैं। उन पर कोई सीमा का बंधन नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है। शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य आदि उपकरण मात्र हैं। इनमें निःस्वार्थता होती है। बच्चों के सपने असीम होते हैं, इसी तरह कवि की कल्पना की भी कोई सीमा नहीं होती।

प्रश्न 4 कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने क्या होते हैं।

उत्तर- कवि कहता है कि फूल एक निश्चित समय पर खिलते हैं। उनका जीवन भी निश्चित होता है, परंतु कविता के खिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता है। उसकी जीवन अवधि असीमित है। वे कभी नहीं मुरझाती। उनकी कविताओं की महक सदैव फैलती रहती है।

प्रश्न 5 'भाषा को सहूलियत' से बरतने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- इसका अर्थ यह है कि कोई भी रचना करते समय कवि को आडंबरपूर्ण, भारी-भरकम, समझ में न आने

वाली शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अपनी बात को सहज व व्यावहारिक भाषा में कहना चाहिए ताकि आम लोग कवि की भावना को समझ सकें।

प्रश्न 6 बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है; कैसे?

उत्तर- 'बात' का अर्थ है-भाव, भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम है। दोनों का चोली-दामन का साथ है, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य शब्दों के चमत्कार में उलझ जाता है। वह इसे गलतफहमी का शिकार हो जाता है कि कठिन तथा नए शब्दों के प्रयोग से वह अधिक अच्छे ढंग से अपनी बात कह सकता है। भाव को कभी भाषा का साधन नहीं बनाना चाहिए।

प्रश्न 7 बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/मुहावरों से मिलान करें।

बिंब/ मुहावरा	विशेषता
बात की चूड़ी मर जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना।
की पेंच खोलना	बात का पकड़ में न आना।
बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का प्रभावहीन हो जाना।
पेंच को कील की तरह ठोक देना	बात में कसावट का न होना।
बात का बन जाना	बात को सहज और स्पष्ट करना।

उत्तर-

बिंब/ मुहावरा	विशेषता
बात की चूड़ी मर जाना	बात का प्रभावहीन हो जाना।
की पेंच खोलना	बात को सहज और स्पष्ट करना।

बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का पकड़ में न आना।
पेंच को कील की तरह ठोक देना	बात में कसावट का न होना।
बात का बन जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1 बात से जुड़े कई मुहावरे प्रचलित हैं। कुछ मुहावरों का प्रयोग करते हुए लिखें।

उत्तर-

- बातें बनाना-बातें बनाना कोई तुमसे सीखे।
- बात का बतंगड़ बनाना-कालू यादव का काम बात का बतंगड़ बनाना है।
- बात का धनी होना-मोहन की इज्जत है क्योंकि वह अपनी बात का धनी है।
- बात रखना-सोहन ने मजदूर नेता की माँग मानकर उसकी बात रख ली।
- बात बढ़ाना-सुमन, अब सारी बातें यहीं खत्म करो क्योंकि बात बढ़ाने से तनाव बढ़ता है।

प्रश्न 2 व्याख्या करें

जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई।

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

उत्तर- कवि कहता है कि वह अपने भाव को प्रकट करने के लिए नए शब्दों तथा नए उपमानों में उलझ गया। इस कारण शब्दजाल में वह भाव की गंभीरता को खो बैठा और केवल शब्द चमत्कार में भाव खो गया। कवि आकर्षक व प्रभावी भाषा में ही उलझा रह गया। उसकी गहराई समाप्त हो गई।

आपसदारी

प्रश्न 1 सुंदर है सुमन, विहग सुंदर

मानव तुम सबसे सुंदरतम। पंत की इस कविता में प्रकृति की तुलना में मनुष्य को अधिक सुंदर और समर्थ बताया गया है। 'कविता के बहाने' कविता में से इस आशय को अभिव्यक्त करने वाले बिंदुओं की तलाश करें।

उत्तर- पंत ने इस कविता में मनुष्य को प्रकृति से सुंदर व समर्थ बताया है। 'कविता के बहाने' कविता में कवि ने कविता को फूलों व चिड़ियों से अधिक समर्थ बताया है। कवि ने कविता और बच्चों में समानता दिखाई है। मनुष्य में रचनात्मक ऊर्जा हो तो बंधन का औचित्य समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 2 प्रतापनारायण मिश्र का निबंध 'बात' और नागार्जुन की कविता 'बातें' ढूँढ़कर पढ़ें।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।





कैमरा में बंद अपाहिज

- रघुवीर सहाय

कैमरे में बंद अपाहिज कविता रघुवीर सहाय के काव्य-संग्रह 'लोग भूल गए हैं से संकलित की गई है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते व्यक्ति से टेलीविजन कैमरे के सामने किस तरह के सवाल पूछे जाएंगे और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उससे कैसी भंगिमा की अपेक्षा की जाएगी इसका लगभग सपाट तरीके से बयान करते हुए एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य संचारमाध्यम के संबन्ध को रेखांकित किया है।

साथ ही कवि ने व्यंजना के माध्यम से ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा किया है जो अपनी दुःख-दर्द, यातनावेदना को बेचना चाहता है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती झेलते हुए लोगों के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त की है। कवि ने इस कविता में बताया है कि अपने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के

लिए दरदर्शनवाले किसी दल और शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अपने कैमरे के सामने प्रस्तुत करते हैं। उससे अनेक तरह से सवाल पर सवाल पूछते हैं। उसे कैमरे के आगे बार-बार लाया जाता है। बार-बार उससे अपाहिज होने के बारे में सवाल पूछे जाते हैं।

कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है तथा उस कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए दूरसंचारवाले स्वयं प्रतिक्रिया व्यक्त करके बताते हैं। अनेक ऐसे संवेदनशील सवालों को पूछ-पूछकर वे उस व्यक्ति को रुला देते हैं। दूरदर्शन के बड़े परदे पर उस व्यक्ति की आँसूभरी " आँखों को दिखाया जाता है। इस प्रकार दूरदर्शनवाले बार-बार एक ऐसे अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

STEP UP
A अभ्यास प्रश्न Y

कविता के साथ

प्रश्न 1 कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं-आपकी समझ से इनका क्या औचित्य है?

उत्तर- कवि ने कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी हैं। ये कोष्ठक कवि के मुख्य भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें लिखी पंक्तियों के माध्यम से अलग-अलग लोगों को संबोधित किया गया है। ये एक तरह से संचालन करने के लिए हैं; जैसे-

कैमरा मैन के लिए-

- कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा
- कैमरा की कीमत है।

दर्शकों के लिए

- हम खुद इशारे से बताएँगे क्या ऐसा?
- यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा

अपंग व्यक्ति को

- वह अवसर खो देंगे ?
- बस थोड़ी कसर रह गई।

ये कोष्ठक कविता के मुख्य उद्देश्य को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं।

प्रश्न 2 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए। 'कैमरे में बंद अपाहिज' में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए।

उत्तर- यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है।

प्रश्न 3 हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- 'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफे के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है।

'हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति में लाचारी का भाव है। मीडिया के सामने आने वाला व्यक्ति कमजोर होता है। मीडिया के अटपटे प्रश्नों से संतुलित व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने लगता है। यह सब कुछ उसे कार्यक्रम-संचालक की इच्छानुसार करना होता है।

प्रश्न 4 यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे? तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर- यदि साक्षात्कार देने वाला अपंग व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाएगा। उसका यह भी उद्देश्य पूरा हो जाएगा कि हमने सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है। एक ऐसा कार्यक्रम जिसमें अपंग व्यक्ति की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उस व्यक्ति की सोच और वेदना का हू-ब-हू चित्र हमने दिखाया है।

प्रश्न 5 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया प्रस्तुत किया है। परदे पर जो कार्यक्रम दिखाया जाता है, उसकी कीमत समय के अनुसार होती है। दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को जनता के हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता। वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय करना चाहते हैं। अपंग की पीड़ा को कम करने की बजाय अधिक करके दिखाया जाता है ताकि करुणा को 'नकदी' में बदला जा सके। संचालकों की सहानुभूति भी बनावटी होती है।

कविता के आसपास

प्रश्न 1 यदि आपको शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे किसी मित्र का परिचय लोगों से करवाना हो, तो किन शब्दों में करवाएँगी।

उत्तर- मुझे यदि किसी शारीरिक चुनौती का सामना कर रही अपनी मित्र का परिचय करवाना है तो मैं उसकी अपंगता का मजाक नहीं उड़ाऊँगी और न ही उस अपंग लड़की को उसकी अपंगता का एहसास दिलाने की कोशिश करूँगी। मैं तो लोगों से यही कहूँगी कि यह मेरी परम मित्र है। हम बचपन से एक साथ पढ़ती आई हैं। यह लड़की मुझसे ज्यादा होशियार है। यद्यपि चलने में इसे कुछ कठिनाई होती है, लेकिन पढ़ाई और स्कूल की अन्य गतिविधियों में यह सबसे आगे रहती है। इसलिए हर साल यह प्रथम स्थान प्राप्त करती है। इसने अपनी मजबूरी को मजबूती बना लिया है।

प्रश्न 2 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त' ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा? अपने विचार संक्षेप में लिखें।

उत्तर- सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर मुझे बहुत दुख होगा। ऐसे कार्यक्रम किसी की सहायता नहीं करते। ये सिर्फ अपनी लोकप्रियता बढ़ाना चाहते हैं ताकि वे अधिक-से-अधिक धन कमा सकें। ऐसे कार्यक्रम बनाने वालों का उद्देश्य समाज-सेवा नहीं होता। वे मात्र



संवेदना बेचना जानते हैं। ऐसे कार्यक्रमों पर तुरंत रोक लगानी चाहिए। दर्शकों को भी ऐसे कार्यक्रमों को सिरे से नकार देना चाहिए।

प्रश्न 3 यदि आप इस कार्यक्रम के दर्शक हैं तो टी.वी. पर ऐसे सामाजिक कार्यक्रम को देखकर एक पत्र में अपनी प्रतिक्रिया दूरदर्शन निदेशक को भेजें।

उत्तर- आदरणीय निदेशक दूरदर्शन पिछले वीरवार को आपके चैनल पर दिखाया गया अपाहित व्यक्ति के साक्षात्कार कार्यक्रम देखा। ऐसे कार्यक्रम को देखकर बहुत दुख हुआ। ऐसा लगा मानो आपने मानवीयता को ताक पर रख दिया हो। अपाहिज व्यक्ति से जिस तरह के प्रश्न पूछे जा रहे थे उससे यही लगा कि दूरदर्शन अब केवल पैसा कमाने का माध्यम भर रह गया है। आपने यह साक्षात्कार दिखाकर पूरी मानवीयता को शरमिंदा किया है। आशा है भविष्य में आप ऐसे कार्यक्रम नहीं दिखाएँगे। राम मीरगंज, इलाहाबाद

प्रश्न 4 नीचे दिए गए खबर के अंश को पढ़िए और बिहार के इस बुधिया से एक काल्पनिक साक्षात्कार कीजिए।

उत्तर-

साक्षात्कार

रवि (प्रश्नकर्ता)- सर्वप्रथम आपको बधाई, इस अद्भुत

कारनामे के लिए! आपकी उम्र क्या है?

बुधिया- पाँच साल।

रवि- आपकी यह विकलांगता कब से है?

बुधिया- जन्म से।

रवि- इस समय आप कहाँ पढ़ रहे हैं?

बुधिया- नवरसना एकेडमी, बेउर में।

रवि- विकलांग होने से आपको चलने में परेशानी होती है?

बुधिया- होती थी, परंतु अब आदत हो गई है।

रवि- आपको यह कारनामा करने की प्रेरणा किससे मिली ?

बुधिया- जी, उड़ीसा के बुधिया जी से जो 65 किलोमीटर दौड़ चुके हैं।

रवि- आपका सपना क्या है?

बुधिया- मैं कश्मीर से कन्याकुमारी तक की दूरी पैदल तय करना चाहता हूँ।

रवि- हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

बुधिया- बहुत-बहुत धन्यवाद!



सहर्ष स्वीकारा है

- गजानन माधव मुक्तिबोध

गजानन माधव मुक्तिबोध नई कविता के प्रमुख कवि हैं। वे लंबी कविताओं के कवि हैं। 'सहर्ष स्वीकारा है' मुक्तिबोध की छोटी कविता है जो छायावादी चेतना से प्रेरित है। इस कविता में कवि ने जीवन में मनुष्य को सुख-दुख, राग-विराग, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक आदि भावों को सहर्ष अंगीकार करने की प्रेरणा प्रदान की है। इसके साथ यह कविता उस विशिष्ट व्यक्ति या सत्ता की ओर संकेत करती हैं जिससे कवि को प्रेरणा प्राप्त हुई है।

कवि उस विशिष्ट सत्ता को संबोधन करके कहता है कि मेरे जीवन में जो कुछ भी सुख-दुख, राग-विराग, संघर्ष-अवसाद, हर्ष-विषाद आदि मिला है उसको मैंने सहर्ष भाव से अंगीकार किया है। इसलिए वह जीवन में सब कुछ उसी सत्ता का दिया हुआ मानता है। गर्वयुक्त गरीबी, गंभीर अनुभव, भव्य विचार, दृढ़ता हृदय रूपी सरिता सब कुछ उनके जीवन में मौलिक हैं, बनावटी कुछ भी नहीं। इसलिए उन्हें गोचर जगत अदृश्य शक्ति का भाव लगता है।

वे सोचते हैं कि न जाने उस असीम सत्ता से उनका क्या रिश्ता-नाता है कि बार-बार वे उनके प्रति प्रेम रूपी झरने को खत्म करना चाहते हैं लेकिन वह बार-बार अपने-आप भर जाता है, जिसे चाहकर भी वे समाप्त नहीं कर सकते। उन्हें रात्रि में धरती पर मुसकुराते चाँद की भाँति अपने ऊपर असीम

सत्ता का चेहरा मुसकुराता हुआ दिखता है। कवि बार-बार उस प्रभु से अपनी भूल के लिए दंड चाहते हैं। वे दक्षिण ध्रुव पर स्थित अमावस्या में पूर्ण रूप से डूब जाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें अब प्रभु द्वारा ढका और घिरा हुआ रमणीय प्रकाश सहन नहीं होता। अब उन्हें ममता रूपी बादलों की कोमलता भी हृदय में पीड़ा पहुँचाती है।

उनकी आत्मा कमजोर और शक्तिहीन हो गई है। इसलिए होनी को देखकर उनका हृदय छटपटाने लगता है। अब तो स्थिति यह है कि उन्हें दुखों को बहलाने व सहलानेवाली आत्मीयता भी सहन नहीं होती। कवि वास्तव में उस असीम, विशिष्ट जन से दंड चाहता है। ऐसा दंड जिससे कि वह पाताल लोक की गहन गुफाओं, बिलों और धुएँ के बादलों में बिलकुल खो जाए। लेकिन वहाँ भी उन्हें प्रभु का ही सहारा दिखता है। इसलिए वह अपना सब कुछ उसी सत्ता को स्वीकार करते हैं और जो कुछ उस सत्ता ने सुख-दुख, राग-विराग, संघर्ष-अवसाद, आशा-निराशा आदि प्रदान किए हैं उन्हें खुशी-खुशी स्वीकार करता है।

इस कविता के माध्यम से कवि मनुष्यों को भी यही प्रेरणा देते हैं कि जीवन में मनुष्य को प्रभु प्रदत्त राग-विराग, सुख-दुख, आशा-निराशा आदि भाव सहर्ष भाव से या निर्विवाद रूप से स्वीकार कर लेने चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1 टिप्पणी कीजिए-गरबीली गरीबी, भीतर की सरिता, बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल।

उत्तर-

- गरबीली गरीबी- कवि ने गरीब होते हुए भी स्वाभिमान का परिचय दिया है। उसे अपनी

- i. यहाँ अंधकार-अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है और विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है?
- ii. कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?
- iii. इस स्थिति के विपरीत ठहरने वाली कौन-सी स्थिति कविता में व्यक्त है ? इस विपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।
- iv. कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबोधित है कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

उत्तर-

- i. कवि ने यहाँ दक्षिण ध्रुवी विशेषण अंधकार अमावस्या के लिए प्रयुक्त किया है। उसके कारण विशेष अर्थ यही निकलता है कि जिस प्रकार दक्षिण ध्रुव में चंद्रमा छह महीने नहीं निकलता ठीक उसी प्रकार मैं स्वार्थी बनकर ही तुमसे (सर्वहारा वर्ग से) दूर हो सकता हूँ। तुम्हें भूल जाने की अंधकार रूपी अमावस्या तभी आ सकती है।
- ii. कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में सर्वहारा वर्ग को भूल जाने वाली स्थिति को अमावस्या कहा है। कवि कहता है कि इस वर्ग के दुखों को भूलकर ही मैं सुखी हो सकता हूँ जिस प्रकार दक्षिण ध्रुव का चंद्रमा छह मास तक अपनी चाँदनी नहीं बिखेरता अर्थात् वह भी स्वार्थी हो जाता है।
- iii. अमावस्या के ठीक विपरीत की स्थिति है रमणीय उजेली अर्थात् आनंद प्रदान करने वाली संवेदना। जिस प्रकार अमावस्या व्यक्ति को दुख पहुँचाती है ठीक उसी तरह संवेदना व्यक्ति को आनंद देती है। कवि ने इन दोनों स्थितियों का उल्लेख अपनी कविता में किया है। वह

बताता है कि इनमें दुख देने वाली स्थिति कौन-सी है और सुख देने वाली स्थिति कौन-सी है।

- iv. कवि ने भूल जाने के लिए इन दुखों का ही सहारा लिया है। वह कहता है कि इस सर्वहारा वर्ग के अंतहीन दुख अब मुझे दुखी करने लगे हैं। मैं इनसे ऊब गया हूँ। जिस प्रकार दक्षिण ध्रुव में अमावस्या छह मास चाँद को ढक लेती है उसी प्रकार मैं भी चाहता हूँ कि स्वार्थ और सुख का उजाला अपने चेहरे पर ग्रहण कर लें क्योंकि अब मुझसे यह न खत्म होने वाला शोषण नहीं देखा जाता।

प्रश्न 5 बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाशत नहीं होती है – और कविता के शीर्षक सहर्ष स्वीकारा है मैं आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं। चर्चा कीजिए।

उत्तर- इन दोनों में अंतर्विरोध है। कविता के प्रारंभ में कवि जीवन के हर सुख-दुख को सहर्ष स्वीकार करता है, क्योंकि यह सब उसकी प्रियतमा को प्यारा है। हर घटना, हर परिणाम को प्रिया की देन मानता है। दूसरी तरफ वह प्रिया की आत्मीयता को बरदाशत नहीं कर पा रहा। एक की स्वीकृति तथा दूसरे की अस्वीकृति-दोनों में अंतर्विरोध है। कवि का आशय यह है कि अभी तक तो उसने सब कुछ सहर्ष स्वीकार कर लिया है, परंतु अब उसकी सहन-शक्ति समाप्त हो रही है।

कविता के आसपास

प्रश्न 1 अतिशय मोह भी त्रास का कारक है? माँ का दूध छूटने का कष्ट जैसे एक जरूरी कष्ट है, वैसे ही कुछ और जरूरी कष्टों की सूची बनाएँ।

उत्तर- अतिशय मोह भी त्रास का कारण होता है। ऐसे अनेक कष्ट निम्नलिखित हैं।

- बेटी की विदाई।
- प्रिय व्यक्ति का साथ छूटना।
- मनपसंद खाद्य वस्तु उपलब्ध न होना।
- माँ-बाप के बिछुड़ने का कष्ट।
- स्कूल जाते समय परिवार वालों से दूर होने का कष्ट।



प्रश्न 2 'प्रेरणा' शब्द पर सोचिए और उसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए जीवन के वे प्रसंग याद कीजिए जब माता-पिता, दीदी-भैया, शिक्षक या कोई महापुरुष/महानारी आपके अंधेरे क्षणों में प्रकाश भर गए।

उत्तर- व्यक्ति प्रत्येक कार्य किसी न किसी प्रेरणा के कारण करता है। एक प्रेरणा ही उसके जीवन की दिशा बदल देती है। मुझे इस देश की महानारी लक्ष्मीबाई से बहुत प्रेरणा मिली। जब भी कभी मन उदास हुआ तो मैंने उनकी जीवनी को पढ़ा। उनकी जीवनी पढ़कर मन का भय और दुख जाता है। एक अकेली नारी ने किस तरह अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे, इसे पढ़कर मन को शांति और ऊर्जा मिली। लक्ष्मीबाई ने अपना जीवन देश के लिए बलिदान कर दिया।

प्रश्न 3 'भय' शब्द पर सोचिए। सोचिए कि मन में किन-किन चीजों का भय बैठा है? उससे निबटने के लिए आप क्या करते हैं और कवि की मनःस्थिति से अपनी मनःस्थिति की तुलना कीजिए।

उत्तर- 'भय' प्राणी के अंदर जन्मजात भाव होता है। यह किसी-न-किसी रूप में सबमें व्याप्त होता है। मन में भय बैठने के अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे-परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय, नौकरी न मिलने का भय, लूटे जाने का भय, दुर्घटना का भय, परीक्षा में पेपर पूरा न कर पाने का भय, बॉस द्वारा डाँटे जाने का भय आदि। इनसे निपटने का एक ही मंत्र है- परिणाम को पहले से सोचकर निश्चित होना। मनुष्य को निराशा में नहीं जीना चाहिए।



उषा

- शमशेर बहादुर सिंह

कवि ने 'उषा' कविता में सुबह-सवेरे सूर्य के निकलने से पहले को प्राकृतिक शोभा का सुंदर चित्रण किया है। आकाश का गहरा नीलापन सफ़ेद शंख के समान दिखाई देने लगता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है जैसे किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप-पोत दिया हो जो अभी गीला है। उसका रंग गहरा है। जैसे ही सूर्य कुछ ऊँचा उठता है और उसकी लाली फैलती है तो ऐसे प्रतीत होने लगता है जैसे केसर से

युक्त काली सिल को किसी ने धो दिया है या उसपर लाल खड़िया चाक मल दी हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसे शोभा देने लगता है जैसे कोई सुंदरी नीले जल से बाहर आती हुई रह-रहकर अपने गोरेपन की आभा बिखेर रही हो। जब सूर्य पूर्व दिशा में दिखाई देने लगता है तो उसका जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1 कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

उत्तर- कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।

प्रश्न 2 भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

नई कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

उत्तर- नई कविता के लगभग सभी कवियों ने सदा कुछ विशेष कहना चाहा है अथवा कविता की विषयवस्तु को नए ढंग से प्रस्तुत करना चाहा है। उन्होंने इसके लिए कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच स्थान छोड़ दिया है। जो कुछ उन्होंने इसके माध्यम से कहा है, कविता उससे नए अर्थ देती है। उपरोक्त पंक्तियों में यद्यपि सुबह के आकाश को चौका जैसा माना है और यदि इसके कोष्ठक में दी गई पंक्ति को देखा जाए तो तब चौका जो अभी-अभी राख से लीपा है, उसका रंग मटमैला है। इसी तरह सुबह का आकाश भी दिखाई देता है।

अपनी रचना

अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए

उत्तर-

उपमान: हमने तीनों कविताओं का विश्लेषण किया है। जयशंकर प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' कविता हमें बहुत अच्छी लगी है। इसके उपमान इस प्रकार हैं-

- अंबर को पनघट के समान बताया गया है।
- ऊषा को स्त्री के समान तथा तारों को घड़े के समान बताया गया है।
- पत्तों से भरी डाली को आंचल के समान बताया है।
- ओस से भरी लता को स्त्री की संज्ञा दी गई है
- लता रूपी स्त्री फूलों रूपी गागर में पराग रूपी शहद भर लाई है।

जैसे उपमानों का प्रयोग कर प्रसाद जी ने कविता में जान डाल दी है। प्रकृति का जितना सुंदर मानवीकरण इस कविता में जान पड़ा है, वह बाकी दो कविता में जीवंत नहीं हो पाया है।

शब्दाचयन: प्रसाद जी ने जिस प्रकार के शब्दों का चयन किया है, उसने कविता के सौंदर्य में चार चांद लगा दिए हैं। उदाहरण के लिए- बीती विभावरी, तारा-घट ऊषा नागरी, खग-कुल कुल-कुल सा, किसलय का अंचल, मधु मुकुल नवल रस गागरी, अमंद, अलकों, मलयज शब्दों का प्रयोग कर प्रसाद जी ने कविता में गेयता का गुण ही नहीं जोड़ा बल्कि पाठक का मन भी इनके साथ जोड़ दिया है। ऐसे बेजोड़ शब्द रचना बहुत ही कम कविताओं में देखने को मिलती है। बाकी कविताओं में इस प्रकार का शब्दाचयन देखने को नहीं मिलता है।

परिवेश: तीनों कविता में सुबह के परिवेश का ही वर्णन है। परन्तु स्थिति अलग-अलग है। 'ऊषा' कविता के कवि ने गाँव का चित्र चित्रित किया है। 'बीती विभावरी जाग री' के कवि ने पनघट, नदी तथा लता का चित्र चित्रित किया है। 'बावरा अहेरी' के कवि ने पक्षीवृंदों, मंदिर तथा बाग का चित्र चित्रित किया है। अतः बेशक भोर का वर्णन हो लेकिन परिवेश भिन्न-भिन्न हैं।





बादल राग

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

बादल राग' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की ओजपूर्ण कविता है जो उनके सुप्रसिद्ध काव्य-संग्रह अनामिका से संकलित है। निराला जी साम्यवादी चेतना से प्रेरित कवि माने जाते हैं। उन्होंने अपने काव्य में शोषक वर्ग के प्रति घृणा, शोषित वर्ग के प्रति गहन सहानुभूति । और करुणा के भाव अभिव्यक्त किए हैं। इस कविता में कवि ने बादल को क्रांति और विप्लव का प्रतीक मानकर उसका आह्वान किया – है। किसान और जनसामान्य की आकांक्षाएँ बादल को नव-निर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं।

बादल पृथ्वी पर मँडरा रहे हैं। वायु रूपी सागर पर इनकी छाया वैसे ही तैर रही है जैसे अस्थिर सुखों पर दुखों की छाया मँडराती रहती – है। वे पूँजीपति अर्थात शोषक वर्ग के लिए दुख का कारण हैं। कवि बादलों को संबोधित करते हुए कहता है कि वे शोषण करनेवालों । के हृदयों पर क्रूर विनाश का कारण बनकर बरसते हैं। उनके भीतर भीषण क्रांति और विनाश की माया भरी हुई है। युद्ध रूपी नौका के – समान बादलों में गरजने-बरसने की आकांक्षा है, उमंग है।

युद्ध के समान उनकी भयंकर नगाड़ों रूपी गर्जना को सुनकर मिट्टी में दबे हुए बीज अंकुरित होने की इच्छा से मस्ती में भरकर सिर उठाने लगते हैं। बादलों के क्रांतिपूर्ण उद्घोष में ही अंकुरों अर्थात निम्न वर्ग । का उद्धार संभव है। इसलिए कवि उनका बार-बार गरजने और बरसने का आह्वान करता है। बादलों के बार-बार बरसने तथा उनकी । बज्र रूपी तेज हुँकार को सुनकर समस्त संसार भयभीत हो जाता है। लोग घनघोर गर्जना से आतंकित हो उठते हैं। बादलों की वन रूपी

हुँकार से उन्नति के शिखर पर पहुँचे सैकड़ों-सैकड़ों वीर पृथ्वी पर गिरकर नष्ट हो जाते हैं। गगन को छूने की

प्रतियोगिता रखने वाले लोग अर्थात सुविधाभोगी पूँजीपति वर्ग के लोग नष्ट हो जाते हैं। लेकिन उसी बादल की वज्र रूपी हुँकार से मुक्त विनाशलीला में छोटेछोटे पौधों के समान जनसामान्य वर्ग के लोग प्रसन्नता से भरकर मुसकराते हैं। वे क्रांति रूपी बादलों से नवीन जीवन प्राप्त करते हैं। शस्य-श्यामल हो उठते हैं। वे छोटे-छोटे पौधे हरे-भरे होकर हिल-हिलकर, खिल-खिलकर हाथ हिलाते हुए अनेक प्रकार के संकेतों से बादलों को बुलाते रहते हैं। क्रांति रूपी स्वरो से छोटे पौधे अर्थात निम्न वर्ग का जनसामान्य ही शोभा प्राप्त करता है। समाज के ऊँचे-ऊँचे भवन महान नहीं होते। वे तो वास्तव में आतंक और भय के निवास होते हैं।

ऊँचे भवनों में रहनेवाले पूँजीपति वर्ग के ऊँचे लोग सदा : भयभीत रहते हैं। जैसे बाढ़ का प्रभाव कीचड़ पर होता है। वैसे ही क्रांति का अधिकांश प्रभाव बुराई रूपी कीचड़ या शोषक वर्ग पर ही – होता है। निम्न वर्ग के प्रतीक छोटे पौधे रोग-शोक में सदा मुसकराते रहते हैं। इन पर क्रांति का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। शोषक वर्ग ने निम्न वर्ग का शोषण करके अपने खजाने भरे हैं लेकिन उन्हें फिर भी संतोष नहीं आता।

उनकी इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं होती लेकिन वे – क्रांति से गर्जना सुनकर अपनी प्रेमिकाओं की गोद में भय से काँपते रहते हैं। कवि क्रांति के दूत बादलों का आह्वान करता है कि वह जर्जर और शक्तिहीन गरीब किसानों व जनसामान्य की रक्षा करें। पूँजीपतियों ने इनका सारा खून निचोड़ लिया है। अब उनका शरीर हाड़ मात्र ही रह गया है। इसलिए कवि ने बादलों को ही क्रांति के द्वारा उन्हें नवजीवन प्रदान करने का आह्वान किया है।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1. 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में 'दुख की छाया' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- कवि ने 'दुख की छाया' मानव-जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सुख कभी स्थायी नहीं होता। उसके साथ-साथ दुख का प्रभाव रहता है। धनी शोषण करके अकूत संपत्ति जमा करता है परंतु उसे सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सब कुछ छिनने के डर से भयभीत रहता है।

प्रश्न 2. 'अशानि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर ' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया है?

उत्तर- इस पंक्ति में कवि ने पूँजीपति या शोषक या धनिक वर्ग की ओर संकेत किया है। 'बिजली गिरना' का तात्पर्य क्रांति से है। क्रांति से जो विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग है, उसकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है और वह उन्नति के शिखर से गिर जाता है। उसका गर्व चूर-चूर हो जाता है।

प्रश्न 3. ' विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते ' पंक्ति में ' विप्लव-रव ' से क्या तात्पर्य है? ' छोटे ही हैं शोभा पाते ' एसा क्यों कहा गया है?

उत्तर- विप्लव-रव से तात्पर्य है-क्रांति-गर्जन। जब-जब क्रांति होती है तब-तब शोषक वर्ग या सत्ताधारी वर्ग के सिंहासन डोल जाते हैं। उनकी संपत्ति, प्रभुसत्ता आदि समाप्त हो जाती हैं। कवि ने कहा है कि क्रांति से छोटे ही शोभा पाते हैं। यहाँ 'छोटे' से तात्पर्य है-आम आदमी। आम आदमी ही शोषण का शिकार होता है। उसका छिनता कुछ नहीं है अपितु उसे कुछ अधिकार मिलते हैं। उसका शोषण समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 4. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?'

उत्तर- बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं

i. बादल गर्जन करते हुए मूसलाधार वर्षा करते हैं।

- ii. पृथ्वी से पौधों का अंकुरण होने लगता है।
- iii. मूसलाधार वर्षा होती है।
- iv. बिजली चमकती है तथा उसके गिरने से पर्वत-शिखर टूटते हैं।
- v. हवा चलने से छोटे-छोटे पौधे हाथ हिलाते से प्रतीत होते हैं।
- vi. गरमी के कारण दुखी प्राणी बादलों को देखकर प्रसन्न हो जाते हैं।

व्याख्या कीजिए

प्रश्न 1. तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया-

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया-

प्रश्न 2. अट्टालिका नहीं है रे

आतंक-भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन,

उत्तर- इनकी व्याख्या के लिए क्रमशः व्याख्या-1 व

3 देखिए।

कला की बात

प्रश्न 1. पूरी कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। आपको प्रकृति का कौन-सा मानवीय रूप पसंद आया और क्यों?

उत्तर- कवि ने पूरी कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया है। मुझे प्रकृति का निम्नलिखित मानवीय रूप पसंद आया-

हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार-

शस्य अपार,

हिल-हिल

खिल-खिल,



हाथ हिलाते,

तुझे बुलाते,

इस काव्यांश में छोटे-छोटे पौधों को शोषित वर्ग के रूप में बताया गया है। इनकी संख्या सर्वाधिक होती है। ये क्रांति की संभावना से प्रसन्न होते हैं। ये हाथ हिला-हिलाकर क्रांति का आहवान करते हुए प्रतीत होते हैं। यह कल्पना अत्यंत सुंदर है।

प्रश्न 2. कविता में रूपक अलंकार का प्रयोग कहाँ- कहाँ हुआ है ? संबंधित वाक्यांश को छाँटकर लिखिए ।

उत्तर- रूपक अलंकार के प्रयोग की पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

- तिरती है समीर-सागर पर
- अस्थिर सुख पर दुख की छाया
- यह तेरी रण-तरी
- भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
- ऐ विप्लव के बादल
- ऐ जीवन के पारावार

प्रश्न 3. इस कविता में बादल के लिए 'ऐ विप्लव के वीर! ' तथा ' के ' ऐ जीवन के पारावार!' जैसे संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। ' बादल राग 'कविता के शेष पाँच खंडों में भी कई संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। जैसे- 'ओर वर्ष के हर्ष !' मेरे पागाल बादल !, ऐ निर्बंध !, ऐ स्वच्छंद! , ऐ उदाम! ,

ऐ सम्राट! ,ऐ विप्लव के प्लावन! , ऐ अनंत के चंचल शिशु सुकुमार! उपर्युक्त संबोधनों की व्याख्या करें तथा बताएँ कि बादल के लिए इन संबोधनों का क्या औचित्य है?

उत्तर- इन संबोधनों का प्रयोग करके कवि ने न केवल कविता की सार्थकता को बढ़ाया है, बल्कि प्रकृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपादान का सुंदर चित्रण भी किया है। बादल के लिए किए संबोधनों की व्याख्या इस प्रकार है-

प्रश्न 4. कवि बादलों को किस रूप में देखता है? कालिदास ने 'मेघदूत' काव्य में मेघों को दूत के रूप में

देखा/अप अपना कोई काल्पनिक बिंब दीजिए।

उत्तर- कवि बादलों को क्रांति के प्रतीक के रूप में देखता है। बादलों के द्वारा वह समाज में व्याप्त शोषण को खत्म करना चाहता है ताकि शोषित वर्ग को अपने अधिकार मिल सकें। काल्पनिक बिंब- हे आशा के रूपक हमें जल्दी ही सिक्त कर दो अपनी उजली और छोटी-छोटी बूंदों से जिनमें जीवन का राग छिपा है। हे आशा के संचारित बादल!

प्रश्न 5. कविता को प्रभावी बनाने के लिए कवि विशेषणों का सायास प्रयोग करता है जैसे-अस्थिर सुख। सुख के साथ अस्थिर विशेषण के प्रयोग ने सुख के अर्थ में विशेष प्रभाव पैदा कर दिया है। ऐसे अन्य विशेषणों को कविता से छाँटकर लिखें तथा बताएँ कि ऐसे शब्द-पदों के प्रयोग से कविता के अर्थ में क्या विशेष प्रभाव पैदा हुआ है?

उत्तर- कविता में कवि ने अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है जो निम्नलिखित हैं

- i. निर्दय विप्लव- विनाश को अधिक निर्मम व विनाशक बताने हेतु 'निर्दय' विशेषण।
- ii. दग्ध हृदय- दुख की अधिकता व संतप्तता हेतु 'दग्ध' विशेषण।
- iii. सजग- सुप्त अंकुर- धरती के भीतर सोए, किंतु सजग अंकुर-हेतु 'सजग-सुप्त' विशेषण।
- iv. वज्रहंकार- हंकार की भीषणता हेतु 'वज्र' विशेषण।
- v. गगन-स्पर्शी- बादलों की अत्यधिक ऊँचाई बताने हेतु 'गगन' ।
- vi. आतंक-भवन- भयावह महल के समान आतंकित कर देने हेतु।
- vii. त्रस्त नयन- आँखों की व्याकुलता।
- viii. जीर्ण बाहु- भुजाओं की दुर्बलता।
- ix. प्रफुल्ल जलज- कमल की खिलावट।
- x. रुदध कोष- भरे हुए खजानों हेतु।



कवितावली

- गोस्वामी तुलसीदास

(i) कवितावली (उत्तर-कांड से) प्रसंग में कवि ने अपने समय का यथार्थ चित्रण किया है। कवि का कथन है कि समाज में किसान, बनिए, भिखारी, भाट, नौकर-चाकर, चोर आदि सभी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। समाज का उच्च और निम्न वर्ग धर्म-अधर्म का प्रत्येक कार्य करता है। यहाँ तक कि लोग अपने पेट की खातिर अपने बेटा-बेटी को बेच रहे हैं।

पेट की आग संसार की सबसे बड़ी पीड़ा है। समाज में किसान के पास करने को खेती नहीं, भिखारी को भीख नहीं मिलती। व्यापारी के पास व्यापार नहीं तथा नौकरों के पास करने के लिए कोई कार्य नहीं। समाज में चारों ओर बेकारी, भूख, गरीबी और अधर्म का बोलबाला है। अब तो ऐसी अवस्था में दीन-दुखियों की रक्षा करनेवाले श्री राम ही कृपा कर सकते हैं। अंत में कवि समाज में फैली जाति-पाति और छुआछूत का भी – खंडन करते हैं।

(ii) 'लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप' प्रसंग लोक-नायक तुलसीदास के श्रेष्ठ महाकाव्य 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया है। प्रस्तुत प्रसंग में कवि ने लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने के पश्चात उनकी मूर्छा-अवस्था तथा राम के विलाप का कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ कवि ने शोक में डूबे राम के प्रलाप तथा हनुमान जी का संजीवनी बूटी लेकर आने की घटना का सजीव अंकन किया है।

कवि ने करुण रस में वीर रस का अनूठा मिश्रण किया है। लक्ष्मण-मूर्छा के पश्चात हनुमान जी जब संजीवनी बूटी लेकर लौट रहे थे तो भरत ने उन्हें राक्षस समझकर तीर मारा था, जिससे वे मूर्च्छित हो गए थे। भरत जी ने उन्हें स्वस्थ कर अपने बाण पर बैठाकर राम जी के पास जाने के लिए कहा था। हनुमान जी भरत जी का गुणगान करते हुए प्रस्थान कर गए थे। उधर श्री रामचंद्र जी लक्ष्मण को हृदय से लगा विलाप

कर रहे हैं।

वे एकटक हनुमान जी के आने की प्रतीक्षा में हैं। श्री रामचंद्र अपने अनुज लक्ष्मण को नसीहतें दे रहे हैं कि आप मेरे लिए माता-पिता को छोड़ यहाँ जंगल में चले आए। जिस प्रेम के कारण तुमने सब कुछ त्याग दिया आज वही प्रेम मुझे दिखाओ। श्री राम जी लक्ष्मण को संबोधन कर कह रहे हैं कि हे भाई! जिस प्रकार पंख के बिना पक्षी अत्यंत दीन होता है और मणि के बिना साँप दीन हो जाता है उसी प्रकार आपके बिना भी मेरा जीवन भी अत्यंत दीन एवं असहाय हो जाएगा। राम सोच रहे हैं कि वह अयोध्या में क्या मुँह लेकर जाएंगे। अयोध्यावासी तो यही समझेंगे कि नारी के लिए राम ने एक भाई को गवाँ दिया। समस्त संसार में अपयश फैल जाएगा।

माता सुमित्रा ने लक्ष्मण को मेरे हाथ में यह सोचकर सौंपा था कि मैं सब प्रकार से उसकी रक्षा करूँगा। श्री राम जी के सोचते-सोचते उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वे ! फूट-कूटकर रोने लगे। हनुमान के संजीवनी बूटी ले आने पर श्री राम अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने हनुमान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। वैद्य ने तुरंत लक्ष्मण का उपचार किया जिससे लक्ष्मण को होश आ गया। राम ने अपने अनुज को हृदय से लगाया। इस दृश्य को देख राम-सेना के सभी सैनिक बहुत प्रसन्न हुए।

हनुमान जी ने पुनः वैद्य को उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया। रावण इस वृत्तांत को सुनकर अत्यधिक उदास हो उठा और व्याकुल होकर कुंभकरण के महल में गया। कुंभकरण को जब रावण ने जगाया तो वह यमराज के समान शरीर धारण कर उठ खड़ा हुआ। रावण ने उसके समक्ष अपनी संपूर्ण कथा का बखान किया। साथ ही हनुमान जी के रण-कौशल और बहादुरी का परिचय भी दिया कि उसने अनेक असुरों का संहार कर दिया है।



अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर- 'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।

प्रश्न 2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है—तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तुर्क संगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- जब पेट में आग जलती है तो उसे बुझाने के लिए व्यक्ति हर तरह का उलटा अथवा बुरा कार्य करता है, किंतु यदि वह ईश्वर का नाम जप ले तो उसकी अग्नि का शमन हो सकता है क्योंकि ईश्वर की कृपा से वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है। तुलसी का यह काव्य सत्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उस समय था। ईश्वर भक्ति का मेघ ही मनुष्य को अनुचित कार्य करने से रोकने की क्षमता रखता है।

प्रश्न 3. तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी? धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ/काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आती?

उत्तर- तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे। तुलसी के संबंध में भी समाज ने उनके कुल व जाति पर प्रश्नचिह्न लगाए थे। कवि भक्त था तथा उसे सांसारिक संबंधों में कोई रुचि नहीं थी। वह कहता है कि उसे अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना। इससे किसी की जाति खराब नहीं होगी क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति के वर ढूँढ़ता है। पुरुष-प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है। तुलसी इस सवैया में अगर अपनी बेटी की शादी की बात करते तो संदर्भ में बहुत अंतर आ जाता। इससे तुलसी के परिवार की जाति खराब हो जाती। दूसरे, समाज में लड़की का विवाह न करना गलत समझा जाता है। तीसरे, तुलसी बिना जाँच के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जाति-प्रथा पर कठोर आघात होता। इससे सामाजिक संघर्ष भी बढ़ सकता था।

प्रश्न 4. धूत कहौ वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- तुलसीदास का जीवन सदा अभावों में बीता, लेकिन उन्होंने अपने स्वाभिमान को जगाए रखा। इसी प्रकार के भाव उनकी भक्ति में भी आए हैं। वे राम के सामने गिड़गिड़ाते नहीं बल्कि जो कुछ उनसे प्राप्त करना चाहते हैं वह भक्त के अधिकार की दृष्टि से प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने अपनी स्वाभिमानी भक्ति का परिचय देते हुए राम से यही कहा है कि मुझ पर कृपा करो तो भक्त समझकर न कि कोई याचक या भिखारी समझकर।।

प्रश्न 5. व्याख्या करें-

- मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

- ii. जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही ॥
- iii. माँग के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु ने दैबको दोऊ ॥
- iv. ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट को ही पचत, बेचत बेटा-बेटकी ॥

उत्तर-

- i. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम विलाप करते हुए कहते हैं कि तुमने मेरे हित के लिए माता-पिता का त्याग कर दिया और वनवास स्वीकार किया। तुमने वन में रहते हुए सर्दी, धूप, आँधी आदि सहन किया। यदि मुझे पहले ज्ञात होता कि वन में मैं अपने भाई से बिछड़ जाऊँगा तो मैं पिता की बात नहीं मानता और न ही तुम्हें अपने साथ लेकर वन आता। राम लक्ष्मण की निःस्वार्थ सेवा को याद कर रहे हैं।
- ii. मूर्च्छित लक्ष्मण को गोद में लेकर राम विलाप कर रहे हैं कि तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी हो गई है जैसे पंखों के बिना पक्षी की, मणि के बिना साँप की और सँड़ के बिना हाथी की स्थिति दयनीय हो जाती है। ऐसी स्थिति में मैं अक्षम व असहाय हो गया हूँ। यदि भाग्य ने तुम्हारे बिना मुझे जीवित रखा तो मेरा जीवन इसी तरह शक्तिहीन रहेगा। दूसरे शब्दों में, मेरे तेज व पराक्रम के पीछे तुम्हारी ही शक्ति कार्य करती रही है।
- iii. तुलसीदास ने समाज से अपनी तटस्थता की बात कही है। वे कहते हैं कि समाज की बातों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे किसी पर आश्रित नहीं हैं वे मात्र राम के सेवक हैं। जीवन-निर्वाह के लिए भिक्षावृत्ति करते हैं तथा मस्जिद में सोते हैं। उन्हें संसार से कोई लेना-देना नहीं है।

- iv. तुलसीदास ने अपने समय की आर्थिक दशा का यथार्थपरक चित्रण किया है। इस समय लोग छोटे-बड़े, गलतसही सभी प्रकार के कार्य कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपनी भूख मिटानी है। वे कर्म की प्रवृत्ति व तरीके की परवाह नहीं करते। पेट की आग को शांत करने के लिए वे अपने बेटा-बेटी अर्थात् संतानों को भी बेचने के लिए विवश हैं अर्थात् पेट भरने के लिए व्यक्ति कोई भी पाप कर सकता है।

प्रश्न 6. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- जब लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा तो राम एकदम विह्वल हो उठे। वे ऐसे रोए जैसे कोई बालक पिता से बिछुड़कर होता है। सारी मानवीय संवेदनाएँ उन्होंने प्रकट कर दीं। जिस प्रकार मानव-मानव के लिए रोता है ठीक वैसा ही राम ने किया। राम के ऐसे रूप को देखकर यही कहा जा सकता है कि राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। मानव में अपेक्षित सारी अनुभूतियाँ इस शोक सभा में दिखाई देती हैं।

प्रश्न 7. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर- हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी। इधर राम बहुत व्याकुल हो रहे थे। उनके विलाप से वानर सेना में शोक की लहर थी। चारों तरफ शोक का माहौल था। इसी बीच हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आ गए। सुषेण वैद्य ने तुरंत संजीवनी बूटी से दवा तैयार कर के लक्ष्मण को पिलाई तथा लक्ष्मण ठीक हो गए। लक्ष्मण के उठने से राम का शोक समाप्त हो गया और सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई। लक्ष्मण स्वयं उत्साही वीर थे। उनके आ जाने से सेना का



खोया पराक्रम प्रगाढ़ होकर वापस आ गया। इस तरह हनुमान द्वारा पर्वत उठाकर लाने से शोक-ग्रस्त माहौल में वीर रस का आविर्भाव हो गया था।

प्रश्न 8. “जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाही॥

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर- इस वचन में नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। राम ने अपनी पत्नी के खो जाने से बढ़कर लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने को महत्त्व दिया है। उन्हें इस बात का पछतावा होता है कि नारी के लिए मैंने भाई खो दिया है यह सबसे बड़ा कलंक है। यदि नारी खो जाए तो उसके खो जाने से कोई बड़ी हानि नहीं होती। नारी से बढ़कर तो भाई-बंधु हैं जिनके कारण व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा पाता है, यदि वही खो जाए तो माथे पर जीवनभर के लिए कलंक लग जाता है।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के मृत्यु-शोक पर ‘अज’ तथा निराला की ‘सरोज-स्मृति’ में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

उत्तर- ‘सरोज-स्मृति’ में कवि निराला ने अपनी पुत्री की मृत्यु पर उद्गार व्यक्त किए थे। ये एक असहाय पिता के उद्गार थे जो अपनी पुत्री की आकस्मिक मृत्यु के कारण उपजे थे। भ्रातृशोक में डूबे राम का विलाप निराला की तुलना में कम है। लक्ष्मण अभी सिर्फ मूर्च्छित ही हुए थे। उनके जीवित होने की आशा बची हुई थी। दूसरे, सरोज की मृत्यु के लिए निराला की कमजोर आर्थिक दशा जिम्मेदार थी। वे उसकी देखभाल नहीं कर पाए थे, जबकि राम के साथ ऐसी समस्या नहीं थी।

प्रश्न 2. ‘पेट ही को पचत, बेचते बेटा-बेटकी’ तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदयविदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर- भुखमरी की स्थिति बहुत दयनीय होती है। व्यक्ति भुखमरी की इस दयनीय स्थिति में हर प्रकार का नीच कार्य करता है। कर्ज लेता है, बेटा-बेटी तक को बेच देता है। जब कर्ज का बोझ बढ़ता जाता है तो आत्महत्या तक कर लेता है। तुलसी का समाज भी लगभग वैसा ही था जैसा कि आज का भारतीय मध्यवर्गीय समाज। उस समय की परिस्थिति भी बहुत भयानक थी। लोगों के पास कमाने का कोई साधन न था ऊपर से अकाल ने लोगों को भुखमरी के किनारे तक पहुँचा दिया। इस स्थिति से तंग आकर व्यक्ति वे सभी अनैतिक कार्य करने लगे। बेटा-बेटी का सौदा करने लगे। यदि साहूकार का ऋण नहीं उतरता है तो स्वयं मर जाते थे। ठीक यही परिस्थिति हमारे समाज की है। किसान कर्ज न चुकाने की स्थिति में आत्महत्याएँ कर रहे हैं। कह सकते हैं कि तुलसी का युग और आज का युग एक ही है। आर्थिक दृष्टि से दोनों युगों में विषमताएँ रहीं।

प्रश्न 3. तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं? आज की बेकारी की समस्या के कारणों के साथ उसे मिलाकर कक्षा में परिचर्चा करें।

उत्तर- तुलसी के युग में बेकारी के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

- खेती के लिए पानी उपलब्ध न होना।
- बार-बार अकाल पडना।
- अराजकता।
- व्यापार व वाणिज्य में गिरावट।

आज बेकारी के कारण पहले की अपेक्षा भिन्न हैं-

- भ्रष्टाचार।
- शारीरिक श्रम से नफ़रत करना।

- कृषि-कार्य के प्रति अरुचि।
- जनसंख्या विस्फोट, अशिक्षा तथा अकुशलता।

प्रश्न 4. राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य कर ऐसा क्यों कहा-“मिलइ न जगत सहोदर भ्राता”? इस पर विचार करें।

उत्तर- राम और लक्ष्मण का जन्म यद्यपि एक ही माँ के पेट से नहीं हुआ था, लेकिन इनके पिता एक ही थे- महाराज दशरथ। इसलिए राम ने लक्ष्मण को सहोदर भ्राता कहा। लक्ष्मण ने सदा राम की सेवा की। उनके सुख के लिए अपने सुखों का त्याग कर दिया। केवल एक ही पेट से जन्म लेने वाले सगे नहीं होते बल्कि वही भाई सहोदर होता है जो

पारिवारिक संबंधों को अच्छी तरह निभाता है। लक्ष्मण ने श्रीराम के दुख दूर करने के लिए जीवनभर कष्ट उठाए। राम का छोटा-सा दुख भी उनसे देखा नहीं जाता था। इसलिए राम ने उन्हें लक्ष्य कर ‘मिलइ न जगत सहोदर भ्राता’ कहा।

प्रश्न 5. यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया-ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छंद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छंदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ।

उत्तर-

काव्य-रूप-

प्रबंध काव्य- रामचरितमानस (महाकाव्य)।

मुक्तक काव्य- विनयपत्रिका।

गेय पद शैली- गीतावली, कृष्ण गीतावली।





रुबाइयाँ, ग़ज़ल

- फिराख गोरखपुरी

रुबाइयाँ' फिराक गोरखपुरी द्वारा रचित काव्य है जो उनके काव्य-संग्रह 'गुले नगमा' से संग्रहित है। इस कविता में कवि ने वात्सल्य रस का अनूठा चित्रण प्रस्तुत किया है। यह वात्सल्य भावना से ओत-प्रोत कविता है। माँ अपने चाँद के टुकड़े को अपने आँगन में खड़ी। होकर अपने हाथों में झुला रही है। माँ अपने नन्हें बच्चे को अपने आँचल में भरकर बार-बार हवा में उछाल देती है जिससे नन्हें बच्ची। की हँसी सारे वातावरण में गूँज उठती है। माँ अपने बच्चे को निर्मल जल से नहलाती है।

उसके उलझे बालों को कंधी से संवारती है। बच्चा भी माँ को बड़े प्यार से देखता है जब माँ अपनी गोदी में लेकर उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर संध्या होते ही घर पुते और सजे हुए दिखते हैं। घरों में चीनी मिट्टी के चमकते

खिलौने सुंदर मुख पर नई चमक ला देते हैं। माँ प्रसन्न होकर अपने नन्हें बच्चे द्वारा बनाए मिट्टी के घर में दीपक जलाती है। बच्चा अपने आँगन में ठिनक रहा है।

वह ठिनकता हुआ चाँद को देखकर उस पर : मोहित हो जाता है। बच्चा चंद्रमा को माँगने की हठ करता है तो माँ दर्पण में उसे चाँद उतारकर दिखाना चाहती है। रक्षा-बंधन एक रस का बंधन है। सावन मास में आकाश में हल्के-हल्के बादल छाए हुए हैं। राखी के कच्चे धागों पर लगे लच्छे बिजली के समान चमकते हैं। कवि कहता है कि सावन का जो संबंध घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है। इसी बिजली के समान चमकते लच्छेदार कच्चे धागे को बहन अपने भाई की कलाई में बाँधती है।

STEP UP
अभ्यास प्रश्न
ACADEMY

पाठ के साथ

प्रश्न 1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर- शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने में आता है। इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है। राखी के लच्छे बिजली कौंधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।

प्रश्न 2. खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर- परदा खोलने से आशय है – अपने बारे में बताना। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे की निंदा करता है या बुराई करता है। तो वह स्वयं की बुराई कर रहा है। इसीलिए शायर ने कहा कि मेरा परदा खोलने वाले अपना परदा खोल रहे हैं।

प्रश्न 3. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं – इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तनातनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उत्तर- कवि अपने भाग्य से कभी संतुष्ट नहीं रहा। किस्मत ने कभी उसका साथ नहीं दिया। वह अत्यधिक

निराश हो जाता है। वह अपनी बदकिस्मती के लिए खीझता रहता है। दूसरे, कवि कर्महीन लोगों पर व्यंग्य करता है। कर्महीन लोग असफलता मिलने पर भाग्य को दोष देते हैं और किस्मत उनकी कर्महीनता को दोष देती है।

प्रश्न 4. टिप्पणी करें।

- गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।
- सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

उत्तर-

- गोदी के चाँद से आशय है – बच्चा और गगन के चाँद से आशय है – आसमान में निकलने वाला चाँद। इन दोनों में गहरा और नजदीकी रिश्ता है। दोनों में कई समनाताएँ हैं। आश्चर्य यह है कि गोदी का चाँद गगन के चाँद को पकड़ने के लिए उतावला रहता है तभी तो सूरदास को कहना पड़ा "मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।"
- रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार सावन के महीने में आता है। सावन की घटाएँ जब घिर आती हैं तो चारों ओर खुशी की बयार बहने लगती है। राखी का यह त्यौहार इस मौसम के द्वारा और अधिक सार्थक हो जाता है। सावन की काली-काली घटाएँ भाई को संदेश देती हैं कि तेरी बहन तुझे याद कर रही है। यदि तू इस पवित्र त्योहार पर नहीं गया तो उसकी आँखों से मेरी ही तरह बूंदें टपक पड़ेगी।

कविता के आसपास

प्रश्न 1. इन रुबाइयों से हिंदी, उर्दू और लोकभाषा के मिले-जुले प्रयोग को छाँटिए।

उत्तर- हिंदी के प्रयोग-

- आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
- हाथों में झुलाती है उसे गोद-भरी
- गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी
- किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
- दीवाली की शाम घर पुते और सजे

- रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
- छापी है घटा गगन की हलकी-हलकी
- बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
- भाई के है बाँधती चमकती राखी

उर्दूके प्रयोग-

- उलझे हुए गेसुओं में कंधी करके
- देख आईने में चाँद उतर आया है

लोकभाषा के प्रयोग-

- रह-रह के हवा में जो लोका देती है।
- जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े
- आँगन में दुनक रहा है जिदयाया है
- बालक तो हई चाँद पै ललचाया है

प्रश्न 2. फिराक ने 'सुनो हो, 'रक्खो हो' आदि शब्द मीर की शायरी के तर्ज पर इस्तेमाल किए हैं। ऐसी ही मीर की कुछ गज़लें ढूँढ़ कर लिखिए।

उत्तर-

(1) उलटी हो गई सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया अहदे जवानी रो-रो काटा पीरी मैली आँखें मूंद यानि रात बहुत जागे थे। सुबह हुई आराम किया 'मीर' के दीन ओ इमां को	आखिर इस बीमारी-ए-दिल ने दिल का काम तमाम किया तुम पूछते हो क्या? उसने तो कशकां खींचा दौर में बैठा कबका अर्क इस्लाम किया।
(2) मर्ग एक मादंगी का वक्फा है। यानि आगे चलेंगे दम लेकर। हस्ती अपनी हबाब की-सी है।	ये नुमाइश सबाब की-सी है। चश्मे दिल खोल इस ही आलम पर याँकि औकात ख्वाब की-सी है।



(3) हस्ती अपनी हुबाब की-सी है। ये नुमाइश सराब की-सी है। नाजुक उसके लब की क्या कहिए पंखुड़ी इक गुलाब की-सी है। सहमे दिल खोल इस भी आलम पर याँ की औकता खाब की-सी है।	बारहा उसके दर पे जाता हूँ। हालत अब इज्तिराब की-सी है। में जो बोला कहा कि ये आवाज उसी खाना खराब की-सी है। मीर उन नीम बाज आँखों में सारी मस्ती शराब की-सी है।
(4) हमने अपनी सी की बहुत लेकिन मरीजे-इश्क का इलाज नहीं जफायें देखीं लियाँ बेवफाइयाँ देखीं भला हुआ कि तेरी सब बुराइयाँ देखीं दिल अजब शहर था ख्यालों आवारगाने इश्क का पूछा जो मैं निशां	मुश्ते-गुबारे लेके सबा ने उड़ा दिया शाम से ही बुझा-सा रहता है। दिल हुआ है चिराग मुफलिस का क्या पतंगों ने इल्तिमास किया। का दिल की वीरानी का क्या मजकूर है। ये नगर सौ मरतबा लूटा गया।
(5) इब्तिदाए इश्क है रोता है क्या आगे आगे देखिये होता है क्या, अब तो जाते हैं मयकदे से 'मीर' फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया मेरे रोने की जिसमें थी एक मुद्दत तक वो	तो हमसाया काहे को सोता रहेगा तो हमसाया काहे को सोता रहेगा हम फकीरों से बेवफाई की आन बैठे जो तुमने प्यार किया सख्त क्राफिर था जिसने पहले 'मीर' मज़हब इश्क इख्तियार

कागज़ नम रहा इस इस शोर से 'मीर' रोता रहेगा	किया। मिले सलीके से मेरी निभी मुहब्बत में तमाम उम्र में नाकामियों से काम लिया
--	--

आपसदारी

प्रश्न 1. कविता में एक भाव, एक विचार होते हुए भी उसका अंदाजे बयाँ या भाषा के साथ उसका बर्ताव अलग-अलग रूप में अभिव्यक्ति पाता है। इस बात को ध्यान रखते हुए नीचे दी गई कविताओं को पढ़िए और दी गई फ़िराक की ग़ज़ल-रूबाई में से समानार्थी पंक्तियाँ ढूँढ़िए

i. मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।

-सूरदास

ii. वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमड़ कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान

-सुमित्रानंदन पंत

iii. सीस उतारे भुईं धरे तब मिलिहैं करतार

-कबीर

उत्तर-

i. आँगन में तुनक रहा है ज़िदयाया है।
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है।

ii. आबो ताबे अश्आर न पूछो तुम भी आँखें
रक्खो हो
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोले हैं।

ऐसे में तू याद आए हैं अंजमने मय में रिंदो को,
रात गए गर्दे पे फरिश्ते बाबे गुनह जग खोले हैं।

iii. "ये कीमत भी अदा करे हैं हम बदुरुस्ती-ए
होशो हवास
तेरा सौदा करने वाले दीवाना भी होलें हैं।"



छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख

- उमाशंकर जोशी

छोटा मेरा खेत' कविता उमाशंकर जोशी द्वारा रचित उनके काव्य-संग्रह 'निशीथ' से संकलित है। प्रस्तुत कविता में कवि ने कवि-कर्म को खेती के रूप में प्रस्तुत किया है। कागज का चौकोर पन्ना कवि को एक चौकोर खेत के समान प्रतीत होता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के आने से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यंजना का हो सकता है जो मूलरूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है।

उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक । पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा प्रस्फुटित होती है, वह उस क्षण में होने वाली रोपाई का परिणाम है लेकिन उससे प्रस्फुटित रस-धारा अनंतकाल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती है। कवि स्पष्ट कहता है कि खेत में पैदा अन्न तो । कुछ समय पश्चात समाप्त हो सकता है, लेकिन साहित्य से जिस रस-धारा की

प्राप्ति होती है, वह अनंतकाल तक समाप्त नहीं होती।

बगुलों के पंख कविता का सारांश

'बगुलों के पंख' कविता 'उमाशंकर जोशी' द्वारा रचित उनके सुप्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'निशीथ' से संग्रहित है। यह प्रकृति-सौंदर्य से परिपूर्ण कविता है। इस कविता में कवि ने सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए एक युक्ति का सहारा लिया है और सौंदर्य के चित्रात्मक वर्णन के साथ-साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का भी सुंदर चित्रण किया है। कवि आकाश में छाए काले-काले बादलों में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए सुंदर-सुंदर बगुलों के पंखों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती संध्या की उज्ज्वल सफ़ेद काया के समान प्रतीत होते हैं। कवि का मन इस अत्यंत सुंदर तथा नयनाभिराम दृश्य को देखकर उसी में डूब जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की सिफारिश करता है। लेकिन वह दृश्य इतना सुंदर है कि उसकी आत्मा तक को अपने अंदर समेट लेता है। कवि उससे चाहकर भी बच नहीं पाता।

अभ्यास प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1. छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- कवि ने छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहा है। इससे कवि बताना चाहता है कि कवि-कर्म तथा खेती में बहुत समानता है। जिस प्रकार छोटा खेत चौकोर होता है, उसी प्रकार कागज का पन्ना भी चौकोर होता है। जिस प्रकार खेत में बीज, जल, रसायन डालते हैं और उसमें अंकुर, फूल,

फल आदि उगते हैं, उसी प्रकार कागज के पन्ने पर कवि अपने भाव के बीज बोता है तथा उसे कल्पना, भाषा आदि के जरिये रचना के रूप में फसल मिलती है। फसल एक निश्चित समय के बाद काट ली जाती है, परंतु कृति से हमेशा रस मिलता है।

प्रश्न 2. रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या हैं?

उत्तर- रचना के संदर्भ में अंधड़ का अभिप्राय है कि जब भावों की आँधी आती है तो वह शब्दों का रूप लेकर कागज पर जन्म लेने लगती है। वास्तव में भाव ही कविता रचने का



पहला चरण है। 'बीज' से कवि का आशय है कि जब भाव आँधी रूप में आते हैं तो कविता रचने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यह बीज वास्तव में विचार और अभिव्यक्ति का रूप होता है। यही कविता रचने का मूल मंत्र है।

प्रश्न 3. रस को अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर- कवि ने रचना कर्म की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर इशारा किया है-

- रचना कर्म का अक्षय पात्र कभी खाली नहीं होता।
- यह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है।
- यह चिरकाल तक आनंद देता है।

प्रश्न 4. व्याख्या करें

- शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
- रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

उत्तर- कविता कहता है कि जब शब्द रूपी अंकुर फूटे तो नए पत्तों के निकलने से पौधा झुक गया अर्थात् नए फूल पत्तों के खिलने के कारण भावना रूपी अमृत पत्र झुक गया।

कवि कहता है कि बीज रोपन में बहुत कम समय लगता है, लेकिन बीज रोपने और कविता लिखने में बहुत फर्क होता है। खेत में बोया गया बीज कुछ समय बाद खत्म हो जाता है, लेकिन कविता रूपी फ़सल की कटाई चिरकाल तक चलती रहती है। वह बँटते रहते हुए खत्म नहीं होती।

कविता के आसपास

प्रश्न 1. शब्दों के माध्यम से जब कवि दृश्यों, चित्रों, ध्वनि-योजना अथवा रूप-रस-गंध को हमारे ऐंद्रिक अनुभवों में साकार कर देता है तो बिंब का निर्माण होता

है। इस आधार पर प्रस्तुत कविता से बिंब की खोज करें।

उत्तर- इस कविता में कई तरह के बिंबों का निर्माण हुआ है जो निम्नलिखित हैं-

चाक्षुप्त बिंब-

- छोटा मेरा खेत चौकोना,
- कागज का एक पन्ना,
- कोई अंधड़ कहीं से आया।
- शब्द के अंकुर फूटे,
- पल्लव-पुष्पों से नमित,
- झूमने लगे फल।
- नभ में पाँती-बंधे बगुलों की पाँखें,
- तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
- कजरारे बादलों की छाई नभ छाया।

आस्वाद बिंब-

- कल्पना के रसायनों को पी बीज गया निःशेष।
- अमृत धाराएँ फूटतीं।

प्रश्न 2. जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप हो, रूपक कहलाता है। इस कविता में से रूपक का चुनाव करें।

उत्तर-

- भावों रूपी आँधी
- विचार रूपी बीज
- शब्द रूपी अंकुर
- कल्पना रूपी रसायन
- कागज रूपी खेत
- कटाई रूपी अनंतता
- क्षण रूपी बुआई।

कला की बात

प्रश्न 1. बगुलों के पंख कविता को पढ़ने पर आपके मन में कैसे चित्र उभरते हैं? उनकी किसी भी अन्य कला माध्यम में अभिव्यक्ति करें।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।



// आरोह – गद्य भाग //

भक्तिन

- महादेवी वर्मा

भक्तिन महादेवी वर्मा जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो 'स्मृति की रेखाओं में संकलित है। इसमें महादेवी जी ने अपनी सेविका। भक्तिन के अतीत एवं वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का चित्रण किया है। लेखिका के घर में काम करने से पहले भक्तिन । ने कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मशील जीवनयापन किया। वह कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और उसके छल-छद्मपूर्ण समाज में अपने और अपनी बेटियों की हक की लड़ाई लड़ती रही तथा हार कर कैसे जिंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुंची। इन सबका इस पाठ में अत्यंत संवेदनशील चित्रण हुआ है।

लेखिका ने इस पाठ में आत्मीयता से परिपूर्ण भक्तिन के द्वारा स्त्री-अस्मिता की संघर्षपूर्ण आवाज उठाने का भी प्रयास किया है। भक्तिन का शरीर दुबला-पतला है। उसका कद छोटा है। वह ऐतिहासिक सी गाँव के प्रसिद्ध अहीर सूरमा

की इकलौती बेटी है। उसकी माता का नाम धन्या गोपालिका है। उसका वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी है। भक्तिन नाम तो बाद में लेखिका ने अपने घर में नौकरानी रखने के बाद रखा था। भक्तिन एक दृढ़ संकल्प, ईमानदार, जिज्ञासु और बहुत समझदार महिला है। वह विमाता की ममता की। छाया में पली-बढ़ी। पाँच वर्ष की छोटी-सी आयु में उसके पिता ने इसका विवाह हँडिया ग्राम के एक संपन्न गोपालक के छोटे बेटे के।

साथ कर दिया। नौ वर्ष की आयु में सौतेली माँ ने इसका गौना कर ससुराल भेज दिया। भक्तिन अपने पिता से बहुत प्रेम करती थी लेकिन उसकी विमाता उससे ईर्ष्या किया करती थी। उसके पिता की मृत्यु का समाचार उसकी विमाता ने बहुत दिनों के बाद भेजा फिर उसकी सास ने भी रोने-पीटने को अपशकुन समझ कुछ नहीं बताया। अपने मायके जाने पर उसे अपने पिता की दुखद मृत्यु का समाचार मिला।

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम था-लछमिन अर्थात लक्ष्मी। लक्ष्मी नाम समृद्ध व ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है, परंतु यहाँ नाम के साथ गुण नहीं मिलता। लक्ष्मी बहुत गरीब तथा समझदार है। वह जानती है कि समृद्ध का



सूचक यह नाम गरीब महिला को शोभा नहीं देता। उसके नाम व भाग्य में विरोधाभास है। वह सिर्फ नाम की लक्ष्मी है। समाज उसके नाम को सुनकर उसका उपहास न उड़ाए इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम लोगों से छुपाती थी। भक्तिन को यह नाम लेखिका ने दिया। उसके गले में कंठी-माला व मुँड़े हुए सिर से वह भक्तिन ही लग रही थी। उसमें सेवा-भावना व कर्तव्यपरायणता को देखकर ही लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रखा।

प्रश्न 2. दो कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जेठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है? क्यों इससे आप सहमत हैं?

उत्तर- हाँ मैं इस बात से बिलकुल सहमत हूँ। जब भक्तिन अर्थात् लछिमन ने दो पुत्रियों को जन्म दिया तो उसके ससुराल वालों ने उस पर घोर अत्याचार किए। उसकी जेठानियों ने उस पर बहुत जुल्म ढाए। इसी कारण उसकी बेटियों को दिन भर काम करना पड़ता था। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। उसकी जेठानियों ने तो जमीन हथियाने के लिए लछिमन की विधवा बेटे से अपने भाई का विवाह करने की योजना बनाई, जब यह योजना नहीं सफल हुई तो लछिमन पर अत्याचार बढ़ते गए।

प्रश्न 3. भक्तिन की बेटे पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर- भक्तिन की विधवा बेटे के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की, परंतु पंचायत ने अपीलहीन फैसले में उसे तीतरबाज युवक के साथ रहने का फैसला सुनाया। यह सरासर स्त्री के मानवाधिकारों का हनन है। भारत में यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। यहाँ शादी करने का निर्णय सिर्फ

पुरुष के हाथ में होता है। महाभारत में द्रौपदी को उसकी इच्छा के विरुद्ध पाँच पतियों की पत्नी बनना पड़ा। मीरा की शादी बचपन में ही कर दी गई तथा लक्ष्मीबाई की शादी अर्धे उम्र के राजा के साथ कर दी गई। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ अयोग्य लड़के के साथ गुणवती कन्या का विवाह किया गया तथा लड़की की जिंदगी नरक बना दी गई।

प्रश्न 4. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- जब भक्तिन लेखिका के घर काम करने आई तो वह सीधी-सादी, भोली-भाली लगती थी लेकिन ज्यों-ज्यों लेखिका के साथ उसका संबंध और संपर्क बढ़ता गया त्यों-त्यों वह उसके बारे में जानती गई। लेखिका को उसकी बुराइयों के बारे में पता चलता गया। इसी कारण लेखिका को यह लगा कि भक्तिन अच्छी नहीं है। उसमें कई दुर्गुण हैं अतः उसे अच्छी कहना और समझना लेखिका के लिए कठिन है।

प्रश्न 5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर- भक्तिन की यह विशेषता है कि वह हर बात को, चाहे वह शास्त्र की ही क्यों न हो, अपनी सुविधा के अनुसार ढाल लेती है। वह सिर घुटाए रखती थी, लेखिका को यह अच्छा नहीं लगता था। जब उसने भक्तिन को ऐसा करने से रोका तो उसने अपनी बात को ऊपर रखा तथा कहा कि शास्त्र में यही लिखा है। जब लेखिका ने पूछा कि क्या लिखा है? उसने तुरंत उत्तर दिया-तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध। यह बात किस शास्त्र में लिखी गई है, इसका ज्ञान भक्तिन को नहीं था। जबकि लेखिका जानती थी कि यह कथन किसी व्यक्ति का है, न कि शास्त्र का। अतः वह भक्तिन को सिर घुटाने से नहीं रोक सकी तथा हर बृहस्पतिवार को उसका मुंडन होता रहा।

प्रश्न 6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

उत्तर- भक्तिन के आ जाने से महादेवी ने लगभग उन सभी संस्कारों को, क्रियाकलापों को अपना लिया जो देहातों में अपनाए जाते हैं। देहाती की हर वस्तु, घटना और वातावरण

का प्रभाव महादेवी पर पड़ने लगा। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी ताकि किसी बात की जानकारी अधूरी न रह जाए। धोती साफ़ करना, सामान बांधना आदि बातें भक्तिन ने ही सिखाई थी। वैसे देहाती भाषा भी भक्तिन के आने के बाद ही महादेवी बोलने लगी। इन्हीं कारणों से महादेवी देहाती हो गई।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. 'आलो आँधारि' की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

उत्तर- 'आलो आँधारि' की नायिका एक घरेलू नौकरानी है। भक्तिन भी लेखिका के घर में नौकरी करती है। दोनों में यही समानता है। दूसरे, दोनों ही घर में पीड़ित हैं। परिवार वालों ने उन्हें पूर्णतः उपेक्षित कर दिया था। दोनों ने आत्मसम्मान को बचाते हुए जीवन-निर्वाह किया। भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अखबारों या टी०वी० समाचारों में आने वाली किसी ऐसी ही घटना को भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस पर चर्चा करें। भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अब भी पंचायतों का तानाशाही रवैया बरकरार है। अखबारों या टी०वी० पर अकसर समाचार सुनने को मिलते हैं कि प्रेम विवाह को पंचायतें अवैध करार देती हैं तथा पति-पत्नी को भाई-बहिन की तरह रहने के लिए विवश करती हैं। वे उन्हें सजा भी देती हैं। कई बार तो उनकी हत्या भी कर दी जाती है। यह मध्ययुगीन बर्बरता आज भी विद्यमान है। पाँच वर्ष की वय में ब्याही जाने वाली लड़कियों में सिर्फ भक्तिन नहीं हैं, बल्कि आज भी हजारों अभागिनियाँ हैं।

प्रश्न 2. भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह फैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अखबारों या टी०वी० समाचारों में आने वाली किसी ऐसी ही घटना को भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस पर चर्चा करें।

उत्तर- पिछले दिनों अखबारों में पढ़ा और टी०वी० पर देखा कि राजस्थान के एक गाँव में केवल दो साल की बच्ची के साथ एक 20 वर्षीय युवक ने बलात्कार किया। आरोपी को बाद में लोगों ने पकड़ भी लिया। पंचायत हुई। इस पंचायत में फैसला सुनाया गया कि आरोपी को दस जूते लगाए जाएँ। दस जूते लगाकर उसे छोड़ दिया गया। यह निर्णय हैरतअंगेज करने वाला था क्योंकि पंच लोग केवल दबंग लोगों का साथ देते हैं। चाहे वे कितना ही गलत कार्य क्यों न करें।

प्रश्न 3. पाँच वर्ष की वय में ब्याही जानेवाली लड़कियों में सिर्फ भक्तिन नहीं है, बल्कि आज भी हजारों अभागिनियाँ हैं। बाल-विवाह और उम्र के अनमेलपन वाले विवाह की अपने आस-पास हो रही घटनाओं पर दोस्तों के साथ परिचर्चा करें।

उत्तर- हमारे देश में नारी पर आज भी अत्याचार हो रहे हैं। अनपढ़ जनता पुरानी लीक पर चल रही है। पाँच वर्ष तो क्या दुधमुँही बच्ची की शादी की जा रही है। पश्चिमी राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के देहातों में एक महीने की बच्चियों का विवाह (गौना) किया जा रहा है। आए दिन अखबारों में पढ़ते हैं कि दो दिन की बच्ची की शादी कर दी। कई बार तो दस वर्ष की बच्ची की शादी तीस वर्ष के युवक के साथ कर दी जाती है।

प्रश्न 4. महादेवी जी इस पाठ में हिरनी सोना, कुत्ता वसंत, बिल्ली गोधूलि आदि के माध्यम से पशु-पक्षी को मानवीय संवेदना से उकेरने वाली लेखिका के रूप में उभरती हैं। उन्होंने अपने घर में और भी कई-पशु-पक्षी पाल रखे थे तथा उन पर रेखाचित्र भी लिखे हैं। शिक्षक की सहायता से उन्हें ढूँढ़कर पढ़ें। जो 'मेरा परिवार' नाम से प्रकाशित है।

उत्तर- यह बात बिलकुल सत्य है कि महादेवी जी पशु-पक्षी के प्रति अधिक संवेदनशील थीं। उन्होंने कई प्रकार के पशु पक्षी पाल रखे थे। महादेवीजी ने अपने घर में हिरनी सोना, कुत्ता वसंत, बिल्ली गोधूलि के अतिरिक्त लक्का कबूतर, चित्रा बिल्ली, नीलकंठ मोर, कजली कुतिया, गिल्लू कौवा, दुर्मुख खरगोश, गौरा गऊ, रोजी कुतिया, निक्की नेवला और रानी घोड़ी आदि पशु पक्षी पाल रखे थे।



भाषा की बात

प्रश्न 1. नीचे दिए गए विशिष्ट भाषा-प्रयोगों के उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और इनकी अर्थ-छवि स्पष्ट कीजिए

- पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले
- खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी
- अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण

उत्तर- किसी पूर्व-प्रकाशित पुस्तक को पुनः प्रकाशित करना उसका नया संस्करण कहलाता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। भक्तिन ने एक कन्या के बाद पुनः दो और कन्याएँ पैदा कीं। 'संस्करण' से तात्पर्य यह है कि उसने एक लिंग की संतान को जन्म दिया।

टकसाल सिक्के ठालने वाली मशीन को कहते हैं। भारतीय समाज में 'लड़के' को खरा सिक्का तथा लड़कियों को 'खोटा सिक्का' कहा जाता है। समाज में लड़कियों का कोई महत्व नहीं होता। भक्तिन को खोटे सिक्कों की टकसाल की संज्ञा दी गई है क्योंकि उसने एक के बाद एक तीन लड़कियाँ उत्पन्न कीं, जबकि समाज पुत्र जन्म देने वाली स्त्रियों को महत्व देता है।

भक्तिन अपने पिता की मृत्यु के कई दिन बाद पहुँची। उसे सिर्फ पिता की बीमारी के बारे में बताया गया था। जब वह अपने मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोग कानाफूसी करते हुए पाए गए कि बेचारी लछमिन अब आई है। आमतौर पर शोक की खबर प्रत्यक्ष तौर पर नहीं कही जाती। कानाफूसी के जरिए अस्पष्ट शब्दों में एक ही बात बार-बार कही जाती है। इन्हें लेखिका ने अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ कहा है। पिता की मृत्यु हो जाने पर लोग उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे तथा ढाँढ़स बँधा रहे थे। ये बातें स्पष्ट तौर पर की जा रही थीं, अतः उन्हें स्पष्ट सहानुभूति कहा गया है।

प्रश्न 2. 'बहनोई'-शब्द 'बहन (स्त्री) + ओई' से बना है। इस शब्द में हिंदी भाषा की एक अनन्य विशेषता प्रकट हुई है। पुल्लिंग शब्दों में कुछ स्त्री-प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग शब्द बनने की एक समान प्रक्रिया कई भाषाओं में दिखती है, परे

स्त्रीलिंग शब्द में कुछ पुं. प्रत्यय जोड़कर पुल्लिंग शब्द बनाने की घटना प्रायः अन्य भाषाओं में दिखलाई नहीं पड़ती। यहाँ पुं. प्रत्यय 'ओई' हिंदी की अपनी विशेषता है। ऐसे कुछ और शब्द और उनमें लगे पुं. प्रत्ययों की हिंदी तथा और भाषाओं की खोज करें।

उत्तर- ननद + आई = ननदोई।

प्रश्न 3. पाठ में आए लोकभाषा के इन संवादों को समझकर इन्हें खड़ी बोली हिंदी में ढालकर प्रस्तुत कीजिए।

- ई कउन बड़ी बात आय। रोटी बनाय जानित है, दाल रांध लेइत है, साग-भाजी बँउक सकित है, अउर बाकी का रहा।
- हमारे मलकिन तौ रात-दिन कितबियन माँ गड़ी रहती हैं। अब हमहूँ पढ़ लागब तो घर-गिरिस्ती कउन देखी-सुनी।
- ऊ बिचरिअउ तौ रात-दिन काम माँ झुकी रहती हैं, अउर तुम पचै घूमती-फिरती हौ चलौ तनिक हाथ बटाय लेउ।
- तब ऊ कुच्छौ करिहैं-धरिहैं ना-बस गली-गली गाउत-बजाउत फिरिहैं।
- तुम पचै का का बताई-यहै पचास बरिस से संग रहित है।
- हम कुकुरी बिलारी न होयँ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिं त तुम्हार पचै की छाती पै होरहा पूँजब और राज करब, समुझे रहो।

उत्तर-

- यह कौन-सी बड़ी बात है। रोटी बनाना जानती हूँ, दाल बना लेती हूँ, साग-भाजी छौंक सकती हूँ, और शेष क्या रहा।
- हमारी मालकिन तो रात-दिन किताबों में डूबी रहती हैं। अब हम भी पढ़ने लगे तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा-सुनेगा।

- iii. वह बेचारी तो रात-दिन काम में लगी रहती हैं और तुम लोग घूमती-फिरती हो। चलो, तनिक हाथ बँटा लो।
- iv. तब वह कुछ करता-धरता नहीं होगा, बस गली-गली में गाता-बजाता फिरता होगा।
- v. तुम्हें हम क्या-क्या बताएँ-यही पचास वर्ष से साथ रहती हूँ।
- vi. हम कुतिया-बिल्ली नहीं हैं। हमारा मन चाहेगा तो हम दूसरे के यहाँ (पत्नी बनकर) जाएँगे नहीं तो तुम्हारी छाती पर ही होरहा भूलूँगी और राज करूँगी-यह समझ लेना।

प्रश्न 4. भक्तिन पाठ में पहली कन्या के दो संस्करण जैसे प्रयोग लेखिका के खास भाषाई संस्कार की पहचान कराता है, साथ ही वे प्रयोग कथ्य को संप्रेषणीय बनाने में भी मददगार हैं। वर्तमान हिंदी में भी कुछ अन्य प्रकार की शब्दावली समाहित हुई है। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जिससे वक्ता की खास पसंद का पता चलता है। आप वाक्य पढ़कर बताएँ कि इनमें किन तीन विशेष प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ, है? इन शब्दावलियों या इनके अतिरिक्त अन्य किन्हीं विशेष शब्दावलियों का प्रयोग करते हुए आप भी कुछ वाक्य बनाएँ और कक्षा में चर्चा करें कि ऐसे प्रयोग भाषा की समृद्धि में कहाँ तक सहायक हैं?

–अरे ! उससे सावधान रहना! वह नीचे से ऊपर तक वायरस से भरा हुआ है। जिस सिस्टम में जाता है उसे हँग कर देता है।

–घबरा मत ! मेरी इनस्वीगर के सामने उसके सारे वायरस घुटने टेकेंगे। अगर ज्यादा फ़ाउल मारा तो रेड कार्ड दिखा के हमेशा के लिए पवेलियन भेज दूंगा।

–जॉनी टेंसन नयी लेने का वो जिस स्कूल में पढ़ता है अपुन उसका हैडमास्टर है।

उत्तर- इस प्रकार की शब्दावलियों का प्रयोग पिछले कुछ समय से बढ़ गया है। यह टपोरी शब्दावली है। वास्तव में यह हिंग्लिश शब्दावली के नाम से जानी जाती है। पहले वाक्य में कंप्यूटर शब्दावली का प्रयोग हुआ। दूसरे वाक्य में खेलात्मक शब्दावली का प्रयोग किया है। अंतिम वाक्य में मुंबईया शब्दावली का प्रयोग हुआ है। इन प्रयोगों से भाषा का मूल स्वरूप बिगड़ जाता है। ऐसी शब्दावली भाषा को समृद्धि नहीं बल्कि कंगाली देती है अर्थात् भाषा की अपनी सार्थकता खत्म हो जाती है। कुछ और उदाहरणों को देखें

- i. तुम अपन को जानताई छ नहीं है।
- ii. तेरा रामू के साथ टांका भिड़ला है भेडू।
- iii. जो तुम कहते हो वह कंप्यूटर की तरह मेरे दिमाग में फीड हो जाता है।
- iv. इस बार दलजीत ने कुछ कहा तो उसे स्टेडियम की फुटबाल की तरह बाहर भेज दूंगा।
- v. तेरे नखरे भी शेयर बाजार जैसे चढ़ते जा रहे हैं।





बाज़ार दर्शन

- श्री जैनेन्द्र कुमार

बाजार दर्शन' श्री जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण निबंध है जिसमें गहन वैचारिकता और साहित्य सुलभ लालित्य का मणिकांचन संयोग देखा जा सकता है। यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की मूल अंतर वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। जैनेन्द्र जी ने इस निबंध के माध्यम से अपने परिचित एवं मित्रों से जुड़े अनुभवों को चित्रित किया है कि बाजार की जादुई ताकत कैसे हमें अपना गुलाम बना लेती है। उन्होंने यह भी बताया है कि अगर हम आवश्यकतानुसार बाजार का सदुपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं लेकिन अगर हम जरूरत से दूर बाजार की चमक-दमक में फंस गए तो वह असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर हमें सदा के लिए बेकार बना सकता है। इन्हीं भावों को लेखक ने अनेक प्रकार से बताने का प्रयास किया है।

लेखक बताता है कि एक बार उसका एक मित्र अपनी प्रिय पत्नी के साथ बाजार में एक मामूली-सी वस्तु खरीदने हेतु गए थे लेकिन जब – वे लौटकर आए तो उनके हाथ में बहुत-से सामान के बंडल थे। इस समाज में असंयमी एवं संयमी दोनों तरह के लोग होते हैं। कुछ ऐसे जो बेकार खर्च करते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी संयमी होते हैं, जो फ़िजूल सामान को फ़िजूल समझते हैं। ऐसे लोग अपव्यय न करते हुए केवल आवश्यकतानुरूप खर्च करते हैं। ये लोग ही पैसे को जोड़कर गर्विले बने रहते हैं। लेखक कहता है कि वह मित्र आवश्यकता से। ज्यादा सामान ले आए और उनके पास रेल टिकट के लिए भी पैसे नहीं बचे। लेखक उसे समझाता है कि वह सामान पर्चेजिंग पावर के।

अनुपात में लेकर आया है। – बाजार जो पूर्ण रूप से सजा-धजा होता है। वह ग्राहकों को अपने आकर्षण से आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूट ले। ग्राहक सब कुछ भूल जाएँ और बाजार को देखें। बाजार का आमंत्रण मूक होता

है जो प्रत्येक के हृदय में इच्छा जगाता है और यह मनुष्य को असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए बेकार बना देता है। लेखक एक और अन्य मित्र के माध्यम से बताते हैं कि ये मित्र बाजार में दोपहर से पहले गए लेकिन संध्या के समय खाली हाथ वापिस आए।

उन्होंने खाली हाथ आने का यह कारण बताया कि वह सब कुछ खरीदना चाहता था इसीलिए इसी चाह में वह कुछ भी खरीदकर नहीं लाया। बाजार में जाने पर इच्छा घेर लेती है जिससे मन में दुख प्रकट होता है। या बाजार के रूप सौंदर्य का ऐसा जादू जो आँखों के रास्ते हृदय में प्रवेश करता है और चुंबक के समान मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित करता है। जब भरी हो तो बाजार में जाने पर मनुष्य निर्णय नहीं कर पाता कि वह क्या-क्या सामान खरीदे क्योंकि उसे सभी सामान आरामसुख देनेवाले प्रतीत होते हैं लेकिन जादू का असर उतरते ही मनुष्य को फैंसी चीज़ों का आकर्षण कष्टदायक प्रतीत होने लगता है तब वह : दुखी हो उठता है।

मनुष्य को बाजार में मन को भरकर जाना चाहिए क्योंकि जैसे गरमी की लू में यदि पानी पीकर जाएँ तो लू की तपन व्यर्थ हो जाती है। वैसे ही मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार का आकर्षण भी व्यर्थ हो जाएगा। आँख फोड़कर मनुष्य लोभ से नहीं बच सकता क्योंकि ऐसा: करके वह अपना ही अहित करता है। संसार का कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है क्योंकि मनुष्य में यदि पूर्णता होती तो वह परमात्मा से अभिन्न महाशून्य बन जाता। अतः अपूर्ण होकर ही हम मनुष्य हैं।

सत्य ज्ञान सदा इसी अपूर्णता के बोध को हममें गहरा करता है तथा सत्य कर्म | सदा इस अपूर्णता की स्वीकृत के साथ होता है। लेखक एक चूर्ण बेचनेवाले अपने भगत पड़ोसी के माध्यम से कहते हैं कि उन्हें चूर्ण बेचने का कार्य करते बहुत समय हो गया है। लोग : उन्हें चूर्ण के नाम से बुलाते हैं। यदि

वे व्यवसाय अपनाकर चूर्ण बेचते तो अब तक मालामाल हो जाते लेकिन वे अपने चूर्ण को अपने-आप ।

पेटी में रखकर बेचते हैं और केवल छह आने की कमाई होने पर बाकी चूर्ण बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। लेखक बताते हैं कि इस सेठ भगत पर बाजार का जादू थोड़ा-सा भी नहीं चलता। वह जादू से दूर पैसे से निर्मोही बन मस्ती में अपना कार्य करता रहता है। एक बार लेखक सड़क के किनारे पैदल चला जा रहा था कि एक मोटर उनके पास से धूल उड़ाती गुजर गई। उनको ऐसा लगा कि : - यह मुझपर पैसे की व्यंग्यशक्ति चलाकर गई हो कि उसके पास मोटर नहीं है। लेखक के मन में भी आता है कि उसने भी मोटरवाले। - माँ-बाप के यहाँ जन्म क्यों नहीं लिया। लेकिन यह पैसे की व्यंग्यशक्ति उस चूर्ण बेचनेवाले व्यक्ति पर नहीं चल सकती। - जी लेखक को बाजार चौक में मिले। बाजार पूरा सजा हुआ था लेकिन उसका आकर्षण भगत जी के मन को नहीं भेद सका।

वे बड़े स्टोर चौक बाजार से गुजरते हुए एक छोटे-से पंसारी की दुकान से अपनी ज़रूरत का सामान लेकर चल पड़ते हैं। उनके लिए चाँदनी चौक का - आमंत्रण व्यर्थ दिखाई पड़ता है क्योंकि अपना सामान खरीदने के बाद सारा बाजार उनके लिए व्यर्थ हो जाता है। लेखक अंत में स्पष्ट करता है कि बाजार को सार्थकता वही मनुष्य देता है जो अपनी चाहत को जानता है। लेकिन जो अपनी इच्छाओं को नहीं जानते वे तो अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में अपने धन से केवल एक विनाशक और व्यंग्य शक्ति ही बाजार को देते हैं। ऐसे मनुष्य । न तो बाजार से कुछ लाभ उठा सकते हैं और न बाजार को सत्य लाभ दे सकते हैं। ऐसे लोग सद्भाव के हास में केवल कोरे ग्राहक का । व्यवहार करते हैं। सद्भाव से हीन बाजार मानवता के लिए विडंबना है और ऐसे बाजार का अर्थशास्त्र अनीति का शास्त्र है।

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

उत्तर- बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं -

- बाजार में आकर्षक वस्तुएँ देखकर मनुष्य उनके जादू में बँध जाता है।
- उसे उन वस्तुओं की कमी खलने लगती है।
- वह उन वस्तुओं को ज़रूरत न होने पर भी खरीदने के लिए विवश होता है।
- वस्तुएँ खरीदने पर उसका अह संतुष्ट हो जाता है।
- खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि जो चीजें आराम के लिए खरीदी थीं वे खलल डालती हैं।
- उसे खरीदी हुई वस्तुएँ अनावश्यक लगती हैं।

प्रश्न 2. बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नज़र में

उनको आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर- भगत जी समर्पण भी भावना से ओतप्रोत हैं। धन संचय में उनकी बिलकुल रुचि नहीं है। वे संतोषी स्वभाव के आदमी हैं। ऐसे व्यक्ति ही समाज में प्रेम और सौहार्द का संदेश फैलाते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति समाज में शांति स्थापित करने में मददगार साबित होते हैं।

प्रश्न 3. 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें हैं?

उत्तर- 'बाजारूपन' से तात्पर्य है-दिखावे के लिए बाजार का उपयोग। बाजार छल व कपट से निरर्थक वस्तुओं की खरीदफ़रोख्त, दिखावे व ताकत के आधार पर होने लगती है तो बाजार का बाजारूपन बढ़ जाता है। क्रय-शक्ति से संपन्न की पुलेि व्यक्ति बाल्पिनक बताते हैं। इसप्रतिसे बारक सवा लधनाह मिलता। शणक प्रति बढ़ जाती है। वे



व्यक्ति जो अपनी आवश्यकता के बारे में निश्चित होते हैं, बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। बाजार का कार्य मनुष्य कल कपू करता है जहातक सामान मलनेप बार सार्थकह जाता है। यह पॉड” पावरक प्रर्शना नहीं होता।

प्रश्न 4. बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इसे रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- यह बात बिलकुल सत्य है कि बाजारवाद ने कभी किसी को लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र के आधार पर नहीं देखा। उसने केवल व्यक्ति के खरीदने की शक्ति को देखा है। जो व्यक्ति सामान खरीद सकता है वह बाजार में सर्वश्रेष्ठ है। कहने का आशय यही है कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक समता स्थापित की है। यही आज का बाजारवाद है। प्रश्न 5. आप अपने समाज से कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें

- जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ।
- जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

उत्तर:

- एक बार एक कार वाले ने एक बच्चे को जख्मी कर दिया। बात थाने पर पहुँची लेकिन थानेदार ने पूरा दोष बच्चे के माता-पिता पर लगा दिया। वह रौब से कहने लगा कि तुम अपने बच्चे का ध्यान नहीं रखते। वास्तव में पैसों की चमक में थानेदार ने सच को झूठ में बदल दिया था। तब पैसा शक्ति का परिचायक नजर आया।
- एक व्यक्ति ने अपने नौकर का कत्ल कर दिया। उसको बेकसूर मार दिया। पुलिस उसे थाने में ले गई। उसने पैसे ले-देकर मामले को सुलझाने का प्रयास किया लेकिन सब बेकार। अंत में उस पर मुकदमा चला। आखिरकार उसे 14 वर्ष की उम्रकैद हो गई। इस प्रकार पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. ‘बाजार दर्शन’ पाठ में बाजार जाने या न जाने के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का जिक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

- मन खाली हो
- मन खाली न हो
- मन बंद हो
- मन में नकार हो

उत्तर-

- मनखाली हो-जब मनुष्य का मन खाली होता है तो बाजार में अनाप-शनाप खरीददारी की जाती है। बजर का जादू सिर चढकर बोलता है। एक बार में मेले में घूमने गया। वहाँ चमक-दमक, आकर्षक वस्तुएँ मुझे न्योता देती प्रतीत हो रहीं थीं। रंग-बिरंगी लाइटों से प्रभावित होकर मैं एक महँगी ड्रेस खरीद लाया। लाने के खाद पता चला कि यह आधी कीमत में फुटपाथ पर मिलती है।
- मन खाली न हो-मन खाली न होने पर मनुष्य अपनी इच्छित चीज खरीदता है। उसका ध्यान अन्य वस्तुओं पर नहीं जाता। मैं घर में जरूरी सामान की लिस्ट बनाकर बाजार जाता है और सिफ्रे उन्हें ही खरीदकर लाता हूँ। मैं अन्य चीजों को देखता जरूर हूँ, पर खरीददारी वहीं करता हूँ जिसको मुझे जरूरत होती है।
- मनबंदहो-मन ईद होने पर इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। वैसे तो इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं, परंतु कभी-कभी पनःस्थिति ऐसी होती है कि किसी वस्तु में मन नहीं लगता। एक दिन में उदास था और मुझे बाजार में किसी वस्तु में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अतः मैं विना कहीं रुके बाजार से निकल आया।

- iv. मन में नकार हो-मन में नकारात्मक भाव होने से बाजार की हर वस्तु खराब दिखाई देने लगती है। इससे समाज इसका विकास रुक जाता है। ऐसा असर किसी के उपदेश या सिद्धि का पालन करने से होता है। एक दिन एक साम्यवादी ने इस तरह का पाठ पढाया कि बड़ी कंपनियों की वस्तुएँ मुझे शोषण का रूप दिखाई देने लगी।

प्रश्न 2. 'बाजार दर्शन' पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?

उत्तर- इस पाठ में प्रमुख रूप से दो प्रकार के ग्राहकों का चित्रण निबंधकार ने किया है। एक तो वे ग्राहक, जो जरूरत के अनुसार चीजें खरीदते हैं। दूसरे वे ग्राहक जो केवल धन प्रदर्शन करने के लिए चीजें खरीदते हैं। ऐसे लोग बाजारवादी संस्कृति को ज्यादा बढ़ाते हैं। मैं स्वयं को पहले प्रकार का ग्राहक मानता/मानती हूँ क्योंकि इसी में बाजार की सार्थकता है।

प्रश्न 3. आप बाजार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य बाजार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? पर्चेजिंग पावर आपको किस तरह के बाजार में नजर आती है?

उत्तर- मॉल की संस्कृति से बाजार को पर्चेजिंग पावर को बढ़ावा मिलता है। यह संस्कृति उच्च तथा उच्च मध्य वर्ग से संबंधित है। यहाँ एक ही छत के नीचे विभिन्न तरह के सामान मिलते हैं तथा चकाचौंध व लूट चरम सोया पर होती है। यहाँ बाजारूपन भी फूँ उफान पर होता है। सामान्य बाजार में मनुष्य की जरूरत का सामान अधिक होता है। यहाँ शोषण कम होता है तथा आकर्षण भी कम होता है। यहाँ प्राहक व दूकानदार में सदभाव होता है। यहाँ का प्राहक मध्य वर्ग का होता है।

हाट - संस्कृति में निम्न वर्ग व ग्रामीण परिवेश का ग्राहक होता है। इसमें दिखाया नहीं होता तथा मोल-भाव भी

नाम- हैं का होता है। 'पर्चेजिंग पावर' मलि संस्कृति में नजर आती है क्योंकि यहाँ अनावश्यक सामान अधिक खरीदे जाते हैं।

प्रश्न 4. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति अपेक्षित वस्तु हर कीमत पर खरीदना चाहता है। वह कोई भी कीमत देकर उस वस्तु को प्राप्त कर लेना चाहता है। इसलिए वह कई बार शोषण का शिकार हो जाता है। बेचने वाला तुरंत उस वस्तु की कीमत मूल कीमत से ज्यादा बता देता है। इसीलिए लेखक ने ठीक कहा है कि आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है।

प्रश्न 5. स्त्री माया न जोड़े यहाँ मया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत्त नहीं, बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ होंगी जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती हैं?

उत्तर- यहाँ 'माया' शब्द का अर्थ है-धन-मगाती, जरूरत की वस्तुएँ। आमतौर पर स्त्रियों को माया जोड़ते देखा जाता है। इसका कारण उनकी परिस्थितियों है जो निम्नलिखित हैं -

- आत्मनिर्भरता की पूर्ति।
- घर की जरूरतों को पूरा करना।
- अनिश्चित भविष्य।
- अहंभाव की तुष्टि।
- बच्चों की शिक्षा।
- संतान-विवाह हेतु।

आपसदारी

प्रश्न 1. जरूरत-भर जीरा वहाँ से लिया कि फिर सारा चौक उनके लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है-भगत जी की इस संतुष्ट निस्पृहता की कबीर की इस सूक्ति से तुलना कीजिए



चाह गई चिंता गई मनुआ बेपरवाह
जाके कुछ न चाहिए सोड़ सहंसाह।

- कबीर

उत्तर- कबीर का यह दोहा भगत जी की संतुष्ट निस्मृहता पर पूर्णतया लागूहोता है। कबीर का कहना था कि इच्छा समाप्त होने पर लता खत्म हो जाती है। शहंशाह वहीं होता है जिसे कुछ नहीं चाहिए। भगत जी भी ऐसे ही व्यक्ति हैं। इनकी जरूरतें भी सीमित हैं। वे बाजार के आकर्षण से दूर हैं। अपनी जरूरत पा होने पर वे संतुष्ट को जाते हैं।

प्रश्न 2. विजयदान देथा की कहानी 'दुविधा' (जिस पर 'पहेली' फ़िल्म बनी है) के अंश को पढ़कर आप देखेंगे कि भगत जी की संतुष्ट जीवन-दृष्टि की तरह ही गड़रिए की जीवन-दृष्टि है, इससे आपके भीतर क्या भाव जगते हैं?

गड़रिया बगैर कहे ही उसके दिल की बात समझ गया, पर अँगूठी.

कबूल नहीं की। काली दाढी के बीच पीले दाँतों की हँसी हँसते हुए

बोला- 'मैं कोई राजा नहीं हूँ जो न्याय की कीमत वसूल करूँ।

मैंने तो अटका काम निकाल दिया। और यह अँगूठी मेरे किस काम

की ! न यह अंगुलियों में आती है, न तड़े में। मेरी भेड़े भी मेरी तरह

गँवार हैं। घास तो खाती है, पर सोना सँघती तक नहीं। बेकार की

वस्तुएँ तुम अमीरों को ही शोभा देती हैं।

-विजयदान देथा

उत्तर- विजयदान देथा की 'दुविधा' कहानी का अंश पढ़कर मुझमें भी संतोषी वृत्ति के भाव जगते हैं। गड़रिया चाहता तो वह अपने न्याय की कीमत वसूल सकता था। सामाजिक दृष्टि से यही ठीक भी था क्योंकि अमीर व्यक्ति जो कुछ गड़रिये को दे रहा था वह उसका हक था। लेकिन गड़रिये

और भगत जी की संतोषी भावना को देखकर मेरे मन में भी इसी प्रकार के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। मन करता है कि जीवन में इस भावना को अपनाए रखें तो किसी प्रकार की चिंता नहीं रहेगी। जब कोई इच्छा या अपेक्षा नहीं होगी तो दुख नहीं होगा। तब हम भी कबीर की तरह शहंशाह होंगे।

प्रश्न 3. बाज़ार पर आधारित लेख 'नकली सामान पर नकेल ज़रूरी' का अंश पढ़िए और नीचे दिए गए बिंदुओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

- नकली सामान के खिलाफ़ जागरूकता के लिए आप क्या कर सकते हैं?
- उपभोक्ताओं के हित को मद्देनजर रखते हुए सामान बनाने वाली कंपनियों का क्या नैतिक दायित्व है।
- ब्रांडेड वस्तु को खरीदने के पीछे छिपी मानसिकता को उजागर कीजिए?

नकली सामान पर नकेल ज़रूरी

अपना क्रेता वर्ग बढ़ाने की होड़ में एफएमसीजी यानी तेजी से बिकने वाले उपभोक्ता उत्पाद बनाने वाली कंपनियाँ गाँव के बाजारों में नकली सामान भी उतार रही हैं। कई उत्पाद ऐसे होते हैं जिन पर न तो निर्माण तिथि होती है और न ही उस तारीख का जिक्र होता है जिससे पता चले कि अमुक सामान के इस्तेमाल की अवधि समाप्त हो चुकी है। आउटडेटेड या पुराना पड़ चुका सामान भी गाँव-देहात के बाजारों में खप रहा है। ऐसा उपभोक्ता मामलों के जानकारों का मानना है। नेशनल कंज्यूमर डिस्प्यूट रिड्रेशन कमीशन के सदस्य की मानें तो जागरूकता अभियान में तेजी लाए बगैर इस गोरखधंधे पर लगाम कसना नामुमकिन है।

उपभोक्ता मामलों की जानकार पुष्पा गिरि माँ जी का कहना है, इसमें दो राय नहीं कि गाँव-देहात के बाजारों में नकली सामान बिक रहा है। महानगरीय उपभोक्ताओं को अपने शिकंजे में कसकर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, खासकर ज्यादा उत्पाद बेचने वाली कंपनियाँ, गाँव का रुख कर चुकी हैं। वे गाँववालों के अज्ञान और उनके बीच जागरूकता के अभाव का

पूरा फ़ायदा उठा रही हैं। उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए कानून जरूर हैं लेकिन कितने लोग इनका सहारा लेते हैं यह बताने की ज़रूरत नहीं। गुणवत्ता के मामले में जब शहरी उपभोक्ता ही उतने सचेत नहीं हो पाए हैं तो गाँव वालों से कितनी उम्मीद की जा सकती है।

इस बारे में नेशनल कंज्यूमर डिस्प्यूट रिट्रेसल कमीशन के सदस्य जस्टिस एस. एन. कपूर का कहना है, 'टीवी ने दूर-दराज के गाँवों तक में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को पहुँचा दिया है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ विज्ञापन पर तो बेतहाशा पैसा खर्च करती हैं लेकिन उपभोक्ताओं में जागरूकता को लेकर वे चवन्नी खर्च करने को तैयार नहीं हैं। नकली सामान के खिलाफ जागरूकता पैदा करने में स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थी मिलकर ठोस काम कर सकते हैं। ऐसा कि कोई प्रशासक भी न कर पाए'।

बेशक, इस कड़वे सच को स्वीकार कर लेना चाहिए कि गुणवत्ता के प्रति जागरूकता के लिहाज से शहरी समाज भी कोई ज्यादा सचेत नहीं है। यह खुली हुई बात है कि किसी बड़े ब्रांड का लोकल संस्करण शहर या महानगर का मध्य या निम्नमध्य वर्गीय उपभोक्ता भी खुशी-खुशी खरीदता है। यहाँ जागरूकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वह ऐसा सोच-समझकर और अपनी जेब की हैसियत को जानकर ही कर रहा है। फिर गाँववाला उपभोक्ता ऐसा क्योंकर न करे। पर फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यदि समाज में कोई गलत काम हो रहा है तो उसे रोकने के जतन न किए जाएँ। यानी नकली सामान के इस गोरखधंधे पर विराम लगाने के लिए जो कदम या अभियान शुरू करने की ज़रूरत है वह तत्काल हो।

-हिंदुस्तान 6 अगस्त 2006, साभार

उत्तर-

- नकली सामान के खिलाफ लोगों को जागरूक करना ज़रूरी है। सबसे पहले विज्ञापनों, पोस्टरों और होर्डिंग के माध्यम से यह बताया जाए कि किस तरह असली वस्तु की पहचान की जाए। लोगों को बताया जाए कि होलोग्राम और ISI मार्क वाली वस्तु ही खरीदें। उन्हें यह भी

जानकारी दी जाए कि नकली वस्तुएँ खरीदने से क्या हानियाँ हो सकती हैं ?

- सामान बनाने वाली कंपनियों का सबसे पहले यही नैतिक दायित्व है कि अच्छा और बढ़िया सामान बनाए। वे ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करें जो आम आदमी को फायदा पहुँचायें। केवल अपना फायदा सोचकर ही सामान न बेचें। वे मात्रा की अपेक्षा गुणवत्ता पर ध्यान रखें तभी ग्राहक खुश होगा। जो कंपनी जितनी ज्यादा गुणवत्ता देगी ग्राहक उसी कंपनी का सामान ज्यादा खरीदेंगे।
- भारतीय मध्य वर्ग पर आज का बाजार टिका हुआ है। वह दिन बीत गए जब लोकल कंपनी का माल खरीदा जाता था। अब तो लोग ब्रांडेड कंपनी का ही सामान खरीदते हैं। चाहे वह कितना ही महँगा क्यों न हो। उन्हें तो केवल यही विश्वास होता है कि ब्रांडेड सामान अच्छा और बढ़िया होगा। उसमें किसी भी तरह से कोई खराबी न होगी लोग इन ब्रांडेड सामानों को खरीदने के लिए कोई भी कीमत चुकाते हैं। ब्रांडेड सामान चूँकि बड़ी-बड़ी हस्तियाँ इस्तेमाल करती हैं। इसलिए अन्य लोग भी ऐसा ही करते हैं।

प्रश्न 4. प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' के हामिद और उसके दोस्तों का बाजार से क्या संबंध बनता है? विचार करें।

उत्तर- प्रेमचंद की कहानी में हामिद और उसके दोस्त यानी सम्मी मोहसिन नूरे सभी मेला देखने जाते हैं। वे मेले में लगी दुकानों को देखकर बहुत प्रभावित होते हैं। वे हाट बाजार में लगी हुई सारी वस्तुएँ देखकर प्रसन्न होते हैं। उनका मन करता है कि सभी-वस्तुएँ खरीद ली जाएँ। किंतु किसी के पास पाँच पैसे थे तो किसी के पास दो पैसे। हाट वास्तव में बाजार का ही एक रूप है। बच्चे इनमें लगी दुकानों को देखकर आकर्षित हो जाते हैं। वे तरह-तरह की इच्छाएँ करने लगते



हैं। बच्चों का संबंध बाजार से प्रत्यक्ष होता है। वे सीधे तौर पर बाजार में जाकर वहाँ रखी वस्तुओं को खरीद लेना चाहते हैं।

विज्ञापन की दुनिया

प्रश्न 1. आपने समाचार-पत्रों, टी.वी. आदि पर अनेक प्रकार के विज्ञापन देखे होंगे जिनमें ग्राहकों को हर तरीके से लुभाने का प्रयास किया जाता है। नीचे लिखे बिंदुओं के संदर्भ में किसी एक विज्ञापन की समीक्षा कीजिए और यह भी लिखिए कि आपको विज्ञापन की किस बात ने सामान खरीदने के लिए प्रेरित किया।

- विज्ञापन में सम्मिलित चित्र और विषय-वस्तु
- विज्ञापन में आए पात्र और उनका औचित्य
- विज्ञापन की भाषा।

उत्तर- मैंने शाहरूख खान द्वारा अभिनीत सैंट्रो कार का विज्ञापन देखा। इस विज्ञापन में सैंट्रो कार का चित्र था और विषय वस्तु थी। वह कार, जिसे बेचने के लिए आज के सुपर स्टार शाहरूख खान को अनुबंधित किया गया। इसमें शाहरूख खान और उनकी पत्नी को विज्ञापन करते दिखाया गया है। साथ ही उनके एक पड़ोसी का भी जिक्र आया है। इन सभी पात्रों का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। शाहरूख की पत्नी जब पड़ोसी पर आकर्षित होती है तो शाहरूख पूछता है क्यों? तब उसकी पत्नी जवाब देती है सैंट्रो वाले हैं न। मुझे कार खरीदने के लिए इसी कैप्शन ने प्रेरित किया। इस पंक्ति में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का पता चलता है।

प्रश्न 2. अपने सामान की बिक्री को बढ़ाने के लिए आज किन-किन तरीकों का प्रयोग किया जा रहा है? उदाहरण सहित उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए। आप स्वयं किस तकनीक या तौर-तरीके का प्रयोग करना चाहेंगे जिससे बिक्री भी

अच्छी हो और उपभोक्ता गुमराह भी न हो। उत्तर सेल लगाकर, अपने सामान के साथ कुछ उपहार देकर, स्कैंच कार्ड के द्वारा, विज्ञापन देकर या सामान की खूबियाँ बताकर। उदाहरण

- सेल-सेल-सेल कपड़ों पर भारी सेल।।
- एक सूट के साथ कमीज फ्री। बिलकुल फ्री।

- ये कपड़े त्वचा को नुकसान नहीं पहुँचाते, ये नरम और मुलायम कपड़े हैं। पूरी तरह से सूती। यदि मुझे सामान बेचना पड़े तो मैं बेची जाने वाली वस्तु के गुणों का प्रचार करूंगा/करूंगी ताकि ग्राहक अपनी समझ से वस्तु खरीदे।

भाषा की बात

प्रश्न 1. विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग भी अपना रूप बदलता रहता है कभी औपचारिक रूप में आती है तो कभी अनौपचारिक रूप में। पाठ में से दोनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर- औपचारिक रूप

- मैंने कहा – यह क्या? बोले – यह जो साथ थी।
- बोले – बाजार देखते रहे। मैंने कहा – बाजार क्या देखते रहे।
- यह दोपहर के पहले के गए गए बाजार से कहीं शाम को वापिस आए।

अनौपचारिक

- कुछ लेने का मतलब था शेष सबकुछ छोड़ देना।
- बाजार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो।
- पैसे की व्यंग्य शक्ति भी सुनिए।

प्रश्न 2. पाठ में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जहाँ लेखक अपनी बात कहता है कुछ वाक्य ऐसे हैं जहाँ वह पाठक-वर्ग को संबोधित करता है। सीधे तौर पर पाठक को संबोधित करने वाले पाँच वाक्यों को छाँटिए और सोचिए कि ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में मददगार होते हैं?

उत्तर-

- बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है।

- ii. जब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा।
- iii. यहाँ एक अंतर चिह्न लेना ज़रूरी है।
- iv. कहीं आप भूल नहीं कर बैठिएगा।
- v. पैसे की व्यंग्य शक्ति सुनिए। वह दारुण है। अवश्य ऐसे संबोधनों के कारण पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। वह अपनी जिज्ञासा को शांत करना चाहता है। इसीलिए ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में सहायक सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए।

- i. पैसा पावर है।
- ii. पैसे की उस पर्चेजिंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है।
- iii. मित्र ने सामने मनीबैग फैला दिया।
- iv. पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते।

ऊपर दिए गए इन वाक्यों की संरचना तो हिंदी भाषा की है लेकिन वाक्यों में एकाध शब्द अंग्रेजी भाषा के आए हैं। इस तरह के प्रयोग को कोड मिक्सिंग कहते हैं। एक भाषा के शब्दों के साथ दूसरी भाषा के शब्दों का मेलजोल ! अब तक। आपने जो पाठ पढ़े उसमें से ऐसे कोई पाँच उदाहरण चुनकर लिखिए। यह भी बताइए कि आगत शब्दों की जगह उनके हिंदी पर्यायों का ही प्रयोग किया जाए तो संप्रेषणीयता पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर-

- i. पैसे की गरमी या एनर्जी।
- ii. वह तत्व है मनी बैग
- iii. अपनी पर्चेजिंग पावर के अनुपात में आया है।
- iv. तो एकदम बहुत से बंडल थे।
- v. वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं कि उसके प्रयोग की परीक्षा का उन्हें दरकार नहीं है।

यदि इस वाक्य में एनर्जी की जगह उत्साह शब्द का प्रयोग किया जाता है तो वाक्य की प्रेषणीयता अधिक प्रभावी होती है। इसी प्रकार 'मनी बैग' की जगह नोटों से भरा थैला, पर्चेजिंग पावर की जगह खरीदने की शक्ति, बंडल की जगह गट्टर और पावर की जगह ऊर्जा या उत्साह प्रभावी होगा क्योंकि हिंदी, पर्यायों के प्रयोग से संप्रेषणीयता ज्यादा बढ़ जाती है।

प्रश्न 4. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश पर ध्यान देते हुए उन्हें पढ़िए।

- i. निर्बल ही धन की ओर झुकता है।
- ii. लोग संयमी भी होते हैं।
- iii. सभी कुछ तो लेने को जी होता था।

ऊपर दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश 'ही', 'भी', 'तो' निपात हैं जो अर्थ पर बल देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। वाक्य में इनके होने-न-होने और स्थान क्रम बदल देने से वाक्य के अर्थ पर प्रभाव पड़ता है, जैसे

मुझे भी किताब चाहिए (मुझे महत्वपूर्ण है।)

मुझे किताब भी चाहिए। (किताब महत्वपूर्ण है।)

आप निपात (ही, भी, तो) का प्रयोग करते हुए तीन-तीन वाक्य बनाइए। साथ ही ऐसे दो वाक्यों का निर्माण कीजिए जिसमें

ये तीनों निपात एक साथ आते हों।

उत्तर-

ही -

- i. उसे ही यह टिकट दे दो।
- ii. मैं वैसे ही उससे मिला।
- iii. तुमने ही मुझे उसके बारे में बताया।

भी -

- i. कुछ लोग दुष्ट भी होते हैं।
- ii. वह भी उनसे मिल गया।
- iii. उसने भी मेरा साथ छोड़ दिया।

तो -

- i. रामलाल ने कुछ तो कहा होता।



- ii. तुम लोग कुछ तो शर्म किया करो।
- iii. तुम लोगों को तो फाँसी दे देनी चाहिए।

दो वाक्य

- i. मैंने ही नारायण शंकर को वहाँ भेजा था लेकिन उसने भी वह किया, कृपा शंकर तो उसे पहले ही कर दिया था।
- ii. आर्यन तो दिल्ली जाना चाहता था लेकिन मैं तो उसे भेजना नहीं चाहता था। तभी तो वह नाराज हो गया।

चर्चा करें

प्रश्न 1. पर्चेजिंग पावर से क्या अभिप्राय है?

बाजार की चकाचौंध से दूर पर्चेजिंग पावर का सकारात्मक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? आपकी मदद के लिए संकेत दिया जा रहा है

- i. सामाजिक विकास के कार्यों में
- ii. ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में
.....।

उत्तर- पर्चेजिंग पावर से अभिप्राय है कि खरीदने की क्षमता। कहने का भाव है कि खरीददारी करने का सामर्थ्य लेकिन पर्चेजिंग पावर का सकारात्मक प्रयोग किया जा सकता है। वह भी बाजार की चकाचौंध से कोसों दूर। इसका सकारात्मक प्रयोग सामाजिक कार्य करके और ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करके। सामाजिक विकास के कार्य जैसे स्कूल, अस्पताल, धर्मशालाएँ। खुलवाकर उस पैसे का उपयोग किया जा सकता है जो कि लोग फिजूल के सामान पर खर्च करते हैं। आज शॉपिंग माल्स में लगभग 30 प्रतिशत फिजूल पैसा लोग खर्चते हैं क्योंकि वे अपनी शानो शौकत रखने के लिए खरीददारी करते हैं। यदि इसी पैसे को सामाजिक विकास के कार्यों में लगा दिया जाए तो समाज न केवल उन्नति करेगा बल्कि वह अमीरी गरीबी के अंतर से भी बाहर निकलेगा। दूसरे इस पैसे का ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। गाँवों को मूलभूत सुविधाएँ इसी पैसे से प्रदान की जा सकती हैं। यह पैसा गाँवों की तस्वीर बदल सकता है।



STEP UP
ACADEMY

काले मेघा पानी दे

- धर्मवीर भारती

‘काले मेघा पानी दे’ संस्मरण धर्मवीर भारती द्वारा रचित है। इसमें लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुंदर चित्रण हुआ है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास की अपनी सामर्थ्य। इसमें कौन कितना सार्थक है, यह प्रश्न पढ़े-लिखे समाज को उत्तेजित करता रहता है। इसी दुविधा को लेकर लेखक ने पानी के संदर्भ में असंग रचा है। लेखक ने अपने किशोरपन जीवन के इस संस्मरण में दिखलाया है कि अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों की इंद्रसेना द्वार-द्वार पानी मांगते चलती है। लेखक का तर्कशील किशोर मन भीषण सूखे में उस पानी को निर्मम बर्बादी के रूप में देखता है।

आषाढ़ के उन सूखे दिनों में जब चहुँ ओर पानी की कमी होती है ये इंद्रसेना गाँव की गलियों में जयकारे लगाते हुए पानी माँगते फिरती है। अभाव । के बावजूद भी लोग अपने-अपने घरों से पानी लेकर इन बच्चों को सिर से पैर तक तर कर देते हैं। आषाढ़ के इन दिनों में गाँव-शहर के सभी लोग गर्मी से परेशान त्राहिमाम कर रहे होते हैं तब ये मंडली ‘काले मेघा पानी दे’, के नारे लगाती हुई यहाँ-वहाँ घूम रही होती है।

अनावृष्टि के कारण शहरों की अपेक्षा गाँवों की हालत त्रासदपूर्ण हो जाती है। खेतों की मिट्टी सूख कर पत्थर हो जाती है। जमीन फटने लगती है। पशु प्यास के कारण मरने लगते हैं। लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता। बादल कहीं नज़र नहीं आते। ऐसे में लोग पूजा-पाठ कर हार जाते तो यह इंद्रसेना निकलती है। लेखक मानता है कि लोग अंधविश्वास के कारण पानी की कमी होते हुए भी पानी को बर्बाद कर रहे हैं। इस तरह के अंधविश्वासों से देश की बहुत क्षति होती है जिसके कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए और उनके गुलाम बन गए हैं। लेखक जैसे तो इंद्रसेना की उमर का था लेकिन वह आर्यसमाजी संस्कारों से युक्त तथा कुमार-

सुधार सभा का उपमंत्री था। अतः उसमें समाज सुधार का जोश अधिक था। : अंधविश्वासों से वह डटकर लड़ता था। लेखक को जीजी उसे अपने बच्चों से ज्यादा प्रेम करती थी। तीज-त्योहार, पूजा अनुष्ठानों को जिन्हें ।

लेखक अंधविश्वास मानता था, जीजी के कहने पर उसे सब कछ करना पड़ता था। इस बार जीजी के कहने पर भी लेखक ने मित्र-मंडली पर पानी नहीं डाला, जिससे वह नाराज हो गई। बाद में लेखक को समझा-बुझाकर उसने अनेक बातें कहीं। पानी फेंकना अंधविश्वास नहीं। यह तो हम उनको अर्घ्य चढ़ाते हैं, जिससे खुश होकर इंद्र हमें पानी देता है। उन्होंने बताया कि ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान । 1 दिया है। जीजी ने लेखक के तर्कों को बार-बार काट दिया। अंत में लेखक को कहा कि किसान पहले पाँच-छह सेर अच्छा गोहूँ बीज रूप : में अपने खेत में बोता है, तत्पश्चात वह तीस-चालीस मन अनाज उगाता है। वैसे ही यदि हम बीज रूप में थोड़ा-सा पानी नहीं देंगे तो । बादल फ़सल के रूप में फिर हमें पानी कैसे देंगे?

व संस्मरण के अंत में लेखक की राष्ट्रीय चेतना का भाव मुखरित होता है कि हम आजादी मिलने के बावजूद भी पूर्णतः आजाद नहीं। हुए। हम आज भी अंग्रेजों की भाषा संस्कृति, रहन-सहन से आजाद नहीं हुए और हमने अपने संस्कारों को नहीं समझा। हम भारतवासी माँगें तो बहुत करते हैं लेकिन त्याग की भावना हमारे अंदर नहीं है। हर कोई भ्रष्टाचार की बात करता है लेकिन कभी नहीं देखता कि क्या । हम स्वयं उसका अंग नहीं बन रहे। देश की अरबों-खरबों की योजनाएं न जाने कहाँ गम हो जाती हैं? लेखक कहता है कि काले मेघा

खूब बरसते हैं लेकिन फूटी गगरी खाली रह जाती है, बैल प्यासे रह जाते हैं। न जाने यह स्थिति कब बदलेगी? लेखक ने देश की भ्रष्टाचार की समस्याओं के प्रति व्यंग्य व्यक्त किया है।



अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. लोगों ने लड़कों की टोली की मेढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

उत्तर- गाँव के कुछ लोगों को लड़कों के नंगे शरीर, उछल-कूद, शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ से चिढ़ थी। वे इसे अंधविश्वास मानते थे। इसी कारण वे इन लड़कों की टोली को मेढक-मंडली कहते थे। यह टोली स्वयं को 'इंदर सेना' कहकर बुलाती थी। ये बच्चे इकट्ठे होकर भगवान इंद्र से वर्षा करने की गुहार लगाते थे। बच्चों का मानना था कि वे इंद्र की सेना के सैनिक हैं तथा उसी के लिए लोगों से पानी माँगते हैं ताकि इंद्र बादलों के रूप में बरसकर सबको पानी दें।

प्रश्न 2. जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर- यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है।

प्रश्न 3. पानी दे, गुड़धानी दे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर- गुड़धानी गुड़ व अनाज के मिश्रण से बने खाद्य पदार्थ को कहते हैं। बच्चे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग करते हैं। पानी से प्यास बुझती है, साथ ही अच्छी वर्षा से ईख व धान भी उत्पन्न होता है, यहाँ 'गुड़धानी' से अभिप्राय अनाज से है। गाँव की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होती है जो वर्षा पर निर्भर है। अच्छी वर्षा से अच्छी फसल होती है जिससे लोगों का पेट भरता है और चारों तरफ खुशहाली छा जाती है।

प्रश्न 4. गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

उत्तर- इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है कि एक तो वर्षा नहीं हो रही। दूसरे जो थोड़ा बहुत पानी गगरी (घड़े) में बचा था। वह भी घड़े के टूटने से गिर गया। अब घड़े में भी कुछ पानी नहीं बचा। इसलिए बैल प्यासे रह गए। बैल तभी खेत-जोत सकेंगे जब उनकी प्यास बुझेगी। हे मेघा! इसलिए पानी बरसा ताकि बैलों और धरती दोनों की प्यास बुझ जाए! चारों ओर खुशी छा जाए।

प्रश्न 5. इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है?

उत्तर- वर्षा न होने पर इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। इसका कारण यह है कि भारतीय जनमानस में गंगा, नदी को विशेष मान-सम्मान प्राप्त है। हर शुभ कार्य में गंगाजल का प्रयोग होता है। उसे 'माँ' का दर्जा मिला है। भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का बहुत महत्त्व है। देश के लगभग सभी प्रमुख बड़े नगर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। इन्हीं के किनारे सभ्यता का विकास हुआ। अधिकतर धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र भी नदी-तट पर ही विकसित हुए हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी, बनारस, आगरा आदि शहर नदियों के तट पर बसे हैं। धर्म से भी नदियों का प्रत्यक्ष संबंध है। नदियों के किनारों पर मेले लगते हैं। नदियों को मोक्षदायिनी माना जाता है।

प्रश्न 6. रिशतों में हमारी भावना-शक्ति बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- लेखक का अपनी जीजी के प्रति गहरा प्यार था। वह अपनी जीजी को बहुत मानता था। दोनों में भावनात्मक संबंध बहुत गहरा था। लेखक जिस परंपरा का या अंधविश्वास

का विरोध करता है जीजी उसी का भरपूर समर्थन करती है। धीरे-धीरे लेखक और उसकी जीजी के बीच की भावनात्मक शक्ति बँटती चली जाती हैं। लेखक का विश्वास डगमगाने लगता है। वह कहता भी है कि मेरे विश्वास का किला ढहने लगा था। उसकी जीजी लेखक की बुद्धि शक्ति को भावनात्मक रिश्तों से कमजोर कर देती है। इसलिए लेखक चाहकर भी किसी बात का विरोध नहीं कर पाता। यद्यपि वह विरोध जताने का प्रयास करता है लेकिन अंत में उसे जीजी के आगे समर्पण करना पड़ता है।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. क्या इंदर सेना आज के युवा वर्ग का प्रेरणा स्रोत हो सकती है? क्या आपके स्मृति-कोश में ऐसा कोई अनुभव है। जब युवाओं ने संगठित होकर समाजोपयोगी रचनात्मक कार्य किया हो, उल्लेख करें।

उत्तर- हाँ, इंदर सेना आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणा-स्रोत हो सकती है। यह सामूहिक प्रयास ही है जो किसी भी समस्या को सुलझा सकता है। सामूहिक शक्ति के कारण ही बड़े-बड़े आंदोलन सफल हुए हैं। 'वृक्ष बचाओ', महात्मा गांधी के आंदोलन, जेपी आंदोलन आदि युवाओं की सामूहिक शक्ति के कारण ही सफल हो सके हैं। आज भी युवा यदि संगठित होकर कार्य करें, तो अशिक्षा, आतंकवाद, स्त्री-अत्याचार जैसी समस्याएँ शीघ्र समाप्त हो सकती हैं। समाजोपयोगी रचनात्मक कार्य सबधी अनुभव विद्यार्थी स्वयं लिखें।

प्रश्न 2. तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह बहुत महत्वपूर्ण हैं पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता है?

उत्तर- भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की लगभग 78 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। इसलिए तकनीकी विकास के बाद भी बहुत कुछ कृषि पर निर्भर रहता है। कृषि के लिए सभी महीने महत्वपूर्ण हैं। लेकिन इनमें से वैशाख महीना बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी महीने में कटाई प्रारंभ होती है। यदि इस महीने में धूप खिली रहे, बरसात न हो, तो धन धान्य भरपूर होता है। किसानों के चेहरे खिले रहते हैं। इसलिए आषाढ़ का चढ़ना किसानों में उल्लास भर देता है। वह बेहद खुश हो जाता है।

प्रश्न 3. पाठ के संदर्भ में इसी पुस्तक में दी गई निराला की कविता बादल-राग पर विचार कीजिए और बताइए कि आपके जीवन में बादलों की क्या भूमिका है?

उत्तर- निराला की 'बादल-राग' कविता में बादलों को क्रांति करने के लिए पुकारा गया है। बादल समाज के शोषक वर्ग को समाप्त करके शोषित को उनका अधिकार दिलाता है। बादल क्रांति के प्रतीक हैं। बादलों की गर्जना से पूँजीपति वर्ग भयभीत होता है तथा निर्धन वर्ग प्रसन्न होता है। हमारे जीवन में बादल की अह भूमिका है। बादल धरती की प्यास बुझाते हैं, जीवों व वनस्पतियों में प्राणों का संचार करते हैं। बादलों पर हमारा जीवन निर्भर है। इससे कृषि-कार्य संपन्न होता है।

प्रश्न 4. त्याग तो वह होता उसी का फल मिलता है। अपने जीवन के किसी प्रसंग से इस सूक्ति की सार्थकता समझाइए।

उत्तर- मैं मध्यवर्गीय परिवार से हूँ। किंतु हमारा परिवार बड़ा है कमाने वाले सदस्य दो ही हैं। इसलिए कमाई का साधन ज्यादा नहीं है। पिछले दिनों एक भिखारी मेरे घर आया। कपड़ों के नाम पर उसके बदन पर फटा हुआ कुर्ता और टूटी हुई चप्पल थी। सरदी के दिन थे, ऐसी हालत में और अधिक दयनीय लग रहा था। मेरे पास भी दो ही स्वेटर थे। मैंने उसकी स्थिति को देखते हुए अपना एक स्वेटर उसे दे दिया और वह आशीर्वाद देता चला गया। शायद मेरे लिए यही त्याग था।

प्रश्न 5. पानी का संकट वर्तमान स्थिति में भी बहुत गहराया हुआ है। इसी तरह के पर्यावरण से संबद्ध अन्य संकटों के बारे में लिखिए।

उत्तर- पर्यावरण से संबंधित अन्य संकट निम्नलिखित हैं -

- उद्योगों व वाहनों के कारण वायु-प्रदूषण होना।
- भूमि का बंजर होना।
- वर्षा की कमी।
- सूखा पड़ना।
- बाढ़ आना।
- धरती के तापमान में दिन पर दिन बढ़ोतरी।

प्रश्न 6. आपकी दादी-नानी किस तरह के विश्वासों की बात करती हैं? ऐसी स्थिति में उनके प्रति आपका रवैया क्या होता है? लिखिए।



उत्तर- हमारी दादी-नानी भी ठीक उसी तरह बातें करती हैं जिस प्रकार की बातें लेखक की जीजी करती हैं। हमारी दादी-नानी भी तरह-तरह के अंधविश्वास को सच्चा मानती हैं। वे कहती हैं कि पेड़ पर भूत बसते हैं। कभी दोपहर में मीठा खाकर बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि कोई छींक दे तो भी शुभ कार्य के लिए नहीं जाना चाहिए। दादी कहती हैं कि यदि बिल्ली रास्ता काट जाए तो काम बिगड़ जाता है। इसी प्रकार चिमटा बजाने से घर में लड़ाई हो जाती है। मैं इन सारे विश्वासों को सुनकर अनसुना कर देती हूँ/देता हूँ।

चर्चा करें

प्रश्न 1. बादलों से संबंधित अपने-अपने क्षेत्र में प्रचलित गीतों का संकलन करें और कक्षा में चर्चा करें।

उत्तर-

“गरज बरस प्यासी धरती को फिर पानी दे मौला फिर पानी दे मौला गुड़धानी दे मौला।” आलो रे आलो रे सामण महीनो आलो रे बिजली चमकै	बादल बरसै आलो री सामण आलो। ‘सामण का महीना, ठाडढ़ा झड़ लाया, हे, सलोभण अपनी गेल्यां बीरा ने लाया है ...। जल कै मरुंगी तरणी तीज नै, तेरे पै ही तै बाल्लम नै घाल।”
--	--

प्रश्न 2. पिछले 15-20 सालों में पर्यावरण से छेड़छाड़ के कारण भी प्रकृति-चक्र में बदलाव आया है, जिसका परिणाम मौसम का असंतुलन है। वर्तमान बाड़मेर (राजस्थान) में आई बाढ़, मुंबई की बाढ़ तथा महाराष्ट्र का भूकंप या फिर सुनामी भी इसी का नतीजा है। इस प्रकार की घटनाओं से जुड़ी सूचनाओं, चित्रों का संकलन कीजिए और एक प्रदर्शनी का आयोजन कीजिए, जिसमें बाजार दर्शन पाठ में बनाए गए विज्ञापनों को भी शामिल कर सकते हैं। अगर हाँ ऐसी स्थितियों से बचाव

के उपाय पर पर्यावरण की राय को प्रदर्शनी में मुख्य स्थान देना न भूलें।

उत्तर- हमारे विद्यालय में पिछले दिनों एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग लिया। वे विशेष आमंत्रित सदस्य थे। उन्होंने पर्यावरण असंतुलन से बचने के कई उपाय सुझाए जो इस प्रकार हैं

- पानी का रिसाब रोका जाए।
- देश की नदियों को जोड़ा जाए।
- पेड़ों की अंधाधुंध कटाई रोकी जाए।
- बरसाती पानी को इकट्ठा किया जाए।
- ऐसी योजनाएँ लागू करें जो यथार्थ में लागू हों।
- खतरनाक गैसों को रोकने का उपाय किए जाए।
- फैक्ट्रियों से निकलने वाले दूषित जल की निकासी का उचित प्रबंध हो।
- निर्धारित मात्रा से अधिक खतरनाक कैमिकल्स का इस्तेमाल न करें।
- मिल मालिकों को चाहिए कि वे पर्यावरण के संकट के प्रति सचेत रहें।
- गिरते भूजल स्तर को रोका जाए।

विज्ञापन की दुनिया

प्रश्न 1. ‘पानी बचाओ’ विज्ञापनों को एकत्र कीजिए। इस संकट के प्रति चेतावनी बरतने के लिए आप किस प्रकार का विज्ञापन बनाएंगे।

उत्तर- पानी संकट आज का सबसे बड़ा संकट है। इसे हर हाल में दूर करने की आवश्यकता है। संकट से बचने का विज्ञापन इस प्रकार है पानी बचाओ, पानी बचाओगे तो अपना जीवन बचा पाओगे। यदि पानी न रहा तो कहाँ जाओगे। पानी की हर बूंद कीमती है। इसे बचाओ।

“पानी है तो जीवन है।

वरना जीना कठिन है।”



पहलवान की ढोलक

- फणीश्वर नाथ रेणु

‘पहलवान की ढोलक’ फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है। फणीश्वर एक आंचलिक कथाकार माने जाते हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी एक आंचलिक कहानी है, जिसमें उन्होंने भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। यह व्यवस्था बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है।

श्यामनगर के समीप का एक गाँव सरदी के मौसम में मलेरिया और हैजे से ग्रस्त था। चारों ओर सन्नाटे से युक्त बाँस-फूस की झोंपड़ियाँ खड़ी थीं। रात्रि में घना अंधेरा छाया हुआ था। चारों ओर करुण सिसकियों और कराहने की आवाजें गूँज रही थीं। सियारों और पेचक की भयानक आवाजें इस सन्नाटे को बीच-बीच में अवश्य थोड़ा-सा तोड़ रही थीं। इस भयंकर सन्नाटे में कुत्ते समूह बाँधकर रो रहे थे। रात्रि भीषणता और सन्नाटे से युक्त थी, लेकिन लुट्टन पहलवान की ढोलक इस भीषणता को तोड़ने का प्रयास कर रही थी। इसी पहलवान की ढोलक की आवाज इस भीषण सन्नाटे से युक्त मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरा करती थी।

लुट्टन सिंह के माता-पिता नौ वर्ष की अवस्था में ही उसे छोड़कर चले गए थे। उसकी बचपन में शादी हो चुकी थी, इसलिए विधवा सास ने ही उसका पालन-पोषण किया। ससुराल में पलते-बढ़ते वह पहलवान बन गया था। एक बार श्यामनगर में एक मेला लगा। मेले के दंगल में लुट्टन सिंह ने एक प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे डाली, जो शेर के बच्चे के नाम से जाना जाता था। श्यामनगर के राजा ने बहुत कहने के बाद ही लुट्टन सिंह को उस पहलवान के साथ लड़ने की आज्ञा दी, क्योंकि वह एक बहुत प्रसिद्ध पहलवान था।

लुट्टन सिंह ने ढोलक की ‘धिना-धिना, धिकधिना’, आवाज से प्रेरित होकर चाँद सिंह पहलवान को बड़ी मेहनत के

बाद चित कर दिया। चाँद सिंह के हारने के बाद लुट्टन सिंह की जय-जयकार होने लगी और वह लुट्टन सिंह पहलवान के नाम से प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपने दरबार में रख लिया। अब लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। लुट्टन सिंह पहलवान की पत्नी भी दो पुत्रों को जन्म देकर स्वर्ग सिंघार गई थी।

लुट्टन सिंह अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बनाना चाहता था, इसलिए वह बचपन से ही उन्हें कसरत आदि करवाने लग गया। उसने बेटों को दंगल की संस्कृति का पूरा ज्ञान दिया। लेकिन दुर्भाग्य से एक दिन उसके वयोवृद्ध राजा का स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात विलायत से नए महाराज आए। राज्य की गद्दी संभालते ही नए राजा साहब ने अनेक परिवर्तन कर दिए।

दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। बेचारे लुट्टन सिंह पहलवान पर कुठाराघात हुआ। वह हतप्रभ रह गया। राजा के इस रवैये को देखकर लुट्टन सिंह अपनी ढोलक कंधे में लटकाकर बच्चों सहित अपने गाँव वापस लौट आया। वह गाँव के एक किनारे पर झोपड़ी में रहता हुआ नौजवानों और चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। गाँव के किसान व खेतिहर मजदूर भला क्या कुश्ती सीखते।

अचानक गाँव में अनावृष्टि अनाज की कमी, मलेरिया, हैजे आदि भयंकर समस्याओं का वज्रपात हुआ। चारों ओर लोग भूख, हैजे और मलेरिये से मरने लगे। सारे गाँव में तबाही मच गई। लोग इस त्रासदी से इतना डर गए कि सूर्यास्त होते ही अपनी-अपनी झोंपड़ियों में घस जाते। रात्रि की विभीषिका और सन्नाटे को केवल लुट्टन सिंह पहलवान की ढोलक की तान ही ललकारकर चुनौती देती थी। यही तान इस भीषण समय में धैर्य प्रदान करती थी। यही तान शक्तिहीन गाँव वालों में संजीवनी शक्ति भरने का कार्य करती थी।

पहलवान के दोनों बेटे भी इसी भीषण विभीषिका के



शिकार हुए। प्रातः होते ही पहलवान ने अपने दोनों बेटों को निस्तेज पाया। बाद में वह अशांत मन से दोनों को उठाकर नदी में बहा आया। लोग इस बात को सुनकर दंग रह गए। इस असह्य वेदना और त्रासदी से भी पहलवान नहीं टूटा।

रात्रि में फिर पहले की तरह ढोलक बजाता रहा; इससे लोगों को सहारा मिला, लेकिन चार-पाँच दिन बीतने के पश्चात जब रात्रि में ढोलक की आवाज सुनाई नहीं पड़ी, तो प्रातःकाल

उसके कुछ शिष्यों ने पहलवान की लाश को सियारों द्वारा खाया हुआ पाया। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के अंत में पहलवान भी भूख-महामारी की शक्त में आई मौत का शिकार बन गया। यह कहानी हमारे समक्ष व्यवस्था की पोल खोलती है। साथ ही व्यवस्था के कारण लोक कलाओं के लुप्त होने की ओर संकेत भी करती है तथा हमारे सामने ऐसे । अनेक प्रश्न पैदा करती है कि यह सब क्यों हो रहा है?

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. कुशती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर- कुशती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में अद्भुत तालमेल था। ढोल बजते ही लुट्टन की रगों में खून दौड़ने लगता था। उसे हर थाप में नए दाँव-पेंच सुनाई पड़ते थे। ढोल की आवाज़ उसे साहस प्रदान करती थी। ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में निम्नलिखित तालमेल था

- धाक-धिना, तिरकट तिना – दाँव काटो, बाहर हो जाओ।
- चटाक्र-चट-धा – उठा पटक दे।
- धिना-धिना, धिक-धिना – चित करो, चित करो।
- ढाक्र-ढिना – वाह पट्टे।
- चट-गिड-धा – मत डरना। ये ध्वन्यात्मक शब्द हमारे मन में उत्साह का संचार करते हैं।

प्रश्न 2. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- लुट्टन पहलवान का जीवन उतार-चढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुख-सुख से उसे दो-चार होना पड़ा। सबसे पहले उसने चाँद सिंह पहलवान को हराकर राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी

धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान और उसके दोनों बेटों को राजदरबार से अवकाश दे दिए। गाँव में फैली बीमारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। एक दिन पहलवान भी चल बसा और उसकी लाश को सियारों ने खा लिया। इस प्रकार दूसरों को जीवन संदेश देने वाला पहलवान स्वयं खामोश हो गया।

प्रश्न 3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

उत्तर- पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुशती के गुरु सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन-साथी ही था।

प्रश्न 4. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर- ढोलक की आवाज़ सुनकर लोगों में जीने की इच्छा जाग उठती थी। पहलवान नहीं चाहता था कि उसके गाँव का कोई आदमी अपने संबंधी की मौत पर मायूस हो जाए। इसलिए वह ढोल बजाता रहा। वास्तव में ढोल बजाकर पहलवान ने अन्य ग्रामीणों को जीने की कला सिखाई। साथ ही अपने बेटों की अकाल मृत्यु के दुख को भी वह कम करना चाहता था।

प्रश्न 5. ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था।

उत्तर- महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज़ संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज़ बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज़ में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज़ गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न 6. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर- महामारी ने सारे गाँव को बुरी तरह से प्रभावित किया था। लोग सूर्योदय होते ही अपने मृत संबंधियों की लाशें उठाकर गाँव के श्मशान की ओर जाते थे ताकि उनका अंतिम संस्कार किया जा सके। सूर्यास्त होते ही सारे गाँव में मातम छा जाता था। किसी न किसी बच्चे, बूढ़े अथवा जवान के मरने की खबर आग की तरह फैल जाती थी। सारा गाँव श्मशान घाट बन चुका था।

प्रश्न 7. कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था।

- ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?
- इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?
- कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर-

- कुश्ती या दंगल पहले लोगों व राजाओं के प्रिय शौक हुआ करते थे। राजा पहलवानों को सम्मान देते थे, परंतु आज स्थिति बदल गई है। अब पहले की तरह राजा नहीं रहे। दूसरे, मनोरंजन के अनेक साधन प्रचलित हो गए हैं।
- कुश्ती की जगह अब अनेक आधुनिक खेल प्रचलन में हैं; जैसे-क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस, शतरंज, फुटबॉल आदि।
- कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कुश्ती की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा सकती साथ-साथ पहलवानों को उचित प्रशिक्षण तथा कुश्ती को बढ़ावा देने हेतु मीडिया का सहयोग लिया जा सकता है।

प्रश्न 8. आशय स्पष्ट करें आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर- लेखक ने इस कहानी में कई जगह प्रकृति का मानवीकरण किया है। यह गद्यांश भी प्रकृति का मानवीकरण ही है। यहाँ लेखक के कहने का आशय है कि जब सारा गाँव मातम और सिसकियों में डूबा हुआ था तो आकाश के तारे भी गाँव की दुर्दशा पर आँसू बहाते प्रतीत होते हैं। क्योंकि आकाश में चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। यदि कोई तारा अपने मंडल से टूटकर पृथ्वी पर फैले दुख को बाँटने आता भी था तो वह रास्ते में विलीन (नष्ट) हो जाता था। अर्थात् वह पृथ्वी तक पहुँच नहीं पाता था। अन्य सभी तारे उसकी इस भावना को नहीं समझते थे। वे तो केवल उसका मजाक उड़ाते थे और उस पर हँस देते थे।

प्रश्न 9. पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मानवीकरण के अंश



- i. औधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। आशय-रात का मानवीकरण किया गया है। ठंड में ओस रात के आँसू जैसे प्रतीत होते हैं। वे ऐसे लगते हैं मानो गाँव वालों की पीड़ा पर रात आँसू बहा रही है।
- ii. तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। आशय-तारों को हँसते हुए दिखाकर उनका मानवीकरण किया गया है। वे मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं।
- iii. ढोलक लुढ़की पड़ी थी। आशय-यहाँ पहलवान की मृत्यु का वर्णन है। पहलवान व ढोलक का गहरा संबंध है। ढोलक का बजना पहलवान के जीवन का पर्याय है।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. पाठ में मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। आप ऐसी किसी अन्य आपद स्थिति की कल्पना करें और लिखें कि आप ऐसी स्थिति का सामना कैसे करेंगे/करेंगी?

उत्तर- पाठ में मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। आजकल 'स्वाइन फ्लू' जैसी बीमारी से आम जनता में दहशत है। मैं ऐसी स्थिति में निम्नलिखित कार्य करूँगा

- i. लोगों को स्वाइन फ्लू के विषय में जानकारी दूँगा।
- ii. स्वाइन फ्लू के रोगियों को उचित इलाज करवाने की सलाह दूँगा।
- iii. जुकाम व बुखार के रोगियों को घर में रहने तथा मास्क लगाने का परामर्श दूँगा।
- iv. मरीजों की जाँच में सहायता करूँगा।

प्रश्न 2. ढोलक की थाप मृत गाँव में संजीवनी भरती रहती थी-कला और जीवन के संबंध को ध्यान में रखते हुए चर्चा कीजिए।

उत्तर- कला और जीवन का गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। कला जीवन को जीने का ढंग सिखाती है।

व्यक्ति का जीवन आनंदमय बना रहे इसके लिए कला बहुत जरूरी है। यह कई रूपों में हमारे सामने आती है; जैसे नृत्य कला, संगीत कला, चित्रकला आदि। कला जीवन की प्राण शक्ति है। कला के बिना जीवन की कल्पना करना बेमानी लगता है।

प्रश्न 3. चर्चा करें – कलाओं का अस्तित्व व्यवस्था का मोहताज नहीं है।

उत्तर- कलाएँ सरकारी सहायता से नहीं फलती-फूलतीं। ये कलाकार के निष्ठाभाव, मेहनत व समर्पण से विकसित होती हैं।

भाषा की बात

प्रश्न 1. हर विषय, क्षेत्र, परिवेश आदि के कुछ विशिष्ट शब्द होते हैं। पाठ में कुश्ती से जुड़ी शब्दावली का बहुतायत प्रयोग हुआ है। उन शब्दों की सूची बनाइए। साथ ही नीचे दिए गए क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कोई पाँच-पाँच शब्द बताइए –

चिकित्सा, क्रिकेट, न्यायालय, या अपनी पसंद का कोई क्षेत्र

उत्तर-

- **चिकित्सा** – अस्पताल, नर्स, डॉक्टर, टीका, पथ्य, औषधि, जाँच।
- **क्रिकेट** – बैट, गेंद, विकेट, छक्का, चौका, क्लीन बोल्ट।
- **न्यायालय** – जज, वकील, नोटिस, जमानत, अपील, साक्षी, केस।
- **शिक्षा** – पुस्तक, अध्यापक, विद्यार्थी, स्कूल, बोर्ड, पुस्तकालय।

पाठ में कुश्ती से जुड़ी शब्दावली सूची

कसरत, धुन, थाप, दांवपेंच, पठान, पहलवान, बच्चू, शेर का बच्चा, चित, दाँव काटो, मिट्टी के शेर, चारों खाने चित, आली आदि।

प्रश्न 2. पाठ में अनेक अंश ऐसे हैं जो भाषा के विशिष्ट प्रयोगों की बानगी प्रस्तुत करते हैं। भाषा का विशिष्ट प्रयोग न

केवल भाषाई सर्जनात्मकता को बढ़ावा देता है बल्कि कथ्य को भी प्रभावी बनाता है। यदि उन शब्दों, वाक्यांशों के स्थान पर किन्हीं अन्य का प्रयोग किया जाए तो संभवतः वह अर्थगत चमत्कार और भाषिक सौंदर्य उद्धाटित न हो सके। कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं –

- फिर बाज की तरह उस पर टूट पड़ा।
- राजा साहेब की स्नेह-दृष्टि ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए।
- पहलवान की स्त्री भी दो पहलवानों को पैदा करके स्वर्ग सिधार गई थी।

उत्तर- उसकी पहलवानी के किस्से दूर-दराज के गाँवों में मशहूर थे। अच्छे से अच्छा पहलवान भी उससे हार जाता। यदि कोई उसे ललकारने की हिम्मत करता तो वह उस पर बाज की तरह टूट पड़ता। उसकी पहलवानी के चर्चे राजा साहेब के कानों तक भी पहुँची। राजा साहेब ने उसकी पहलवानी पर प्रसन्न होकर उसे नकद इनाम दिया और आजीवन राजमहल

में रख लिया। इस प्रकार राजा, साहेब की स्नेह दृष्टि ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए। वह और अधिक मन लगाकर पहलवानी करने लगा। पहलवान की स्त्री ने उसी जैसे दो पहलवान बेटों को पैदा किया। दुर्भाग्य से वह स्वर्ग सिधार गई। इन दोनों बेटों को भी उसने दंगल में उतारने का निर्णय ले लिया। उसके दोनों बेटों ने भी अपने बाप की लाज रखी।

प्रश्न 3. जैसे क्रिकेट में कमेंट्री की जाती है वैसे ही कुश्ती की कमेंट्री की गई है? आपको दोनों में क्या समानता और अंतर – दिखाई पड़ता है?

उत्तर-

- i. क्रिकेट में बल्लेबाज, क्षेत्ररक्षण व गेंदबाजी का वर्णन होता है, जबकि कुश्ती में दाँव-पेंच का।
- ii. क्रिकेट में स्कोर बताया जाता है, जबकि कुश्ती में चित या पट का।
- iii. कुश्ती में प्रशिक्षित कमेंटेटर निश्चित नहीं होते, जबकि क्रिकेट में प्रशिक्षित कमेंटेटर होते हैं।





चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

- विष्णु खरे

चार्ली चैप्लिन यानी हम सब लेखक विष्णु खरे द्वारा रचित रचना है। इसमें लेखक ने हास्य फिल्मों के महान अभिनेता और निर्देशक चार्ली चैप्लिन के कला पक्ष की कुछ मूलभूत विशेषताओं को रेखांकित किया है। लेखक की दृष्टि में करुणा और हास्य के तत्वों का मेल चार्ली की सर्वोत्तम विशेषता रही है। चार्ली चैप्लिन दुनिया के महान हास्य कलाकार थे। 75 वर्षों में उनकी कला दुनिया के सामने है।

उनकी कला दुनिया की पाँच पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध कर चुकी है। आज चार्ली समय, भूगोल और संस्कृतियों से खिलवाड़ करता हुआ। भारत को भी अपनी कला से हँसा रहा है। पश्चिमी देशों के साथ-साथ विकासशील देशों में भी चाली की प्रसिद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। चार्ली की फ़िल्में बुद्धि की अपेक्षा भावनाओं पर टिकी हुई हैं। उनकी 'मेट्रोपोलिस', 'दी कैबिनेट ऑफ डॉक्टर कैलिगारी', 'द रोव्थ सील', 'लास्ट इयर इन मारिएनबाड', 'द सैक्रिफाइस' जैसी फ़िल्में दर्शकों से एक उच्चतर अहसास की माँग करती हैं। चाली की फ़िल्मों का एक विशेष गुण यह है कि उनकी फ़िल्मों को पागलखाने के मरीज, विकल मस्तिष्क लोग तथा आइन्सटाइन जैसे महान प्रतिभा वाले लोग एक साथ रसानंद के साथ देख सकते हैं। चार्ली ने फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया; साथ ही दर्शकों की वर्ण व्यवस्था तथा वर्ग को भी तोड़ा।

चार्ली एक परित्यक्ता तथा दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री का बेटा था, जिसे गरीबी, समाज तथा माँ के पागलपन से संघर्ष करना पड़ा। अपनी नानी की तरफ से वे खानाबदोशों से जुड़े हुए थे, जबकि पिता की ओर से वे यहूदी थे। दरअसल सिद्धांत कला को जन्म नहीं देते, बल्कि कला स्वयं अपने सिद्धांत या तो लेकर आती है या बाद में उन्हें गढ़ना पड़ता है। चार्ली चैप्लिन की कलाकारी से हँसने वाले लोग मैल ओटिंगर या जेम्स एजी की अत्यंत सारगर्भित समीक्षाओं से सरोकार नहीं रखते।

म चाली की कलाकारी को चाहने वाले लोग उन्हें समय और भूगोल से काटकर देखते हैं, इसलिए उनकी महानता ज्यों-की-त्यों बनी। हुई है। चार्ली ने अपने जीवन में बुद्धि की अपेक्षा भावना को बेहतर माना है। यह बचपन की घटनाओं का प्रभाव था। एक बार जब वे बीमार हुए थे, तब उनकी माँ ने उन्हें बाइबल से ईसा मसीह का जीवन पढ़कर सुनाया था। ईसा के सूली पर चढ़ने के प्रकरण तक: "आते-आते माँ और चाली दोनों रोने लगे।

यही भावनात्मक प्रभाव उनके जीवन पर सदा बना रहा। भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र में अनेक रस हैं। जीवन हर्ष-विषाद, सुख-दुःख, राग-विराग का सामंजस्य है। ये जीवन में सदा आते-जाते रहते हैं। लेकिन करुणा और हास्य का वह सामंजस्य भारतीय परंपरा के साहित्य में नहीं मिलता, जो चैप्लिन की कलाकारी में दिखाई देता है। किसी भी समाज में अमिताभ बच्चन या दिलीप कुमार जैसे दो-चार लोग ही होते हैं, जिनका नाम लेकर ताना दिया जाता है। लेकिन किसी भी व्यक्ति को परिस्थितियों।

का औचित्य देखते हुए चार्ली या जानी वॉकर कह दिया जाता है। दरअसल मनुष्य स्वयं ईश्वर या नियति का विदूषक, कलाउन जोकर या 'साइड-किक' है। गांधी और नेहरू भी चार्ली से प्रभावित थे। को मोर राजकपूर की 'आवारा' और 'श्री 420' फिल्मों से पहले फ़िल्मी नायकों पर हँसने की तथा स्वयं नायकों के अपने पर हँसने की परंपरा नहीं थी। दिलीप कुमार, देवानंद, शम्मी कपूर, अमिताभ बच्चन, श्रीदेवी आदि महान कलाकार भी किसी-न-किसी रूप में चाली से प्रेरित हैं। - चार्ली की अधिकांश फ़िल्में मानवीय हैं। सवाक पर्दे पर अनेक महान हास्य कलाकार हुए, लेकिन वे चार्ली की सार्वभौमिकता तक नहीं पहुँच सके। जहाँ चार्ली का चिर-युवा होना या बच्चों जैसा दिखना एक विशेषता ही है। उनकी

सर्वोत्तम विशेषता है कि वे किसी भी संस्कृति को विदेशी नहीं लगते।

चाली की महानता केवल पश्चिम में ही नहीं है, बल्कि भारत में भी उनका महत्त्व है। चैप्लिन का भारत में महत्त्व यह है कि वह 'अंग्रेजों जैसे' व्यक्तियों पर हँसने का अवसर देते हैं। चार्ली स्वयं पर सबसे अधिक तब हँसता है, जब वह स्वयं को गर्वोन्मत्त, आत्म-विश्वास से लबरेज, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति, दूसरों से ज्यादा

शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ, अपने 'वज्रादपि कठोराणि' अथवा 'मृदुनि कुसुमादपि' क्षण में दिखलाता है। भारतीय लोगों के जीवन के अधिकांश हिस्सों में वे चाली के ही टिली होते हैं, जिसके रोमांस हमेशा पंक्चर होते हैं, मूलतः हम सब। चाली है, क्योंकि हम सुपरमैन नहीं बन सकते। सत्ता, शक्ति, बुद्धिमत्ता, प्रेम और पैसे के चरमोत्कर्ष में जब हम आईना देखते हैं तो चेहरा चार्ली-चाली हो जाता है।

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफ़ी कुछ कहा जाएगा?

उत्तर- लेखक ने कहा कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफ़ी कुछ कहा जाएगा उसके पीछे निम्नलिखित कारण हैं-

- चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों की कुछ रीलें मिली हैं जिनके बारे में अभी तक कोई कुछ नहीं जानता। अब इन रीलों पर चर्चा होगी।
- विकासशील देशों में टेलीविजन व वीडियो के प्रसार से वहाँ चार्ली की फ़िल्में देखी जा रही हैं। अतः वहाँ उस पर विचार होगा।
- पश्चिमी देशों में चालों के बारे में नए दृष्टिकोण से विचार किया जा रहा है।

प्रश्न 2. चैप्लिन ने न सिर्फ़ फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। इस पंक्ति में लोकतांत्रिक बनाने का और वर्ण व्यवस्था तोड़ने का क्या अभिप्राय है? क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर- लोकतांत्रिक बनाने का मतलब है कि चैप्लिन ने अपनी फ़िल्मों के माध्यम से कला को सभी के लिए अनिवार्य माना है। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति विशेष के लिए

कला नहीं होती। वास्तव में चैप्लिन भीड़ में खड़े उस बच्चे के समान हैं जो इशारों से बता देता है कि राजा और प्रजा समान हैं दोनों में कोई अंतर नहीं। वर्ण व्यवस्था तोड़ने से आशय है कि फ़िल्में किसी जाति विशेष के लिए नहीं बनती। उसे सभी लोग देख सकते हैं। चार्ली की फ़िल्में सभी वर्ग और वर्ण के लोगों ने देखी। हम इस बात से सहमत हैं कि लेखक ने चार्ली के बारे में ठीक कहा है।

प्रश्न 3. लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों? गांधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा?

उत्तर- लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण राजकपूर द्वारा बनाई गई फिल्म 'आवारा' को कहा। राजकपूर ने भारतीय फ़िल्मों में पहली बार नायक को हँसी का पात्र बनाया। नायक स्वयं पर हँसता है। यह चार्ली की फ़िल्मों का प्रभाव था। लोगों ने उन पर चार्ली की नकल करने का आरोप लगाया, परंतु उन्होंने कभी परवाह नहीं की। गांधी व नेहरू भी चार्ली की तरह अपने पर हँसते थे। वे चार्ली की स्वयं पर हँसने की कला पर मुग्ध थे। इस कारण वे चार्ली का सान्निध्य चाहते थे।

प्रश्न 4. लेखक ने कलाकृति और रस के संदर्भ में किसे श्रेयस्कर माना है और क्यों? क्या आप कुछ ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जहाँ कई रस साथ-साथ आए हों?

प्रश्न 2. सामान्यतः व्यक्ति अपने ऊपर नहीं हँसते, दूसरों पर हँसते हैं। कक्षा में ऐसी घटनाओं का जिक्र कीजिए जब

- आप अपने ऊपर हँसे हों;
- हास्य करुणा में या करुणा हास्य में बदल गई हो।

उत्तर:

- विद्यार्थी अपने अनुभव लिखें।
- विद्यार्थी अपने अनुभव लिखें।

प्रश्न 3. 'चार्ली हमारी वास्तविकता है, जबकि सुपरमैन स्वप्न' आप इन दोनों में खुद को कहाँ पाते हैं?

उत्तर- चार्ली ने जो कुछ अपनी फिल्मों और विज्ञापनों में दिखाया है वह यथार्थ है। इस यथार्थ को हम सभी लोग भोगते हैं। चार्ली ने जिस भी पात्र के माध्यम से बात कही वह हमारे समाज की, हमारे परिवेश की है। हम सभी लोग उससे कहीं न कहीं प्रभावित अवश्य हैं। सुपरमैन हमें कल्पना के अनंत आकाश में ले जाता है। जीवन की वास्तविकता से उसका कोई लेना-देना नहीं है। मैं स्वयं को चार्ली चैप्लिन के नजदीक पाता हूँ। यही होना भी चाहिए क्योंकि जो कुछ आपके सामने है वही यथार्थ है बाकी तो केवल कोरी कल्पनाएँ हैं जो जीवन के लिए उपयोगी नहीं हो सकतीं।

प्रश्न 4. भारतीय सिनेमा और विज्ञापनों ने चार्ली की छवि का किन-किन रूपों में उपयोग किया है। कुछ फिल्मों (जैसे आवारा, श्री 420, मेरा नाम जोकर, मिस्टर इंडिया और विज्ञापनों (जैसे चौरी ब्लॉसम)) को गौर से देखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर- भारतीय सिनेमा और विज्ञापनों ने चार्ली चैप्लिन की कई छवियों का प्रयोग किया। उसके कई रूपों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। कहीं वह बंजारे के रूप में हमारे सामने आता है तो कहीं अस्पताल में सफ़ाई करते नजर आता है, कहीं पालिश करते दिखाई देता है, तो कहीं सीढ़ी खींचता नजर आता है। स्वर्गीय राजकपूर जी ने उनकी हू-ब-हू नकल अपनी फिल्मों में की। इसी प्रकार अनिल कपूर ने भी चार्ली चैप्लिन की भूमिका को 'मिस्टर इंडिया' नामक फिल्म के माध्यम से

निभाया। वास्तव में जीवन और समाज से जुड़े प्रत्येक पात्र को अभिनय चार्ली ने किया था। इन्हीं विविध पात्रों को भारतीय सिनेमा और विज्ञापन जगत ने भुनाया। चैरी पालिश का विज्ञापन हमारे सामने है।

प्रश्न 5. आजकल विवाह आदि उत्सव समारोहों एवं रेस्तराँ में आप भी चार्ली चैप्लिन का रूप धरे किसी व्यक्ति से टकराएँ होंगे। सोचकर बताइए कि बाज़ार ने चार्ली चैप्लिन का कैसा उपयोग किया है?

उत्तर- मीडिया हो या बाज़ार वह हर उस शख्सियत को भुनाना चाहता है जो प्रसिद्ध है। जिसके नाम का डंका चारों ओर बजता है। विवाह हो या अन्य समारोह आज भी चार्ली चैप्लिन की छवि का प्रयोग किया जा रहा है। उसका रूप धारण कर व्यक्ति लोगों का मनोरंजन करते हैं। उन्हें हँसाते हैं। बड़ी-बड़ी मूँछे लगाकर या चार्ली चैप्लिन जैसा ऊँचा कोट पेंट डालकर लोगों को हँसाने के लिए मजबूर कर देते हैं। कुछेक समारोहों में तो वे चार्ली जैसी हरकतें भी करते हैं। विवाह समारोह का आयोजन करने वाले लोग सभी उम्र के लोगों का मनोरंजन करना चाहते हैं और इसके लिए चार्ली से बढ़कर व्यक्ति या पात्र नहीं है।

भाषा की बात

प्रश्न 1. तो चेहरा चार्ली चार्ली हो जाता है। वाक्य में चार्ली शब्द की पुनरुक्ति से किस प्रकार की अर्थ-छटा प्रकट होती है? इसी प्रकार के पुनरुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए कोई तीन वाक्य बनाइए। यह भी बताइए कि संज्ञा किन स्थितियों में विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने लगती है?

उत्तर- इसका प्रयोग करने से अर्थवत्ता में वृद्धि हुई है। अर्थ और अधिक स्पष्ट रूप में हमारे सामने आता है। इस वाक्य का अर्थ बनता है कि चेहरा खिल जाता है। आनंद में डूब जाता है। तीन वाक्य

- उसे देखकर दिल गार्डन-गार्डन हो गया।
- रामू ने श्यामू को खरी-खरी सुनाई।
- वह संजना को देखकर खिल-खिल गया।



संज्ञा तब विशेषण का रूप धारण करती है जब वह विशेष भाव या अर्थ देने लगे। तब अर्थ की महत्ता बढ़ जाती है किंतु संज्ञा अपने मूल अर्थ को विशेषण भावों के साथ प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 2. नीचे दिए गए वाक्यांशों में हुए भाषा के विशिष्ट प्रयोगों को पाठ के संदर्भ में प्रस्तुत कीजिए।

- सीमाओं से खिलवाड़ करनी
- समाज से दुरदुराया जाना
- सुदूर रूमानी संभावना
- सारी गरिमा सुई चुभे गुबारे जैसी फुस हो उठेगी
- जिसमें रोमांस हमेशा पंचर होते रहते हैं।

उत्तर-

- सीमाओं से खिलवाड़ करने का अर्थ है कि सीमाएँ लांघ जाना। उनका अतिक्रमण कर देना ताकि समाज में लीक से हटकर चला जा सके। समाज को दिखाया जा सके कि हममें भी प्रतिनिधि बनने की क्षमता है। हम भी योग्य हैं।
- समाज से दुरदुराया जाना मतलब ठुकरा दिया जाना। समाज उन्हीं लोगों को दुत्कारता या ठुकरा देता है जो गरीब और मजबूर हों। जिनकी हैसियत कुत्ते से बदतर हो। समाज से यदि किसी व्यक्ति को दुत्कार दिया जाता है तो वह उसके जीवन का सबसे बुरा समय है।
- सुदूर रूमानी संभावना यानि कुछ न कुछ अच्छा होने की संभावना। यह आशा रहे कि कुछ अच्छा अवश्य होगा। यह संभावना यद्यपि शुरू में कल्पना होती है किंतु यथार्थ में भी बहुत जल्दी बदल जाती है।
- जिस प्रकार गुब्बारे में सुई चुभो देने से उसकी सारी हवा निकल जाती है ठीक उसी प्रकार यदि एक बार चरित्र पर दाग लग जाए तो सारी गरिमा (इज्जत) खत्म हो जाती है। तब व्यक्ति की हालत सुई चुभे गुब्बारे जैसी हो जाती है।

- जिसमें रोमांस हमेशा पंचर होते रहते हैं। कहने का आशय यही है कि यदि भाग्य साथ न दे तो व्यक्ति का कोई भी काम सिरे नहीं चढ़ता। प्रत्येक परिस्थिति उसके प्रतिकूल हो जाती है। वह प्रत्येक कार्य में असफल रहता है। रोमांस (प्यार) की स्थिति भी लगभग ऐसी ही हो जाती है। नफरत के घरों में रोमांस का पंचर हो जाना स्वाभाविक है।

गौर करें

प्रश्न 1. दरअसल सिद्धांत कला को जन्म नहीं देते, कला स्वयं अपने सिद्धांत या तो लेकर आती है या बाद में उन्हें गढ़ना पड़ता है।

उत्तर- लेखक के कहने का अभिप्राय यही है कि कला कभी जन्म नहीं लेती बल्कि यह तो नैसर्गिक होती है। यह प्रकृतिजन्य होती है। सिद्धांतों ने कभी कला को जन्म नहीं दिया है। कला के अपने सिद्धांत होते हैं। इन्हीं सिद्धांतों से अन्य सिद्धांत बनते हैं। कला ही सिद्धांतों को जन्म देती है।

प्रश्न 2. कला में बेहतर क्या है-बुद्धि को प्रेरित करने वाली भावना या भावना को उकसाने वाली बुद्धि।

उत्तर- कला में बेहतर है बुद्धि को प्रेरित करने वाली भावना है अर्थात् जब कला में बुद्धि को प्रेरित करने की शक्ति आ जाए तो उसकी सार्थकता सिद्ध हो जाती है। कला ही वह प्रेरणा शक्ति है जो बुद्धि को हर कोने से प्रभावित और प्रेरित करती है। इसी के आधार पर मूल्य और सिद्धांत निर्धारित हो जाते हैं।

प्रश्न 3. दरअसल मनुष्य स्वयं ईश्वर का या नियति का विदूषक, क्लाउन जोकर या साइड किक है?

उत्तर- बिलकुल मनुष्य ईश्वर के अधीन है। जो कुछ होना है वह होकर ही रहेगा। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी होना संभव नहीं। तुलसीदास जी ने भी कहा है-“होई है वही जो राम रचि राखा।” मनुष्य तो ईश्वर का या भाग्य का विदूषक मात्र है। वह तो क्लाउन जोकर या साइडकिक है। इसलिए परमात्मा जैसे चाहे उसे खिला सकता है।

प्रश्न 4. सत्ता, शक्ति, बुद्धिमता, प्रेम और पैसे के चरमोत्कर्ष में जब हम आईना देखते हैं तो चेहरा चार्ली-चार्ली हो जाता है?

उत्तर- लेखक का यह कथन बिलकुल ठीक है। यदि व्यक्ति के पास सत्ता, शक्ति, बुद्धि, प्रेम और पैसे जैसी मूलभूत सुविधाएँ हों तो वह हर तरह से खुश रहता है। उसको दुख-दर्द नहीं रहता। उसका चेहरा खिला-खिला रहता है।

प्रश्न 5. मॉडर्न टाइम्स द ग्रेट डिक्टेटर आदि फ़िल्में

कक्षा में दिखाई जाएँ और फ़िल्मों में चार्ली की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

उत्तर- इन फ़िल्मों ने चार्ली चैप्लिन को नई दशा एवं दिशा दी। देखते ही देखते वे लोकप्रिय कलाकार बन गए। इन फ़िल्मों के माध्यम से चार्ली ने बेहद गंभीर विषयों को सहजता से प्रस्तुत किया है। उनके कैरियर में इन फ़िल्मों ने चार चाँद लगा दिया था। समाज और फ़िल्म दोनों क्षेत्रों में स्थापित करने में इन फ़िल्मों का बहुत योगदान रहा।





नमक

- रजिया सज्जाद जहीर

नमक' कहानी रजिया सज्जाद जहीर द्वारा रचित एक उत्कृष्ट कहानी है। यह भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तरफ के विस्थापित लोगों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में उन्होंने अपने-पराए देश-परदेश की।

कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए हैं। विस्थापित होकर आई सिख बीबी आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती हैं और ॥ सौगात के तौर पर वहाँ का लाहौरी नमक ले आने की फरमाइश करती हैं। सफ़िया का बड़ा भाई पाकिस्तान में एक बहुत बड़ा पुलिस अफसर है। सफ़िया के नमक को ले जाने पर वह उसे गैर-कानूनी बताता है। लेकिन सफ़िया वहाँ से नमक ले जाने की जिद करती है। वह नमक को एक फलों की टोकरी में डालकर कस्टम अधिकारियों से। बचना चाहती है।

सफ़िया को विस्थापित सिख बीबी याद आती हैं, जो अभी भी लाहौर को ही अपना वतन मानती है। अब भी उनके हृदय में अपने लाहौर का सौंदर्य समाया हुआ है। सफ़िया भारत आने के लिए फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में बैठी थी। वह मन-ही-मन में सोच रही थी कि उसके किन्नुओं की टोकरी में नमक है, यह बात केवल वही जानती है, लेकिन वह मन-ही-मन

कस्टम वालों से डरी। हुई थी। कस्टम अधिकारी सफ़िया को नमक ले जाने की इजाजत देता है तथा देहली को अपना वतन बताता है, तथा सफ़िया को कहता।

है कि “जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा और उन खातून को यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ़ता-रफ़ता ठीक हो जाएगा।” रेल में सवार होकर सफ़िया पाकिस्तान से अमृतसर पहुँची। वहाँ भी उसका सामान कस्टम वालों ने चेक किया। भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दासगुप्त ने सफ़िया को कहा कि “मेरा वतन ढाका है।” और उसने यह भी बताया कि जब भारत-पाक विभाजन हुआ था, तभी वे भारत में आए थे।

इन्होंने भी सफ़िया को नमक अपने हाथ से सौंपा। इसे देखकर सफ़िया सोचती रही कि किसका वतन कहाँ है? इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने बताया है कि राष्ट्र-राज्यों की नई सीमा रेखाएँ खींची जा चुकी हैं और मजहबी आधार पर लोग : । इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद ज़मीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुंच पाई हैं।

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर- नमक की पुड़िया को लेकर सफ़िया के मन में यह द्वंद्व था कि वह नमक कस्टम अधिकारियों को दिखाकर ले जाए या चोरी से छिपाकर। सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया

ले जाने से मना कर दिया क्योंकि पाकिस्तान से भारत को नमक का निर्यात प्रतिबंधित था। यह गैर-कानूनी था। दूसरे, कस्टम अधिकारी नमक की पुड़िया निकल आने पर बाकी सामान की भी चिंदी-चिंदी बिखेर देंगे। इससे बदनामी भी होगी। तीसरे, भारत में पर्याप्त मात्रा में नमक है।

प्रश्न 2. नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था?

उत्तर- जब भावना के बदले बुद्धि हावी होने लगी तो सफ़िया का मन द्वंद्व ग्रस्त हो गया। वह सोचने लगी कि कस्टम वाले पुड़िया ले जाने देंगे या नहीं। यदि उन्होंने उसे न जाने दिया तो उसके वायदे का क्या होगा। वही वायदा जो उसने सिख बीबी से किया। सफ़िया जोकि सैयद थी, इसलिए उसने सोचा कि यदि वह नमक न ले गई तो क्या होगा, क्योंकि सैयद लोग कभी भी वायदा नहीं तोड़ते। जान देकर भी यह वायदा पूरा करना होगा।

प्रश्न 3. जब सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप क्यों खड़े थे?

उत्तर- सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो इधर कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप खड़े थे। सिख बीबी का प्रसंग छिड़ने पर उन्हें अपने वतन की याद आ रही थी। वे सिख बीबी व सफ़िया की भावना से भी प्रभावित थे। उन्हें दूसरी जगह आकर भी अपने वतन की चीजें बहुत याद आ रही थीं। राजनीतिक उद्देश्यों ने सबको एक-दूसरे से अलग कर दिया।

प्रश्न 4. लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा या मेरा वतन ढाका है जैसे उद्गार. किस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं?

उत्तर- इन उद्गारों से यही स्पष्ट होता है कि चाहे राजनीति या भूगोल देश की सीमाओं को बाँट दे अथवा देश को टुकड़ों में बाँट दे लेकिन लोगों के मन को नहीं अलग किया जा सकता। लोगों का मन किसी भी तरह से इस बाँटवारे को नहीं स्वीकारता। एक पाकिस्तानी को दिल्ली प्यारी है तो एक हिंदुस्तानी को लाहौर प्यारा है।

प्रश्न 5. नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्वों के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- नमक ले जाते समय सफ़िया के मन में अनेक द्वंद्व उठे। इससे उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर आती हैं-

- i. भावुक-सफ़िया भावुक है। वह सिख बीबी की भावनाओं को मानती है तथा उसी के आधार पर लाहौरी नमक भारत ले जाना चाहती है। यह गैर-कानूनी है, यह जानते हुए भी वह भावनाओं को बड़ा मानती है।
- ii. वायदे की पक्की-सफ़िया सैयद है। सैयद होने के नाते वह अपने वायदे को किसी भी कीमत पर पूरा करना चाहती है। वह नमक ले जाने के लिए हर गलत-सही तरीके पर विचार करती है।
- iii. व्यावहारिक-सफ़िया व्यावहारिक है। वह प्रेम के तोहफे को चोरी से नहीं ले जाना चाहती। वह दोनों देशों के कस्टम अधिकारियों के सामने अपनी बात रखती है तथा अपने तर्कों से उन्हें अपने पक्ष में करने में सफल हो जाती है। इस तरीके से वह नमक की पुड़िया लाने में सफल होती है।

प्रश्न 6. मानचित्र पर एक लकीर खींच देने से ज़मीन और जनता बाँट नहीं जाती है-उचित तर्कों व उदाहरणों के जरिए इसकी पुष्टि कीजिए।

उत्तर- राजनीति और कूटनीति के चलते देश के टुकड़े हो जाते हैं। देश कई टुकड़ों में बाँट जाता है। भारत भी कूटनीति का शिकार रहा है। भारत आज पाकिस्तान और बांग्लादेश के कारण तीन टुकड़ों में बाँटा हुआ है लेकिन सौभाग्य इस बात का है कि लोगों के दिलों में किसी भी प्रकार की दरार (लकीर) नहीं खिंची है। लोग आज भी एक-दूसरे से मिलते हैं। उनमें वही भाईचारा और प्यार कायम है। हिंदुस्तान में इन दोनों देशों के नागरिक आते-जाते हैं। यहाँ से नागरिक इन देशों में जाते हैं। वे एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करते हैं।

प्रश्न 7. 'नमक' कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला है, कैसे?

उत्तर- 'नमक' कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है। उनमें प्रेम और स्नेह का स्वाद है। इस स्वाद में



अपनापन है। लेखिका का अपने भाइयों, परिचितों से स्नेह, सिख बीवी का लाहौर से लगाव, कस्टम अधिकारियों का दिल्ली व ढाका से जुड़ाव-ये सब दोनों देशों की जनता के बीच स्नेह को दर्शाते हैं।

क्यों कहा गया?

प्रश्न 1. क्या सब कानून हुकूमत के ही होते हैं, कुछ मुहब्बत मुरौवत, आदमियत, इंसानियत के नहीं होते?

उत्तर- सफ़िया ने यह बात इसलिए कही है कि सब कानूनों से ऊपर है इंसानियत। इंसानियत से ही सारी बातें जन्म लेती हैं। कानून हुकूमत के हो सकते हैं लेकिन इंसानियत तो प्रेम और भाईचारे का कानून सिखाता है। जिस आदमी में इंसानियत नहीं है वह पशु है, जानवर है।

प्रश्न 2. भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी।

उत्तर- सफ़िया के भाई ने कानूनी पक्ष बताकर नमक की पुड़िया को ले जाने के लिए मना कर दिया था। उस समय वह भाई पर बिगड़ी और इंसानियत, प्रेम आदि की दुहाई दी। पर जब गुस्सा उतर गया तो उसने पुड़िया ले जाने के तरीके के बारे में सोचना शुरू किया। उसने अनेक विकल्प सोचे, परंतु हर बार कानून का डर सामने आया। अंत में उसने इसे टोकरी में कीनुओं के नीचे छिपाकर ले जाने का निर्णय किया।

प्रश्न 3. मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुजर जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।

उत्तर- ये शब्द कस्टम अधिकारी ने कहे। उसने सफ़िया से कहा कि कानून अपनी जगह है लेकिन मुहब्बत के आगे कानून की भी नहीं चलती। जब मुहब्बत आगे आड़े आ जाए तो कानून धरे रह जाते हैं। वास्तव में इस दुनिया में इंसानियत सब कानूनों से परे हैं।

प्रश्न 4. हमारी जमीन हमारे पानी का मज़ा ही कुछ और है!

उत्तर- भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दास गुप्ता ढाका को अपना वतन मानते हैं। लेखिका की पूरी बात सुनकर उन्हें अपनी जमीन, डाभ आदि की याद आती है। वे भावुक हो उठते हैं और यह बात कहने लगते हैं।

समझाइए तो जरा

प्रश्न 1. फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दूधिया आँचल में समा जाते हैं।

उत्तर- लेखिका के कहने का अभिप्राय यही है कि जब कोई अपने वतन को याद करता है अथवा उसे अपना वतन याद आ जाता। है तो उसकी आँखों से आँसू की बूंदें टपकने लगती हैं। वह उसके सफ़ेद आँचल में सितारे की तरह टूटकर समा जाते हैं। यादों की बौछारों से उनकी पलकें भीग जाते हैं।

प्रश्न 2. किसका वतन कहाँ है-वह जो कस्टम के इस तरफ़ है या उस तरफ़।

उत्तर- भारत लौटने के समय सफ़िया अमृतसर के स्टेशन पुल पर चढ़ती हुई यह सोच रही है। सिख बीवी लाहौर को अपना वतन बताती है, पाक कस्टम अफ़सर दिल्ली को तथा भारतीय कस्टम अफ़सर ढाका को अपना वतन बताता है जबकि ये तीनों ही अलग देशों में रहते हैं। इनका मन अपनी जन्मभूमि में है तथा इनका कार्यक्षेत्र व निवास अलग क्षेत्र में है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1. नमक' कहानी में हिंदुस्तान, पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में इन संवेदनाओं की स्थिति को तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'नमक' कहानी में हिंदुस्तान-पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। आज के संदर्भ में स्थिति बदल गई है। वस्तुतः विभाजन के समय की पीढ़ी आज लगभग समाप्त हो गई है। अब उनका स्थान उस पीढ़ी ने ले लिया है जो इसी देश में जन्मी, पली व बड़ी हुई है। उनका अपने पिता या दादा के जन्म-स्थान से लगाव नहीं के बराबर है। उनके जेहन में विभाजन की कड़वी यादें भी नहीं हैं। अतः अब दोनों देशों के लोगों के बीच भावनात्मक लगाव पहले की तुलना में काफी घट गया है। इसके बावजूद सांस्कृतिक स्तर पर दोनों देशों की एकता को बनाने के लिए प्रयास किए जाते हैं।

प्रश्न 2. सफ़िया की मनः स्थिति को कहानी में एक विशिष्ट संदर्भ में अलग तरह से स्पष्ट किया गया है। अगर आप सफ़िया की जगह होते/होतीं तो क्या आपकी मनःस्थिति भी वैसी ही होती ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सफ़िया की मनः स्थिति बिलकुल समयानुरूप थी। जिस द्रंढ में वह घिरी थी वह उसकी परिस्थितियों की देन है। सफ़िया का मन भावनाओं की कद्र करता है। उसे किसी कानून या नियम की परवाह नहीं है। जब उसकी भावना परे बुधि हावी होने लगी तो उसने बुधि से काम लिया। यदि मैं उसकी जगह होता/होती तो हमारी मनः स्थिति भी वैसी ही होती क्योंकि भावना और बुद्धि दोनों में बहुत अंतर होता है। जब ये दोनों टकराने लगे तो मन का विचलित होना स्वाभाविक है।

प्रश्न 3. भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए दोनों सरकारें प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत तौर पर आप इसमें क्या योगदान दे सकते/सकती हैं?

उत्तर- भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर निम्नलिखित योगदान दे सकता हूँ

- मैं व्यक्तिगत तौर पर अपने मन से शत्रुता का भाव बाहर निकाल दूँगा।
- मैं अन्य नागरिकों के मन से भी पाक के प्रति भरे जहर को बाहर निकालने की कोशिश करूँगा।
- सांस्कृतिक व खेल-कूद के स्तर पर वहाँ से आई टीमों का दिल से स्वागत करूँगा।
- सूचना क्रांति के युग में इंटरनेट के माध्यम से वहाँ के नागरिकों को अपनी भावनाएँ प्रेषित करूँगा।

प्रश्न 4. लेखिका ने विभाजन से उपजी विस्थापन की समस्या का चित्रण करते हुए सफ़िया व सिख बीबी के माध्यम से यह भी परोक्ष रूप से संकेत किया है कि इसमें भी विवाह की रीति के कारण स्त्री सबसे अधिक विस्थापित है। क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखिका के दृष्टिकोण से बिलकुल सहमत हैं। विवाह के बाद स्त्री को विस्थापित होना पड़ता है। यदि वह एक शहर को छोड़कर दूसरे शहर जाए तो भी विस्थापित हो जाती है जबकि सिख बीबी और सफ़िया तो दूसरे मुल्क में ही रह गईं जो कि विवाह के बाद स्वाभाविक था। स्त्री अपने जीवन में सर्वाधिक विस्थापित होती है। उसके साथ यह समस्या रहती है। विवाह की रीति ही ऐसी है कि स्त्री को परदेस जाना ही पड़ता है। ऐसे में वह इस विस्थापन का दंश सबसे अधिक भोगती है।

प्रश्न 5. विभाजन के अनेक स्वरूपों में बँटी जनता को मिलाने की अनेक भूमिकाएँ हो सकती हैं-रक्त संबंध, विज्ञान, साहित्य व कला। इनमें से कौन सबसे ताकतवर है और क्यों ?

उत्तर- विभाजन के अनेक स्वरूपों में बँटी जनता को मिलाने की अनेक भूमिकाएँ हो सकती हैं-रक्त संबंध, विज्ञान, साहित्य व कला। इनमें से सबसे ज्यादा ताकतवर साहित्य व कला माध्यम हो सकता है। यह माध्यम भावनाओं पर आधारित है तथा यह पारस्परिक सौहार्द्र को बढ़ाता है। रक्त-संबंधों का दायरा भी सीमित होता है। कलाकार व साहित्यकार पूरे समूह की पीड़ा, दुख-सुख आदि भावनाओं को व्यक्त करता है। इससे दूरियाँ समाप्त हो जाती हैं।

आपकी राय

प्रश्न 1. मान लीजिए आप अपने मित्र के पास विदेश जा रहे/रही हैं। आप सौगात के तौर पर भारत की कौन-सी चीज़ ले जाना पसंद करेंगी/करेंगे और क्यों?

उत्तर- यदि मुझे विदेश जाना पड़े तो अपने मित्र के लिए भारतीय मसाले ले जाना पसंद करूँगी/करूँगा ताकि मेरे मित्र को इनकी खुशबू आती रहे और उनका तन-मन इसमें रंग जाए। तन-मन रंगने से उसे न केवल मेरी बल्कि भारतीयता की याद भी आएगी। तब उसे भारतीयता का सही मायनों में पता चलेगा। हमारा देश अनेक प्रकार के मसालों को निर्यात करता है। अतः ऐसी स्थिति में इससे बढ़िया सौगात कोई हो नहीं सकती।



भाषा की बात

प्रश्न 1. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए

- हमारा वतन तो जी लाहौर ही है।
- ख) क्या सब कानून हुकूमत के ही होते हैं?

सामान्यतः 'ही' निपात का प्रयोग किसी बात पर बल देने के लिए किया जाता है। ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों में 'ही' के प्रयोग से अर्थ में क्या परिवर्तन आया है? स्पष्ट कीजिए। 'ही' का प्रयोग करते हुए दोनों तरह के अर्थ वाले पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

उत्तर- 'ही' का प्रयोग कर देने से वाक्य की अर्थवत्ता में वृद्धि होती है। साथ ही, इसका अर्थ किसी विशेषता का द्योतक होता है। पहले वाक्य से 'ही' का प्रयोग यही अर्थ देता है कि हमारा वतन केवल लाहौर है कोई और नहीं। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'ही' से अभिप्राय है कि क्या कानून केवल हुकूमत के लिए बने हैं। अन्य बातें भी कानून के दायरे में आती हैं।

'ही' का प्रयोग

- हम तो आपको ही जानते हैं।
- आपने ही मुझे यह मौका दिया था।
- तुम्हारे कारण ही मैं मरते-मरते बचा।
- मैं ही मूर्ख था जो तुम्हें ईमानदार समझता था।
- मुझे ही इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए कहा गया है।

'ही' का प्रयोग (प्रश्नात्मक संदर्भ में)

- क्या सब हुकूम के ही गुलाम होते हैं ?
- क्या आपने कभी जानने की कोशिश ही की?
- क्या वह तुम ही हो जिसे अज्ञात लोगों ने धमकी दी?
- क्या मेरा ही फर्ज रह गया है?
- क्या हर बार मैं ही खर्चा किया करूँ?

प्रश्न 2. नीचे दिए गए शब्दों के हिंदी रूप लिखिए।

मुर्शैवत, आदमियत, अदीब, साडा, मायने, सरहद, अक्स, लबोलहजा, नफीस

उत्तर:

मुर्शैवत – भलमनसी, संकोच, लिहाज

आदमियत – इंसानियत

अदीब – साहित्यकार, लेखक

साडी – मेरा, हमारा

मायने – अर्थ

सरहद – सीमा (देश की)

अक्स – प्रतिबिंब

लबोलहजा – कहने का ढंग, बोलने का तरीका

नफीस – उत्तम, सुंदर, बढ़िया।

प्रश्न 3. पंद्रह दिन यों गुजरे कि पता ही नहीं चला- वाक्य को ध्यान से पढ़िए और इसी प्रकार के (यों, कि, ही) से युक्त पाँच वाक्य बनाइए।

उत्तर-

- तुम यों उठकर चले गए कि कुछ हुआ ही नहीं था।
- नारायण शंकर तो यों नाराज हुआ जैसे कि उसने ही यह सब कुछ किया है।
- मिर्जा गालिब यों उर्दू के शायर थे, तुम यह कैसे कह सकते हो कि मैं वैसे ही कह रहा हूँ।
- नसीरुद्दीन यों फेंसा कि उसे ही चोरी की बात कबूल करनी पड़ी।
- पिछले पखवाड़ा यों गुजरा कि उसे इस बारे में बताना ही पड़ा।

सृजन के क्षण

प्रश्न 1. नमक' कहानी को लेखिका ने अपने नजरिये से अन्य पुरुष शैली में लिखा है। आप सफ़िया की नजर से/उत्तम पुरुष शैली में इस कहानी को अपने शब्दों में कहें।

उत्तर- उस सिख बीबी को देखकर मैं हैरान रह गई थी। उसका चेहरा-मोहरा, चाल-ढाल बिलकुल मेरी अम्मा जैसा था। वह दुपट्टा भी मेरी माँ की तरह ओढ़ती थी। जब मैंने उसे कई बार मोहब्बत भरी नज़रों से देखा तो उसने भी मेरे घर-बार

के बारे में जानने की इच्छा जाहिर कर दी। हम दोनों में यूँ ही बातें होती रही। कब हम एक-दूसरे के गहरे परिचित बन गए, यह न मुझे पता चला न उसे। जब मैंने उससे कहा कि मैं अगले सप्ताह लाहौर जा रही हूँ तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने कहा कि आते वक्त मेरे लिए लाहौरी नमक ले आना। मैं उसकी इस बात को मान गई। जब पंद्रह दिन लाहौर में रहकर मैं वापिस अपने वतन आने लगी तो मैंने नमक की पुड़िया बना ली।

इस पर मेरे भाईजान ने मुझसे कहा कि नमक (लाहौरी) ले जाना गैरकानूनी है। इस बात पर हम दोनों में तीखी नोंक-झोंक हुई। काफ़ी मशक्कत के बाद मैंने ठान लिया कि मैं अपनी अम्मी जान से किया वादा ज़रूर निभाऊँगी। मैंने कस्टम वालों (पाकिस्तानी) को सारी बात बता दी, इस बात पर वे राजी हो गए कि मैं नमक ले जा सकती हूँ। यह तो प्रेम का तोहफा है। जब मैं हिंदुस्तान की सरहद को

पार करके अमृतसर स्टेशन पर पहुँची तो वहाँ भी मैंने वही बात दुहराई। एक बाँग्ला अधिकारी मुझे वेटिंग रूम (प्रतीक्षालय) में ले गया। जब उसने एक पुलिस वाले को बुलाया तो मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उसने पुलिसवाले से दो चाये मँगवाई। हमने चाय पी और बातें की।

चलते वक्त उसने मेरा बैग उठा रखा था। इस तरह मैं तनाव से मुक्त हो गई। उसने चलते वक्त भी मुझसे बातें की। उसकी बातों से मैं जान गई कि वह ईस्ट बंगाल का है और यहाँ आकर नौकरी कर रहा है। उसने यह भी बताया कि ईस्ट बंगाल की जमीन और पानी बहुत उपजाऊ और निर्मल (साफ़) है। जब मैं अमृतसर के पुल पर चढ़ रही थी तो सोचने लगी कि आखिर वतन है कौन-सा? किसका वतन है कहाँ? वतन वह है जो कस्टम से इधर है या फिर वह है जो उस तरफ। इस तरह सोचती-सोचती मैं अपने घर वापिस लौट आई। मेरा मन इस प्रश्न का उत्तर हँढ़ता रहा।





शीरीष के फूल

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

शीरीष के फूल' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित प्रकृति प्रेम से परिपूर्ण निबंध है। इसमें लेखक ने आँधी, लू और गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल फूलों का सौंदर्य बिखेर रहे शीरीष के माध्यम से मनुष्य की जीने की अजेय इच्छा। और कलह-वंद के बीच धैर्यपूर्वक लोक-चिंता में लीन कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है।

लेखक जहाँ बैठकर लेख लिख रहा था उसके आगे-पीछे, दाएं-बाएँ शीरीष के फूल थे। अनेक पेड़ जेठ की जलती दोपहर में भी झूम रहे थे। वे नीचे से ऊपर तक फूलों से लदे हुए थे। बहुत कम ऐसे पेड़ होते हैं जो प्रचंड गर्मी में भी महीनों तक फूलों से लदे रहते हैं। कनेर और अमलतास भी गर्मी में फूलते हैं लेकिन केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए। वसंत ऋतु में पलाश का पेड़ भी केवल कुछ दिनों के लिए फूलता है पर फिर से तूठ हो जाता है। लेखक का मानना है कि ऐसे कुछ देर फूलने वालों से तो न फूलने वाले अच्छे हैं। शीरीष का

पेड़ वसंत के आते ही फूलों से लद जाता है और आषाढ़ तक निश्चित रूप से फूलों से यूँ ही भरा रहता है। कभी-कभी तो भादों मास तक भी फूलता रहता है। भीषण गर्मी में भी शीरीष का पेड़ कालजयी अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का मंत्र पढ़ता रहता है। शीरीष के फूल लेखक के हृदय को आनंद प्रदान करते हैं। पुराने समय में कल्याणकारी और शुभ समझे जाने वाले शीरीष के छायादार पेड़ों को लोग अपनी चारदीवारी के पास लगाना पसंद करते थे। अशोक, अरिष्ट, पुन्नाम और शीरीष के छायादार हरे-भरे पेड़ निश्चित रूप से बहुत सुंदर लगते हैं। शीरीष की डालियाँ अवश्य कुछ कमजोर होती हैं पर इतनी कमजोर नहीं होती कि उन पर झूले ही न डाले जा सकें। शीरीष के : फूल बहुत कोमल होते हैं। कालिदास का मानना है कि इसके फूल केवल भौरों के कोमल

पैरों का ही दबाव सहन कर सकते हैं। पक्षियों के भार को तो वे बिल्कुल सहन नहीं कर पाते।

इसके फूल चाहे बहुत नर्म होते हैं लेकिन इसके फल बहुत सख्त होते हैं। वे तो साल भर बीत जाने पर भी कभी-कभी पेड़ों पर लटक कर खड़खड़ाते रहते हैं। लेखक का मानना है कि वे उन नेताओं की तरह हैं जो जमाने का दुःख नहीं देखते और जब तक नये लोग उन्हें धक्का मार कर निकाल नहीं देते। लेखक को आश्चर्य होता है कि पुराने की यह अधिकारइच्छा समाप्त क्यों नहीं होती। बुढ़ापा और मृत्यु तो सभी को आना है। शीरीष के फूलों को झड़ना ही होता है पर पता नहीं वे अड़े क्यों रहते हैं ?

वे मूर्ख हैं जो सोचते हैं कि उन्हें मरना नहीं है। इस संसार में अमर होकर तो कोई नहीं आया। काल देवता की नजर से तो : कोई भी नहीं बच पाता। शीरीष का पेड़ ऐसा है जो सुख-दुःख में सरलता से हार नहीं मानता। जब धरती सूर्य की तेज गर्मी से दहक रही। होती है तब भी वह पता नहीं उससे रस प्राप्त करके किस प्रकार जीवित रहता है। किसी वनस्पति शास्त्री ने लेखक को बताया है कि वह वायुमंडल से अपना रस प्राप्त कर लेता है।

लेखक की मान्यता है कि कबीर और कालिदास भी शीरीष की तरह बेपरवाह रहे होंगे क्योंकि जो कवि अनासक्त नहीं रह सकता वह फक्कड़ नहीं बन सकता। शीरीष के फूल भी फक्कड़पन की मस्ती लेकर झूमते हैं। कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम् में महाराज दुष्यंत : ने शकुंतला का एक चित्र बनाया पर उन्हें बार-बार यही लगता था कि इसमें कुछ रह गया है। कोई अधूरापन है। काफ़ी देर के बाद उन्हें समझ आया कि शकुंतला के कानों में वे शीरीष के फूल बनाना तो भूल ही गए थे।

कालिदास की तरह हिंदी के कवि सुमित्रानंदन पंत और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर भी कुछ-कुछ अनासक्त थे। शिरीष का पेड़ किसी अवधूत की तरह लेखक के हृदय में तरंगें जगाता है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर रह सकता है। ऐसा करना सबके लिए संभव नहीं होता। हमारे देश में महात्मा

गांधी भी ऐसे ही थे। वह भी शिरीष की तरह वायुमंडल से रस खींचकर अत्यंत कोमल और अत्यंत कठोर हो गए थे। लेखक जब कभी शिरीष को देखता है उसे। हृदय से निकलती आवाज सुनाई देती है कि अब वह अवधूत यहाँ नहीं है।

अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

उत्तर- लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।

प्रश्न 2. हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है - प्रस्तुत पीठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर- परवर्ती कवि ये समझते रहे कि शिरीष के फूलों में सब कुछ कोमल है अर्थात् वह तो कोमलता का आगार हैं लेकिन विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष के फूलों में कोमलता तो होती है लेकिन उनका व्यवहार (फल) बहुत कठोर होता है। अर्थात् वह हृदय से तो कोमल है किंतु व्यवहार से कठोर है। इसलिए हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार का कठोर होना अनिवार्य हो जाता है।

प्रश्न 3. विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर- द्रविवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। शिरीष का वृक्ष भयंकर गरमी सहता है, फिर भी सरस रहता है। उमस व लू में भी वह फूलों से लदा रहता है। इसी तरह जीवन में चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आएँ मनुष्य को सदैव संघर्ष करते रहना चाहिए। उसे हार नहीं माननी चाहिए। भ्रष्टाचार, अत्याचार, दंगे, लूटपाट के बावजूद उसे निराश नहीं होना चाहिए तथा प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाते रहना चाहिए।

प्रश्न 4. हाय, वह अवधूत आज कहाँ है! ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर- लेखक कहता है कि आज शिरीष जैसे अवधूत नहीं रहे। जब-जब वह शिरीष को देखता है तब-तब उसके मन में 'हूक-सी' उठती है। वह कहता है कि प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखने वाले अब नहीं रहे। अब तो केवल देह को प्राथमिकता देने वाले लोग रह रहे हैं। उनमें आत्मविश्वास बिलकुल नहीं है। वे शरीर को महत्त्व देते हैं, मन को नहीं। इसीलिए लेखक ने शिरीष के माध्यम से वर्तमान सभ्यता का वर्णन किया है।

प्रश्न 5. कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थित प्रज्ञता और विदग्ध प्रेम का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य



**कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है।
विस्तारपूर्वक समझाइए।**

उत्तर- विचार प्रस्तुत करके लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है/विस्तारपूर्वक समझाएँ/ उत्तर लेखक का मानना है कि कवि के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि महान कवि वही बन सकता है जो अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ तथा विदग्ध प्रेमी की तरह सहृदय हो। केवल छंद बना लेने से कवि तो हो सकता है, किंतु महाकवि नहीं हो सकता। संसार की अधिकतर सरस रचनाएँ अवधूतों के मुँह से ही निकलती हैं। लेखक कबीर व कालिदास को महान मानता है क्योंकि उनमें अनासक्ति का भाव है। जो व्यक्ति शिरीष के समान मस्त, बेपरवाह, फक्कड़, किंतु सरस व मादक है, वही महान कवि बन सकता है। सौंदर्य की परख एक सच्चा प्रेमी ही कर सकता है। वह केवल आनंद की अनुभूति के लिए सौंदर्य की उपासना करता है। कालिदास में यह गुण भी विद्यमान था।

प्रश्न 6. सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर- परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य को समयानुसार परिवर्तन करते रहना चाहिए। एक ही लीक पर चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। शिरीष के फूल हमें यही सिखाते हैं। वह हर मौसम में अपने को और अपने स्वभाव को बदल लेता है। इसी कारण वह निर्लिप्त भाव से वसंत, आषाढ़ और भादों में खिला रहता है। प्रचंड लू और उमस को सहन करता है। लेकिन फिर भी खिला रहता है। फूलों के माध्यम से कोमल व्यवहार करता है तो फलों के माध्यम से कठोर व्यवहार। इसीलिए वह दीर्घजीवी बन जाता है। मनुष्य को भी ऐसा ही करना चाहिए।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए

- दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता

की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हैं। जमे कि मरे।

- जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?...में कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तों, तो फक्कड़ बनो।
- फल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।

उत्तर-

- लेखक कहता है कि संसार में जीवनी शक्ति और सब जगह समाई कालरूपी अग्नि में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। बुद्धिमान निरंतर संघर्ष करते हुए जीवनयापन करते हैं। संसार में मूर्ख व्यक्ति यह समझते हैं कि वे जहाँ हैं, वहीं देर तक डटे रहेंगे तो कालदेवता की नजर से बच जाएँगे। वे भोले हैं। उन्हें यह नहीं पता कि एक जगह बैठे रहने से मनुष्य का विनाश हो जाता है। लेखक गतिशीलता को ही जीवन मानता है। जो व्यक्ति हिलते-डुलते रहते हैं, स्थान बदलते रहते हैं तथा प्रगति की ओर बढ़ते रहते हैं, वे ही मृत्यु से बच सकते हैं। लेखक जड़ता को मृत्यु के समान मानता है तथा गतिशीलता को जीवन।
- लेखक कहता है कि कवि को सबसे पहले अनासक्त होना चाहिए अर्थात् तटस्थ भाव से निरीक्षण करने वाला होना चाहिए। उसे फक्कड़ होना चाहिए अर्थात् उसे सांसारिक आकर्षणों से दूर रहना चाहिए। जो अपने किए कार्यों का लेखा-जोखा करता है, वह कवि नहीं बन सकता। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसे फक्कड़ बनना चाहिए।

iii. लेखक कहता है कि फल व पेड़-दोनों का अपना अस्तित्व है। वे अपने-आप में समाप्त नहीं होते। जीवन अनंत है। फल व पेड़, वे किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई औगुली हैं। यह संकेत है कि जीवन में अभी बहुत कुछ है। सुंदरता व सृजन की सीमा नहीं है। हर युग में सौंदर्य व रचना का स्वरूप अलग हो जाता है।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर- शिरीष का फूल प्रचंड गरमी में भी खिला रहता है। वह लू और उमस में भी जोर शोर से खिलता है अर्थात् विषम परिस्थितियों में भी वह समता का भाव रखता है। इसीलिए लेखक ने शिरीष को शीतपुष्प का अर्थ है ठंडक देने वाला फूल और शिरीष का फूल भयंकर गरमी में भी ठंडक प्रदान करता है।

प्रश्न 2. कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर- गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि कोमल भावों से युक्त थे। वे दूसरे के कष्टों से द्रवित हो जाते थे। वे अंग्रेजों के प्रति भी कठोर न थे। दूसरी तरफ वे अनुशासन व नियमों के मामले में कठोर थे। वे अपने अधिकारों के लिए डटकर संघर्ष करते थे तथा किसी भी दबाव के आगे झुकते नहीं थे। ब्रिटिश साम्राज्य को उन्होंने अपनी दृढ़ता से ढहाया था। इस तरह गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता-कोमल व कठोर भाव बन गए थे।

प्रश्न 3. आजकल अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय फूलों की बहुत माँग है। बहुत से किसान साग-सब्जी व अन्न उत्पादन छोड़ फूलों की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसी मुद्दे को विषय बनाते हुए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

उत्तर- वाद-विवाद के सभी प्रमुख देशों में भारतीय फूलों की माँग सबसे ज्यादा है। टनों की मात्रा में भारतीय फूल अन्य

देशों में निर्यात हो रहे, जिस कारण भारत सरकार के राजस्व में भी अतिशय वृद्धि हो रही है। भारतीय फूलों का स्तर बहुत ऊँचा है। इस क्वालिटी और इतने प्रकार के फूल अन्य स्थानों पर मिलना संभव-सा प्रतीत नहीं होता। इसकी खेती करके कुछ ही समय में अच्छा लाभ अर्जित किया जा सकता है। इसीलिए किसान लोग फूलों की खेती को ज्यादा महत्त्व दे रहे हैं। विवाद-चूँकि भारतीय फूल विदेश में निर्यात हो रहे हैं इसलिए लोगों को आकर्षण फूलों की खेती में ज्यादा हो गया है। इस कारण वे मूल फ़सलों का उत्पादन नहीं कर रहे जिससे अनिवार्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ती जा रही हैं। अन्न उत्पादन लगातार कम होता जा रहा है। अपने थोड़े-से लाभ के लिए किसान लोग करोड़ों देशवासियों को महँगी वस्तुएँ खरीदने पर मजबूर कर रहे हैं।

प्रश्न 4. हज़ारी प्रसाद विवेदी ने इस पाठ की तरह ही वनस्पतियों के संदर्भ में कई व्यक्तित्व व्यंजक ललित निबंध और लिखें हैं- कुटज, आम फिर बौरा गए, अशोक के फूल, देवदारु आदि। शिक्षक की सहायता से उन्हें ढूँढ़िए और पढ़िए।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

प्रश्न 5. विवेदी जी की वनस्पतियों में ऐसी रुचि का क्या कारण हो सकता है? आज साहित्यिक रचना फलक पर प्रकृति की उपस्थिति न्यून से न्यून होती जा रही है। तब ऐसी रचनाओं का महत्त्व बढ़ गया है। प्रकृति के प्रति आपका दृष्टिकोण रुचिपूर्ण या उपेक्षामय है? इसका मूल्यांकन करें।

उत्तर- विवेदी जी का जीवन प्रकृति के उन्मुक्त आँगन में ज्यादा रमा है। प्रकृति उनके लिए शक्ति और प्रेरणादायी रही है इसीलिए उन्होंने अपने साहित्य में प्रकृति का चित्रण किया है। वे वनस्पतियाँ हमारे जीवन का आधार हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। कवि क्योंकि कुछ ज्यादा ही भावुक या संवेदनशील होता है, इसीलिए वह प्रकृति के प्रति ज्यादा संजीदा हो जाता है। मैं स्वयं प्रकृति के प्रति रुचिपूर्ण रवैया रखता हूँ। प्रकृति को जीवन शक्ति के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। प्रकृति के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पंत जी कहते हैं -



छोड़ दूँ की मृदुल छाया

बदले! तेरे बाल जाल में कैसे उलझा हूँ लोचन?

यदि हम प्रकृति को सहेजकर रखेंगे तो हमारा जीवन सुगम और तनाव रहित होगा। प्रकृति संजीवनी है। अतः इसकी उपेक्षा करना अपने अस्तित्व को खतरे में डालने जैसा है।

भाषा की बात

प्रश्न 1. दस दिन फूले फिर खंखड़-खंखड़ इस लोकोक्ति से मिलते-जुलते कई वाक्यांश पाठ में हैं, उन्हें छाँट कर लिखें।

उत्तर-

- ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले।
- मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं।
- वे चाहें तो लोहे का पेड़ बनवा लें।
- किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते।
- धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना।
- न ऊधो का लेना न माधो का देना।
- कालदेवता की आँख बचा जाएँ।
- रह-रहकर उसका मन खीझ उठता था।
- खून-खच्चर का बवंडर बह गया।



श्रम-विभाजन

- भीमराव अम्बेडकर

प्रस्तुत पाठ भीमराव आंबेडकर के सुप्रसिद्ध भाषण एनीहिलेशन ऑफ कास्ट का हिंदी रूपांतर है जो लेखक ने जाति-पाति तोड़क मंडल (लाहौर) के सन 1936 ई० के वार्षिक सम्मेलन अध्यक्षीय भाषण के रूप में लिखा था, लेकिन इसकी क्रांतिकारी दृष्टि के कारण उस सम्मेलन को ही स्थगित कर दिया गया था। इस पाठ में लेखक ने जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का एक तरीका मानने की अवधारणा को निरस्त करते हुए केवल भावात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक उत्थान, सामाजिक व राजनैतिक संघटन और जीवनयापन के समस्त भौतिक पहलुओं के ठोस परिप्रेक्ष्य में जातिवाद के समूल उच्छेदन की अनिवार्यता ठहराई है।

साथ ही लेखक ने एक आदर्श समाज की कल्पना भी की है। यह विडंबना है कि हमारे समाज में आज भी जातिवाद के पोषकों की कोई कमी नहीं है। आधुनिक सभ्य समाज कार्यकशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है। जाति-प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दुसरा रूप है। लेखक ने श्रम-विभाजन को सभ्य समाज – के लिए आवश्यक माना है, लेकिन यह भी बताया है कि किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन नहीं करता। उन्होंने भारत की जाति-प्रथा के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि यहाँ जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती, बल्कि उन्हें एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच में भी बाँट देती है।

जाति-प्रथा पेशे का पूर्व निर्धारण कर देती है। इसके साथ मनुष्य को उसमें आजीवन बाँधे रखती है। आधुनिक युग में विकास के कारण भी व्यक्ति अपना पेशा नहीं बदल सकता।

हिंदू धर्म में तो जाति-प्रथा किसी को भी उसके पैतृक पेशे के अलावा अन्य पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती, चाहे मनुष्य किसी कार्य में कितना ही दक्ष क्यों न हो। इसका सबसे बड़ा परिणाम यह है कि भारत में निरंतर बेरोजगारी बढ़ रही है। गरीबी और शोषण के साथ अरुचिपूर्ण कार्य करने की विवशता निरंतर गंभीर समस्या है।

समाज में जाति-प्रथा आर्थिक असहायता को भी पैदा करती है। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि और आत्मशक्ति को दबा कर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ लेती है तथा मनुष्य को निष्क्रिय बना डालती है। लेखक ने एक आदर्श समाज की कल्पना की है, जहाँ की व्यवस्था स्वतंत्रता, समता और भाईचारे पर आधारित होगी। उस समाज में इतनी गतिशीलता होगी, जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित होगा। समाज के सभी हितों में

सब का हिस्सा होगा। साथ ही लोगों को अपने हितों के प्रति सजग रहना पड़ेगा। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क बना रहेगा। लेखक ने इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र बताया है। लेखक ने समाज में समता पर बल दिया है। हालाँकि राजनेता का समाज के प्रत्येक व्यक्ति की। आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर वांछित अलग-अलग व्यवहार संभव नहीं हो सकता, लेकिन मानवता के दृष्टिकोण से समाज को दो वर्गों में नहीं बाँटा जा सकता। समता काल्पनिक जगत की वस्तु के साथ व्यावहारिक और आवश्यक भी है। समता ही किसी राजनेता के व्यवहार की एकमात्र कसौटी है।



अभ्यास प्रश्न

पाठ के साथ

प्रश्न 1. जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर- जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं –

- जाति-प्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी करती है।
- सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है।
- भारत की जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता। वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार करके जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है।
- जु:शुल्यक विपितपिस्थितयों मेंपेश बालक अनुपितनाह देता फल भूखे मरने की नौबत आ जाती है।

प्रश्न 2. जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।

ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिंदू धर्म

की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्राय है। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है।

प्रश्न 3. लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर- लेखक के मत से 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा है- किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ है-उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रश्न 4. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर- शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह इसलिए करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। वे शारीरिक वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार को अनुचित मानते हैं। उनका मानना है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है। तो उसे समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध करवाने चाहिए। राजनीतिज्ञों को भी सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। समान व्यवहार और स्वतंत्रता को सिद्धांत ही समता का प्रतिरूप है। सामाजिक उत्थान के लिए समता का होना अनिवार्य है।

प्रश्न 5. सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखक की बात से सहमत हैं। उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब समान भौतिक स्थितियाँ व जीवन-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। समाज में जाति-प्रथा का उन्मूलन समता का भाव होने से ही हो सकता है। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। शहर में कान्वेंट स्कूल व सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के बीच स्पर्धा में कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी ही जीतेगा क्योंकि उसे अच्छी सुविधाएँ मिली हैं। अतः जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न 6. आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस

'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेंगी?

उत्तर- लेखक ने अपने आदर्श समाज में भ्रातृता के अंतर्गत स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। भ्रातृता से अभिप्राय भाईचारे की भावना अथवा विश्व बंधुत्व की भावना से है। जब यह भावना किसी व्यक्ति विशेष या लिंग विशेष की है ही नहीं तो स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। आखिर स्त्री का स्त्री के प्रति प्रेम भी तो बंधुत्व की भावना को ही प्रकट करता है। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि यह शब्द पूर्णता का द्योतक है।

पाठ के आसपास

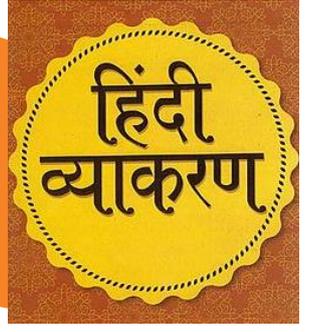
प्रश्न 1. आंबेडकर ने जाति प्रथा के भीतर पेशे के मामले में लचीलापन न होने की जो बात की है-उस संदर्भ में शेखर जोशी की कहानी 'गलता लोहा' पर पुनर्विचार कीजिए।

उत्तर- विद्यार्थी इस पाठ को पढ़ें।

प्रश्न 2. कार्य कुशलता पर जाति प्रथा का प्रभाव विषय पर समूह में चर्चा कीजिए। चर्चा के दौरान उभरने वाले बिंदुओं को लिपिबद्ध कीजिए।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।





अनुच्छेद

अनुच्छेद-लेखन की परिभाषा:

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गये सम्बद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

अथवा

किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित ढंग से जिस लेखन-शैली में प्रस्तुत किया जाता है, उसे अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

‘अनुच्छेद’ शब्द अंग्रेजी भाषा के ‘Paragraph’ शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद ‘निबंध’ का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 से 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं।

अनुच्छेद में हर वाक्य मूल विषय से जुड़ा रहता है। अनावश्यक विस्तार के लिए उसमें कोई स्थान नहीं होता। अनुच्छेद में घटना अथवा विषय से सम्बद्ध वर्णन संतुलित तथा अपने आप में पूर्ण होना चाहिए।

अनुच्छेद की भाषा-शैली सजीव एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। शब्दों के सही चयन के साथ लोकोक्तियों एवं मुहावरों के समुचित प्रयोग से ही भाषा-शैली में उपर्युक्त गुण आ सकते हैं।

इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक-दूसरे से बंधे होते हैं। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए।

कार्य

अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरम्भ में रहती है या अन्त में। उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में मुख्य विचार अन्त में दिया जाता है।

अनुच्छेद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए

- अनुच्छेद लेखन में संकेत-बिंदु या रूपरेखा अवश्य बनानी चाहिए।
- विषय से बाहर कुछ भी नहीं लिखना चाहिए।
- अनुच्छेद लेखन में अनावश्यक विस्तार से बचें।
- संकेत बिंदुओं को ध्यान में रख कर ही लिखना चाहिए।
- अनुच्छेद लिखने की भाषा शैली सरल, सहज, सजीव, प्रभावशाली व पठनीय होनी चाहिए।
- छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग बहुत अच्छा होता है।



- विराम चिन्ह, कोमा आदि का ध्यान रखना चाहिए।
- शब्द सीमा 100 से 120 से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करें।
- अनुच्छेद-लेखन में विषय से संबंधित विचारों को क्रमवार तरीके से रखा जाता है। ताकि उसे पूर्णता दी जा सके। विषय से हट कर किसी भी बात का उल्लेख नहीं करना चाहिए।
- अनुच्छेद लेखन में मुख्य विचार अन्त में अवश्य लिखा जाता है।
- अनुच्छेद लेखन में कहावतें, मुहावरों, सूक्ति, कवितायें आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते।
2. अनुच्छेद के वाक्य-समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।
3. अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से गठित और सम्बद्ध होते हैं।
4. अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।
5. उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाय।
6. अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।
7. अनुच्छेद की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

यहाँ निम्नलिखित अनुच्छेदों दिया हैं।

1. समय किसी के लिए नहीं रुकता

समय' निरंतर बीतता रहता है, कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। जो व्यक्ति समय के मोल को पहचानता है, वह अपने जीवन में उन्नति प्राप्त करता है। समय बीत जाने पर कार्य करने से भी फल की प्राप्ति नहीं होती और पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी सुबह समय पर उठता है, अपने दैनिक कार्य समय पर करता है तथा समय पर सोता है, वही आगे चलकर सफलता व उन्नति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति आलस में आकर समय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। संतकवि कबीरदास जी ने भी कहा है :

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।"

समय का एक-एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौटकर नहीं आता। इसलिए समय का महत्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय बरबाद न करके आगे की सुध लेना ही बुद्धिमानी है।

2. अभ्यास का महत्त्व

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए, तो असाध्य को भी साधा जा सकता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके धनुर्विद्या

में निपुणता प्राप्त की। उसी प्रकार वरदराज ने, जो कि एक मंदबुद्धि बालक था, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी :

”करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरि आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।”

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

3. विद्यालय की प्रार्थना-सभा

प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रार्थना-सभा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। प्रत्येक विद्यालय में सबसे पहले प्रार्थना-सभा का आयोजन किया जाता है। इस सभा में सभी विद्यार्थी व अध्यापक-अध्यापिकाओं का सम्मिलित होना अत्यावश्यक होता है। प्रार्थना-सभा केवल ईश्वर का ध्यान करने के लिए ही नहीं होती, बल्कि यह हमें अनुशासन भी सिखाती है।

हमारे विद्यालय की प्रार्थना-सभा में ईश्वर की आराधना के बाद किसी एक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा किसी विषय पर कविता, दोहे, विचार, भाषण, लघु-नाटिका आदि प्रस्तुत किए जाते हैं व सामान्य ज्ञान पर आधारित जानकारी भी दी जाती है, जिससे सभी विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं।

जब कोई त्योहार आता है, तब विशेष प्रार्थना-सभा का आयोजन किया जाता है। प्रधानाचार्या महोदया भी विद्यार्थियों को सभा में संबोधित करती हैं तथा विद्यालय से संबंधित महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ भी करती हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी को प्रार्थना-सभा में पूर्ण अनुशासनबद्ध होकर विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। प्रार्थना-सभा का अंत राष्ट्र-गान से होता है। सभी विद्यार्थियों को प्रार्थना-सभा का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए व सच्चे, पवित्र मन से इसमें सम्मिलित होना चाहिए।

4. मीठी बोली का महत्त्व

‘वाणी’ ही मनुष्य को अप्रिय व प्रिय बनाती है। यदि मनुष्य मीठी वाणी बोले, तो वह सबका प्यारा बन जाता है और उसमें अनेक गुण होते हुए भी यदि उसकी बोली मीठी नहीं है, तो उसे कोई पसंद नहीं करता।

इस तथ्य को कोयल और कौए के उदाहरण द्वारा सबसे भली प्रकार से समझा जा सकता है। दोनों देखने में समान होते हैं, परंतु कौए की कर्कश आवाज और कोयल की मधुर बोली दोनों की अलग-अलग पहचान बनाती है, इसलिए कौआ सबको अप्रिय और कोयल सबको प्रिय लगती है।

”कौए की कर्कश आवाज और कोयल की मधुर वाणी सुन।

सभी जान जाते हैं, दोनों के गुण।।”

मनुष्य अपनी मधुर वाणी से शत्रु को भी अपना बना सकता है। ऐसा व्यक्ति समाज में बहुत आदर पाता है। विद्वानों व कवियों ने भी मधुर वचन को औषधि के समान कहा है। मधुर बोली सुनने वाले व बोलने वाले दोनों के मन को शांति मिलती है। इससे समाज में प्रेम व भाईचारे का वातावरण बनता है। अतः सभी को मीठी बोली बोलनी चाहिए तथा अहंकार व क्रोध का त्याग करना चाहिए।

5. रेलवे प्लेटफार्म पर आधा घण्टा

रेलवे स्टेशन एक अद्भुत स्थान है। यहाँ दूर-दूर से यात्रियों को लेकर गाड़ियाँ आती हैं और अन्य यात्रियों को लेकर चली जाती हैं। एक प्रकार से रेलवे स्टेशन यात्रियों का मिलन-स्थल है। अभी कुछ दिन पूर्व मैं अपने मित्र की अगवानी करने स्टेशन पर गया। प्लेटफार्म टिकट लेकर मैं स्टेशन के अंदर चला गया।



प्लेटफार्म नं. 3 पर गाड़ी को आकर रुकना था। मैं लगभग आधा घण्टा पहले पहुँच गया था, अतः वहाँ प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त कोई चारा न था। मैंने देखा कि प्लेटफार्म पर काफी भीड़ थी। लोग बड़ी तेजी से आ-जा रहे थे।

कुली यात्रियों के साथ चलते हुए सामान को इधर-उधर पहुँचा रहे थे। पुस्तकों और पत्रिकाओं में रुचि रखने वाले कुछ लोग बुक-स्टाल पर खड़े थे, पर अधिकांश लोग टहल रहे थे। कुछ लोग राजनीतिक विषयों पर गरमागरम बहस में लीन थे।

चाय वाला 'चाय-चाय' की आवाज लगाता हुआ घूम रहा था। कुछ लोग उससे चाय लेकर पी रहे थे। पूरी-सब्जी की रेढ़ी के इर्द-गिर्द भी लोग जमा थे। महिलाएँ प्रायः अपने सामान के पास ही बैठी थीं। बीच-बीच में उद्घोषक की आवाज सुनाई दे जाती थी। तभी उद्घोषणा हुई कि प्लेटफार्म न. 3 पर गाड़ी पहुँचने वाली है।

चढ़ने वाले यात्री अपना-अपना सामान सँभाल कर तैयार हो गए। कुछ ही क्षणों में गाड़ी वहाँ आ पहुँची। सारे प्लेटफार्म पर हलचल-सी मच गई। गाड़ी से जाने वाले लोग लपककर चढ़ने की कोशिश करने लगे। उतरने वाले यात्रियों को इससे कठिनाई हुई। कुछ समय बाद यह धक्कामुक्की समाप्त हो गई। मेरा मित्र तब तक गाड़ी से उतर आया था। उसे लेकर मैं घर की ओर चल दिया।

6. मित्र के जन्म दिन का उत्सव

मेरे मित्र रोहित का जन्म-दिन था। उसने अन्य लोगों के साथ मुझे भी बुलाया। रोहित के कुछ रिश्तेदार भी आए हुए थे, किन्तु अधिकतर मित्र ही उपस्थित थे। घर के आँगन में ही समारोह का आयोजन किया गया था। उस स्थान को सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था। झण्डियाँ और गुब्बारे टाँगे गए थे।

आँगन में लगे एक पेड़ पर रंग-बिरंगे बल्ब जगमग कर रहे थे। जब मैं पहुँचा तो मेहमान आने शुरू ही हुए थे। मेहमान रोहित के लिए कोई-न-कोई उपहार लेकर आते; उसके निकट जाकर बधाई देते; रोहित उनका धन्यवाद करता। क्रमशः लोग छोटी-छोटी टोलियों में बैठकर गपशप करने लगे। संगीत की मधुर ध्वनियाँ गूँज रही थीं।

एक-दो मित्र उठकर नृत्य की मुद्रा में थिरकने लगे। कुछ मित्र उस लय में अपनी तालियों का योगदान देने लगे। चारों ओर उल्लास का वातावरण था।

सात बजे के लगभग केक काटा गया। सब मित्रों ने तालियाँ बजाई और मिलकर बधाई का गीत गाया। माँ ने रोहित को केक खिलाया। अन्य लोगों ने भी केक खाया। फिर सभी खाना खाने लगे। खाने में अनेक प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन थे। चुटकुले कहते-सुनते और बातें करते काफी देर हो गई।

तब हमने रोहित को एक बार फिर बधाई दी, उसकी दीर्घायु की कामना की और अपने-अपने घर को चल दिए। वह कार्यक्रम इतना अच्छा था कि अब भी स्मरण हो आता है।

अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार करते हैं। जैसे अलंकरण धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है, वैसे ही अलंकरण के प्रयोग से काव्य में चमक उत्पन्न हो जाती है। संस्कृत आचार्य दंडी के अनुसार 'अलंकार काव्य का शोभाकारक धर्म है' और आचार्य वामन के अनुसार 'अलंकार ही सौंदर्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "कथन की रोचक, सुंदर और प्रभावपूर्ण प्रणाली अलंकार है। गुण और अलंकार में यह अंतर है की गुण सीधे रस का उत्कर्ष करते हैं, अलंकार सीधे रस का उत्कर्ष नहीं करते हैं।

अलंकार की परिभाषा –

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है- 'अलम्' और 'कार'। जहाँ 'अलम्' का शाब्दिक अर्थ है, आभूषण और 'कार' का अर्थ है धारण करना।

जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए आभूषण को पहनती हैं उसी प्रकार किसी भाषा या कविता को सुन्दर बनाने के लिए अलंकार का प्रयोग किया जाता है।

दूसरे शब्दों में कहे तो जो "शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।"

उदाहरण: "चारु चंद्र की चंचल किरणें "

अलंकार के भेद -

- 1) शब्दालंकार
- 2) अर्थालंकार
- 3) उभयालंकार

1. शब्दालंकार

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है – शब्द + अलंकार। शब्द के दो रूप होते हैं – ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टि होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के भेद -

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. पुनरुक्ति अलंकार
4. विप्सा अलंकार



5. वक्रोक्ति अलंकार
6. श्लेष अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार –

अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – अनु + प्रास | यहाँ पर अनु का अर्थ है- बार-बार और प्रास का अर्थ होता है, – वर्ण। जब किसी वर्ण की बार – बार आवर्ती हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

अनुप्रास अलंकार के उदाहरण –

- 1) “मैया मोरी में नही माखन खायो”
[यहाँ पर ‘म’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]
- 2) “चारु चंद्र की चंचल किरणें”
[यहाँ पर ‘च’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]
- 3) “कन्हैया किसको कहेगा तू मैया”
[यहाँ पर ‘क’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]

अनुप्रास के भेद –

- 1) छेकानुप्रास अलंकार
- 2) वृत्यानुप्रास अलंकार
- 3) लाटानुप्रास अलंकार
- 4) अन्त्यानुप्रास अलंकार
- 5) श्रुत्यानुप्रास अलंकार

1. **छेकानुप्रास अलंकार :-** जहाँ पर स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै।
साँसैं भरि आँसू भरि कहत दई दई।।

2. **वृत्यानुप्रास अलंकार:-** जब एक व्यंजन की आवर्ती अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

“चामर-सी, चन्दन – सी, चंद – सी,
चाँदनी चमेली चारु चंद-सुघर है।”

3. **लाटानुप्रास अलंकार :-**

जहाँ शब्द और वाक्यों की आवर्ती हो तथा प्रत्येक जगह पर अर्थ भी वही पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अर्थात् जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवर्ती उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ,
तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ।

4. **अन्यानुप्रास अलंकार :-** जहाँ अंत में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

“लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग?”

5. **श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-** जहाँ पर कानों को मधुर लगने वाले वर्णों की आवर्ती हो उसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण:-

“दिनान्त था, थे दीननाथ डुबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।”

2. यमक अलंकार –

यमक शब्द का अर्थ होता है – दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

यमक अलंकार के उदाहरण –**उदाहरण :-**

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

3. पुनरुक्ति अलंकार

पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है – पुनः +उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

4. विप्सा अलंकार

जब आदर, हर्ष, शोक, विस्मयादिबोधक आदि भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने के लिए शब्दों की पुनरावृत्ति को ही विप्सा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।
राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी।।

5. वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं।

वक्रोक्ति अलंकार के भेद :-

काकु वक्रोक्ति अलंकार
श्लेष वक्रोक्ति अलंकार



1. **काकु वक्रोक्ति अलंकार:-** जब वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का उसकी कंठ ध्वनी के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकाले वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।

2. **श्लेष वक्रोक्ति अलंकार :-** जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :-

को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो।

चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों।।

6. श्लेष अलंकार –

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ अलग अलग निकलें वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

श्लेष अलंकार के उदाहरण –

उदाहरण :-

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न उबरै मोती मानस चून।।

श्लेष अलंकार के भेद –

अभंग श्लेष अलंकार

सभंग श्लेष अलंकार

1. **अभंग श्लेष अलंकार :-** जिस अलंकार में शब्दों को बिना तोड़े ही एक से अधिक या अनेक अर्थ निकलते हों वहाँ पर अभंग श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

2. **सभंग श्लेष अलंकार :-** जिस अलंकार में शब्दों को तोड़ना बहुत अधिक आवश्यक होता है क्योंकि शब्दों को तोड़े बिना उनका अर्थ न निकलता हो वहाँ पर सभंग श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :- सखर सुकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित।

2. अर्थालंकार

जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद –

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार

3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. द्रष्टान्त अलंकार
5. संदेह अलंकार
6. अतिशयोक्ति अलंकार
7. उपमेयोपमा अलंकार
8. प्रतीप अलंकार
9. अनन्वय अलंकार
10. भ्रांतिमान अलंकार
11. दीपक अलंकार
12. अपहृति अलंकार
13. व्यतिरेक अलंकार
14. विभावना अलंकार
15. विशेषोक्ति अलंकार
16. अर्थान्तरन्यास अलंकार
17. उल्लेख अलंकार
18. विरोधाभाष अलंकार
19. असंगति अलंकार
20. मानवीकरण अलंकार
21. अन्योक्ति अलंकार
22. काव्यलिंग अलंकार
23. स्वभावोती अलंकार

1. उपमा अलंकार –

उपमा शब्द का अर्थ होता है – तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के उदाहरण –

उदाहरण :-

सागर-सा गंभीर हृदय हो,
गिरी-सा ऊँचा हो जिसका मन।

उपमा अलंकार के अंग –

- 1) उपमेय
- 2) उपमान
- 3) वाचक शब्द



4) साधारण धर्म

1. **उपमेय :-** उपमेय का अर्थ होता है – उपमा देने के योग्य। अगर जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से की जाये वहाँ पर उपमेय होता है।
2. **उपमान :-** उपमेय की उपमा जिससे दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। अर्थात् उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।
3. **वाचक शब्द :-** जब उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है तब जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।
4. **साधारण धर्म:-** दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

2. रूपक अलंकार –

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसे एक कर दिया जाता है वहाँ पर रूपक अलंकार होता है।

रूपक अलंकार के उदाहरण –

उदाहरण :-

“उदित उदय गिरी मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विगसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन भ्रंग।।”

रूपक अलंकार की निम्न बातें :-

उपमेय को उपमान का रूप देना।

वाचक शब्द का लोप होना।

उपमेय का भी साथ में वर्णन होना।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार –

जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अर्थात् जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अगर किसी पंक्ति में मनु, जनु, मेरे जानते, मनहु, मानो, निश्चय, ईव आदि आते हैं वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण –

उदाहरण :-

सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल
बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल।।

उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद –

वस्तुप्रेक्षा अलंकार

हेतुप्रेक्षा अलंकार

फलोत्प्रेक्षा अलंकार

1. **वस्तुप्रेक्षा अलंकार :-** जहाँ पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना दिखाई जाए वहाँ पर वस्तुप्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण:-

“सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।

बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल।।”

2. **हेतुप्रेक्षा अलंकार :-** जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना देखी जाती है। अर्थात् वास्तविक कारण को छोड़कर अन्य हेतु को मान लिया जाए वहाँ हेतुप्रेक्षा अलंकार होता है।

3. **फलोत्प्रेक्षा अलंकार :-** इसमें वास्तविक फल के न होने पर भी उसी को फल मान लिया जाता है वहाँ पर फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण:-

खंजरीर नहीं लखि परत कुछ दिन साँची बात।

बाल द्रगन सम हीन को करन मनो तप जात।।

4. **दृष्टान्त अलंकार**

जहाँ दो सामान्य या दोनों विशेष वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता हो वहाँ पर दृष्टान्त अलंकार होता है। इस अलंकार में उपमेय रूप में कहीं गई बात से मिलती-जुलती बात उपमान रूप में दुसरे वाक्य में होती है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

‘एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।

किसी और पर प्रेम नारियाँ, पति का क्या सह सकती हैं।।

5. **संदेह अलंकार**

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है, तब संदेह अलंकार होता है अर्थात् जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

यह काया है या शेष उसी की छाया,

क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।

संदेह अलंकार की मुख्य बातें :-

विषय का अनिश्चित ज्ञान।

यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो।

अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो।

6. **अतिशयोक्ति अलंकार –**

जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करने में लोक समाज की सीमा या मर्यादा टूट जाये उसे अतिशयोक्ति अलंकार कहते हैं अर्थात् जब किसी वस्तु का बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है।



उदाहरण:-

हनुमान की पूंछ में लगन न पायी आगि।

सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भागि।

7. उपमेयोपमा अलंकार

इस अलंकार में उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की कोशिश की जाती है इसमें उपमेय और उपमान की एक दूसरे से उपमा दी जाती है।

उदाहरण :- तौ मुख सोहत है ससि सो अरु सोहत है ससि तो मुख जैसो।

8. प्रतीप अलंकार

इसका अर्थ होता है उल्टा। उपमा के अंगों में उल्ट – फेर करने से अर्थात् उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलट कर उपमान को ही उपमेय कहा जाता है वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इस अलंकार में दो वाक्य होते हैं एक उपमेय वाक्य और एक उपमान वाक्य। लेकिन इन दोनों वाक्यों में सटश्य का साफ कथन नहीं होता, वह व्यंजित रहता है। इन दोनों में साधारण धर्म एक ही होता है परन्तु उसे अलग-अलग ढंग से कहा जाता है।

उदाहरण :- “नेत्र के समान कमल है।”

9. अनन्वय अलंकार

जब उपमेय की समता में कोई उपमान नहीं आता और कहा जाता है कि उसके समान वही है, तब अनन्वय अलंकार होता है।

उदाहरण :- “यद्यपि अति आरत – मारत है. भारत के सम भारत है।”

10. भ्रांतिमान अलंकार

जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है अर्थात् जहाँ उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक भ्रम हो जाये मतलब जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी अंग माना जाता है।

उदाहरण :-

पायें महावर देन को नाईन बैठी आय ।

फिरि-फिरि जानि महावरी, एडी भीड़त जाये।।

11. दीपक अलंकार

जहाँ पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म स्थापित किया जाता है वहाँ पर दीपक अलंकार होता है।

उदाहरण:-

चंचल निशि उदवस रहें, करत प्रात वसिराज।

अरविंदन में इंदिरा, सुन्दरि नैनन लाज।।

12. अपहृति अलंकार

अपहृति का अर्थ होता है छिपाव। जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाती है वहाँ अपहृति अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

“सुनहु नाथ रघुवीर कृपाला,
बन्धु न होय मोर यह काला।”

13. व्यतिरेक अलंकार

व्यतिरेक का शाब्दिक अर्थ होता है आधिक्य। व्यतिरेक में कारण का होना जरूरी है। अतः जहाँ उपमान की अपेक्षा अधिक गुण होने के कारण उपमेय का उत्कर्ष हो वहाँ पर व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरण :- का सरवरि तेहिं देउं मयंकू। चांद कलंकी वह निकलंकू।।
मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूँ?

14. विभावना अलंकार

जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का हुआ जाना पाया जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण :-

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

15. विशेषोक्ति अलंकार

काव्य में जहाँ कार्य सिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :-

नेह न नैनन को कछु, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नित-प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाई।।

16. अर्थान्तरन्यास अलंकार

जब किसी सामान्य कथन से विशेष कथन का अथवा विशेष कथन से सामान्य कथन का समर्थन किया जाये वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

बड़े न हूजे गुनन बिनु, बिरद बडाई पाए।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाए।।

17. उल्लेख अलंकार

जहाँ पर किसी एक वस्तु को अनेक रूपों में ग्रहण किया जाए, तो उसके अलग-अलग भागों में बटने को उल्लेख अलंकार कहते हैं। अर्थात् जब किसी एक वस्तु को अनेक प्रकार से बताया जाये वहाँ पर उल्लेख अलंकार होता है।

उदाहरण :- विन्दु में थीं तुम सिन्धु अनन्त एक सुर में समस्त संगीत।

18. विरोधाभाष अलंकार

जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभाष हो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण :-



‘आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के।
शून्य हूँ जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें।’

19. असंगति अलंकार

जहाँ आपतातः विरोध दृष्टिगत होते हुए, कार्य और कारण का वैयाधिकरन्य रणित हो वहाँ पर असंगति अलंकार होता है।

उदाहरण :- “हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।”

20. मानवीकरण अलंकार

जहाँ पर काव्य में जड़ में चेतन का आरोप होता है वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है अर्थात् जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं और क्रियाओं का आरोप हो वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है। जब प्रकृति के द्वारा निर्मित चीजों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन किया जाए वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण :- बीती विभावरी जागरी, अम्बर पनघट में डुबो रही तास घट उषा नगरी।

21. अन्योक्ति अलंकार

जहाँ पर किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए वहाँ पर अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- फूलों के आस-पास रहते हैं, फिर भी काँटे उदास रहते हैं।

22. काव्यलिंग अलंकार

जहाँ पर किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात को काव्यलिंग अलंकार कहते हैं अर्थात् जहाँ पर किसी बात के समर्थन में कोई-न-कोई युक्ति या कारण जरूर दिया जाता है।

उदाहरण :-

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

उहि खाय बौरात नर, इहि पाए बौराए।।

23. स्वभावोक्ति अलंकार

किसी वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

सीस मुकुट कटी काछनी, कर मुरली उर माल।

इहि बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल।।

3. उभयालंकार

जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित रहकर दोनों को चमत्कारी करते हैं वहाँ उभयालंकार होता है।

उदाहरण :- ‘कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।’



उपसर्ग

यह दो शब्दों (उप+सर्ग) के योग से बनता है। 'उप' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या 'पास में' है। 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना। 'उपसर्ग' का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थ वाला शब्द बनाना। 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया गया, तो एक नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'।

आसान अर्थ : उपसर्ग उप +सर्ग के योग से बना है यह एक संयोग का पद है। उप का मतलब है सहायक या समीप का और सर्ग का मतलब है:- भाग या अंग

अतः उपसर्ग का मतलब हुआ "सहायक या समीप का अंग या भाग"

उपसर्ग शब्दांश होते हैं अर्थात् यह शब्दों का अंग होते हैं। वह शब्दांश जो शब्दों के आगे जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा अन्य शब्द बना देते हैं वह उपसर्ग कहलाते हैं।

उपसर्गों का स्वतंत्र अस्तित्व न होते हुए भी वे अन्य शब्दों के साथ मिलकर उनके एक विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। उपसर्ग शब्द के पहले आते हैं।

जैसे – 'अन' उपसर्ग 'बन' शब्द के पहले रख देने से एक शब्द 'अनबन' बनता है, जिसका विशेष अर्थ 'मनमुटाव' है। कुछ उपसर्गों के योग से शब्दों के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि तेजी आती है।

जैसे – 'भ्रमण' शब्द के पहले 'परि' उपसर्ग लगाने से अर्थ में अंतर न होकर तेजी आई। कभी-कभी उपसर्गों के प्रयोग से शब्द का बिल्कुल उलटा अर्थ निकलता है।

उपसर्ग किसी शब्द के आरम्भ में जुड़ कर अर्थवान हो जाते हैं जैसे अ उपसर्ग नहीं का अर्थ देता है

जैसे :

- अ+ भाव = अभाव
- अ+थाह = अथाह

इसी प्रकार नि उपसर्ग

नि + डर = निडर

जैसे :-

- अ + सुंदर = असुंदर (यहां अर्थ बदल गया है)
- अति +सुंदर =अतिसुन्दर (यहां शब्द में विशेषता आई है)

इसी तरह हम अन्य उदाहरण देखेंगे

- आ+हार = आहार (नया शब्द बना है)
- प्रति+हार = प्रतिहार (नया शब्द बना है)
- प्र+हार = प्रहार (नया शब्द बना है)



- अति+अल्प = अत्यल्प
- अधि + अक्ष = अध्यक्ष

उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों की तीन स्थितियाँ होती हैं –

- शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है,
- शब्द के अर्थ में प्रतिकूलता उत्पन्न होती है,
- शब्द के अर्थ में कोई विशेष अंतर नहीं आता।

यहाँ 'उपसर्ग' और 'शब्द' का अंतर समझ लेना चाहिए। शब्द अक्षरों का एक समूह है, जो अपने में स्वतंत्र है, अपना अर्थ रखता है और वाक्यों में स्वतंत्रतापूर्वक प्रयुक्त होता है।

लेकिन, उपसर्ग अक्षरों का समूह होते हुए भी स्वतंत्र नहीं है और न स्वतंत्ररूप से उसका प्रयोग ही होता है। जब तक किसी शब्द के साथ उपसर्ग की संगति नहीं बैठती, तब तक उपसर्ग अर्थवान् नहीं होता।

संस्कृत में शब्दों के पहले लगने वाले कुछ निश्चित शब्दांशों को ही उपसर्ग कहते हैं और शेष को अव्यय। हिंदी में इस तरह का कोई अंतर नहीं है। हिंदी भाषा में 'उपसर्ग' की योजना व्यापक अर्थ में हुई है।

उपसर्गों की संख्या

हिंदी में जो उपसर्ग मिलते हैं, वे संस्कृत, हिंदी और उर्दू भाषा के हैं। इन भाषाओं से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है:

- संस्कृत उपसर्ग – 19
- हिंदी उपसर्ग – 10
- उर्दू उपसर्ग – 12

इनमें से प्रत्येक इस प्रकार है –

संस्कृत-हिंदी उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अति	अधिक, ऊपर, उस पार	अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार, अत्युक्ति, अतिव्याप्ति, अतिक्रमण इत्यादि।
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर, सामीप्य	अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि।
अनु	क्रम, पश्चात्, समानता	अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुक्रम, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन इत्यादि।
अप	लघुता, हीनता, अभाव, विरुद्ध	अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपराध, अपकार, अपभ्रंश, अपकीर्ति, अपयश, अपप्रयोग, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष
अभि	सामीप्य, आधिक्य, ओर, इच्छा प्रकट करना	अभिभावक, अभियान, अभिशाप, अभिप्राय, अभियोग, अभिसार, अभिमान, अभिनव, अभ्युदय, अभ्यागत, अभिमुख, अभ्यास, अभिलाषा इत्यादि।

अव	हीनता, अनादर, पतन	अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति, अवशेष इत्यादि।
आ	सीमा, और, समेत, कमी, विपरीत	आरक्त, आगमन, आकाश, आकर्षण, आजन्म, आरंभ, आक्रमण, आदान, आचरण, आजीवन, आरोहण, आमुख, आमरण, आक्रोश इत्यादि।
उत्+उद्	ऊपर, उत्कर्ष	उत्तम, उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न, उन्नति, उद्देश्य, उद्गम, उत्थान, उद्भव, उत्साह, उद्गार, उद्यम, उद्भूत इत्यादि।
उप	निकटता, सदृश, गौण, सहायक, हीनता	उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपस्थिति, उपमंत्री, उपवन, उपनाम, उपासना, उपभेद इत्यादि।
दुर-दुस्	बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन	दुरवस्था, दुर्दशा, दुर्लभ, दुर्जन, दुर्लध्य, दुर्दमनीय, दुराचार, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुःसाध्य, दुष्प्राप्य, दुःसह, दुर्गुण, दुर्गम इत्यादि।
नि	भीतर, नीचे, अतिरिक्त	निदर्शन, निकृष्ट, निपात, नियुक्त, निवास, निरूपण, निमग्न, निवारण, निम्न, निषेध, निरोध, निदान, निबंध इत्यादि।
निर्-निस्	बाहर, निषेध, रहित	निर्वास, निराकरण, निर्भय, निरपराध, निर्वाह, निर्दोष, निर्जीव, नीरोग, निर्मल इत्यादि।
परा	उलटा, अनादर, नाश	पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत इत्यादि।
परि	आसपास, चारों ओर, पूर्ण, अतिशय, त्याग	परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिवर्तन, परिणय, पर्याप्त, परिशीलन, परिदोष, परिदर्शन, परिचय इत्यादि।
प्र	अधिक, आगे, ऊपर, यश	प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रगति, प्रसार, प्रस्थान, प्रलय, प्रमाण, प्रसन्न, प्रसिद्धि, प्रताप, प्रपंच इत्यादि।
प्रति	विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन	प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिदान, प्रतिकूल, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार इत्यादि।
वि	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता	विकास, विज्ञान, विदेश, विधवा, विवाद, विशेष, विस्मरण, विराम, विभाग, विकार, विमुख, विनय, विभिन्न, विनाश, इत्यादि।
सम्	पूर्णता, संयोग	संकल्प, संग्रह, संतोष, संन्यास, संयोग, संस्कार, संरक्षण, संहार, सम्मेलन, संस्कृत, सम्मुख, संग्राम, संसर्ग इत्यादि।
सु	सुखी, अच्छा भाव, सहज, सुंदर	सुकर्म, सुकृत, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुयश, सुभाषित, सुवास, सुकिव, सुजन इत्यादि।

क्रिया

हिंदी व्याकरण में चार विकारी शब्द होते हैं संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया। क्रिया को अंग्रेजी में Action Word कहते हैं। क्रिया का अर्थ होता है करना। जो भी काम हम करते हैं, वो क्रिया कहलाती है।

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी क्रिया के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

or

वाक्य में प्रयुक्त जिस शब्द अथवा शब्द समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

जैसे: पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, खेलना, सोना आदि।

क्रिया के उदाहरण –

- विक्रम पढ़ रहा है।
- शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे।
- महेश क्रिकेट खेल रहा है।
- सुरेश खेल रहा है।
- राजा राम पुस्तक पढ़ रहा है।
- बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
- लड़कियाँ गाना गा रही हैं।
- गीता चाय बना रही है।
- महेश पत्र लिखता है।
- उसी ने बोला था।
- राम ही सदा लिखता है।

क्रिया के भेद –

क्रिया का वर्गीकरण तीन आधार पर किया गया है- कर्म के आधार पर, प्रयोग एवं संरचना के आधार पर तथा काल के आधार पर.

1. कर्म के आधार पर
2. प्रयोग एवं संरचना के आधार पर
3. काल के आधार पर क्रिया का वर्गीकरण



कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के साथ में होता है, अर्थात् सकर्मक क्रिया में कर्म पाया जाता है। सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है।

सकर्मक शब्द 'स' और 'कर्मक' से मिलकर बना है, जहाँ 'स' उपसर्ग का अर्थ 'साथ में' तथा 'कर्मक' का अर्थ 'कर्म के' होता है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण –

1. गीता चाय बना रही है।
2. महेश पत्र लिखता है।
3. हमने एक नया मकान बनाया।
4. वह मुझे अपना भाई मानती है।
5. राधा खाना बनाती है।
6. रमेश सामान लाता है।
7. रवि ने आम खरीदे।
8. हम सब से शरबत पीया।

अकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर पड़ता है उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। अकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के बिना होता है, अर्थात् अकर्मक क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता है।

अकर्मक शब्द अ और कर्मक से मिलकर बना है, जहाँ अ उपसर्ग का अर्थ बिना तथा कर्मक का अर्थ कर्म के होता है।

अकर्मक क्रिया के उदाहरण –

- रमेश दौड़ रहा है।
- मैं एक अध्यापक था।
- वह मेरा मित्र है।
- मैं रात भर नहीं सोया।
- मुकेश बैठा है।
- बच्चा रो रहा है।

रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद :

1. सामान्य क्रिया
2. सहायक क्रिया

3. संयुक्त क्रिया
4. सजातीय क्रिया
5. कृदंत क्रिया
6. प्रेरणार्थक क्रिया
7. पूर्वकालीन क्रिया
8. नाम धातु क्रिया
9. नामिक क्रिया
10. विधि क्रिया

सामान्य क्रिया

सामान्य क्रिया – यह क्रिया का सामान्य रूप होता है, जिसमें एक कार्य एवं एक ही क्रिया पद होता है। जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया पद प्रयुक्त किया गया हो तो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

सामान्य क्रिया के उदाहरण

- रवि पुस्तक पढ़ता है।
- श्याम आम खाता है।
- श्याम जाता है।

सहायक क्रिया

सहायक क्रिया – किसी वाक्य में मुख्य क्रिया की सहायता करने वाले पद को सहायक क्रिया कहते हैं, अर्थात् किसी वाक्य में वह पद जो मुख्य क्रिया के साथ लगकर वाक्य को पूर्ण करता है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। सहायक क्रिया वाक्य के काल का परिचायक होती है।

सहायक क्रिया के उदाहरण

- रवि पढ़ता है।
- मैंने पुस्तक पढ़ ली है।
- विजय ने अपना खाना मेज पर रख दिया है।

संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया - वह क्रिया जो दो अलग-अलग क्रियाओं के योग से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

संयुक्त क्रिया के उदाहरण

- रजनी ने खाना खा लिया।
- मैंने पुस्तक पढ़ डाली है।
- शंकर ने खाना बना लिया।



संयुक्त क्रिया के भेद

1. **आरंभबोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरंभ होने का बोध होता है, उसे 'आरंभबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह पढ़ने लगा, पानी बरसने लगा, राम खेलने लगा।
2. **समाप्तिबोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता, व्यापार की समाप्ति का बोध हो, वह 'समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - वह खा चुका है, वह पढ़ चुका है। धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
3. **अवकाशबोधक :-** जिस क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो, वह 'अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह मुश्किल से सो पाया, जाने न पाया।
4. **अनुमतिबोधक :-** जिससे कार्य करने की अनुमति दिए जाने का बोध हो, वह 'अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - मुझे जाने दो; मुझे बोलने दो। यह क्रिया 'देना' धातु के योग से बनती है।
5. **नित्यताबोधक :-** जिससे कार्य की नित्यता, उसके बंद न होने का भाव प्रकट हो, वह 'नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - हवा चल रही है; पेड़ बढ़ता गया, तोता पढ़ता रहा। मुख्य क्रिया के आगे 'जाना' या 'रहना' जोड़ने से नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है।
6. **आवश्यकताबोधक :-** जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्तव्य का बोध हो, वह 'आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - यह काम मुझे करना पड़ता है; तुम्हें यह काम करना चाहिए। साधारण क्रिया के साथ 'पडना', 'होना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
7. **निश्चयबोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे 'निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह बीच ही में बोल उठा, उसने कहा – मैं मार बैठूँगा, वह गिर पड़ा, अब दे ही डालो। इस प्रकार की क्रियाओं में पूर्णता और नित्यता का भाव वर्तमान है।
8. **इच्छाबोधक :-** इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है।
जैसे - वह घर आना चाहता है, मैं खाना चाहता हूँ। क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से 'इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएँ' बनती हैं।
9. **अभ्यासबोधक :-** इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
जैसे - यह पढ़ा करता है, तुम लिखा करते हो, मैं खेला करता हूँ।
10. **शक्तिबोधक :-** इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है।
जैसे - मैं चल सकता हूँ, वह बोल सकता है। इसमें 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।
11. **पुनरुक्त संयुक्त क्रिया :-** जब दो समानार्थक अथवा समान ध्वनि वाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरुक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह पढ़ा-लिखा करता है, वह यहाँ प्रायः आया-जाया करता है, पड़ोसियों से बराबर मिलते-जुलते रहो।



छन्द

जब वर्णों की संख्या, क्रम, मात्र-गणना तथा यति-गति आदि नियमों को ध्यान में रखकर पद्य रचना की जाती है उसे छंद कहते हैं। या फिर जिस शब्द-योजना में वर्णों या मात्राओं और यति-गति का विशेष नियम हो, उसे छन्द कहते हैं।

छन्द की परिभाषा

- वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आहाद पैदा हो, तो उसे छंद कहते हैं।
- अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रागणना तथा यति-गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना 'छन्द' कहलाती है।

छंद का अर्थ

छन्द संस्कृत वाङ्मय में सामान्यतः लय को बताने के लिये प्रयोग किया गया है। विशिष्ट अर्थों में छन्द कविता या गीत में वर्णों की संख्या और स्थान से सम्बंधित नियमों को कहते हैं जिनसे काव्य में लय और रंजकता आती है। छोटी-बड़ी ध्वनियां, लघु-गुरु उच्चारणों के क्रमों में, मात्रा बताती हैं और जब किसी काव्य रचना में ये एक व्यवस्था के साथ सामंजस्य प्राप्त करती हैं तब उसे एक शास्त्रीय नाम दे दिया जाता है और लघु-गुरु मात्राओं के अनुसार वर्णों की यह व्यवस्था एक विशिष्ट नाम वाला छन्द कहलाने लगती है,

जैसे - चौपाई, दोहा, आर्या, इन्द्रवज्रा, गायत्री छन्द इत्यादि। इस प्रकार की व्यवस्था में मात्रा अथवा वर्णों की संख्या, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के नियमों को भी निर्धारित किया गया है जिनका पालन कवि को करना होता है। इस दूसरे अर्थ में यह अंग्रेजी के मीटर अथवा उर्दू फ़ारसी के रुकन (अराकान) के समकक्ष है। हिन्दी साहित्य में भी परंपरागत रचनाएँ छन्द के इन नियमों का पालन करते हुए रची जाती थीं, यानि किसी न किसी छन्द में होती थीं। विश्व की अन्य भाषाओं में भी परंपरागत रूप से कविता के लिये छन्द के नियम होते हैं।

छन्दों की रचना और गुण-अवगुण के अध्ययन को छन्दशास्त्र कहते हैं। चूँकि, आचार्य पिंगल द्वारा रचित 'छन्दःशास्त्र' सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है, इस शास्त्र को पिंगलशास्त्र भी कहा जाता है।

छन्द के भेद या प्रकार

वर्ण और मात्रा के विचार से छन्द के चार भेद हैं

- मात्रिक छंद
- वर्णिक छंद
- उभय छंद
- मुक्त छंद



1. माल्रक छंद

जिन छंदों की रचना मात्राओं की गणना के आधार पर की जाती है, उन्हें माल्रक छंद कहते हैं। दोहा, रोला, सोरठा, चौपाई, हरिगीतिका आदि प्रमुख माल्रक छंद है।

जैसे :-

”बंदऊं गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

“अमिय मुरियम चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।”

2. वर्णिक छंद

जिन छंदों में केवल वर्णों की संख्या और नियमों का पालन किया जाता है, वह वर्णिक छंद कह लाता हैं। जिन छंदों में वर्णों की संख्या, गणविधान, क्रम, तथा लघु-गुरु स्वर के आधार पर पद रचना होती है, उसे ‘वर्णिक छंद’ कहते हैं। या जिस छंद के सभी चरणों में वर्णों की संख्या समान होती हैं उन्हें ‘वर्णिक छंद’ कहते हैं।

जैसे :- दुर्मिल सवैया।

3. उभय छंद

जिन छंदों में मात्रा और वह दोनों की समानता एक साथ पाई जाती है, उन्हें उभय छंद कहते हैं।

जैसे :- मत्तगयन्द सवैया।

4. मुक्त छंद

मुक्त छंद को आधुनिक युग की देन माना जाता है। जिस छंद में वर्णों और मात्राओं का बंधन नहीं होता है, उसे मुक्त छंद कहते हैं। आजकल हिंदी में स्वतंत्र रूप से लिखे जाने वाले छंद मुक्त छंद होते हैं।

चरणों की अनियमित, असमान, स्वछन्द गति तथा भाव के अनुकूल यति विधान ही मुक्त छंद की विशेषताए है। इसे रबर या केंचुआ छंद भी कहते हैं। इसमें न वर्णों की गिनती और न ही मात्राओं की गिनती होती है।

जैसे :-

”वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता।

छन्द के अंग

छन्द के निम्नलिखित अंग है –

- चरण /पद /पाद
- वर्ण और मात्रा
- संख्या क्रम और गण
- लघु और गुरु
- गति
- यति /विराम
- तुक

1. चरण /पद /पादा

- छंद के प्रायः 4 भाग होते हैं। इनमें से प्रत्येक को 'चरण' कहते हैं।
दूसरे शब्दों में - छंद के चतुर्थांश (चतुर्थ भाग) को चरण कहते हैं।
- कुछ छंदों में चरण तो चार होते हैं लेकिन वे लिखे दो ही पंक्तियों में जाते हैं, जैसे- दोहा, सोरठा आदि। ऐसे छंद की प्रत्येक को 'दल' कहते हैं।
- हिन्दी में कुछ छंद छः-छः पंक्तियों (दलों) में लिखे जाते हैं। ऐसे छंद दो छंदों के योग से बनते हैं, जैसे कुण्डलिया (दोहा + रोला), छप्पय (रोला + उल्लाला) आदि।
- चरण 2 प्रकार के होते हैं- सम चरण और विषम चरण।

प्रथम व तृतीय चरण को विषम चरण तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण को सम चरण कहते हैं।

2. वर्ण और मात्रा

वर्ण/ अक्षर

- एक स्वर वाली ध्वनि को वर्ण कहते हैं, चाहे वह स्वर ह्रस्व हो या दीर्घ।
- जिस ध्वनि में स्वर नहीं हो (जैसे हलन्त शब्द राजन् का 'न्', संयुक्ताक्षर का पहला अक्षर- कृष्ण का 'ष्') उसे वर्ण नहीं माना जाता।
- वर्ण को ही अक्षर कहते हैं। 'वर्णिक छंद' में चाहे ह्रस्व वर्ण हो या दीर्घ- वह एक ही वर्ण माना जाता है
जैसे - राम, रामा, रम, रमा इन चारों शब्दों में दो-दो ही वर्ण हैं।

मात्रा

किसी वर्ण या ध्वनि के उच्चारण-काल को मात्रा कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - किसी वर्ण के उच्चारण में जो अवधि लगती है, उसे मात्रा कहते हैं।

ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे एक मात्रा तथा दीर्घ वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे दो मात्रा माना जाता है।

मात्रा दो प्रकार के होते हैं

ह्रस्व :- अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ :- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

वर्ण की गणना

- **ह्रस्व स्वर वाले वर्ण (ह्रस्व वर्ण) :-** एकवर्णिक- अ, इ, उ, ऋ; क, कि, कु, कृ
- **दीर्घ स्वर वाले वर्ण (दीर्घ वर्ण) :-** एकवर्णिक- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ; का, की, कू, के, कै, को, कौ

मात्रा की गणना

- **ह्रस्व स्वर :-** एकमात्रिक- अ, इ, उ, ऋ
- **दीर्घ स्वर :-** द्विमात्रिक- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
- वर्णों और मात्राओं की गिनती में स्थूल भेद यही है कि वर्ण 'सस्वर अक्षर' को और मात्रा 'सिर्फ स्वर' को कहते हैं।



वर्ण और मात्रा में अंतर :- वर्ण में ह्रस्व और दीर्घ रहने पर वर्ण-गणना में कोई अंतर नहीं पड़ता है, किंतु मात्रा-गणना में ह्रस्व-दीर्घ से बहुत अंतर पड़ जाता है। उदाहरण के लिए, 'भरत' और 'भारती' शब्द कोलें। दोनों में तीन वर्ण हैं, किन्तु पहले में तीन मात्राएँ और दूसरे में पाँच मात्राएँ हैं।

3. संख्या क्रम और गण

वर्णों और मात्राओं की सामान्य गणना को संख्या कहते हैं, किन्तु कहाँ लघुवर्ण हों और कहाँ गुरुवर्ण हों- इसके नियोजन को क्रम कहते हैं।

छंद-शास्त्र में तीन मात्रिक वर्णों के समुदाय को गण कहते हैं।

वर्णिक छंद में न केवल वर्णों की संख्या नियत रहती है वरन वर्णों का लघु-गुरु-क्रम भी नियत रहता है।

मात्राओं और वर्णों की 'संख्या' और 'क्रम' की सुविधा के लिए तीन वर्णों का एक-एक गण मान लिया गया है। इन वर्णों के अनुसार मात्राओं का क्रम वार्षिक वृत्तों या छन्दों में होता है, अतः इन्हें 'वार्षिक गण' भी कहते हैं। इन वर्णों की संख्या आठ है। इनके ही उलटफेर से छन्दों की रचना होती है। इन वर्णों के नाम, लक्षण, चिह्न और उदाहरण इस प्रकार हैं-

गण	वर्ण क्रम	चिह्न	उदाहरण	प्रभाव
यगण	आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त गुरु	।११	बहाना	शुभ
मगण	आदि, मध्य, अन्त गुरु	११	आजादी	शुभ
तगण	आदि गुरु, मध्य गुरु, अन्त लघु	११।	बाजार	अशुभ
रगण	आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त गुरु	।१।	नीरजा	अशुभ
जगण	आदि लघु, मध्य गुरु, अन्त लघु	।१।	प्रभाव	अशुभ
भगण	आदि गुरु, मध्य लघु, अन्त लघु	।।।	नीरद	शुभ
नगण	आदि, मध्य, अन्त लघु	।।।	कमल	शुभ
सगण	आदि लघु, मध्य लघु, अन्त गुरु	।।१	वसुधा	अशुभ

काव्य या छन्द के आदि में 'अगण' अर्थात् 'अशुभ गण' नहीं पड़ना चाहिए। शायद उच्चारण कठिन अर्थात् उच्चारण या लय में दग्ध होने के कारण ही कुछ वर्णों को 'अशुभ' कहा गया है। वर्णों को सुविधापूर्वक याद रखने के लिए एक सूत्र बना लिया गया है- यमाताराजभानसलगाः ।

इस सूत्र में प्रथम आठ वर्णों में आठ वर्णों के नाम आ गये हैं। अन्तिम दो वर्ण 'ल' और 'ग' छन्दशास्त्र में 'दशाक्षर' कहलाते हैं। जिस वर्ण का स्वरूप जानना हो, उस वर्ण के आद्यक्षर और उससे आगे दो अक्षरों को इस सूत्र से ले लेना होता है।

जैसे - 'तगण' का स्वरूप जानना हो तो इस सूत्र का 'ता' और उससे आगे के दो अक्षर 'रा ज' = 'ताराज', (११।) लेकर 'तगण' का लघु-गुरु जाना जा सकता है कि 'तगण' में गुरु + गुरु + लघु, इस क्रम से तीन वर्ण होते हैं। यहाँ यह स्मरणीय है कि 'गण' का विचार केवल वर्णवृत्त में होता है, मात्रिक छन्द इस बन्धन से मुक्त है।

4. लघु और गुरु

लघु -

1. अ, इ, उ- इन ह्रस्व स्वरों तथा इनसे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' समझा जाता है।

जैसे - कलम; इसमें तीनों वर्ण लघु हैं। इस शब्द का मात्राचिह्न हुआ - ।।

II. चन्द्रबिन्दुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं।

जैसे - 'हँ' ।

गुरु -

I. आ, ई, ऊ और ऋ इत्यादि दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं।

जैसे - राजा, दीदी, दादी इत्यादि। इन तीनों शब्दों का मात्राचिह्न हुआ- ऽऽ।

II. ए, ऐ, ओ, औ- ये संयुक्त स्वर और इनसे मिले व्यंजन भी गुरु होते हैं।

जैसे - ऐसा ओला, औरत, नौका इत्यादि।

III. अनुस्वारयुक्त वर्ण गुरु होता है।

जैसे - संसार। लेकिन, चन्द्रबिन्दुवाले वर्ण गुरु नहीं होते।

IV. विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होता है।

जैसे - स्वतः, दुःख; अर्थात्- ।ऽ, ऽ ।।

V. संयुक्त वर्ण के पूर्व का लघु वर्ण गुरु होता है।

जैसे - सत्य, भक्त, दुष्ट, धर्म इत्यादि, अर्थात्- ऽ ।।

5. गति

छंद के पढ़ने के प्रवाह या लय को गति कहते हैं।

वर्णवृत्तों में इसकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु मात्रिक वृत्तों में इसकी आवश्यकता पड़ती है। 'जब सकोप लखन वचन बोले' में १६ मात्राएँ हैं, लेकिन इसे हम चौपाई का एक चरण नहीं मान सकते, क्योंकि इसमें गति नहीं है। गति ठीक करने के लिए इसे 'लखन सकोप वचन जब बोले' करना पड़ेगा।

गति का महत्व वर्णिक छंदों की अपेक्षा मात्रिक छंदों में अधिक है। बात यह है कि वर्णिक छंदों में तो लघु-गुरु का स्थान निश्चित रहता है किन्तु मात्रिक छंदों में लघु-गुरु का स्थान निश्चित नहीं रहता, पूरे चरण की मात्राओं का निर्देश मात्र रहता है।

मात्राओं की संख्या ठीक रहने पर भी चरण की गति (प्रवाह) में बाधा पड़ सकती है।

जैसे -

I. दिवस का अवसान था समीप में गति नहीं है जबकि 'दिवस का अवसान समीप था' में गति है।

II. चौपाई, अरिल्ल व पद्धरि-इन तीनों छंदों के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएं होती हैं पर गति भेद से ये छंद परस्पर भिन्न हो जाते हैं।

अतएव, मात्रिक छंदों के निर्दोष प्रयोग के लिए गति का परिज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

गति का परिज्ञान भाषा की प्रकृति, नाद के परिज्ञान एवं अभ्यास पर निर्भर करता है।

6. यति /विराम

छंद में नियमित वर्ण या मात्रा पर साँस लेने के लिए रूकना पड़ता है, इसी रूकने के स्थान को यति या विराम कहते हैं।

छन्दशास्त्र में 'यति' का अर्थ विराम या विश्राम।

छोटे छंदों में साधारणतः यति चरण के अन्त में होती है; पर बड़े छंदों में एक ही चरण में एक से अधिक यति या विराम होते हैं।



बड़े छंदों के एक-एक चरण में इतने अधिक वर्ण होते हैं कि लय को ठीक करने तथा उच्चारण की स्पष्टता के लिए कहीं-कहीं रुकना आवश्यक हो जाता है। जैसे- 'देवघनाक्षरी' छंद के प्रत्येक चरण में ३३ वर्ण होते हैं और इसमें ८, ८, ८, ९ पर यति होती है। अर्थात् आठ, आठ, आठ वर्णों के पश्चात् तीन बार थोड़ा रुककर उच्चारण करना पड़ता है।

7. तुक

छंद के चरणों के अंत में समान स्वरयुक्त वर्ण स्थापना को 'तुक' कहते हैं।

जैसे - आई, जाई, चक्र-वक्र आदि से चरण समाप्त करने पर कहा जाता है कि कविता तुकांत है



टिप्पण लेखन

अंग्रेजी भाषा में 'टिप्पण' के लिए 'Noting' शब्द का प्रयोग होता है। 'टिप्पण' का अर्थ है - टिप्पणी लिखने का कार्य।' इस प्रकार 'टिप्पण' टिप्पणी लिखने की कला या प्रक्रिया का नाम है। जिस प्रकार संक्षेप करने की कला को संक्षेपण, विस्तृत करने की कला को विस्तारण कहते हैं, उसी प्रकार टिप्पणी लेखन की कला को टिप्पण कहते हैं।

टिप्पण लेखन की परिभाषा

किसी भी विचारधीन पत्र या आवेदन पर उसके निष्पादन को सरल बनाने के लिए जो टिप्पणियाँ सरकारी कार्यालयों में लिपकों, सहायकों तथा कार्यालय अधीक्षकों द्वारा लिखी जाती हैं, उन्हें टिप्पण-लेखन कहते हैं।

परिभाषा :- डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी के अनुसार - "प्राप्त पत्रादि, डाक के बारे में, उसके अन्तिम निपटारे तक, जो लिखित या मौखिक कार्यवाही होती है, वह टिप्पण या टिप्पण-कार्य कहलाती है।"

टिप्पण लेखन की विशेषताएँ

टिप्पण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- टिप्पण बहुत लम्बा या विस्तृत नहीं होना चाहिए। उसे यथासम्भव संक्षिप्त और सुस्पष्ट होना चाहिए।
- कोई भी टिप्पण मूलपत्र पर नहीं लिखा जाना चाहिए। उसके लिए कोई अन्य कागज या बफ-शीट का प्रयोग करना चाहिए।
- टिप्पण में यदि किसी पत्र का खण्डन करना हो, तो वह बहुत ही शिष्ट और संयत भाषा में किया जाना चाहिए और किसी भी दशा में किसी प्रकार का व्यक्तिगत आरोप या आक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।
- यदि एक ही मामले में कई बातों पर अलग-अलग आदेश लिए जाने की आवश्यकता हो तो उनमें से हर बात पर अलग-अलग टिप्पण लिखना चाहिए।
- टिप्पण लिखने के बाद लिपिक या सहायक को नीचे बाईं ओर अपना हस्ताक्षर करना चाहिए। दाईं ओर का स्थान उच्च अधिकारियों के हस्ताक्षर के लिए छोड़ देना चाहिए।
- कार्यालय की ओर से लिखे जा रहे टिप्पण में उन सभी बातों या तथ्यों का सही सही समावेश होना चाहिए जो उस पत्रावली के निस्तारण के लिए आवश्यक हो।
- यथासम्भव एक विषय पर कार्यालय की ओर से एक ही टिप्पण लिखा जाना चाहिए।
- जहाँ तक सम्भव हो, टिप्पण इस ढंग से लिखा जाना चाहिए कि पत्रावली में पत्र जिस क्रम से लगे हों, टिप्पण में भी उनका वही क्रम हो।
- टिप्पण सदा स्याही से लिखे या टंकित होने चाहिए।
- लिपिक, सहायक और कार्यालय अधीक्षक को कागज की बाईं ओर अपने नाम के प्रथमाक्षरों का ही प्रयोग करना चाहिए। उच्च अधिकारी को अपना पूरा नाम लिखना पड़ता है।

डायरी-लेखन

डायरी-लेखन क्या है? 'डायरी' अर्थात 'जो प्रतिदिन लिखी जाए'। हर दिन की विशेष घटनाएँ-प्रिय अथवा अप्रिय, जिन्होंने भी मन पर प्रभाव छोड़ा हो, डायरी में लिखी जाती हैं। डायरी लेखन व्यक्ति के द्वारा लिखा गया व्यक्तिगत अभुभवों, सोच और भावनाओं को लेखित रूप में अंकित करके बनाया गया एक संग्रह है।

विश्व में हुए महान व्यक्ति डायरी लेखन करते थे और उनके अनुभवों से उनके निधन के बाद भी कई लोगों को प्रेरणा मिलती है। डायरी गत साहित्य की एक प्रमुख विधा है इसमें लेखक आत्म साक्षात्कार करता है।

डायरी लिखने का उद्देश्य

- व्यक्ति जो बात दूसरों को समझा पाने अथवा व्यक्त कर पाने में असमर्थ होता है, उसे वह डायरी में लिख लेता है। डायरी सही अर्थ में एक 'सच्चे मित्र' की तरह होती है, जिसे हम सब कुछ बता सकते हैं। इसमें प्रतिदिन की विशेष घटनाओं को लिखकर हम उन्हें यादगार बना लेते हैं।
- जिस प्रकार हम फोटो देखकर उस अवसर की याद ताजा कर लेते हैं, उसी प्रकार डायरी के माध्यम से हम अतीत में लौट सकते हैं तथा अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को पुनर्जीवित कर सकते हैं।
- प्रसिद्ध व महान व्यक्ति भी डायरी लिखते थे। उनकी डायरी पढ़कर हम पूरा युग देख सकते हैं। कई बार यही डायरी आगे चलकर 'आत्मकथा' का रूप ले लेती है। जिससे हम महान व्यक्तियों के विचारों, अनुभवों व दिनचर्या के बारे में जान पाते हैं।

डायरी के प्रकार

- व्यक्तिगत डायरी
- वास्तविक डायरी
- काल्पनिक डायरी
- साहित्यिक डायरी

डायरी लिखते समय कुछ बातों का ध्यान

1. पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि, दिन तथा लिखने का समय अवश्य लिखें।
2. इसे प्रायः सोने जाने से पहले लिखें, ताकि पूरे दिन में घटित सभी विशेष घटनाओं को लिख सकें।
3. डायरी के अंत में अपने हस्ताक्षर करें, ताकि वह आपके व्यक्तिगत दस्तावेज बन सकें।
4. डायरी लिखते समय सरल व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें।
5. डायरी में दर्ज विवरण संक्षिप्त होना चाहिए।



6. अपने अनुभव को स्पष्टता से व्यक्त किया जाना चाहिए।
7. डायरी में स्थान और तिथि का जिक्र होना चाहिए।
8. इसमें अपना विश्लेषण, समाज आदि पर प्रभाव और निष्कर्ष दर्ज होना चाहिए।

डायरी लेखन के उदाहरण

1. पुरस्कार प्राप्त होने के बाद जो खुशी

लखनऊ

23 अक्टूबर, 20XX, बुधवार

रात्रि 9 : 30 बजे

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना सभा में समस्त विद्यार्थियों के सामने मुझे अंतर्विद्यालयी काव्य-पाठ प्रतियोगिता में जीता गया पुरस्कार दिया गया। घर आने पर मैंने माँ-पिता जी को पुरस्कार दिखाया, तब वे फूले नहीं समाए। दादी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया। अब मैं खाना खाने के बाद सोने जा रहा हूँ।

रोहित कुमार

2. वार्षिक परीक्षा की तिथि की घोषणा पर होनेवाली प्रतिक्रिया।

हसनपुर बागर

22 फरवरी, 2017

आज वार्षिक परीक्षा की सूचना मिली। न जाने क्यूँ मन में तरह-तरह की आशंकाएँ तिरने लगीं। जब-जब परीक्षा की घोषणा होती है, दिल दहल जाता है। हर बार सोचता हूँ कि कक्षा में प्रथम स्थान लाने के लिए अपेक्षित मेहनत करूँगा; लेकिन दीर्घ सूत्रता के कारण असफल हो जाता हूँ। 'परीक्षा' शब्द से ही मन में झुरझुरी होने लगती है। ऐसा लगता है मानो कोई बड़ी दुर्घटना होनेवाली है। देखता हूँ, इस बार क्या होता है।

शरद् कुमार 'निराला'

3. परीक्षा में प्रथम अंक लाने पर जो खुशी

हैदराबाद

07 जनवरी, 20XX, बुधवार

रात्रि 10 : 45 बजे

आज मैं बहुत खुश हूँ, क्योंकि आज मेरी इच्छा पूरी हो गई है। आज कक्षा में अध्यापिका ने सबके सामने परीक्षा परिणाम घोषित किया। जब उन्होंने सबसे अधिक अंक प्राप्त करके प्रथम आने वाली छात्रा का नाम लिया, तब मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि वह छात्रा कोई और नहीं मैं ही थी। सभी साथियों ने मेरी प्रशंसा की। घर आने पर मैंने माँ-पिता जी व दादा-दादी को रिपोर्ट कार्ड दिखाया, तो वे बहुत प्रसन्न हुए और मुझे न जाने कितने आशीर्वाद दिए।

अनुष्का

4. अच्छे दोस्त के चले जाने के बाद जो दुःख हुआ।

दिल्ली

12 जनवरी, 20XX, शुक्रवार

रात्रि 9 : 00 बजे

आज मेरा मन बहुत उदास है, क्योंकि मेरे बचपन का दोस्त कुणाल दिल्ली छोड़कर इलाहाबाद जा रहा है। उसके पिता जी का तबादला हो गया है। शाम को वह मुझसे मिलने आया था। वह भी बहुत दुखी था, परंतु उसने मुझसे वादा किया है कि वह फोन और पत्रों द्वारा मुझसे संपर्क बनाए रखेगा। कुणाल जैसा मित्र पाना बड़ी खुशकिस्मती की बात है। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि दूर जाने पर भी हमारी मित्रता में दूरी न आए।

वीरेन

5. परिक्षा में कम अंक लाने पर अपने गुण-दोष की समीक्षा।

महेशवाड़ा

28 मार्च, 2018

आज वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। इस बार फिर मैं द्वितीय स्थान पर ही आई। मुझे ऐसा लगता था कि इस बार मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँगी। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हर बार मुझे दूसरा स्थान ही क्यों मिलता रहा है। मुझे स्मरण है कि मैंने चार-पाँच प्रश्नों के उत्तर कई बार काटकर लिखे हैं। ऑभर राइटिंग भी हुई है। मेरी लिखावट भी साफ-सुथरी नहीं होती है। एक बात और है, मुझमें आत्मविश्वास की जबर्दस्त कमी है। मैं कक्षा में भी चुपचाप बैठी रहती हूँ। यदि यही स्थिति रही तो निस्सन्देह, मैं हर जगह मात खा जाऊँगी। मुझे आत्मविश्वास जगाना ही होगा।

ऋचा

ध्यान रखने योग्य

- इसे प्रायः सोने जाने से पहले लिखें, ताकि पूरे दिन में घटित सभी विशेष घटनाओं को लिख सकें।
- पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि, दिन तथा लिखने का समय अवश्य लिखें।
- डायरी के अंत में अपने हस्ताक्षर करें, ताकि वह आपके व्यक्तिगत दस्तावेज बन सकें।
- अपने अनुभव को स्पष्टता से व्यक्त किया जाना चाहिए।
- डायरी में स्थान और तिथि का जिक्र होना चाहिए।
- इसमें अपना विश्लेषण, समाज आदि पर प्रभाव और निष्कर्ष दर्ज होना चाहिए।
- डायरी लिखते समय सरल व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें।
- डायरी में दर्ज विवरण संक्षिप्त होना चाहिए।





तत्सम-तद्भव शब्द

‘तत्’ तथा ‘सम’ के मेल से तत्सम शब्द बना है। ‘तत्’ का अर्थ होता है-‘उसके’ तथा ‘सम’ का अर्थ है ‘समान’ । अर्थात् उसके समान, ज्यों का त्यों। अतः किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्द जब ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तत्सम शब्द की परिभाषा :-

“हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है, अतः संस्कृत भाषा के जो शब्द हिन्दी भाषा में अपरिवर्तित रूप में ज्यों के त्यों प्रयुक्त हो रहे हैं,

हिन्दी भाषा के तत्सम शब्द कहलाते हैं।”

जैसे- अग्नि, आम्र, कर्ण, दुग्ध, कर्म, कृष्ण।

तद्भव शब्द

तद्भव शब्द संस्कृत विकास से उत्पन्न होने वाला शब्द है। तद्भव शब्द दो बहुत ही महत्वपूर्ण शब्दों से मिलकर बना हुआ है। तद्भव शब्द तत् और भव शब्द के मिलाप से बना हुआ है। जहां तत् शब्द का अर्थ उससे और भव शब्द का अर्थ उत्पन्न होता है, अर्थात् तद्भव शब्द का शाब्दिक अर्थ किसी अन्य प्राचीन शब्द से उत्पन्न हुआ शब्द है।

संस्कृत भाषा के शब्दों में निरंतर धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया और संस्कृत भाषा के नए-नए शब्द प्रचलित होने लगे। तद्भव शब्द संस्कृत भाषा की ओर संकेत करता है, अर्थात् तद्भव शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से ही हुई है।

तद्भव शब्द की परिभाषा

ऐसे शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से उठाकर किसी अन्य भाषा में प्रयुक्त कर लिया जाता है और इन शब्दों के ध्वनि में कुछ गंभीर परिवर्तन नहीं होता, परंतु इन शब्दों की लेखनी बदल जाती है, ऐसे शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द के उदाहरण

तद्भव शब्द	प्राचीन शब्द
आधा	अर्ध
अनजान	अज्ञान
आसिस	आशीष
अच्छर	अक्षर
अंगुली	अंगुलि
उल्लू	उल्लूक

तत्सम तद्भव शब्द को पहचानने के नियम

1. तत्सम शब्दों के पीछे 'क्ष' वर्ण का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों के पीछे 'ख' या 'छ' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे -

अक्षर = अक्छर, आखर

पक्षी = पंछी

2. तत्सम शब्दों में 'र' की मात्रा का प्रयोग होता है।

जैसे -

अमृत = अमीर

आम्र = आम

3. तत्सम शब्दों में 'ऋ' की मात्रा का उपयोग होता है।

जैसे -

4. तत्सम शब्दों में 'श्र' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में 'स' का प्रयोग हो जाता है।

जैसे -

धन्नश्रेष्ठी = धन्नासेठी

5. तत्सम शब्दों में 'व' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में 'ब' का प्रयोग होता है।

जैसे -

वन = बन

6. तत्सम शब्दों में 'ष' वर्ण का प्रयोग होता है।

जैसे -

कृषक = किसान

7. तत्सम शब्दों में 'श' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में 'स' का प्रयोग हो जाता है।

जैसे -

दिपशलाका = दिया सलाई

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
चन्द्र	चाँद	ग्राहक	गाहक
मयूर	मोर	विद्युत	बिजली
वधू	बहू	नृत्य	नाच
चर्म	चमड़ा	गौ	गाय
ग्रीष्म	गर्मी	अज्ञानी	अज्ञानी
अकस्मात्	अचानक	अग्नि	आग
आलस्य	आलस	उज्वल	उजला
कर्म	काम	नवीन	नया

अमूल्य – अमोल

अमृत – अमिय

अम्बा – अम्मा

अम्बिका – इमली

अर्क – आक

अर्द्ध – आधा

अर्पण – अरपण

अवगुण – औगुण

अवतार – औतार

अश्रु – आँसू

अष्ट – आठ

अष्टादश – अठारह

आ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

आदित्यवार – इतवार

आभीर – अहीर

आमलक – आँवला

आम्र – आम

आम्रचूर्ण – अमचूर

आरात्रिका – आरती

आलस्य – आलस

आशीष – असीस

आश्चर्य – अचरज

आश्रय – आसरा

आश्विन – आसोज

इ, ई से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

इक्षु – ईख

इष्टिका – ईट

ईप्सा – इच्छा

ईर्ष्या – इरषा

उ, ऊ, ऋ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

उच्च – ऊँचा

उच्छवास – उसास

उज्वल – उजला

उत्साह – उछाह

उदघाटन – उघाड़ना

उपरि – ऊपर

उपालम्भ – उलाहना

उलूक – उल्लू

उलूखल – ओखली

उष्ट्र – ऊँट

ऊष्ण – उमस

ऋक्ष – रीछ

ए, ऐ, ओ, औ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

एकत्र – इकट्ठा

एकादश – ग्यारह

ओष्ठ – ओँठ

क से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

कंकण – कंगन

कच्छप – कछुआ

कज्जल – काजल

कटु – कडवा

कण्टक – काँटा

कदली – केला

कन्दुक – गेंद

कपाट – किवाड़

कपोत – कबूतर

कर्ण – कान

कर्तव्य – करतब

कर्पट – कपड़ा

कर्पूर – कपूर

कर्म – काम

कल्लोल – कलोल

काक – काग / कौआ

कार्तिक – कातिक

कार्य – काज / कारज

काष्ठ – काठ

कास – खाँसी

किंचित – कुछ

किरण – किरन

कीट – कीड़ा

कीर्ति – कीरति

कुंभकार – कुम्हार

कुक्कुर – कुत्ता

कुक्षि – कोख

कुपुत्र – कपूत

कुब्ज – कुबड़ा

कुमार – कुआँरा

कुमारी – कुँवारी

कुष्ठ – कोढ़

कूप – कुँआ

कृपा – किरपा

कृषक – किसान

कृष्ण – कान्हा / किसन

केवर्त – केवट

कोकिला – कोयल

कोटि – करोड़

कोण – कोना

कोष्ठिका – कोठी

क्लेश – क्लेश

क्ष से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

क्षण – छिन

क्षत – छत

तुंद - तोंद
तृण - तिनका
तैल - तेल
त्रय - तीन
त्रयोदश - तेरह
त्वरित - तुरंत / तुरत

द से तत्सम शब्द -**तत्सम-तद्भव**

दंड - डंडा
दंत - दाँत
दंतधावन - दातुन
दक्ष - दच्छ
दक्षिण - दाहिना
दद्रु - दाद
दधि - दही
दाह - डाह
दिशान्तर - दिसावर
दीप - दीया
दीपशलाका - दीयासलाई
दीपावली - दिवाली
दुःख - दुख
दुग्ध - दूध
दुर्बल - दुबला
दुर्लभ - दूल्हा
दूर्वा - दूब
दृष्टि - दीठि
दौहित्र - दोहिता
द्वादश - बारह
द्विगुणा - दुगुना
द्वितीय - दूजा
द्विपट - दुपट्टा
द्विप्रहरी - दुपहरी
द्विवर - देवर

ध से तत्सम शब्द -**तत्सम-तद्भव**

धनश्रेष्ठी - धन्नासेठ
धरणी - धरती
धरित्री - धरती
धर्तूर - धतूरा
धर्म - धरम
धान्य - धान
धूम्र - धुँआ
धूलि - धूल
धृष्ट - ढीठ
धैर्य - धीरज

न से तत्सम शब्द -**तत्सम-तद्भव**

नकुल - नेवला
नक्षत्र - नखत
नग्न - नंगा
नप्तृ - नाती
नम्र - नरम
नयन - नैन
नव - नौ
नवीन - नया
नापित - नाई
नारिकेल - नारियल
नासिका - नाक
निद्रा - नीँद
निपुण - निपुन
निम्ब - नीम
निम्बुक - नींबू
निर्वाह - निबाह
निशि - निसि
निष्ठुर - निठुर
नृत्य - नाच
नौका - नाव

प से तत्सम शब्द -**तत्सम-तद्भव**

पंक्ति - पंगत
पंच - पाँच
पंचदश - पन्द्रह
पक्व - पका / पक्का
पक्वान्न - पकवान
पक्ष - पंख
पक्षी - पंछी
पट्टिका - पाटी
पत्र - पत्ता
पथ - पंथ
पद्म - पदम
परमार्थ - परमारथ
परशु - फरसा
परश्वः - परसों
परीक्षा - परख
पर्पट - पापड़
पर्यंक - पलंग
पवन - पौन
पश्चाताप - पछतावा
पाद - पैर
पानीय - पानी
पाश - फन्दा
पाषाण - पाहन
पितृ - पितर / पिता
पितृश्रसा - बुआ
पिपासा - प्यास
पिप्पल - पीपल
पीत - पीला
पुच्छ - पूँछ
पुत्र - पूत
पुत्रवधू - पतोहू
पुष्कर - पोखर
पुष्प - पुहुप

राजपुत्र – राजपूत
रात्रि – रात
राशि – रास
रिक्त – रीता
रुदन – रोना
रूष्ट – रूठा

ल से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्भव**

लक्ष – लाख
लक्षण – लक्खन
लक्ष्मण – लखन
लक्ष्मी – लछ्मी
लज्जा – लाज
लवंग – लौंग
लवण – नौन / नून
लवणता – लुनाई
लेपन – लीपना
लोक – लोग
लोमशा – लोमड़ी
लौह – लोहा
लौहकार – लुहार

व से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्भव**

वंश – बाँस
वंशी – बाँसुरी
वक – बगुला
वचन – बचन
वज्रांग – बजरंग
वट – बड
वणिक – बनिया
वत्स – बच्चा / बछड़ा
वधू – बहू
वरयात्रा – बरात

वर्ण – बरन
वर्ष – बरस
वर्षा – बरसात
वल्स – बछड़ा
वाणी – बानी
वानर – बंदर
वार्ता – बात
वाष्प – भाप
विंश – बीस
विकार – बिगाड़
विद्युत – बिजली
विवाह – ब्याह
विष्ठा – बीट
वीणा – बीना
वीरवर्णिनी – बीरबानी
वृक्ष – बिरख
वृद्ध – बुढ़ा / बूढ़ा
वृश्चिक – बिच्छू
वृषभ – बैल
वैर – बैर

व्यथा – विथा
व्याघ्र – बाघ

श, ष, श्र से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्भव**

शकट – छकड़ा
शत – सौ
शप्तशती – सतसई
शय्या – सेज
शर्करा – शक्कर
शलाका – सलाई
शाक – साग
श्राप – शाप
शिक्षा – सीख
शिर – सिर

शिला – सिल
शीतल – सीतल
शीर्ष – सीस
शुक – सुआ
शुण्ड – सूंड
शुष्क – सूखा
शूकर – सुअर
शून्य – सूना
श्मशान – मसान
श्मश्रु – मूँछ
श्मषान – समसान
श्यामल – सांवला
श्यालस – साला
श्याली – साली
श्रंखला – सांकल
श्रावण – सावन
श्रृंग – सींग
श्रृंगार – सिंगार
श्रृगाल – सियार
श्रेष्ठी – सेठ
श्वश्रु – सास
श्वसुर – ससुर
श्वास – साँस
षोडश – सोलह

स से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्भव**

संधि – सेंध
सत्य – सच
सन्ध्या – साँझ
सपत्नी – सौत
सप्त – सात
सरोवर – सरवर
सर्प – साँप
सर्सप – सरसों



साक्षी – साखी

सूची – सुई

सूत्र – सूत

सूर्य – सूरज

सौभाग्य – सुहाग

स्कन्ध – कंधा

स्तन – थन

स्तम्भ – खम्भा

स्थल – थल

स्थान – थान

स्थिर – थिर

स्नेह – नेह

स्पर्श – परस

स्फोटक – फोड़ा

स्वजन – साजन

स्वप्न – सपना

स्वर्ण – सोना

स्वर्णकार – सुनार

स्वसुर – ससुर

ह से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्भव

हंडी – हांडी

हट्ट – हाट

हरिण – हिरन

हरित – हरा

हरिद्रा – हल्दी

हर्ष – हरख

हस्त – हाथ

हस्ति – हाथी

हस्तिनी – हथिनी

हास्य – हँसी

हिन्दोला – हिण्डोला



तार लेखन

‘तार’ या टेलीग्राम की परंपरा विद्यमान है। तार की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि संचार के अन्य साधन जहाँ महँगे होने के साथ-साथ शहरों और कस्बों तक सीमित हैं, वहाँ तार सुदूर देहातों तक अपनी सेवाओं से जनता को लाभान्वित कर रहा है।

तार लेखन की पहली शर्त है- कम-से-कम शब्दों में काम की बातों को प्रेषित करना। इसके लिए समास-ज्ञान जरूरी है। लोगों का ऐसा कहना है कि English में तार भेजना कम खर्चीला है; लेकिन यह बात पूर्णतः सत्य नहीं है। हिन्दी में भी तार-लेखन सस्ता हो सकता है बशर्ते कि आपको सामासिकता का ज्ञान हो।

हम जानते हैं कि उसमें शब्द-संख्या के आधार पर सेवा-शुल्क तय होता है, इसलिए कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करना ही बुद्धिमानी है। हम एक उदाहरण लेते हैं-

नववर्ष के उपलक्ष्य में अपने मित्र को बधाई देने के लिए हम अंग्रेजी में लिखेंगे- "Happy New Year"! और हिन्दी में लिखेंगे- ‘शुभ नववर्ष’। अंग्रेजी में तीन शब्दों का और हिन्दी में दो शब्दों का प्रयोग हुआ। कल्पना करें-कौन सस्ता है

पहले केवल अँगरेजी में डाकघरों से तार भेजा जाता था, किन्तु अब हिन्दी में भी तार भेजा जाता है। आजादी के बाद इसका प्रचार दिन-दिन बढ़ता जा रहा है और जनता में यह लोकप्रिय होता जा रहा है।

फिर भी, इस दशा में अभी बहुत कुछ करना है। हिन्दी में तार-सभी मुख्य तारघरों में देवनागरी में तार-प्रणाली चालू की जा चुकी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति की दृष्टि से तार-क्षेत्र में भी हिन्दी का समुचित प्रयोग हो रहा है। कुछ लोगों का यह भ्रम है कि हिन्दी में तार लिखना महँगा है।

सच तो यह है कि अँगरेजी तार की अपेक्षा देवनागरी तार पर खर्च कम होता है। अँगरेजी तार लिखवाने और पढ़वाने में जो समय और पैसा लगता है, देवनागरी तार भेजने में उसकी बचत होती है।

देवनागरी तारों में शब्द गिनने के कुछ विशेष नियम हैं, जिनसे ये तार सस्ते पड़ते हैं। उन नियमों की जानकारी के लिए दिल्ली की केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने देवनागरी में तार नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की है।

इस पुस्तिका में सौ ऐसे वाक्यांश दिये गये हैं, जिनके लिए अँगरेजी के तारों में कई शब्दों का प्रभार (चार्ज) देना पड़ता है, किन्तु हिन्दी में उनके लिए या तो एक शब्द से काम चल जाता है

अथवा समासयुक्त शब्दों का प्रयोग कर या विभक्ति को मिलाकर लिखने से केवल एक शब्द का प्रभार देना पड़ता है। उदाहरण के लिए ‘day and night’ अँगरेजी में तीन शब्द हैं, पर हिन्दी तार में ‘रातदिन’ एक शब्द माना जायेगा।

उसी प्रकार अँगरेजी में लिखे ‘sent by goods train’ में चार शब्द गिने जायेंगे, पर हिन्दी में ‘मालगाड़ी से भेज दिया’ इसके लिए दो शब्दों का प्रभार देना पड़ेगा। ‘Again and again’ अँगरेजी में तीन शब्दों का वाक्यांश माना जायेगा, पर इसका हिन्दी-पर्याय एक शब्द का ‘बार-बार’ होगा।



इसी प्रकार, 'will be able to come' के लिए हिन्दी तार में लिखा जायेगा- 'आ सकूँगा', 'wear and tear' के लिए 'टूटफूट', 'Deputy Minister' के लिए 'उपमन्त्री' 'Chief Editor' के लिए 'प्रधान सम्पादक', 'Working Committee' के लिए 'कार्यसमिति', 'Errors and omissions' के लिए एक शब्द- 'भूलचूक' का प्रयोग कर पैसे की बचत हो जाती है।

तार लेखन की परिभाषा

तार लेखन (Telegram) की परिभाषा कम-से-कम शब्दों में सन्देश भेजने की पद्धति को 'तार' (Telegram) कहते हैं। आज संचार के कई विकसित संसाधन उपलब्ध हैं

जैसे - टेलीफोन, फैक्स, टेलीप्रिंटर, इंटरनेट, मोबाईल आदि। फिर भी 'तार' या टेलीग्राम की परंपरा विद्यमान है।

तार-लेखन के लिए ध्यातव्य बिन्दु

- तार भेजनेवाले फॉर्म पर तार पानेवाले का पता संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट हो।
- तार भेजे जानेवाले स्थान के निकटवर्ती तार घर के नाम का उल्लेख अवश्य हो।
- संदेश 'अतिसंक्षिप्त' और सुस्पष्ट हो।
- अनावश्यक शब्दों का प्रयोग न हो।

हिन्दी तारों के सामान्य नियम

महत्त्वपूर्ण नियम निम्नलिखित हैं-

1. दस अक्षरों तक के शब्द पर एक शब्द का तार प्रभार लगता है। यदि एक शब्द में दस से अधिक अक्षर हों, तो दस-दस अक्षरों का एक और जो अक्षर बाकी बच रहें, उनका भी एक शब्द माना जायेगा।
2. मात्रा को अलग अक्षर नहीं माना जाता।

जैसे - ज + ी = 'जी' एक ही अक्षर माना जाता है।

3. अधिक-से-अधिक दस अक्षरोंवाले सम्पूर्ण क्रियावाचक वाक्य या वाक्यांश को तार-प्रभार के लिए एक ही शब्द गिना जाता है;

जैसे -

- 'आ रहा हूँ'
- भेज दिया गया'
- पहुँचा दिया जायेगा'

इनको एक-एक शब्द ही माना जायेगा। अँगरेजी तार के हिसाब से 'has been sent' इत्यादि तीन शब्द माने जायेंगे।

4. विभक्तियों के चिह्नों अथवा सम्बन्धसूचक शब्दों,

जैसे - ने, को, के लिए, का, की, के, में, पै, पर, स आदि को शब्द के साथ मिलाकर लिखना चाहिए

जैसे - मोहन को, दिल्ली में, राम के लिए, स्टेशन पर इत्यादि। विभक्ति मिला हुआ शब्द एक ही शब्द गिना जाता है।

5. समासयुक्त शब्द भी एक ही शब्द गिना जाता है

जैसे - उत्तराभिलाषी, पराधीन, सन्तोषजनक, आवश्यक आदि एक ही शब्द माने जाते हैं।

6. संयुक्त व्यंजनों में प्रत्येक अक्षर को तार-प्रभार के लिए अलग-अलग गिना जायेगा

जैसे - क्त, क्व, क्ष, त्र, ज्ञ, र्म आदि दो-दो अक्षर तथा स्थ्य तीन अक्षर माने जायेंगे।

7. यदि बीच में स्थान न छोड़ा गया हो और दस से अधिक अक्षर न हों तो प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानसम्पादक, सहायकसम्पादक आदि एक ही शब्द गिने जाएँगे।
8. व्यापारिक चिह्न या संख्याएँ गिनने के लिए पाँच अंकों या चिह्नों तक के समूह का एक शब्द गिना जाता है।
9. जिस स्थान को तार भेजा जा रहा है, उसके नाम को एक शब्द माना जाता है, परन्तु उसे उस रूप में लिखना चाहिए, जिस रूप में तार-निर्देशिका में नामों की सूची में लिखा गया है। **उदाहरण के लिए**, 'विक्टोरिया गार्डन बम्बई' को एक शब्द गिना जायेगा।
10. शब्दों के प्रारम्भिक अक्षरों में से प्रत्येक में एक शब्द माना जाता है
जैसे - 'केन्द्रीय लोकनिर्माण विभाग' के लिए 'के. लो. नि. वि.' लिखा जाय तो ये चार शब्द माने जायेंगे।
11. प्रत्येक विरामचिह्न और कोष्ठकों को भी शब्द माना जाता है। दो शब्दों के बीच यदि वक्ररेखा का प्रयोग हुआ हो, तो इसको भी एक शब्द माना जायेगा।
जैसे - 'मई/ जून' को तीन गिना जायेगा।

तार कैसे लिखना चाहिए

- तार पर पता लिखने में पानेवाले का ब्योरा स्पष्ट रूप से देना चाहिए ताकि तारघर के कर्मचारियों को इधर-उधर भटकना न पड़े। बड़े शहरों में सड़क का नाम और घर की संख्या भी देनी चाहिए।
- जिन शहरों में डाक का वितरण क्षेत्रों के अनुसार होता है, वहाँ तार भेजने के समय वितरण-क्षेत्र की संख्या लिख देना आवश्यक है, ताकि तार का वितरण जल्दी हो जाय। इसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाता।

तार-लेखन के उदाहरण

1. प्रखर द्वारा प्रवर को विदेश-यात्रा की सूचना के लिए भेजा गया तार
सेवा में,
प्रवर अनू
नेतरहाट,
गुमला
अमरीका-यात्रा 20 जून तय सप्ताह पूर्व आइए।
.....प्रखर (प्रेषक)
भेजनेवाले के हस्ताक्षर व पता.....तार से न भेजा जाय
प्रखर
नावकोठी, बेगूसराय
851130



2. पुत्र द्वारा पिता को भेजा गया तार

सेवा में,

श्री अरविन्द कुमार

बसंत-विहार,

नई दिल्ली-28 माँ अस्वस्थ शीघ्रतातिशीघ्र आइए।

.....प्रवर (प्रेषक)

भेजनेवाले के हस्ताक्षर व पता.....तार से न भेजा जाय

प्रवर अनू

बी. पी. एस. पटना-25





निबंध के प्रकार

निबंध तीन प्रकार के होते हैं।

1. **वर्णनात्मक** – संजीव या निर्जीव पदार्थ के बारे में जब हम निबंध लेखन करते हैं तब उसे वर्णनात्मक निबंध कहते हैं। यह निबंध लेखन स्थान, परिस्थिति, व्यक्ति आदि के आधार पर निबंध लिखा जाता है।

➤ प्राणी

- श्रेणी
- प्राप्ति स्थान
- आकार प्रकार
- स्वभाव
- विचित्रता
- उपसंहार

➤ मनुष्य

- परिचय
- प्राचीन इतिहास
- वंश परंपरा
- भाषा और धर्म
- सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

➤ स्थान

- अवस्थिति
- नामकरण
- इतिहास
- जलवायु
- शिल्प
- व्यापार
- जाति धर्म
- दर्शनीय स्थान
- उपसंहार

2. **विवरणात्मक** – ऐतिहासिक, पौराणिक या फिर आकस्मिक घटनाओं पर जब हम निबंध लेखन करते हैं उसे विवरणात्मक निबंध कहते हैं। यह निबंध लेखन यात्रा, मैच, ऋतु आदि पर लिख सकते हैं।

➤ ऐतिहासिक

- घटना का समय और स्थान
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- कारण और फलाफल
- इष्ट अनिष्ट और मंतव्य

➤ **आकस्मिक घटना**

- परिचय
- तारीख, स्थान और कारण
- विवरण और अंत
- फलाफल
- व्यक्ति और समाज
- कैसा प्रभाव हुआ
- विचारात्मक

3. **विचारात्मक निबंध:** जब गुण , दोष या धर्म आदि पर निबंध लेखन किया जाता है उसे विचारात्मक निबंध कहते हैं या निबंध में किसी भी प्रकार की देखी गई या सुनी गई बातों का वर्णन नहीं किया जाए तो विचारात्मक निबंध कहलाता है। इसमें केवल कल्पना और चिंतन शक्ति की गई बातें लिख सकते हैं।

- अर्थ, परिभाषा ,भूमिका
- सार्वजनिक या सामाजिक ,स्वाभाविक ,कारण
- तुलना
- हानि और लाभ
- प्रमाण
- उप संहार

निबंध लिखते समय नीचे गई बातों को ध्यान में रखें

- निबंध में विषय पर पूरा ज्ञान होना चाहिए।
- अलग-अलग प्रकार के अनुच्छेद को एक दूसरे के साथ जुड़े होना चाहिए।
- निबंध की भाषा सरल होनी अनिवार्य है।
- निबंध लिखे गए विषय की जितनी हो सके उतनी जानकारी प्राप्त करें।
- निबंध में स्वच्छता और विराम चिन्हों पर खास ध्यान दें।
- निबंध में मुहावरों का प्रयोग होना जरूरी है।
- निबंध में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें।
- निबंध के आरंभ में और अंत में कविता की पंक्तियों का भी उल्लेख कर सकते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान पर निबंध

अपने प्रधानमंत्री बनने के बाद माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांधी जयंती के अवसर पर 02 अक्टूबर 2014, को इस अभियान का आगाज़ किया था। भारत को स्वच्छ करने की परिवर्तन कारी मुहिम चलाई थी। भारत को साफ-सुथरा देखना गांधी जी का



सपना था। गांधी जी हमेशा लोगों को अपने आस-पास साफ-सफाई रखने को बोलते थे। स्वच्छ भारत के माध्यम से विशेषकर ग्रामीण अंचल के लोगो के अंदर जागरूकता पैदा करना है कि वो शौचालयों का प्रयोग करें, खुले में न जाये। इससे तमाम बीमारियाँ भी फैलती है। जोकि किसी के लिए अच्छा नहीं है।

“जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें।” -महात्मा गांधी।

महात्मा गांधी जी की ये बात स्वच्छता पर भी लागू होती है। अगर हम समाज में बदलाव देखना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा। हर कोई दूसरों की राह तकता रहता है। और पहले आप-पहले आप में गाड़ी छूट जाती है। साफ-सफाई से हमारा तन-मन दोनों स्वस्थ और सुरक्षित रहता है। यह हमें किसी और के लिए नहीं, वरन् खुद के लिए करना है। यह जागरूकता जन-जन तक पहुँचानी होगी। हमें इसके लिए ज़मीनी स्तर से लगकर काम करना होगा। हमें बचपन से ही बच्चों में सफाई की आदत डलवानी होगी। उन्हें सिखाना होगा कि, एक कुत्ता भी जहां बैठता है, उस जगह को झाड़-पोछ कर बैठाता है। जब जानवरों में साफ-सफाई के प्रति इतनी जागरूकता है, फिर हम तो इन्सान हैं।

निष्कर्ष

गांधी जी की 145 वीं जयंती को शुरू हुआ यह अभियान, 2 अक्टूबर 2019 को पूरे पाँच वर्ष पूरे कर चुका है। जैसा कि 2019 तक भारत को पूर्ण रूप से ओपन डेफिकेसन फ्री (खुले में शौच मुक्त) बनाने का लक्ष्य रखा गया था। यह लक्ष्य पूर्णतः फलीभूत तो नहीं हुआ, परंतु इसके आँकड़ों में आश्चर्यजनक रूप से उछाल आया है।

दिवाली पर निबंध

दीपावली का अर्थ: दिवाली जिसे “दीपावली” के नाम से भी जाना जाता है, भारत और दुनिया भर में रहने वाले हिंदुओं के सबसे पवित्र त्योहारों में से एक है। ‘दीपावली’ संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है – दीप + आवली। ‘दीप’ का अर्थ होता है ‘दीपक’ तथा ‘आवली’ का अर्थ होता है ‘श्रृंखला’, जिसका मतलब हुआ दीपों की श्रृंखला या दीपों की पंक्ति। दीपावली का त्योहार कार्तिक मास के अमावस्या के दिन मनाया जाता है। यह त्योहार दुनिया भर के लोगों द्वारा बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। हालांकि इसे हिंदू त्योहार माना जाता है, लेकिन विभिन्न समुदायों के लोग भी पटाखे और आतिशबाजी के जरिए इस उज्वल त्योहार को मनाते हैं।

दीपावली त्योहार की तैयारी: दीपावली त्योहार की तैयारियाँ दिवाली से कई दिनों पहले ही आरंभ हो जाती हैं। दीपावली के कई दिनों पहले से ही लोग अपने घरों की साफ-सफाई करने में जुट जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि जो घर साफ-सुथरे होते हैं, उन घरों में दिवाली के दिन माँ लक्ष्मी विराजमान होती हैं और अपना आशीर्वाद प्रदान करके वहां सुख-समृद्धि में बढ़ोत्तरी करती हैं। दिवाली के नजदीक आते ही लोग अपने घरों को दीपक और तरह-तरह के लाइट से सजाना शुरू कर देते हैं।

दिवाली में पटाखों का महत्व: दिवाली को “रोशनी का त्योहार” कहा जाता है। लोग मिट्टी के बने दीपक जलाते हैं और अपने घरों को विभिन्न रंगों और आकारों की रोशनी से सजाते हैं, जिसे देखकर कोई भी मंत्रमुग्ध हो सकता है। बच्चों को पटाखे जलाना और विभिन्न तरह के आतिशबाजी जैसे फुलझड़ियाँ, रॉकेट, फव्वारे, चक्री आदि बहुत पसंद होते हैं।

दिवाली का इतिहास: हिंदुओं के मुताबिक, दिवाली के दिन ही भगवान राम 14 वर्षों के वनवास के बाद अपनी पत्नी सीता, भाई लक्ष्मण और उनके उत्साही भक्त हनुमान के साथ अयोध्या लौटे थे, अमावस्या की रात होने के कारण दिवाली के दिन काफी अंधेरा होता है, जिस वजह से उस दिन पुरे अयोध्या को दीपों और फूलों से श्री राम चंद्र के लिए सजाया गया था ताकि भगवान राम के आगमन में कोई परेशानी न हो, तब से लेकर आज तक इसे दीपों का त्योहार और अंधेरे पर प्रकाश की जीत के रूप में मनाया जाता है।

इस शुभ अवसर पर, बाजारों में गणेश जी, लक्ष्मी जी, राम जी आदि की मूर्तियों की खरीदारी की जाती है। बाजारों में खूब चहल पहल होती है। लोग इस अवसर पर नए कपड़े, बर्तन, मिठाइयां आदि खरीदते हैं। हिंदुओं द्वारा देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है क्योंकि व्यापारी दिवाली पर नई खाता बही की शुरुआत करते हैं। साथ ही, लोगों का मानना है कि यह खूबसूरत त्योहार सभी के लिए धन, समृद्धि और सफलता लाता है। लोग दिवाली के त्योहार के दौरान अपने परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ उपहारों का आदान-प्रदान करने के लिए तत्पर रहते हैं।

दीपावली से जुड़ी सामाजिक कुरीतियां

दिवाली जैसे धार्मिक महत्व वाले पर्व को भी कुछ असामाजिक तत्व अपने निरंतर प्रयास जैसे मदिरापान, जुआ खेलना, टोना-टोटका करना और पटाखों के गलत इस्तेमाल से खराब करने में जुटे रहते हैं। अगर समाज में दिवाली के दिन इन कुरीतियों को दूर रखा जाए तो दिवाली का पर्व वास्तव में शुभ दीपावली हो जाएगा।

उपसंहार

दीपावली अपने अंदर के अंधकार को मिटा कर समूचे वातावरण को प्रकाशमय बनाने का त्योहार है। बच्चे अपनी इच्छानुसार बम, फुलझड़ियाँ तथा अन्य पटाखे खरीदते हैं और आतिशबाजी का आनंद उठाते हैं। हमें इस बात को समझना होगा कि दीपावली के त्योहार का अर्थ दीप, प्रेम और सुख-समृद्धि से है। इसलिए पटाखों का इस्तेमाल सावधानी पूर्वक और अपने बड़ों के सामने रहकर करना चाहिए। दिवाली का त्योहार हमें हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। दीपावली का त्योहार सांस्कृतिक और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक है। इस त्योहार के कारण लोगों में आज भी सामाजिक एकता बनी हुई है। हिंदी साहित्यकार गोपालदास नीरज ने भी कहा है, “जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।” इसलिए दीपोत्सव यानि दीपावली पर प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा देने के प्रयत्न करने चाहिए।

निबंध लेखन कैसे लिखते हैं?

- भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
- विचारों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।
- लिखने के बाद उसे पढ़िए, उसमें आवश्यक सुधार कीजिए।
- भाषा संबंधी त्रुटियाँ दूर कीजिए।
- वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।
- विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

निबंध में कितने भाग होते हैं?

निबंध कैसे लिखते हैं? यह भी एक कला है, और निबंध के मुख्यतः तीन भाग होते हैं: प्रस्तावना, विषय प्रतिपादन और उपसंहार।

निबंध की रूपरेखा कैसे लिखते हैं?

रूपरेखा संक्षिप्त और सरल हो। यह आवश्यक नहीं है कि यह पूर्णतः सुसंस्कृत लेखन हो; इसे बस मुद्दा समझाने योग्य होना है। जब आप अपने विषय पर अधिक शोध करते हैं और अपने लेखन को मुद्दे पर केन्द्रित कर संकुचित करते जाते हैं तब अप्रासंगिक सूचनाओं को हटाने में संकोच न करें। रूपरेखाओं को याद दिलाने के साधन के रूप में प्रयोग करें।



निबंध लिखने की शुरुआत कैसे करें?

- निबंध लेखन के पूर्व विषय पर विचार कर सकते हैं-
- भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- विचारों को क्रमबद्ध रूप से स्पष्ट करना चाहिए।
- विचारों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।
- लिखने के बाद उसे पढ़िए, उसमें आवश्यक सुधार कीजिए।
- भाषा संबंधी त्रुटियां दूर कीजिए।



पर्यायवाची शब्द

‘पर्याय’ का अर्थ है - ‘समान’ तथा ‘वाची’ का अर्थ है - ‘बोले जाने वाले’ अर्थात् जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें ‘पर्यायवाची शब्द’ कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं - जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें ‘पर्यायवाची शब्द’ कहते हैं।

समान अर्थवाले शब्दों को ‘पर्यायवाची शब्द’ या समानार्थक भी कहते हैं।

जैसे - सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश - इन सभी शब्दों का अर्थ है ‘सूरज’।

इस प्रकार ये सभी शब्द ‘सूरज’ के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे।

पर्यायवाची शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या होता है

पर्यायवाची शब्द दो पदों से मिल कर बना है - **पर्याय + वाची**।

- पर्याय का मतलब है - अर्थ
- वाची का मतलब है - बताने वाला

अतः पर्यायवाची शब्द से तात्पर्य है - अर्थ बताने वाला। पर्यायवाची शब्दों से हमें एक ही शब्द के लिए प्रयोग होने वाले अन्य शब्दों का पता चलता है। इन सभी सभी शब्दों का एक ही अर्थ होता है।

इसी प्रकार समानार्थक / समानार्थी शब्द भी दो पदों से मिलकर बना है -

समान + अर्थक / समान + अर्थी

- समान - एक जैसे
- अर्थक / अर्थी - अर्थ वाले

अतः समानार्थक / समानार्थी का शाब्दिक अर्थ है - एक जैसे अर्थ वाले शब्द।

पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की व्याकरणीय परिभाषा

- किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयोग किए जाने वाले समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं।
- जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहते हैं।

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा (सरल शब्दों में)

जिन शब्दों की ध्वनियाँ (या रूप) अलग-अलग होती हैं, लेकिन अर्थ एक जैसे होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्द दिखते तो अलग-अलग हैं, लेकिन इनका मतलब एक ही होता है।



पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण

(अ)

अतिथि :- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अमृत :- सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवोदक ।

अग्नि :- आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

अनुपम :- अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य।

अनबन :- मतभेद, वैमनस्य, विरोध, असहमति, झगड़ा, तकरार, विवाद, बखेड़ा, टंटा।

अनमना :- उदास, अन्यमनस्क, उन्मन, विमुख, विरक्त, उदास, गतानुराग, अन्यमनस्क।

(आ)

आँख :- लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

आकाश :- नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष,

आनंद :- हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आहाद, प्रमोद, उल्लास।

आश्रम :- कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा ।

आम :- रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, चूत, सहकार, च्युत (आम का पेड़)

आंसू :- नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

आत्मा :- जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्त्व, अंतःकरण।

(इ)

इंसाफ :- न्याय, फैसला, अदल।

इजाजत :- स्वीकृति, मंजूरी, अनुमति।

इज्जत :- मान, प्रतिष्ठा, आदर, आबरू।

इनाम :- पुरस्कार, पारितोषिक, पारितोषित करना, बख्शीश।

इकट्टा :- समवेत, संयुक्त, समन्वित, एकत्र, संचित, संकलित, संग्रहीत।

(ई)

ईश्वर :- परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

ईख :- गन्ना, ऊख, इक्षु।

ईप्सा :- इच्छा, खाहिश, कामना, अभिलाषा।

ईमानदारी :- सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, यथार्थता, सत्यता, निश्छलता, दयानतदारी

ईर्ष्या :- विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।

ईसा :- यीशु, ईसामसीह, मसीहा।

(उ)

उपवन :- बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, पुष्पोद्यान, फुलवारी, पुष्पवाटिका, गुलिस्तान, चमन

उक्ति :- कथन, वचन, सूक्ति।

उग्र :- प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

उचित :- ठीक, मुनासिब, वाजिब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

उच्छृंखल :- उदंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

उजड़ :- अशिष्ट, असभ्य, गँवार, जंगली, देहाती, उदंड, निरकुंश।

उजला :- उज्वल, श्वेत, सफ़ेद, धवल।

उजाड :- जंगल, बियावान, वन।

उजाला :- प्रकाश, रोशनी, दीप्ति, द्योत, प्रभा, विभा, आलोक, तेज, ओज, चाँदनी।

(ऊ)

ऊँचा :- तुंग, उच्च, बुलंद, उर्ध्व, उत्ताल, उन्नत, ऊपर, शीर्षस्थ, उच्च कोटि का, बढ़िया।

ऊँचाई :- बुलंदी, उठान, उच्चता, तुंगता, बुलन्दी।

ऊँचा करना :- उन्नत करना, उत्थित करना, ऊपर उठाना।

ऊँट :- करभ, उष्ट्र, लंबोष्ठ, साँड़िया।

ऊखल :- ओखली, उलूखल, कूँडी।

ऊसर :- अनुपजाऊ, बंजर, अनुर्वर, वंध्या, भूमि।

(ऋ)

ऋक्ष :- भालू, रीछ, भीलूक, भल्लूक।

ऋक्षेश :- चंद्रमा, चंदा, चाँद, शशि, राकेश, कलाधर, निशानाथ।

ऋण :- कर्ज, कर्जा, उधार, उधारी।

ऋणी :- कर्जदार, देनदार।

ऋतु :- रुत, मौसम, मासिक धर्म, रजःस्राव।

ऋतुराज :- बहार, मधुमास, वसंत, ऋतुपति, मधुऋतु।

ऋषभ :- वृष, वृषभ, बैल, पुंगव, बलीवर्द, गोनाथ।

(ए)

एकतंत्र :- राजतंत्र, एकछत्र, तानाशाही, अधिनायकतंत्र।

एकदंत :- गणेश, गजानन, विनायक, लंबोदर, विघ्नेश, वक्रतुंड।

एतबार :- विश्वास, यकीन, भरोसा।

एषणा :- इच्छा, आकांक्षा, कामना, अभिलाषा, हसरत।

एहसान :- कृपा, अनुग्रह, उपकार।

एक करना :- एकीकरण करना, सम्मिलित करना, मिलाना, जोड़ना, संघटित करना, संगठन बनाना।



(ऐ)

ऐठ :- कड़, दंभ, हेकड़ी, ठसक।

ऐबी :- बुरा, खोटा, दुष्ट, अवगुण, गलती, त्रुटि, खामी, खराबी, कमी, अवगुण।

ऐयार :- धूर्त, मक्कार, चालाक।

ऐहिक :- सांसारिक, लौकिक, दुनियावी।

ऐक्य :- एकत्व, एका, एकता, मेल।

ऐश्वर्य :- धन-सम्पत्ति, विभूति, वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऋद्धि-सिद्धि।

(ओ)

ओज :- तेज, शक्ति, बल, चमक, कांति, दीप्ति, वीर्य।

ओजस्वी :- बलवान, बलशाली, बलिष्ठ, पराक्रमी, जोरावर, ताकतवर, शक्तिशाली।

ओठ :- ओष्ठ, अधर, लब, रदनच्छद, होठ।

ओला :- हिमगुलिका, उपल, करका, बिनौरी, तुहिन, जलमूर्तिका, हिमोपल।

(औ)

औचक :- अचानक, यकायक, सहसा।

औरत :- स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।

औचित्य :- उपयुक्तता, तर्कसंगति, तर्कसंगतता।

औलाद :- संतान, संतति, आसऔलाद, बाल-बच्चे।

औषधालय :- चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल, हस्पताल, चिकित्सा भवन, शफाखाना।

(क)

कमल :- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज।

किरण :- गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

कामदेव :- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति।

(ख)

खाना :- भोज्य सामग्री, खाद्य वस्तु, आहार, भोजन।

खग :- पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

खंभा :- स्तूप, स्तम्भ, खंभ।

खद्योत :- जुगनू, सोनकिरवा, पटबिजना, भगजोगिनी।

खर :- गधा, गर्दभ, खोता, रासभ, वैशाखनंदन।

खरगोश :- शशक, शशा, खरहा।

(ग)

गणेश :- विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन।

गंगा :- देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्वपगा, देवपगा, ध्रुवन्दा, सुरसरिता, देवनदी।

गज :- हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल।

गाय :- गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

गृह :- घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आलय, आवास, मंदिर।

गर्मी :- ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

(घ)

घट :- घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।

घर :- आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास-स्थान, शाला, सदन।

घटना :- हादसा, वारदात, वाक्या।

घना :- घन, सघन, घनीभूत, घनघोर, गङ्गिन, घनिष्ठ, गहरा, अविरल।

घपला :- गड़बड़ी, गोलमाल, घोटाला।

घमंड :- दंभ, दर्प, गर्व, गरूर, गुमान, अभिमान, अहंकार।

(च)

चिराग :- दीया, दीपक, दीप, शमा।

चेला :- शागिर्द, शिष्य, विद्यार्थी।

चेहरा :- शक्ल, आनन, मुख, मुखड़ा।

चोरी :- स्तेय, चौर्य, मोष, प्रमोष।

चौकन्ना :- सचेत, सजग, सावधान, जागरूक, चौकस।

चौकीदार :- प्रहरी, पहरेदार, रखवाला।

(छ)

छतरी :- छत्र, छाता, छत्ता।

छली :- छलिया, कपटी, धोखेबाज।

छवि :- शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

छानबीन :- जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

छँटनी :- कटौती, छँटाई, काट-छाँट।

(ज)

जल :- मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

जहर :- गरल, कालकूट, माहुर, विष।

जगत :- संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

जंगल :- विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।

जेवर :- गहना, अलंकार, भूषण, आभरण, मंडल।

ज्योति :- आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।



(झ)

झरना :- उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

झण्डा :- ध्वजा, पताका, केतु।

झंझा :- अंधड़, आँधी, बवंडर, झंझावत, तूफान।

झाँसा :- दगा, धोखा, फरेब, ठगी।

झींगुर :- घुरघुरा, झिल्ली, जंजीरा, झिल्लिका।

झंझट :- झमेला, बखेड़ा, पचड़ा, प्रपंच, कलह, झगड़ा-झंझट, बवंडर, बवाल।

झगड़ा :- कलह, तकरार, कहासुनी, वैमत्य, मतभेद, खटपटा, टंटा, लड़ाई, विवाद, विरोध, संघर्ष।

(ट)

टंकार :- टंकोर, ध्वनि, झनकार।

टकराना :- टक्कर खाना, भिड़ना, चोट खाना, लड़ जाना, ठोकर खाना।

टका :- सिक्का, रुपया, धन, द्रव्य।

टक्कर :- ठोकर, मुठभेड़, भिड़ंत, समाघात, धक्का, संघर्ष, बराबरी, सामना, घाटा, हानि।

टपकना :- चूना, झरना, रिसना, स्रावित होना।

टहलना :- सैर-सपाटा, घूमना, भ्रमण करना, चलना, फिरना।

(ठ)

ठंडा :- शीतल, सर्द, शांत, गम्भीर, सुस्त, मंद, धीमा, उदासीन, भावहीन।

ठगना :- छलना, धोखा देना, चकमा देना, भुलावा, लूटना, लूट लेना, चूना लगाना, ऐंठना।

ठगी :- कपट, मायाजाल, छल, बेईमानी, धोखेबाजी, उचक्कापन, जालासाजी।

ठसक :- नखर, चोंचला, मान, अभिमान, शान, गर्व, घमंड।

ठहरना :- रुकना, थमना, टिकना, विराम, स्थित होना, प्रतीक्षा करना, इंतजार करना।

ठाट :- तड़क-भड़क, शोभा, सजावट, आयोजन, तैयारी, व्यवस्था, प्रबंध, झुंड, दल, समूह।

ठिकाना :- स्थान, जगह, अड्डा, आयोजन, प्रबंध, व्यवस्था।

(ड)

डकारना :- डकार लेना, गरजना, दहाड़ना।

डगमगाना :- डावाँडोल होना, अस्थिर होना, काँपना, हिलना, लड़खड़ाना, थरथराना, विचलित होना।

डफला :- डफ, चंग, खंजरी।

डब्बा :- डिब्बा, ढक्कनदार, बर्तन, केस, कम्पार्टमेन्ट।

डरना :- भयभीत होना, त्रास पाना, आतंकित होना, भय खाना, त्रस्त होना।

डरपोक :- भीरु, भयभीत, त्रस्त, कायर, कापुरुष, आतंकित करना।

(ढ)

ढब :- ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।

ढाँचा :- पंजर, ठठरी।

ढीला-ढाला :- शिथिलता, आलसी, सुस्ती, अतत्परता।

ढिँढोरा :- मुनादी, ढँढोरा, डुगडुगी, डौंड़ी।

ढिग :- समीप, निकट, पास, आसन्न।

(त)

तालाब :- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्याकर, पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग।

तोता :- सुग्गा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय।

तरुवर :- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रूख, पादप।

तलवार :- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

तरकस :- तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

(थ)

थोड़ा :- अल्प, न्यून, जरा, कम।

थाती :- जमापूँजी, धरोहर, अमानत।

थाक :- ढेर, समूह।

थप्पड़ :- तमाचा, झापड़।

थकान :- थकावट, श्रान्ति, थकन, परिश्रान्ति, क्लान्ति।

थल :- स्थान, स्थल, भूमि, धरती, जमीन, जगह।

(द)

दूध :- दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।

दास :- नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

दासी :- परिचारिका, अनुचरी, बाँदी, नौकरानी।

देवता :- सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिन्दन, अमर्त्य, अस्वप्न।

(ध)

धन :- दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

धरती :- धरा, धरती, वसुधा, जमीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही।

धंधा :- आजीविका, उद्योग, कामधंधा, व्यवसाय।

धनंजय :- अर्जुन, सव्यसाची, पार्थ, गुडाकेश, बृहन्नला।

धनु :- धनुष, पिनाक, शरासन, कोदंड, कमान, धनुही।

(न)

नदी :- तनूजा, सरित, शौवाल्लिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निर्झरिणी।

नौका :- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।

नाग :- विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

नर्क :- यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।

(प)

पुत्र :- बेटा, लड़का, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

पुत्री :- बेटा, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लड़की, सुता, तनया।



पृथ्वी :- धरा, धरती, भू, धरित्री, धरणी, अग्नि, मेदिनी, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

पुष्प :- फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

पानी :- जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

परिवार :- कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना।

परिवर्तन :- बदलाव, हेरफेर, तबदीली, फेरबदल।

(फ)

फल :- फलम, बीजकोश।

फ़ख :- गौरव, नाज, गर्व, अभिमान।

फजर :- भोर, सवेरा, प्रभात, सहर, सकार।

फतह :- सफलता, विजय, जीत, जफर।

फरमान :- हुक्म, राजादेश, राजाज्ञा।

फलक :- आसमान, आकाश, गगन, नभ, व्योम।

फसल :- शस्य, पैदावार, उपज, खिरमन, कृषि- उत्पाद।

(ब)

बाण :- सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

बिजली :- घनप्रिया, इन्द्रवज्र, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा।

ब्रह्मा :- विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि।

बहुत :- अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार।

बादल :- मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर।

(भ)

भौरा :- अलि, मधुवत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षट्पद, भृंग, भ्रमर।

भोजन :- खाना, भोज्य सामग्री, खाद्य वस्तु, आहार।

भय :- भीति, डर, विभीषिका।

भाई :- तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

भंवरा :- भौरा, भ्रमर, मधुकर, मधुप, मिलिंद, अलि, अलिंद, भृंग।

भक्त :- आराधक, अर्चक, पुजारी, उपासक, पूजक।

(म)

मछली :- मीन, मत्स्य, झख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

महादेव :- शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश।

मेघ :- घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

मुनि :- यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

मित्र :- सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

मोर :- केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय।

(य)

यम :- सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।

यमुना :- कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।

यंत्रणा :- व्यथा, तकलीफ, वेदना, यातना, पीड़ा।

यकीन :- भरोसा, ऐतबार, आस्था, विश्वास।

यज्ञोपवीत :- जनेऊ, उपवीत, ब्रह्मसूत्र।

यतीम :- बेसहारा, अनाथ, माँ-बापविहीन।

यशस्वी :- मशहूर, विख्यात, नामवर, कीर्तिवान, ख्यातिवान।

(र)

रात्रि :- निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी।

रात :- रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा, विभावरी।

राजा :- नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश।

रवि :- सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।

रामचन्द्र :- अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर।

रावण :- दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।

रक्त :- खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।

(ल)

लक्ष्मी :- चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्ममा, सिन्धुसुता, कमलासना।

लड़का :- बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।

लड़की :- बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला, कन्या।

लक्ष्मण :- लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।

लता :- बल्लरी, बल्ली, लतिका, बेली।

लंघन :- उपवास, व्रत, रोजा, निराहार।

(व)

वृक्ष :- तरु, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।

विवाह :- शादी, गठबंधन, परिणय, व्याह, पाणिग्रहण।

वायु :- हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।

वसन :- अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।

विधवा :- अनाथा, पतिहीना।

विष :- जहर, हलाहल, गरल, कालकूट।

विश्व :- जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।

वारिश :- वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।



(श)

शेर :- हरि, मृगराज, व्याघ्र, मृगेन्द्र, केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।

शिव :- भोलेनाथ, शम्भू, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ, शंकर।

शत्रु :- रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, प्रतिपक्षी, अरि, विपक्षी, अराति।

शिक्षक :- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

शेषनाग :- अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पन्नग, फणीश, सारंग।

(ष)

षंजन :- आर्लिगन, मिलन।

षंडाली :- तालाब, ताल।

षड्यंत्र :- साजिश, कुचक्र, कूट-योजना।

षडानन :- षटमुख, कार्तिकेय, षण्मातुर।

(स)

समुद्र :- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

समूह :- दल, झुंड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृंद, गण, पुंज, संघ, समुच्चय।

सुमन :- कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल।

सीता :- वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।

सर्प :- साँप, अहि, भुजंग, ब्याल, फणी, पन्नग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।

(ह)

हंगामा :- कोलाहल, अशांति, शोरगुल, हल्ला, शोर 2. उत्पात, उपद्रव, हुड़दंग।

हँसमुख :- आनंदित, उल्लसित, मगन, प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज।

हँसी :- मुस्कान, मुस्कारहट, ठहाका, खिलखिलाहट, मजाक, दिल्लगी, खिल्ली।

हत्या :- वध, हिंसा, कत्ल, खून।

हत्यारा :- हिंसक, खूनी, जीवघाती, कातिल, घातक।



प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और नए अर्थ का बोध कराते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं। भाषा में प्रत्यय का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रत्यय के उदाहरण -

खिल + आडी	खिलाडी
मिल + आवट	मिलावट
पढ़ + आकू	पढ़ाकू
झूल + आ	झूला

प्रत्यय तीन प्रकार-

1. संस्कृत प्रत्यय
2. हिन्दी प्रत्यय
3. विदेशी प्रत्यय

हिन्दी प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं -

- कृत् प्रत्यय
 - तद्धित प्रत्यय
1. संस्कृत प्रत्यय -

जैसे -

इत	हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
इक	मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक
ईय	भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
एय	आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
तम	अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
वान्	धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान



मान्	श्रीमान्, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
त्व	गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
शाली	वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली
तर	श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघूत्तर

2. हिन्दी प्रत्यय -

हिन्दी प्रत्यय मुख्यतया दो प्रकार के होते हैं -

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत् प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत् प्रत्यय -

कृत् प्रत्यय उदाहरण -

न	बेलन, बंधन, नंदन, चंदन
ई	बोली, सोची, सुनी, हँसी
आ	झूला, भूला, खेला, मेला
अन	मोहन, रटन, पठन
आहट	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट

जैसे - विशेषण की रचना करने वाले कृत् प्रत्यय -

आडी	खिलाडी, अगाडी, अनाडी, पिछाडी
एरा	लुटेरा, बसेरा
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ
ऊ	डाकू, चाकू, चालू, खाऊ

कृत् प्रत्यय के भेद

1. कृत् वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

1. कृत् वाचक -

कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत् वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

कृत् वाचक प्रत्यय उदाहरण -

हार	पालनहार, चाखनहार, राखनहार
वाला	रखवाला, लिखनेवाला, पढ़नेवाला
क	रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक
अक	लेखक, गायक, पाठक, नायक
ता	दाता, माता, गाता, नाता

2. कर्म वाचक कृत् प्रत्यय -

कर्म का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

कर्म वाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

औना	खिलौना, बिछौना
नी	ओढ़नी, मथनी, छलनी
ना	पढ़ना, लिखना, गाना

3. करण वाचक कृत् प्रत्यय -

साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

करण वाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

अन	पालन, सोहन, झाड़न
नी	चटनी, कतरनी, सूँघनी
ऊ	झाड़ू, चालू
ई	खाँसी, धाँसी, फाँसी

4. भाव वाचक कृत् प्रत्यय -

क्रिया के भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

भाववाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

आप	मिलाप, विलाप
आवट	सजावट, मिलावट, लिखावट
आव	बनाव, खिंचाव, तनाव
आई	लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय -

भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

भाववाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

आहट	कडवाहट
ता	सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
आपा	मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
ई	गर्मी, सर्दी, गरीबी

3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय -

सम्बन्ध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

इक	शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु	कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला	रंगीला, चमकीला, भडकीला
तर	कठिनतर, समानतर, उच्चतर

4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय -

गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

वान	गुणवान, धनवान, बलवान
ईय	भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ	सूखा, रूखा, भूखा
ई	क्रोधी, रोगी, भोगी

5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय -

स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

वाला	शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला
इया	उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया
ई	रूसी, चीनी, राजस्थानी



6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय -

लघुता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे -

इया	लुटिया
ई	प्याली, नाली, बाली
डी	चमडी, पकडी
ओला	खटोला, संपोला, मंझोला

7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय -

स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

आइन	पंडिताइन, ठकुराइन
इन	मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
नी	मोरनी, शेरनी, नन्दनी
आनी	सेठानी, देवरानी, जेठानी

उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे -

गी	ताजगी, बानगी, सादगी
गर	कारीगर, बाजीगर, सौदागर
ची	नकलची, तोपची, अफीमची
दार	हवलदार, जमींदार, किरायेदार
खोर	आदमखोर, चुगलखोर, रिश्तखोर
गार	खिदमतगार, मददगार, गुनहगार
नामा	बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा
बाज	धोखेबाज, नशेबाज, चालबाज
मन्द	जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अकलमन्द
आबाद	सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबादइन्दा - बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा

इश	साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश
गाह	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	खानदान, पीकदान, कूडादान
बन्द	कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद





भाषा

भाषा की परिभाषा

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है।

अथवा

जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावों को समझ सके उसे भाषा कहते हैं।

अथवा

सरल शब्दों में: सामान्यतः भाषा मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी को कहते हैं।

मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतो का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

भाषा के प्रकार

भाषा के तीन रूप होते हैं:

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

1. मौखिक भाषा

विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में वक्ताओं ने बोलकर अपने विचार प्रकट किए तथा श्रोताओं ने सुनकर उनका आनंद उठाया। यह भाषा का मौखिक रूप है। इसमें वक्ता बोलकर अपनी बात कहता है व श्रोता सुनकर उसकी बात समझता है।

इस प्रकार, भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर उसे समझता है, मौखिक भाषा कहलाती है।

दूसरे शब्दों में- जिस ध्वनि का उच्चारण करके या बोलकर हम अपनी बात दूसरों को समझाते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं।

उदाहरण: टेलीफोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि।

मौखिक या उच्चरित भाषा, भाषा का बोल-चाल का रूप है। उच्चरित भाषा का इतिहास तो मनुष्य के जन्म के साथ जुड़ा हुआ है। मनुष्य ने जब से इस धरती पर जन्म लिया होगा तभी से उसने बोलना प्रारंभ कर दिया होगा तभी से उसने बोलना प्रारंभ कर दिया होगा। इसलिए यह कहा जाता है कि भाषा मूलतः मौखिक है।

यह भाषा का प्राचीनतम रूप है। मनुष्य ने पहले बोलना सीखा। इस रूप का प्रयोग व्यापक स्तर पर होता है।

मौखिक भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं

- यह भाषा का अस्थायी रूप है।
- उच्चरित होने के साथ ही यह समाप्त हो जाती है।
- वक्ता और श्रोता एक-दूसरे के आमने-सामने हों प्रायः तभी मौखिक भाषा का प्रयोग किया जा सकता है।
- इस रूप की आधारभूत इकाई 'ध्वनि' है। विभिन्न ध्वनियों के संयोग से शब्द बनते हैं जिनका प्रयोग वाक्य में तथा विभिन्न वाक्यों का प्रयोग वार्तालाप में किया जाता है।
- यह भाषा का मूल या प्रधान रूप है।

2. लिखित भाषा

मुकेश छात्रावास में रहता है। उसने पत्र लिखकर अपने माता-पिता को अपनी कुशलता व आवश्यकताओं की जानकारी दी। माता-पिता ने पत्र पढ़कर जानकारी प्राप्त की। यह भाषा का लिखित रूप है। इसमें एक व्यक्ति लिखकर विचार या भाव प्रकट करता है, दूसरा पढ़कर उसे समझता है।

इस प्रकार भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति अपने विचार या मन के भाव लिखकर प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसकी बात समझता है, लिखित भाषा कहलाती है।

दूसरे शब्दों में- जिन अक्षरों या चिन्हों की सहायता से हम अपने मन के विचारों को लिखकर प्रकट करते हैं, उसे लिखित भाषा कहते हैं।

उदाहरण: पत्र, लेख, पत्रिका, समाचार-पत्र, कहानी, जीवनी, संस्मरण, तार आदि।

उच्चरित भाषा की तुलना में लिखित भाषा का रूप बाद का है। मनुष्य को जब यह अनुभव हुआ होगा कि वह अपने मन की बात दूर बैठे व्यक्तियों तक या आगे आने वाली पीढ़ी तक भी पहुँचा दे तो उसे लिखित भाषा की आवश्यकता हुई होगी। अतः मौखिक भाषा को स्थायित्व प्रदान करने हेतु उच्चरितध्वनि प्रतीकों के लिए 'लिखित-चिह्नों' का विकास हुआ होगा।

इस तरह विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों ने अपनी-अपनी भाषिक ध्वनियों के लिए तरह-तरह की आकृति वाले विभिन्न लिखित-चिह्नों का निर्माण किया और इन्हीं लिखित-चिह्नों को 'वर्ण' (letter) कहा गया। अतः जहाँ मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई ध्वनि (Phone) है तो वहीं लिखित भाषा की आधारभूत इकाई 'वर्ण' (letter) हैं।

लिखित भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं

- यह भाषा का स्थायी रूप है।
- इस रूप में हम अपने भावों और विचारों को अनंत काल के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।
- यह रूप यह अपेक्षा नहीं करता कि वक्ता और श्रोता आमने-सामने हों।
- इस रूप की आधारभूत इकाई 'वर्ण' हैं जो उच्चरित ध्वनियों को अभिव्यक्त (represent) करते हैं।
- यह भाषा का गौण रूप है।

इस तरह यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि भाषा का मौखिक रूप ही प्रधान या मूल रूप है। किसी व्यक्ति को यदि लिखना-पढ़ना (लिखित भाषा रूप) नहीं आता तो भी हम यह नहीं कह सकते कि उसे वह भाषा नहीं आती। किसी व्यक्ति को कोई भाषा आती है, इसका अर्थ है- वह उसे सुनकर समझ लेता है तथा बोलकर अपनी बात संप्रेषित कर लेता है।



3. सांकेतिक भाषा

जिन संकेतों के द्वारा बच्चे या गूँगे अपनी बात दूसरों को समझाते हैं, वे सब सांकेतिक भाषा कहलाती हैं। दूसरे शब्दों में- जब संकेतों (इशारों) द्वारा बात समझाई और समझी जाती है, तब वह सांकेतिक भाषा कहलाती है। जैसे- चौराहे पर खड़ा यातायात नियंत्रित करता सिपाही, मूक-बधिर व्यक्तियों का वार्तालाप आदि। इसका अध्ययन व्याकरण में नहीं किया जाता।

बोली और भाषा में अन्तर क्या है

बोली और भाषा में अन्तर है। भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है। भाषा में लिखित और मौखिक दोनों रूप होते हैं। बोली भाषा का ऐसा रूप है जो किसी छोटे क्षेत्र में बोला जाता है। जब बोली इतनी विकसित हो जाती है कि वह किसी लिपि में लिखी जाने लगे, उसमें साहित्य-रचना होने लगे और उसका क्षेत्र भी अपेक्षाकृत विस्तृत हो जाए तब उसे भाषा कहा जाता है।

4. हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है। हिन्दी की उत्पत्ति अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और अपभ्रंश की उत्पत्ति प्राकृत से। प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है।

स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी। उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते हैं। उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुईं। हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई है। प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक बहुत बड़े क्षेत्र- जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है- की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक हो चला। है इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है-

- **बिहारी भाषा** : बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है। यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उड़िया और आसामी की बहन लगती है। इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं- मैथली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि। मैथली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बड़े प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए।
- **पूर्वी हिन्दी** : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की। दूसरी तीन बोलियाँ हैं- अवध, बघेली और छत्तीसगढ़ी। मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी हैं।
- **पश्चिमी हिन्दी** : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी हैं; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है।



लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ की परिभाषा

किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं।

जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को कहावत कहते हैं।

उदाहरण –

'उस दिन बात-ही-बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। इन पर सबों ने हँसकर कहा, व्यर्थ बकबक करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता'। यहाँ 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता'।

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है-लोक में प्रचलित उक्ति या कथन'। संस्कृत में 'लोकोक्ति' अलंकार का एक भेद भी है तथा सामान्य अर्थ में लोकोक्ति को 'कहावत' कहा जाता है।

चूँकि लोकोक्ति का जन्म व्यक्ति द्वारा न होकर लोक द्वारा होता है अतः लोकोक्ति के रचनाकार का पता नहीं होता। इसलिए अंग्रेजी में इसकी परिभाषा दी गई है-अर्थात् लोकोक्ति ऐसी उक्ति है जिसका कोई रचनाकार नहीं होता।

वृहद् हिंदी कोश में लोकोक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-

'विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, संक्षिप्त, लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं, जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि, विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।

'लोकोक्ति' के लिए यद्यपि सबसे अधिक मान्य पर्याय 'कहावत' ही है पर कुछ विद्वानों की राय है कि 'कहावत' शब्द 'कथावृत्त' शब्द से विकसित हुआ है अर्थात् कथा पर आधारित वृत्त, अतः 'कहावत' उन्हीं लोकोक्तियों को कहा जाना चाहिए जिनके मूल में कोई कथा रही हो।

जैसे - 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' या 'अंगूर खट्टे होना' कथाओं पर आधारित लोकोक्तियाँ हैं। फिर भी आज हिंदी में लोकोक्ति तथा 'कहावत' शब्द परस्पर समानार्थी शब्दों के रूप में ही प्रचलित हो गए हैं।

लोकोक्ति किसी घटना पर आधारित होती है। इसके प्रयोग में कोई परिवर्तन नहीं होता है। ये भाषा के सौन्दर्य में वृद्धि करती है। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है।

लोकोक्ति : प्रमुख अभिलक्षण

1. लोकोक्तियाँ ऐसे कथन या वाक्य हैं जिनके स्वरूप में समय के अंतराल के बाद भी परिवर्तन नहीं होता और न ही लोकोक्ति व्याकरण के नियमों से प्रभावित होती है। अर्थात् लिंग, वचन, काल आदि का प्रभाव लोकोक्ति पर नहीं पड़ता। इसके विपरीत मुहावरों की संरचना में परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

2. मुहावरा वाक्य का अंश होता है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है; उनका प्रयोग वाक्यों के अंतर्गत ही संभव है।	2. लोकोक्ति एक पूरे वाक्य के रूप में होती है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव है।
3. मुहावरे शब्दों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।	3. लोकोक्तियाँ वाक्यों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।
4. वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद मुहावरों के रूप में लिंग, वचन, काल आदि व्याकरणिक कोटियों के कारण परिवर्तन होता है; जैसे- आँखें पथरा जाना। प्रयोग- पति का इंतजार करते-करते माला की आँखें पथरा गयीं।	4. लोकोक्तियों में प्रयोग के बाद में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए। प्रयोग- वह अपनी योग्यता की डींगे मारता रहता है जबकि वह कितना योग्य है सब जानते हैं। उसके लिए तो यही कहावत उपयुक्त है कि 'अधजल गगरी छलकत जाए।
5. मुहावरों का अंत प्रायः इनफीनीटिव 'ना' युक्त क्रियाओं के साथ होता है; जैसे- हवा हो जाना, होश उड़ जाना, सिर पर चढ़ना, हाथ फैलाना आदि।	5. लोकोक्तियों के लिए यह शर्त जरूरी नहीं है। चूँकि लोकोक्तियाँ स्वतः पूर्ण वाक्य हैं अतः उनका अंत क्रिया के किसी भी रूप से हो सकता है; जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए, अंधी पीसे कुत्ता खाए, आ बैल मुझे मार, इस हाथ दे, उस हाथ ले, अकेली मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
6. मुहावरे किसी स्थिति या क्रिया की ओर संकेत करते हैं; जैसे हाथ मलना, मुँह फुलाना?	6. लोकोक्तियाँ जीवन के भोगे हुए यथार्थ को व्यंजित करती हैं; जैसे- न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी, ओस चाटे से प्यास नहीं बुझती, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
7. मुहावरे किसी क्रिया को पूरा करने का काम करते हैं।	7. लोकोक्ति का प्रयोग किसी कथन के खंडन या मंडन में प्रयुक्त किया जाता है।
8. मुहावरों से निकलने वाला अर्थ लक्ष्यार्थ होता है जो लक्षणा शक्ति से निकलता है।	8. लोकोक्तियों के अर्थ व्यंजना शक्ति से निकलने के कारण व्यंग्यार्थ के स्तर के होते हैं।
9. मुहावरे 'तर्क' पर आधारित नहीं होते अतः उनके वाच्यार्थ या मुख्यार्थ को स्वीकार नहीं किया जा सकता; जैसे- ओखली में सिर देना, घाव पर नमक छिड़कना, छाती पर मूँग दलना।	9. लोकोक्तियाँ प्रायः तर्कपूर्ण उक्तियाँ होती हैं। कुछ लोकोक्तियाँ तर्कशून्य भी हो सकती हैं; जैसे- तर्कपूर्ण : (i) काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती। (ii) एक हाथ से ताली नहीं बजती। (iii) आम के आम गुठलियों के दाम। तर्कशून्य : (i) छट्ठंदर के सिर में चमेली का तेल।
10. मुहावरे अतिशय पूर्ण नहीं होते।	10. लोकोक्तियाँ अतिशयोक्तियाँ बन जाती हैं।



लोकोक्तियाँ के उदाहरण

(अ)

- **अन्धों में काना राजा** = (मूर्खों में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति)
प्रयोग :- मेरे गाँव में कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति तो है नहीं इसलिए गाँव वाले पण्डित अनोखेराम को ही सब कुछ समझते हैं। ठीक ही कहा गया है, अन्धों में काना राजा।
- **अन्धा क्या चाहे दो आँखें** = (मनचाही बात हो जाना)
प्रयोग :- अभी मैं विद्यालय से अवकाश लेने की सोच ही रही थी कि मेघा ने मुझे बताया कि कल विद्यालय में अवकाश है। यह तो वही हुआ- अन्धा क्या चाहे दो आँखें।
- **अस्सी की आमद, चौरासी खर्च** = (आमदनी से अधिक खर्च)
प्रयोग :- राजू के तो अस्सी की आमद, चौरासी खर्च हैं। इसलिए उसके वेतन में घर का खर्च नहीं चलता।

(आ)

- **आ बैल मुझे मार** = (स्वयं मुसीबत मोल लेना)
प्रयोग :- लोग तुम्हारी जान के पीछे पड़े हुए हैं और तुम आधी-आधी रात तक अकेले बाहर घूमते रहते हो। यह तो वही बात हुई- आ बैल मुझे मार।
- **आँखों के अन्धे नाम नयनसुख** = (गुण के विरुद्ध नाम होना)
प्रयोग :- उसका नाम तो करोड़ीमल है परन्तु वह पैसे-पैसे के लिए मारा-मारा फिरता है। इसे कहते हैं- आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।
- **आम के आम गुठलियों के दाम** = (अधिक लाभ)
प्रयोग :- सब प्रकार की पुस्तकें 'साहित्य भवन' से खरीदें और पास होने पर आधे दामों पर बेचें। 'आम के आम गुठलियों के दाम' इसी को कहते हैं।

(इ, ई)

- **इतनी-सी जान, गज भर की जुबान** = (बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करना)
प्रयोग :- चार साल की बच्ची जब बड़ी-बड़ी बातें करने लगी तो दादाजी बोले- इतनी सी जान, गज भर की जुबान।
- **इधर कुआँ और उधर खाई** = (हर तरफ विपत्ति होना)
प्रयोग :- न बोलने में भी बुराई है और बोलने में भी; ऐसे में मेरे सामने इधर कुआँ और उधर खाई है।
- **ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया** = (ईश्वर की बातें विचित्र हैं।)
प्रयोग :- कई बेचारे फुटपाथ पर ही रातें गुजारते हैं और कई भव्य बंगलों में आनन्द करते हैं। सच है ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।
- **ईंट की लेनी, पत्थर की देनी** = (बदला चुकाना)
प्रयोग :- अशोक ईंट की लेनी, पत्थर की देनी वाले स्वभाव का आदमी है।

(उ)

- **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** = (अपराधी निरपराध को डाँटे)

प्रयोग :- एक तो पूरे वर्ष पढ़ाई नहीं की और अब परीक्षा में कम अंक आने पर अध्यापिका को दोष दे रहे हैं। यह तो वही बात हो गई- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

- **उसी का जूता उसी का सिर** = (किसी को उसी की युक्ति या चाल से बेवकूफ बनाना)

प्रयोग :- जब चोर पुलिस की बेल्ट से पुलिस को ही मारने लगा तो सबने यही कहा कि ये तो उसी का जूता उसी का सिर वाली बात हो गई।

(ऊ)

- **ऊँट के मुँह में जीरा** = (जरूरत के अनुसार चीज न होना)

प्रयोग :- विद्यालय के ट्रिप में जाने के लिए 2,500 रुपये चाहिए थे, परंतु पिता जी ने 1,000 रुपये ही दिए। यह तो ऊँट के मुँह में जीरे वाली बात हुई।

- **ऊधो का लेना न माधो का देना** = (केवल अपने काम से काम रखना)

प्रयोग :- प्रोफेसर साहब तो बस अध्ययन और अध्यापन में लगे रहते हैं। गुटबन्दी से उन्हें कोई लेना-देना नहीं- ऊधो का लेना न माधो का देना।

(ए)

- **एक पन्थ दो काज** = (एक काम से दूसरा काम हो जाना)

प्रयोग :- दिल्ली जाने से एक पन्थ दो काज होंगे। कवि-सम्मेलन में कविता-पाठ भी करेंगे और साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को भी देखेंगे।

- **एक हाथ से ताली नहीं बजती** = (झगड़ा एक ओर से नहीं होता।)

प्रयोग :- आपसी लड़ाई में राम और श्याम-दोनों स्वयं को निर्दोष बता रहे थे, परंतु यह सही नहीं हो सकता, क्योंकि ताली एक हाथ से नहीं बजती।

- **एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा** = (कुटिल स्वभाव वाले मनुष्य बुरी संगत में पड़ कर और बिगड़ जाते हैं।)

प्रयोग :- कालू तो पहले से ही बिगड़ा हुआ था अब उसने आवारा लोगों का साथ और कर लिया है- एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

- **एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी** = (गलत काम करके आँख दिखाना)

प्रयोग :- एक तो उसने मेरी किताब चुरा ली, ऊपर से आँखें दिखा रहा है। इसी को कहते हैं- 'एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी।'

(ऐ)

- **ऐरा-गैरा नत्थू खैरा** = (मामूली आदमी)

प्रयोग :- कोई 'ऐरा-गैरा नत्थू खैरा' महेश के ऑफिस के अन्दर नहीं जा सकता।

- **ऐरे गैरे पंच कल्याण** = (ऐसे लोग जिनके कहीं कोई इज्जत न हो)

प्रयोग :- पंचों की सभा में ऐरे गैरे पंच कल्याण का क्या काम!

- **घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या** = (मेहनताना या पारिश्रमिक माँगने में संकोच नहीं करना चाहिए।)
प्रयोग :- भाई, मैंने दो महीने काम किया है। संकोच में तनखाह न माँगू तो क्या करूँ- 'घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या'

(च)

- **चोर पर मोर** = (एक दूसरे से ज्यादा धूर्त)
प्रयोग :- मृदुल और करन दोनों को कम मत समझो। ये दोनों ही चोर पर मोर हैं।
- **चमड़ी जाय, पर दमड़ी न जाय** = (अत्यधिक कंजूसी करना)
प्रयोग :- जेबकतरे ने सौ रुपए उड़ा लिए तो कुछ नहीं, पर मुन्ना ने मुझे पाँच रुपए उधार नहीं दिए। ये तो वही बात हुई कि चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।

(छ)

- **छोटा मुँह बड़ी बात** = (कम उम्र या अनुभव वाले मनुष्य का लम्बी-चौड़ी बातें करना)
प्रयोग :- किशन तो हमेशा छोटा मुँह बड़ी बात करता है।

(ज)

- **जो करेगा, सो भरेगा** = (जो जैसा काम करेगा वैसा फल पाएगा)
प्रयोग :- छोड़ो मित्र, जो करेगा, सो भरेगा, तुम्हें क्या

(झ)

- **झूठे का मुँह काला, सच्चे का बोलबाला** = (अंत में सच्चे आदमी की ही जीत होती है।)
प्रयोग :- किसी आदमी को झूठ नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि- 'झूठे का मुँह काला, सच्चे का बोलबाला' होता है।

(ट)

- **टके की हांडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई** = (थोड़े ही खर्च में किसी के चरित्र को जान लेना)
प्रयोग :- जब रमेश ने पैसे वापस नहीं किए तो सोहन ने सोच लिया कि अब वह उसे दोबारा उधार नहीं देगा- 'टके की हांडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई'।

(ठ)

- **ठेस लगे, बुद्धि बढ़े** = (हानि मनुष्य को बुद्धिमान बनाती है।)
प्रयोग :- राजेश ने व्यापार में बहुत क्षति उठाई है, तब वह सफल हुआ है। ठीक ही कहते हैं- 'ठेस लगे, बुद्धि बढ़े'।

(ड)

- **डरा सो मरा** = (डरने वाला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता)
प्रयोग :- रामू उस जेबकतरे के चाकू से डर गया, वरना वह जेबकतरा पकड़ा जाता। कहते भी हैं- 'जो डरा सो मरा'।

**(ढ)**

- **ढाक के वही तीन पात** = (परिणाम कुछ नहीं निकलना, बात वहीं की वहीं रहना)

प्रयोग :- अध्यापक ने रामू को इतना समझाया कि वह सिगरेट पीना छोड़ दे, पर परिणाम 'ढाक के वही तीन पात', और एक दिन रामू के मुँह में कैंसर हो गया।

(त)

- **तेल देखो, तेल की धार देखो** = (किसी कार्य का परिणाम देखने की बात करना)

प्रयोग :- रामू बोला- 'तेल देखो, तेल की धार देखो', घबराते क्यों हो

(थ)

- **थका ऊँट सराय तके** = (दिनभर काम करने के बाद मजदूर को घर जाने की सूझती है।)

प्रयोग :- दिनभर काम करने के बाद राजू घर जाने के लिए चलने लगा। ठीक ही है- 'थका ऊँट सराय तके'।

(फ)

- **फूंक दो तो उड़ जाय** = (बहुत दुबला-पतला आदमी)

प्रयोग :- रमा तो ऐसी दुबली-पतली थी कि 'फूंक दो तो उड़ जाय'।

(ब)

- **बहती गंगा में हाथ धोना** = (अवसर का लाभ उठाना)

प्रयोग :- सत्संग के लिए काफी लोग एकत्रित हुए थे। ऐसे में क्षेत्रीय नेता भी वहाँ आ गए और उन्होंने अपना लंबा-चौड़ा भाषण दे डाला। इसे कहते हैं- बहती गंगा में हाथ धोना।

(भ)

- **भरी मुट्टी सवा लाख की** = (भेद न खुलने पर इज्जत बनी रहती है।)

प्रयोग :- रामपाल को वेतन बहुत कम मिलता है, लेकिन वह किसी को कुछ नहीं बताता। सही बात है- 'भरी मुट्टी सवा लाख की' होती है।

(म)

- **मुँह में राम बगल में छुरी** = (बाहर से मित्रता पर भीतर से बैर)

प्रयोग :- सुरभि और प्रतिभा दोनों आपस में अच्छी सहेलियाँ बनती हैं, परंतु मौका पाते ही एक-दूसरे की बुराई करना शुरू कर देती हैं। यह तो वही बात हुई- मुँह में राम बगल में छुरी।

- **मान न मान मैं तेरा मेहामन** = (जबरदस्ती किसी के गले पड़ना)

प्रयोग :- जब एक अजनबी जबरदस्ती रामू से आत्मीयता दिखाने लगा तो रामू बोला- 'मान न मान मैं तेरा मेहामन'।

- **मूल से ज्यादा ब्याज प्यारा होता है** = (मनुष्य को अपने नाती-पोते अपने बेटे-बेटियों से अधिक प्रिय होते हैं)

प्रयोग :- सेठ अमरनाथ ने अपने बेटे के पालन-पोषण पर उतना खर्च नहीं किया जितना अपने पोते पर करता है। सच ही कहा गया है कि मूल से ज्यादा ब्याज प्यारा होता है।

(य)

- **यहाँ परिन्दा भी पर नहीं मार सकता =** (जहाँ कोई आ-जा न सके)

प्रयोग :- मेरे ऑफिस में इतना सख्त पहरा है कि यहाँ कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।

- **यथा राजा, तथा प्रजा =** (जैसा स्वामी वैसा ही सेवक)

प्रयोग :- जिस गाँव का मुखिया ही भ्रष्ट और पाखंडी हो उस गाँव के लोग भले कैसे हो सकते हैं। वे भी वही सब करते हैं जो उनका मुखिया करता है। किसी ने ठीक ही तो कहा है कि यथा राजा, तथा प्रजा।

(ल)

- **लगा तो तीर, नहीं तो तुक्का =** (काम बन जाए तो अच्छा है, नहीं बने तो कोई बात नहीं)

प्रयोग :- देखा-देखी रहीम ने भी आज लॉटरी खरीद ही ली। 'लगा तो तीर, नहीं तो तुक्का'।

- **लाख जाए, पर साख न जाए =** (धन व्यय हो जाए तो कोई बात नहीं, पर सम्मान बना रहना चाहिए)

प्रयोग :- विवेक बात का पक्का है, उसका एक ही सिद्धांत है- 'लाख जाए, पर साख न जाए'।





वाक्य

दो या दो से अधिक पदों के **सार्थक समूह** को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, **वाक्य** कहते हैं।

उदाहरण : 'सत्य कड़वा होता है ।'

एक **वाक्य** है क्योंकि इसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है किन्तु **'सत्य होता कड़वा।'** वाक्य नहीं है क्योंकि इसका अर्थ नहीं निकलता है।

वाक्य की परिभाषा –

दो या दो से अधिक शब्दों के समूह जिसका कोई अर्थ हो उसे वाक्य कहा जाता है। एक सामान्य वाक्य को बनाने के लिए कर्ता, कर्म और क्रिया का इस्तेमाल किया जाता है।

जैसे :-

1. मनुष्य का कर्म ही उसका धर्म है।
2. जीत सदैव सत्य की होती है।

वाक्य के भेद –

वाक्य का विभाजन दो आधार पर किया गया है।

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर –

- 1) साधारण वाक्य
- 2) संयुक्त वाक्य
- 3) मिश्रित वाक्य

1. साधारण वाक्य –

ऐसे वाक्य जिन्हें एक ही विधेय और एक ही क्रिया होती है, इन्हें साधारण वाक्य कहा जाता है।

साधारण वाक्य के उदाहरण -

जैसे :-

- राहुल पड़ता है।
- मैंने भोजन कर लिया।
- रीना घर जा रही है।

2. संयुक्त वाक्य –

जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधको से जुड़े होते हैं, तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहा जाता है।

संयुक्त वाक्य के उदाहरण -

जैसे :-

- राहुल चला गया और गीता आ गई।
- मैं जा रहा हूँ लेकिन तुम आ रहे हो।
- मैंने एक काम कर लिया पर दूसरा काम छोड़ दिया।

3. मिश्रित वाक्य –

ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य मुख्य हो और दूसरा वाक्य उस पर आश्रित हो या उपवाक्य हो, तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहा जाता है।

मिश्रित वाक्य के उदाहरण –

जैसे:-

- ज्यों ही अध्यापक मैं कक्षा में प्रवेश किया वैसे ही छात्र शांत हो गए।
- यदि परिश्रम करोगे तो तुम अवश्य सफल हो जाओगे।
- मैं जानता हूँ कि तुम्हें क्या अच्छा लगता है।

2. अर्थ के आधार पर –

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. आज्ञावाचक वाक्य
4. प्रश्नवाचक वाक्य
5. विस्मयादिबोधक वाक्य
6. इच्छावाचक वाक्य
7. संदेहवाचक वाक्य
8. संकेतवाचक वाक्य

1. विधानवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के होने का या किसी के अस्तित्व का पता चलता है या बोध होता है, उन वाक्य को विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

विधानवाचक वाक्य को दूसरे शब्दों में **विधि वाचक वाक्य** भी कहा जाता है।



विधानवाचक वाक्य के उदाहरण

- राजस्थान मेरा राज्य है।
- विशाल ने आम खा लिया।
- पवन के पिता का नाम किशोर सिंह है।

2. निषेधवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के निषेध का बोध होता है, उन वाक्यों को निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है।

निषेधवाचक वाक्य के उदाहरण

- राधा आज स्कूल नहीं जाएगी।
- आज मैं फिल्म देखने नहीं जाऊंगा।
- हम आज कहीं पर भी घूमने नहीं जाएंगे।

3. आज्ञावाचक वाक्य

वह वाक्य जिनमें आदेश, आज्ञा या अनुमति का पता चलता हो, उन वाक्य को आज्ञा वाचक वाक्य कहा जाता है।

आज्ञावाचक वाक्य के उदाहरण

- कृपया वहां पर बैठ जाइए।
- कृपया करके शांति बनाए रखें।
- आपको अपनी मदद स्वयं करनी पड़ेगी।

4. प्रश्नवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। प्रश्नवाचक वाक्य के नाम से ही पता चलता है कि इस वाक्य में प्रश्नों का बोध होने वाला है।

इन वाक्यों के माध्यम से प्रश्न पूछकर वस्तु या किसी अन्य के बारे में जानकारी जानने की कोशिश की जाती है। इसके अलावा इन वाक्यों के पीछे (?) यह चिन्ह लगता है।

प्रश्नवाचक वाक्य के उदाहरण

- तुम्हारा कौन सा देश है?
- तुम कौन से गांव में रहते हो?
- तुम्हारा नाम क्या है?
- तुम्हारी बहन क्या काम करती है?

5. विस्मयादिबोधक वाक्य

जिन वाक्य में आश्चर्य, घृणा, अत्यधिक, खुशी, शोक का बोध होता हो, उन वाक्य को विस्मयादिबोधक वाक्य कहा जाता है। इसके अलावा इन वाक्यों में विस्मय शब्द होते हैं और इन शब्दों के पीछे (!) विस्मयसूचक लगता है और इसी से इन वाक्य की पहचान बनती है। मतलब यह है कि इसी सूचक चिन्ह के आधार पर इन वाक्यों को आसानी से पहचाना जाता है।

विस्मयादिबोधक वाक्य के उदाहरण

- ओह! आज दिन कितना ठंडा है।
- बल्ले बल्ले! हमें जीत मिल गई।
- अरे! तुम यहां कब पहुंचे।

6. इच्छावाचक वाक्य

वे वाक्य जिसमें हमें वक्ता की कोई इच्छा, आकांक्षा, आशीर्वाद, कामना इत्यादि का पता चलता है, उन वाक्य को इच्छा वाचक वाक्य कहते हैं।

इच्छावाचक वाक्य के उदाहरण

- सदा खुश रहो।
- दीपावली की आपके परिवार को शुभकामनाएं।
- तुम्हारा कल्याण हो।

7. संदेहवाचक वाक्य

जिन वाक्य में किसी भी प्रकार की संभावना और संदेह का बोध होता हो, उन वाक्य को संदेहवाचक वाक्य कहा जाता है।

संदेहवाचक वाक्य के उदाहरण

- लगता है राम अब ठीक हो गया है।
- शायद आज बारिश हो सकती है।
- शायद मेरा भाई इस काम के लिए मान गया है।

8. संकेतवाचक वाक्य

वह वाक्य जिनमें एक क्रिया या दूसरी क्रिया पर पूरी तरह से निर्भर हो, उन वाक्य को संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है।

संकेतवाचक वाक्य के उदाहरण

- अच्छे से प्रैक्टिस करते, तो मैडल मिल जाता।
- अच्छी तैयारी की होती, तो सिलेक्शन हो जाता।
- कार को धीरे चलाते, तो पेट्रोल खत्म नहीं होता।



- रामायण का टीका। (की)
- देश की सम्मान की रक्षा करो। (के)
- लड़की ने जोर से हँस दी। (दिया)
- दंगे में बालक, युवा, नर-नारी सब पकड़ी गयीं (पकड़े गये)

2. वचन-संबंधी अशुद्धियाँ

- सबों ने यह राय दी। (सब)
- उसने अनेक प्रकार की विद्या सीखीं। (विद्याएँ)
- मेरे आँसू से रूमाल भींग गया। (आँसुओं)
- ऐसी एकाध बातें सुनकर दुःख होता है। (बात)
- हमारे सामानों का ख्याल रखियेगा। (सामान)
- वे विविध विषय से परिचित हैं। (विषयों)
- इस विषय पर एक भी अच्छी पुस्तकें नहीं है। (पुस्तक)

3. कारक-संबंधी अशुद्धियाँ

- हमने यह काम करना है। (हमें)
- मैंने राम को पूछा। (से)
- सब से नमस्ते। (को)
- जनता के अन्दर असंतोष फैल गया। (में)
- नौकर का कमीज। (की)
- मैंने नहीं जाना। (मुझे)
- मेरे नये पते से चिट्ठियाँ भेजना। (पर)

II. सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ

- मेरे से मत पूछो। (मुझ से)
- मेरे को यह बात पसंद नहीं। (मुझे)
- तेरे को अब जाना चाहिए। (तुझे)
- मैंने नहीं जाना। (मुझे)
- आप आपका काम करो। (अपना)
- जो सोवेगा वह खोवेगा। (सो)
- आप जाकर ले लो। (तुम)
- वह सब भले लोग हैं। (वे)
- आँख में कौन पड़ गया ?(क्या)
- मैं उन्हींके पिताजी से जाकर मिला। (उनके)



III. विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

- उसे भारी प्यास लगी है। (बहुत)
- जीवन और साहित्य का घोर संबंध है। (घनिष्ठ)
- मुझे बड़ी भूख लगी है। (बहुत)
- यह एक गहरी समस्या है। (गंभीर)
- वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी। (बहुत या बहुत भारी)
- इसका कोई अर्थ नहीं है। (कुछ भी)
- इस वीरान जीवन में। (नीरस)
- उसकी बहुत हानि हुई। (बड़ी)
- राजेश अग्रिम बुधवार को आएगा। (आगामी)
- दूध का अभाव चिन्तनीय है। (चिन्ताजनक)

IV. क्रिया-संबंधी अशुद्धियाँ

- वह कुरता डालकर गया है। (पहनकर)
- पगड़ी ओढ़कर आओ। (बाँधकर)
- वह लड़का मोटर हाँक सकता है। (चला)
- छोटी उम्र शिक्षा लेने के लिए है। (पाने)
- वे दस-बारह पशु उठा ले गए। (हाँक)
- राधा ने माला गूँध ली। (गूँध)
- अपना हस्ताक्षर लगा दो। (कर)
- उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। (किया)
- हमें यह सावधानी लेनी होगी। (बरतनी)
- वहाँ घना अँधेरा घिरा था। (छाया)

V. अव्यय-संबंधी अशुद्धियाँ

- यद्यपि वह बीमार था परन्तु वह स्कूल गया। (तथापि)
- पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गयी है। (विद्वतापूर्वक)
- आसानीपूर्वक यह काम कर लिया। (आसानी से)
- शनैः उसको सफलता मिलने लगी। (शनैः शनैः)
- एकमात्र दो उपाय है। (केवल)
- यह पत्र आपके अनुसार है। (अनुरूप)
- यह बात कदापि भी सत्य नहीं हो सकती। (कदापि)
- वह अत्यन्त ही सुन्दर है। (अत्यन्त)

- सारे देश भर में अकाल है। (सारे देश में)
- मैं पहुँचा ही था जब कि वह आ गया। (कि)

VI. पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

- छात्रों ने मुख्य अतिथि को एक फूलों की माला पहनाई। (फूलों की एक माला)
- भीड़ में चार पटना के व्यक्ति भी थे। (पटना के चार व्यक्ति)
- कई बैंक के कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। (बैंक के कई कर्मचारियों)
- आप जाएँगे क्या?(क्या आप जाएँगे?)

VII. द्विरुक्ति/ पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ

- मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ बशर्ते कि तुम मेरा कहा मानो। (बशर्ते/ शर्त है कि)
- दरअसल में वह बहुत काइयाँ है। (दरअसल/ असल में)
- दरहकीकत में वह बहुत घाघ। है (दरहकीकत/ हकीकत में)
- फिलहाल में वह मुंबई गया है। (फिलहाल/ हाल में)
- मुख्तसर में 'गोदान' ग्रामीण जीवन का महाकाव्य है। (मुख्तसर)
- मेरे मना करने के बावजूद भी वह चला गया। (बावजूद)
- वह अभी शैशव अवस्था में है। (शैशव/ शिशु अवस्था)
- मध्यकालीन युग में कलाओं की बहुत उन्नति हुई। (मध्यकाल/ मध्ययुग)

VIII. शब्द-ज्ञान-संबंधी अशुद्धियाँ

- बाण बड़ा उपयोगी शस्त्र है। (अस्त्र)
- लाठी बड़ा उपयोगी अस्त्र है। (शस्त्र)
- चिड़ियाँ गा रही हैं। (चहक)
- वह नित्य गाने की कसरत करता है। (का अभ्यास/ का रियाज)
- सोहन नित्य दण्ड मारता है। (पेलता)



निर्देश चिह्न	(-)
तुल्यतासूचक चिह्न	(=)
संकेत चिह्न	(*)
समाप्ति सूचक चिह्न	(- : -)

विराम-चिह्नों का प्रयोग-

1. अल्प विराम-

अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना या ठहरना। अंग्रेजी में इसे हम 'कोमा' कह कर पुकारते हैं।

1. वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशो अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- पदों में—पंकज, लक्ष्मण, राजेश और मोहन ने विद्यालय में प्रवेश किया।
- वाक्यों में—मोहन रोज खेल के मैदान में जाता है, खेलता है और वापस अपने घर चला जाता है।
- वह काम करता है, क्योंकि वह गरीब है।
- आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए जल्दी घर जाऊँगा।

यहाँ अल्प विराम द्वारा पार्थक्य/अलगाव को दिखाया गया है।

2. जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावों की अधिकता के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए।

उदाहरण-

सुनो, सुनो, वह नाच रही है।

3. जब कई शब्द जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है।

उदाहरण-

सुख और दुःख, रोना और हँसना,

4. क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ,

उदाहरण-

वास्तव में यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

5. संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

- यह वही पैन है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।
- चिंता चाहे जैसी भी हो, मनुष्य को जला देती है।

6. वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में।

उदाहरण-

मोहन ने सेब, जामुन, केले आदि खरीदे।



7. उद्धरण चिह्नों के पहले,

उदाहरण-

वह बोला, “मैं तुम्हें नहीं जानता।”

8. समय सूचक शब्दों को अलग करने में।

उदाहरण-

कल शुक्रवार, दिनांक 18 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।

9. पत्र में अभिवादन, समापन के साथ।

उदाहरण-

- पूज्य पिताजी,
- भवदीय,
- मान्यवर ,

2. अर्द्ध विराम चिह्न-

अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है। अंग्रेजी में इसे ‘सेमी कॉलन’ कहते हैं।

1. जब अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम(;) का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- बिजली चमकी ; फिर भी वर्षा नहीं हुई
- एम.ए. ; एम.एड.
- शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो।
- शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गईं; छात्र पिछड़ते गए।

2. एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

- जब तक हम गरीब हैं; बलहीन हैं; दूसरे पर आश्रित हैं; तब तक हमारा कुछ नहीं हो सकता।
- जैसे ही सूर्योदय हुआ; अँधेरा दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

3. पूर्ण विराम (।)-

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है अर्थात् जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते हैं। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम का प्रयोग नीचे उदाहरणों में देखें -

1. साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर।

उदाहरण-

- अजगर करे ना चाकरी, पंछी करें ना काम।
- दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

- पंछी डाल पर चहचहा रहे थे।
- राम स्कूल जाता है।
- प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम है।
- यदि सुरेश पढ़ता, तो अवश्य पास होता।

2. प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

नारी और वर्तमान भारतीय समाज।

3. अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है।

उदाहरण-

उसने मुझे बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) -

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थिति में किया जाता है-

- क्या बोले, वे चोर है?
- क्या वे घर पर नहीं हैं?
- कल आप कहाँ थे?
- आप शायद यू. पी. के रहने वाले हो?
- जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ ईमानदारी कैसे रहेगी?
- इतने लड़के कैसे आ पाएँगे?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!) -

जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जाएँ तो वहाँ इस विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

1. **हर्ष सूचक-**

- तुम्हारा कल्याण हो !
- हे भगवान! अब तो तुम्हारा ही आसरा है।
- हाय! अब क्या होगा।
- छिः! छिः! कितनी गंदगी है।
- शाबाश! तुमने गाँव का नाम रोशन कर दिया।



2. करुणा सूचक-

हे प्रभु! मेरी रक्षा करो

3. घृणा सूचक-

इस दुष्ट पर धिक्कार है!

4. विषाद सूचक-

हाय राम! यह क्या हो गया।

5. विस्मय सूचक-

सुनो! मोहन पास हो गया।

6. उद्धरण या अवतरण चिह्न-

जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते हैं। इस चिह्न के दो रूप होते हैं-

1. इकहरा उद्धरण (' ')-

जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र-पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- रामधारीसिंह 'दिनकर' ओज के कवि हैं।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- तुलसीदास ने कहा- "सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।"
- 'रामचरित मानस' के रचयिता तुलसीदास हैं।
- 'राजस्थान पत्रिका' एक प्रमुख समाचार-पत्र है।
- कहावत सही है कि, 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'।

2. दुहरा उद्धरण (" ")

जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"—तिलक।
- "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"—सुभाषचन्द्र बोस।

7. योजक चिह्न (-)

इसे समास चिह्न भी कहते हैं। अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते हैं। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (-) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है।

- कमल-से पैर।
 - कली-सी कोमलता।
 - कभी-कभी
 - खेलते-खेलते
 - रात-दिन
 - माता-पिता
1. दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में।

उदाहरण-

सुख-दुःख, माता-पिता,।

2. पुनरुक्त शब्दों के बीच में।

उदाहरण-

धीरे-धीरे, घर -घर, रोज -रोज।

3. तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है।

उदाहरण-

भरत-सा भाई, सीता-सी माता।

4. शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच।

उदाहरण-

एक-चौथाई

8. कोष्ठक चिह्न ()-

किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है।

इस चिह्न का प्रयोग-

1. वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु।

उदाहरण-

- आपकी ताकत (शक्ति) को मैं जानता हूँ।
- आवेदन-पत्र जमा कराने की तिथि में सात दिन की छूट दी गई है।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।

2. नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए।

उदाहरण-

राम - (हँसते हुए) अच्छा जाइए।



9. विवरण चिह्न (:-)-

किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। इसे अंग्रेजी में 'कॉलन एंड डेश' कहते हैं।

उदाहरण-

- सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं:- पुरुषवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चितवाचक, अनिश्चितवाचक, प्रश्नवाचक।
- वेद चार हैं:- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- पुरुषार्थ चार हैं:- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

10. लोप सूचक चिह्न (....)-

जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ लोप सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- तुम मान जाओ वरना.....।
- मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप भी.....।

11. विस्मरण चिह्न (^)-

इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते हैं। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते हैं।

उदाहरण-

- मेरा भारत ^ देश है।
- मुझे आपसे ^ परामर्श लेना है।

12. संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (o)-

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते हैं। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है।

उदाहरण-

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय – रा० उ० मा० वि०।
- भारतीय जनता पार्टी = भा० ज० पा०
- मास्टर ऑफ आर्ट्स = एम० ए०
- प्राध्यापक – प्रा०।
- डॉक्टर – डॉ०।
- पंडित – पं०।

13. निर्देशक चिह्न (-)-

यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप हैं-1. (-) 2. (—)। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते हैं।

- महाराज- द्वारपाल! जाओ।
- द्वारपाल- जो आज्ञा स्वामी!

1. उद्धृत वाक्य के पहले।

उदाहरण-

वह बोला - "मैं नहीं जाऊँगा।"

2. समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

आँगन में ज्योत्सना-चाँदनी-छिटकी हुई थी।

14. तुल्यतासूचक चिह्न (=)-

समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- 1 लीटर = 1000 मिलीलीटर
- वायु = समीर

15. संकेत चिह्न (*)-

जब कोई महत्त्वपूर्ण बातें बतानी हो तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते हैं।

उदाहरण-

स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- प्रातःकाल उठना चाहिए।
- भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

16. समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (-o-)-

किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

(- :: -), (-x-x-)





विशेषण

विशेषण

- विशेषण वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं।
- विशेषण विकारी शब्द होते हैं एवं इन्हें सार्थक शब्दों के आठ भेदों में से एक माना जाता है।
- बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, भारी, सुन्दर, कायर, टेढ़ा - मेढ़ा, एक, दो, वीर पुरुष, गोरा, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा आदि विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण हैं।

विशेषण की परिभाषा

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, अच्छा, गन्दा, बुरा, एक, दो आदि।

- वहां चार लड़के बैठे थे।
- अध्यापक के हाथ में लंबी छड़ी है
- वह घर जा रहा था।
- गीता सुंदर लड़की है

विशेष्य

जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए वे विशेष्य कहलाते हैं।

जैसे - मोहन सुंदर लड़का है

प्रविशेषण

विशेषण शब्द की भी विशेषता बतलाने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे - राधा बहुत सुंदर लड़की है।

इस वाक्य में सुंदर (विशेषण) की विशेषता बहुत शब्द के द्वारा बताई जा रही है। इसलिए बहुत प्रविशेषण शब्द है।

विशेषण के भेद

हिन्दी व्याकरण में विशेषण के मुख्यतः 5 भेद या प्रकार होते हैं।

- गुणवाचक
- परिमाणवाचक
- संख्यावाचक
- सार्वनामिक

1. **गुणवाचक :-** जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ये विशेषण भाव, रंग, दशा, आकार, समय, स्थान, काल आदि से सम्बन्धित होते हैं।

जैसे - अच्छा, बुरा, सफेद, काला, रोगी, मोटा, पतला, लम्बा, चौड़ा, नया, पुराना, ऊँचा, मीठा, चीनी, नीचा, प्रातःकालीन आदि।

- गुणवाचक विशेषणों में 'सा' सादृश्यवाचक पद जोड़कर गुणों को कम भी किया जाता है।

जैसे - लाल-सा, बड़ा-सा, छोटी-सी, ऊँची-सी आदि।

- कभी-कभी गुणवाचक विशेषणों के विशेष्य वाक्य लुप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में संज्ञा का काम भी विशेषण ही करता है।

जैसे - बड़ों का आदर करना चाहिए।

दीनों पर दया करनी चाहिए।

- गुणवाचक विशेषण में विशेष्य के साथ कैसा/कैसी लगाकर प्रश्न करने पर विशेषण पता किया जाता है।

2. **परिमाणवाचक :-** जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण, मात्रा, माप या तोल का बोध हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

इसके दो भेद हैं।

I. **निश्चित परिमाणवाचक :-** दस क्विंटल, तीन किलो, डेढ़ मीटर।

II. **अनिश्चित परिमाणवाचक :-** थोड़ा, इतना, कुछ, ज्यादा, बहुत, अधिक, कम, तनिक, थोड़ा, इतना, जितना, ढेर सारा।

3. **संख्यावाचक :-** जिस विशेषण द्वारा किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - बीस दिन, दस किताब, सात भैंस आदि। यहाँ पर बीस, दस तथा सात - संख्यावाचक विशेषण हैं। इसके दो भेद हैं -

I. **निश्चित संख्यावाचक :-** दो, तीन, ढाई, पहला, दूसरा, इकहरा, दुहरा, तीनों, चारों, दर्जन, जोड़ा, प्रत्येक।

II. **अनिश्चित संख्यावाचक :-** कई, कुछ, काफी, बहुत।

4. **सार्वनामिक :-** पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के अतिरिक्त अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - यह घोड़ा अच्छा है।, वह नौकर नहीं आया। यहाँ घोड़ा और नौकर संज्ञाओं के पहले विशेषण के रूप में 'यह' और 'वह' सर्वनाम आये हैं। अतः ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

जैसे - यह विद्यालय, वह बालक, वह खिलाड़ी आदि।

सार्वनामिक विशेषण के भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के भी दो भेद हैं-

- मौलिक सार्वनामिक विशेषण
- यौगिक सार्वनामिक विशेषण



- I. **मौलिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के संज्ञा के पहले आता है उसे मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे -

- वह लड़का,
- यह कार,
- कोई नौकर,
- कुछ काम इत्यादि।

- II. **यौगिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं।

जैसे -

कैसा घर, उतना काम, ऐसा आदमी, जैसा देश इत्यादि।

विशेष्य और विशेषण में संबंध

ऊपर आपने विशेषण और विशेष्य के बारे में पढ़ा, अब इन दोनों के संबंधों पर बात करेंगे।

“वाक्य में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है- कभी विशेषण विशेष्य के पहले आता है और कभी विशेष्य के बाद।” इस प्रकार प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के दो भेद हैं-

- विशेष्य - विशेषण
- विधेय - विशेषण

1. **विशेष्य विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य के पहले आये, वह विशेष्य - विशेष होता है।

जैसे -

- मुकेश चंचल बालक है।,
- संगीता सुंदर लड़की है।

इन वाक्यों में चंचल और सुंदर क्रमशः बालक और लड़की के विशेषण हैं, जो संज्ञाओं (विशेष्य) के पहले आये हैं।

2. **विधेय विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य और क्रिया के बीच आये, वहाँ विधेय - विशेषण होता है।

जैसे -

- मेरा कुत्ता लाल है।,
- मेरा लड़का आलसी है।

इन वाक्यों में लाल और आलसी ऐसे विशेषण हैं, जो क्रमशः कुत्ता (संज्ञा) और है (क्रिया) तथा लड़का (संज्ञा) और है (क्रिया) के बीच आये हैं।

महत्वपूर्ण

विशेषण के लिंग, वचन आदि विशेष्य के लिंग, वचन आदि के अनुसार होते हैं।

जैसे -

- अच्छे लड़के पढ़ते हैं।,
- नताशा भली लड़की है।,
- रामू गंदा लड़का है। आदि

यदि एक ही विशेषण के अनेक विशेष्य हों तो विशेषण के लिंग और वचन समीप वाले विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार होंगे,

जैसे -

- नये पुरुष और नारियाँ,
- नयी धोती और कुरता। आदि



1. **रूढ़ लक्षणा :-** जहाँ रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'रूढ़ लक्षणा' होती है।

उदाहरण

- **गद्यात्मक उदाहरण :-** "आप तो एकदम राजा हरिश्चन्द्र हैं" का लक्ष्यार्थ है आप हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी हैं। सत्यवादी व्यक्ति को राजा हरिश्चन्द्र कहना रूढ़ि है।
- **पद्यबद्ध उदाहरण :-** 'आगि बड़वाग्नि ते बड़ी है आगि पेट की' (तुलसी) का मुख्यार्थ है- बड़वाग्नि यानी समुद्र में लगने वाली आग से बड़ी पेट की आग होती है। पेट में आग नहीं, भूख लगती है इसलिए मुख्यार्थ की बाधा है। लक्ष्यार्थ है तीव्र और कठिन भूख को व्यक्त करना जो पेट की आग के जरिये किया गया है। तीव्र और कठिन भूख के लिए 'पेट में आग लगना' कहना रूढ़ि है।

2. **प्रयोजनवती लक्षणा :-** जहाँ प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ का बोध हो, वहाँ 'प्रयोजनवती लक्षणा' होती है।

उदाहरण

- **"शिवाजी सिंह है" :-** यदि हम कहें कि शिवाजी सिंह हैं। तो सिंह शब्द के मुख्यार्थ (विशेष जीव) में बाधा पड़ जाती है। हम सब जानते हैं कि शिवाजी आदमी थे, सिंह नहीं लेकिन यहाँ शिवाजी के लिए सिंह शब्द का प्रयोग विशेष प्रयोजन के लिए किया गया है। शिवाजी को वीर या साहसी बताने के लिए सिंह शब्द का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार 'सिंह' शब्द का 'वीर' या 'साहसी' अर्थ लक्ष्यार्थ है।
- **"लड़का शेर है" :-** यदि हम कहें कि 'लड़का शेर है।' तो इसका लक्ष्यार्थ है 'लड़का निडर है।' यहाँ पर शेर का सामान्य अर्थ अभीष्ट नहीं है। लड़के को निडर बताने के प्रयोजन से उसके लिए शेर शब्द का प्रयोग किया गया है।

अभिधा और लक्षणा में अंतर

अभिधा और लक्षणा में अंतर इस प्रकार हैं

- अभिधा और लक्षणा दोनों शब्द-शक्तियाँ हैं। दोनों से शब्दों के अर्थ का बोध होता है, पर अभिधा से शब्द के मुख्यार्थ का बोध होता है, किन्तु लक्षणा से मुख्यार्थ का बोध नहीं होता, बल्कि मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) का बोध होता है।

अभिधा का उदाहरण

'बैल खड़ा है।' - इस वाक्य में बैल शब्द सुनते ही 'पशु विशेष' का चित्र आँखों के सामने आ जाता है।

लक्षणा का उदाहरण

'सुनील बैल है।' - सुनील को बैल कहने में मुख्यार्थ की बाधा है, क्योंकि कोई आदमी बैल नहीं हो सकता। बैल में जड़ता, बुद्धिहीनता आदि धर्म होते हैं। सुनील में भी बुद्धिहीनता है, इसलिए सादृश्य संबंध से बैल का लक्ष्यार्थ किया गया- बुद्धिहीन। बुद्धिहीनता का बोध हुआ लक्षणा के द्वारा। इसलिए इस वाक्य में लक्षणा है।

- अभिधा शब्द-शक्ति तत्काल अपने मुख्यार्थ का बोध करा देती है, पर लक्षणा शब्द-शक्ति अपने लक्ष्यार्थ का बोध तत्काल नहीं करा पाती है। लक्षणा के लिए तीन बातों का होना नितांत आवश्यक है- मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ में संबंध तथा रूढ़ि या प्रयोजन। इस त्रयी के अभाव में लक्षणा की कल्पना नहीं की जा सकती, लेकिन अभिधा की जा सकती है।

शब्द

एक या उससे अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है। किसी भाषा में अनेक सार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है तब वह एक वाक्य का रूप लेकर पूर्ण अभिव्यक्ति करने में सक्षम हो पाता है। यह स्थाई नहीं होते, यह परिवर्तनशील होते हैं, यह समाज परिवेश और आवश्यकता के अनुसार जुड़ते रहते हैं तथा विलुप्त होते जाते हैं।

जैसे पूर्व समय में व्यापार विनिमय का विभिन्न साधन था उस समय जो शब्द - सेर, सवा सेर, कुंटल, तोला, मासा, आदि का प्रयोग किया जाता था आज वह प्रयोग में नहीं है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहते हुए उसे अपने विचारों के आदान - प्रदान के लिए शब्द तथा भाषा की आवश्यकता होती है।

शब्द भाषा की छोटी इकाई होती है। दो या अधिक वर्णन को जोड़ने पर इस का निर्माण होता है, उसी प्रकार दो या अधिक शब्दों के जोड़ से भाषा का निर्माण होता है। व्यक्ति सामाजिक प्राणी है और समझदार भी इसलिए वह अपने अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है।

शब्द के प्रकार

1. तत्सम

जो शब्द संस्कृत से हिन्दी में ज्यों के त्यों अर्थात् बिना परिवर्तन के ले लिए गए हैं

जैसे - अग्नि, पृथ्वी, रात्रि

2. तद्भव

तत्सम (संस्कृत) के वे शब्द हैं जो कुछ बिगड़ कर हिन्दी में प्रचलित हो गए हैं

जैसे - हस्त से 'हाथ', कर्ण से 'कान'

3. देशी

जो शब्द स्थानीय भाषाओं में से हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं

जैसे - रोड़ा, बैंगन, सेब

4. संकर

दो भाषाओं के मेल से बने शब्द संकर कहलाते हैं

जैसे -

खून + पसीना बे + डौल

फारसी + हिन्दी जेल + खाना

टिकट + घर अग्रेजी + हिन्दी



5. विदेशी

वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए हैं।

अरबी के शब्द :- अखबार, आदत, आखिर, अमीर, ईनाम, ईमान, उम्र, औरत, कसूर, कसरत, कानून, किताब, खबर, खराब, जनाब, जलिम, तहसील, तकदीर, तबादला, नशा, फायदा, मुल्ला, मजहब, मतलब, हकीम, शराब

फारसी के शब्द :- अदा, अगर, आमदनी, आईना, आवाज, आसमान, कमीना, कारीगर, किशमिश, खुश, गवाह, चादर, चश्मा, चेहरा, जिगर, जोश, दफ्तर, दवा, दीवार, दिलेर, दलाल, पाजामा, परहेज, बेकार, बेरहम, मजदूर, सरदार, सौदागर, साहब

तुर्की के शब्द :- तोप, तमाशा, कैंची, खंजर, चेचक, चम्मच, बेगम, बारुद, बहादुर, मुगल, दरोगा, सराय, बीबी, लाश, उर्दू

अंग्रेजी के शब्द :- अफसर, अपील, कमेटी, कलक्टर, गिलास, अस्पताल, गैस, टिकट, कुली, लालटेन, पुलिस, रजिस्टर

फ्रेंच के शब्द :- लैम्प, मेयर, आलपिन, सूप, पिकनिक, कारतूस, कूपन, मीनू, अंग्रेज

जापानी के शब्द :- रिक्शा

चीनी के शब्द :- चाय, लीची, चीनी

पुर्तगाली :- अलमारी, इस्तरी, इस्पात, कनस्तर, कप्तान, गोदाम, नीलम, पादरी, फीता, गमला, संतरा, चाबी, तौलिया, बाल्टी, साबुन

व्युत्पत्ति (रचना या बनावट) के आधार पर शब्द के भेद

1. **रुढ़ :-** जो अन्य शब्दों के योग से न बने हों

जैसे - कमल, घोड़ा, जल

2. **यौगिक :-** जो दो शब्दों में योग से बनते हैं

जैसे -

पाठशाला = पाठ + शाला,

विद्यालय = विद्या + आलय

3. **योगरुढ़ :-** जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने हों तथा किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हो उन्हें योगरुढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे - दशानन, लम्बोदर



संवाद लेखन

संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति भाग लेते हैं। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद की सहायता ली जाती है।

जो संवाद जितना सजीव, सामाजिक और रोचक होगा, वह उतना ही अधिक आकर्षक होगा। उसके प्रति लोगों का खिंचाव होगा। अच्छी बातें कौन सुनना नहीं चाहता इसमें कोई भी व्यक्ति अपने विचार सरल ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास कर सकता है।

वार्तालाप में व्यक्ति के स्वभाव के अनुसार उसकी अच्छी-बुरी सभी बातों को स्थान दिया जाता है। इससे छात्रों में तर्क करने की शक्ति उत्पन्न होती है। नाटकों में वार्तालाप का उपयोग सबसे अधिक होता है।

इसमें रोचकता, प्रवाह और स्वाभाविकता होनी चाहिए। व्यक्ति, वातावरण और स्थान के अनुसार इसकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो हर तरह से सरल हो। इतना ही नहीं, वार्तालाप संक्षिप्त और मुहावरेदार भी होना चाहिए।

संवाद के अनेक नाम हैं :- वार्तालाप, आलाप, संलाप, कथोपकथन, गुप्तगू, सम्भाषण इत्यादि।

यह कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटकादि की जान है। इसके माध्यम से पात्रों की सोच, चिन्तन-शैली, तार्किक क्षमता और उसके चरित्र का पता चलता है। नाटकों के संवादों से कथावस्तु का निर्माण होता है।

संवाद के वाक्यों में स्वाभाविकता होनी चाहिए, बनावटीपन नहीं। लम्बे-लम्बे कठिन और उलझे हुए संवाद प्रायः बनावटी हुआ करते हैं। अच्छा संवाद-लेखक ही नाटक, रेडियो नाटक, एकांकी तथा कथा-कहानी लिखने में कुशलता हासिल करता है।

भाषा, बोलनेवाले के अनुसार थोड़ी-थोड़ी भिन्न होती है।

उदाहरण के रूप में एक अध्यापक की भाषा छात्र की अपेक्षा ज्यादा संतुलित और सारगर्भित होगी। एक पुलिस अधिकारी की भाषा और अपराधी की भाषा में काफी अन्तर होगा।

इसी तरह दो मित्रों या महिलाओं की भाषा कुछ भिन्न प्रकार की होगी। दो व्यक्ति, जो एक-दूसरे के शत्रु हैं - की भाषा अलग होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि संवाद-लेखन में पात्रों के लिंग, उम्र, कार्य, स्थिति का ध्यान रखना चाहिए।

संवाद-लेखन में इन बातों पर भी ध्यान देना चाहिए कि वाक्य-रचना सजीव हो शैली सरल और भाषा बोधगम्य हो। उसमें कठिन शब्दों का प्रयोग कम-से-कम हो। संवाद के वाक्य बड़े न हों संक्षिप्त और प्रभावशाली हों। मुहावरेदार भाषा काफी रोचक होती है। अतएव, यथास्थान उनका प्रयोग हो।

संवाद-लेखन की परिभाषा

- दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप या सम्भाषण को संवाद कहते हैं।
- दो व्यक्तियों की बातचीत को 'वार्तालाप' अथवा 'संभाषण' अथवा 'संवाद' कहते हैं।



अच्छी संवाद-रचना के लिए बातों का ध्यान

1. संवाद छोटे, सहज तथा स्वाभाविक हों।
2. संवादों में रोचकता एवं सरसता हो।
3. इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और बोलचाल के निकट हो। उसमें क्लिष्ट तथा अप्रचलित शब्दों का प्रयोग न हो।
4. संवाद पात्रों की सामाजिक स्थिति के अनुकूल हों। अनपढ़ या ग्रामीण पात्रों और शिक्षित पात्रों के संवादों में अंतर रहना चाहिए।
5. संवाद जिस विषय या स्थिति के सम्बन्ध में हों, उसे क्रमशः स्पष्ट करने वाले हों।
6. प्रसंग के अनुसार संवादों में व्यंग्य-विनोद का समावेश होना चाहिए।
7. यथास्थान मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से संवादों में सजीवता आ जाती है।

अच्छे संवाद-लेखन की विशेषताएँ

- संवाद में प्रवाह, क्रम और तर्कसम्मत विचार होना चाहिए।
- संवाद देश, काल, व्यक्ति और विषय के अनुसार लिखा होना चाहिए।
- संवाद सरल भाषा में लिखा होना चाहिए।
- संवाद में जीवन की जितनी अधिक स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही अधिक सजीव, रोचक और मनोरंजक होगा।
- संवाद का आरम्भ और अन्त रोचक हो।

संवाद लेखन के उदाहरण

1. हामिद और दुकानदार का संवाद

हामिद :- यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार :- यह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

हामिद :- बिकाऊ है कि नहीं?

दुकानदार :- बिकाऊ नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये है?

हामिद :- तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?

दुकानदार :- छे पैसे लगेंगे।

हामिद :- ठीक बताओ।

दुकानदार :- ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं तो चलते बनो।

हामिद :- तीन पैसे लोगे?

2. पड़ोसी और अँगनू काका का संवाद

पड़ोसी :- यह पिल्ला कब पाला, अँगनू काका?

अँगनू काका :- अरे भैया, मैंने काहे को पाला। यहाँ अपने ही पेट का ठिकाना नहीं। रात में न जाने कहाँ से आ गया!

पड़ोसी :- तुम इसे पाल लो, काका।

अँगनू काका :- भैया की बातें !इसे पालकर करेंगे क्या?

पड़ोसी :- तुम्हारी कोठरी ताका करेगा।

अँगनू काका :- कोठरी में कौन खजाना गड़ा है, जो ताकेगा।

3. रोगी और वैद्य

रोगी :- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!

वैद्य :- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है?

रोगी :- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।

वैद्य :- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।

रोगी :- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।

वैद्य :- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।

रोगी :- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।

वैद्य :- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।

रोगी :- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ ?

वैद्य :- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।

रोगी :- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।

वैद्य :- अच्छा, नमस्कार।

4. माँ-बेटे के बीच संवाद

बेटा :- माँ, ओ माँ !

माँ :- अरे, आ गए बेटा !

बेटा :- हाँ माँ ।

माँ :- आज स्कूल से आने में काफी देर लगा दी..... ।

बेटा :- हाँ माँ, आज विश्व पर्यावरण-दिवस जो था।

माँ :- तो क्या कोई विशेष कार्यक्रम था तेरे स्कूल में ?

बेटा :- हाँ माँ, आज हमारे स्कूल में 'तरुमित्रा' के फादर आए हुए थे।

माँ :- तब तो जरूर उन्होंने पेड़-पौधों के बारे में विशेष जानकारी दी होगी।

बेटा :- हाँ, उन्होंने जानकारी भी दी और हम छात्रों के हाथों पौधे भी लगवाए।

माँ :- तुमने कौन-सा पौधा लगाया ?

बेटा :- मैंने अर्जुन का पौधा लगाया, माँ।

माँ :- बहुत खूब।

बेटा :- जानती हो माँ, शिक्षक बता रहे थे कि यह पौधा हृदय-रोग में काम आता है।



माँ :- वह कैसे ?

बेटा :- इसकी छाल और पत्ते से हृदय-रोग की दवा बनती है।

माँ :- पेड़-पौधों के बारे में शिक्षक ने और क्याक्या बताया ?

बेटा :- उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे पर्यावरण को संतुलित रखते हैं। वे हमें ऑक्सीजन देते हैं। इन्हें अपने आस-पास लगाने चाहिए।

माँ :- अच्छा, अब मेरा राजा बेटा, हाथ-पाँव धोकर भोजन करेगा।

बेटा :- ठीक है, माँ।

5. गुरुघंटाल और मस्तीलाल के बीच संवाद

गुरुघंटाल :- आओ, आओ मस्ती, कहो, क्या हाल-चाल है ?

मस्तीलाल :- ठीक कहाँ है गुरु ! आजकल बड़ा ही परेशान रह रहा हूँ।

गुरुघंटाल :- किस बात की परेशानी ?

मस्तीलाल :- बाल-बच्चों के भविष्य की चिन्ता सता रही है।

गुरुघंटाल :- क्या हुआ उन्हें ? सब कुछ ठीक-ठाक तो है न ?

मस्तीलाल :- ठीक क्या खाक रहेगा गुरु ! इस बार फिर मेरे दोनों बेटे इंटर फ़ैल हो गए।

गुरुघंटाल :- मैं तो कहता हूँ, छोड़ दे दोनों को पढ़ाना-लिखाना। बना दे उन्हें नेता। राजनीति में सब चलता है।

मस्तीलाल :- समझ में नहीं आता कि किस पार्टी के आला-कमान से बात करूँ।

गुरुघंटाल :- इसमें समझने की क्या बात है- उगते सूरज को देख और दिशा तय कर।

मस्तीलाल :- तुम ठीक कहते हो गुरु, अब भाजपा-लोजपा में भी वो बात नहीं रही। आज ही जाता हूँ दिल्ली और....

6. दो छात्राओं के बीच संवाद

पूजा :- अभी तक सर नहीं आए।

कोमल :- इतनी जल्दी आते ही कब हैं ?

पूजा :- रोज 10 मिनट लेट कर देते हैं।

कोमल :- और आते ही शुरू हो जाते हैं- मेरी हर लाईन में क्वेश्चन होता है, बिल्कुल C.B.S.E. के पैटर्न पर.....

(दोनों हँस पड़ती हैं)

पूजा :- अच्छा ही है। हमें भी कुछ गुफ्तगू का रोज-व-रोज अवसर मिल ही जाता है।

कोमल :- अच्छा, यह बताओ, तुम्हें मि. Y कैसे लगते हैं ?

पूजा :- बहुत ही अच्छे। पढ़ाने लगते हैं तो तुरंत नींद आने लगती है।

(ठहाका)

कोमल :- मैं यह पूछ रही हूँ कि उनके Style आई मीन पढ़ाने की शैली कैसी है ? उनकी बात दिमाग में अँटती भी हैं कि नहीं ?

पूजा :- दिमाग में अँटे कहाँ से, पढ़ाते ही क्या हैं, दिमाग चाटते रहते हैं।

कोमल :- सर के बारे में ऐसा न कहो।

पूजा :- तो क्या केवल उनकी तरह गाल बजाती फिरूँ कि मैं बड़ा विद्वान हूँ, मेरे पढ़ाए छात्र-छात्राएँ ऊँचे-ऊँचे पदों पर हैं; तुमलोग समय का महत्त्व नहीं देती हो आज भी सोसायटी में लड़कियों का स्थान काफी निम्न है, आदि-आदि..... ।

कोमल :- चुप, वे आ रहे हैं। ।

7. दो मित्रों के बीच संवाद

पहला :- सुप्रभात, मित्र सुप्रभात !

दूसरा :- सुप्रभात ! सुबह-सुबह पान खाए हो, क्या बात है ?

पहला :- बात क्या रहेगी, उधर मनोज की दुकान-तरफ गया था.....

दूसरा :- आजकल बड़ी बैठकी हो रही उस चौराहे पर ! लगता है, सत्तू बाँधकर पीछे पड़े हो उस पर।

पहला :- क्या करें मित्र, समझ में नहीं आता, मेरा सारा वार ही खाली हो जाता है।

दूसरा :- तुम गलत करते ही हो। आखिर क्या बिगाड़ा है उसने जो इस तरह उसे परेशान करना चाहते हो ?

पहला :- परेशान करना ! मैंने तो उसे भिखमंगा बना डालने की कसम खा रखी है, जीते जी छोड़ूँगा नहीं।

दूसरा :- लोग बड़ी निन्दा करते हैं तेरी।

पहला :- करने दो, लेकिन मैं छोड़ूँगा नहीं। उसे यहाँ से जाना ही होगा।

दूसरा :- यह भ्रम है तेरा, भ्रम। वह अकेले थोड़े है। उसके साथ आरयन मैन भी तो है।

पहला :- वह तो वक्त ही बताएगा कि



STEP UP
ACADEMY